मैथिली आलोचना

(7)

सम्पादक
अशोक



चेतना समिति, पटना

मैथिली आलोचना

सम्पादक

अशोक



चेतना समिति

विद्यापति भवन, विद्यापति मार्ग

पटना-1

चेतना समिति प्रकाशन संख्या-85

मैथिली आलोचना (विचार गोष्ठी-2018 मे पठित आलेख)

Maithili Criticism, Seminar Papers-2018
Ed. Ashok

स्वत्वाधिकार : **प्रकाशक**

मूल्य : 350/ टाका

प्रति : 300

प्रकाशक : **चेतना समिति**
विद्यापति-भवन
विद्यापति मार्ग, पटना-1
फोन : 0612-2230405

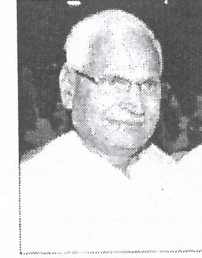
संस्करण : 2019

मुद्रक : **सरस्वती प्रेस**
सिसोधिया प्लेस,
पूर्वी बोरिंग केनाल रोड, पटना
मो.-8002347276, 9304625963

-:: विषय-क्रम :-

✤

अध्यक्षक सन्देश



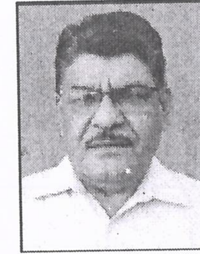
चेतना समिति अपन स्थापना कालहिसँ मैथिली भाषा-साहित्यक विकास, मिथिलाक गौरवमय सुदीर्घ सांस्कृतिक परम्परा आ धरोहरिक संरक्षणक लेल निरन्तर प्रयासरत अछि। ई विकाससभ जाहि केन्द्रक चारूकात घुमैत रहि लोककेँ प्रेरित करैत अछि, से थिक मैथिली एवं ओहि माध्यमसँ प्रवाहित भए रहल मिथिलाक वैविध्यपूर्ण सांस्कृतिक उत्कर्षक विलक्षणता। मैथिली ओ माध्यम थिक जे विश्वसमुदायमे तत्काल अपन एक विशिष्ट परिचय दैत अछि, मैथिलकेँ आन भाषा-भाषी एवं सांस्कृतिक समुदायक बीच चिन्हार करा दैत अछि। एकरहि माध्यमसँ मिथिलाक संस्कृति एक खाढ़ीसँ दोसर खाढ़ीमे संचरित आ संक्रमित होइत रहैत अछि। एहीमे नवागत पीढ़ीक प्रेरणा आ उर्जाक स्रोत निहित छैक।

सम्पूर्ण देशमे मैथिली भाषा-भाषीक अनेक नव-पुरान संस्था अछि। ओ सभ अपना-अपना ढ़ंगसँ काज करैत अछि, किन्तु मैथिली पोथी प्रकाशनक क्षेत्रमे चेतना समितिक कार्य-योजनामे जे निरन्तरता आ उपलब्धि छैक, से अन्य संस्थाक अपेक्षा 'समिति'केँ समाजक नजरिमे बेसी महत्त्वपूर्ण बना दैत अछि। हमरा विश्वास अछि 'समिति'क नवीनतम प्रकाशन 'मैथिली- आलोचना' जे वर्ष 2018क विद्यापति स्मृतिपर्व समारोहक अवसरपर आयोजित विचार-गोष्ठीमे पठित आलेख सभक संकलन थिक, विद्वत्समाजमे ओहिना आदर पाओत।

विवेकानन्द झा
अध्यक्ष

66म विद्यापति स्मृतिपर्व समारोह
कार्तिक धवल त्रयोदशी, संवत् 2076
10 नवम्बर, 2019

प्रकाशकीय



चेतना समिति गत कतेको दशकसँ नियमित रूपेँ विद्यापति स्मृतिपर्व समारोहक अवसरपर साहित्यिक-सांस्कृतिक विषयपर केन्द्रित विचार-गोष्ठी आयोजित करैत आएल अछि। ओहि अवसरपर पठित आलेखक प्रकाशनसँ मैथिलीक आलोचना साहित्यक भंडार पुष्ट भेल अछि।

विचार-गोष्ठीक विषय कोनहु वर्ष साहित्यिक विधा आ विषय केन्द्रित रहैत अछि तँ कोनहु वर्ष मैथिली साहित्यकारपर केन्द्रित। एहिसँ एकर प्रकाशनमे उपयोगिता पूर्ण वैविध्य छैक। एहन-एहन प्रकाशनक माध्यमसँ सम्बद्ध विषयक पर्याप्त पाठ्य-सामग्री विद्वत समाजक समक्ष आबि जाइत अछि आ शिक्षार्थी एवं शोधार्थीक संगहि सामान्य पाठक सेहो लाभान्वित होइत छथि।

हम विचार-गोष्ठीक समस्त प्रतिभागी विद्वानलोकनिक आभारी छी जे समितिक अनुरोधपर परिश्रमपूर्वक लिखित आलेखक संग विचार-गोष्ठीमे सहभागी भेलाह। हम विचार-गोष्ठीक संयोजक श्री अशोक जीक विशेष आभारी छिअनि जे 'मैथिली- आलोचना' सन महत्त्वपूर्ण प्रकाशन-कार्य सम्पादित कएल अछि।

हमरा विश्वास अछि जे समितिक अन्य प्रकाशनहि जकाँ इहो प्रकाशन अपने लोकनि केँ सन्तोष देत, समाजमे समादृत होएत आ मैथिलीक आलोचना साहित्यक विकास एवं संवर्द्धनमे आँजुर भरि योगदान अवश्य करत।

उमेश मिश्र
सचिव

66म विद्यापति स्मृतिपर्व समारोह
कार्तिक धवल त्रयोदशी, संवत 2076
10 नवम्बर, 2019

आलोचनापर सोचैत

मैथिली आलोचना विधापर एहिसँ पूर्व 1986 ई. मे चेतना समिति, पटना द्वारा विचार-गोष्ठी आयोजित भेल रहय। वर्ष 1987 मे ओ 'साहित्यिक समालोचना : दशा-दिशा' शीर्षकसँ पोथीक रूपमे प्रकाशित भेल। एकर सम्पादक रहथि डॉ. बासुकीनाथ झा। दोसर बेर चेतना समिति द्वारा वर्ष 2018मे 'मैथिली आलोचना' पर विचार-गोष्ठी आयोजित भेल अछि विद्यापति पर्वक अवसर पर। ई पोथी ओही गोष्ठी लेल निर्धारित विषय सभपर उपलब्ध लिखित आलेख सभक संग्रह थिक।

मैथिली आलोचनाक दुर्बल रहबा पर बहुत दिन सँ गप होइत रहल अछि। आइयो भ' रहल अछि। आइ-काल्हि बेसी हुअ' लागल अछि। वर्ष 1986क विचार गोष्ठीमे कथाकार आ समीक्षक राज मोहन झा 'मैथिली आलोचनाक दशा ओ दिशा' नामक आलेखमे लिखने छथि जे तीस वर्ष पहिनहुँ आचार्य रमानाथ झाकेँ एहने चिन्ता रहनि। रमानाथ बाबू लिखने छथि जे 'हमारा लोकनिक मिथिला भाषाक साहित्यमे समालोचनाक बड़ अभाव अछि।' राज मोहन झा एहि लेल उत्तरदायी तत्व सभ पर विचार केने छथि। अन्ततः ओ कहैत छथि जे, 'एखनुका जे दशा अछि, से जेना आइ सँ बीस-तीस वर्ष पूर्वहु छल, तहिना प्रायः बीस-तीस वर्ष बादो रहत। एखनुका स्थितिकेँ देखैत से कोनो बहुत आश्चर्यक विषय नहि होयत। तेँ अभाव पर गप्प करबासँ आ अपन दशा पर 'आबहु सब मिलि रोवहु भारत भाई'क लीलासँ की होब'बला अछि?' मैथिली आलोचनाक कमजोर स्थिति पर विचार करैत आ ओकर कारण सभक खोज करैत डा. बासुकी नाथ झा ओही पोथीक सम्पादकीयमे लिखलनि अछि जे, 'मैथिली समालोचनाक स्थिति कमजोर रहबाक कारण अनेक रहल अछि। समालोचना तँ वास्तवमे सर्जनात्मक साहित्यक होइछ। प्रकाशन एवं वितरण सुविधाक अभावमे सर्जनात्मक साहित्यक प्रणयन सेहो समुचित मात्रा मे नहि होइत अछि। दोसर बात ई जे अधिकांश रचनाकार केवल प्रशंसे पाबए चाहैत छथि, अभाव किंवा त्रुटिक संकेतो बर्दाश्त करबाक स्थितिमे नहि रहैत छथि तखन निष्पक्ष समालोचना लिखनिहार मात्र शत्रु बनि केँ रहथु सैह ने। तेँ अधिकांश कृति एकांगी अथवा पक्षपातपूर्ण होइत अछि। एक दोसर चित्र इहो अछि जे सर्जनात्मक रचनाकार मात्र एकाध सामान्य रचना कए समालोचक सँ अपेक्षा करैत छथि जे इतिहासमे हुनक

रचनाकेँ शीर्षस्थ स्थान देथि। यदि से नहि कएलन्हि तँ नीक समालोचक नहि भेलाह। तात्पर्य जे समालोचक हेतु अपेक्षित निष्पक्षताक वातावरण तखनहि सम्भव अछि जखन कारयित्री एवं भावयित्री प्रतिभा सम्पन्न रचनाकारमे संयम, धैर्य ओ सामंजस्य राखल जायत।'

आलोचनाक दुर्बल वा कमजोर रहबाक जे बात मैथिलीमे लगातार कतेको वर्षसँ भ' रहल अछि तकरा जँ सत्य मानि ली त' विचार ई कर' पड़त कि एहि स्थिति सँ उबरबाक रस्ता की अछि? कोना हमरालोकनिक साहित्यमे आलोचना मजबूत हैत? एखन धरि ओ कोन वैचारिक वा स्थितिपरक विन्दु सभ अछि जे एहि लेल उत्तरदायी रहल अछि आ ओकर समाधान लेल की सभ कार्य हेबाक चाही। एहि सभ बिन्दु के चिन्हित क', देखि-परेखि क' ओकर समाधान लेल व्यक्तिगत वा संस्थागत प्रयास करब आइ समयक मांग भ' गेल अछि। दोसर, हमर ई व्यक्तिगत मान्यता अछि आ ई मान्यता अन्य कतेको साहित्यकारक छनि जे दुर्बलताक जतेक हल्ला अछि, वस्तुतः स्थिति ओतेक अधलाह नहि अछि। आलोचनाक जतेक पोथी उपलब्ध अछि से विभिन्न कारणसँ लोकक नजरि पर नहि अछि, ओकरा पढ़लो-गुनल नहि गेल अछि। ओहि पर चर्चा आ विमर्श बहुत कम भेल अछि। ई बात हम रहरहाँ देखैत छी जे मैथिलीक सर्जनात्मक वा आलोचनात्मक साहित्यकेँ गम्भीरतापूर्वक बिना पढ़ने ओहि पर बहुत सतही ढंगसँ टिप्पणी कयल जाइत अछि। ई बात अवश्य अछि जे आलोचनात्मक सभ लेखन गुणवत्तापूर्ण नहि अछि मुदा से तहिना अछि जेना सर्जनात्मक सभ लेखन गुणवत्तापूर्ण नहि अछि। दोसर बात, जेना एही पोथीमे शिवशंकर श्रीनिवास कहलनि अछि आ से हमहूँ मानैत छी जे बहुतो सार्थक ओ गुणवत्तापूर्ण आलोचनात्मक लेख सभ विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल अछि। ओ संकलित भ' पोथीक रूपमे नहि आयल अछि। पत्रिका सभ सेहो क्रमशः अनुपलब्ध भेल जा रहल अछि। ओहि लेख सभक चयन क' कतेको पोथी सम्पादित क' प्रकाशित भ' संकैत अछि। असल मे जरूरत छैक एहि सभ विषय-बिन्दु पर सोचनिहारक आ सोच-विचार संग कार्य करैबलाक। ई कार्य मुदा दू प्रकारे भ' सकैत अछि- पहिल, जे कियो वर्त्तमानमे अँखिगर आलोचक छथि से कोनो एक विधा पर, जाहि पर हुनक विशेषज्ञता होइन, रुचि होइन, ओहि पर कम सँ कम एक आलोचनात्मक पोथी लिखथु अथवा ओहि विधा विशेष पर अपन दृष्टिक अनुकूल विषय सभ निर्धारित क' विभिन्न आलोचक सँ ओहि पर आलोचनात्मक लेख लिखाक' पोथी सम्पादित-प्रकाशित करथु। विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल आलोचनात्मक लेख सभके जे विभिन्न सर्जनात्मक विधा-जेना, कविता, गीत, कथा, उपन्यास, यात्रा संस्मरण, आदि सँ सम्बंधित अछि कें विधा विशेषक आधार पर चयनित, सम्पादित क' प्रकाशित कराबथु। वर्त्तमानमे विभिन्न कारणसँ आलोचनात्मक पोथीक बिक्रीमे गति आयल अछि। प्रतियोगिता परीक्षा लेल, शोध आदि लेल एहेन पोथी ताकल जा रहल अछि।

हम विभिन्न संस्था द्वारा आयोजित विचार-गोष्ठी आ ओहिमे पढ़ल आलेख सभकेँ सेहो पोथीक रूपमे प्रकाशनकेँ जरूरी मानैत छी। एखन धरि चेतना समिति वा अन्य कोनो संस्था द्वारा जे एहि तरहक पोथी प्रकाशित भेल अछि से निश्चित रूपसँ आलोचनाक विकासमे सहायक भेल अछि। तखन ईहो अवश्य जे एहन पोथी सभमे संग्रहीत बहुतो लेखमे विषयक प्रति न्याय नहि भेल अछि। से हमरा जनैत सभ भाषा-साहित्यमे कमोबेस होइत अछि।

त' हमरा लोकनिकेँ जे गम्भीरतापूर्वक मैथिलीक आलोचना साहित्यकेँ अपेक्षित रूपसँ विकसित देख' चाहैत छी से प्रथमतः एकर वर्त्तमान स्थिति पर कननाइ, क्रोध केनाइ, व्यंग केनाइ, एकर उपेक्षा केनाइ छोड़ि प्रथमतः उपलब्ध साहित्यक अध्ययन करी। लेखन करी। हमरा कहबाक ई मोन करैत अछि जे वर्त्तमान स्थिति सँ उबारबाक लेल कियो बाहरसँ नहि आओत। करबाक हमरे सभकेँ हैत। आइ जे हमर सभक साहित्यक मान्य आलोचक सभ छथि सेहो कहियो दुस्थिति पर चिन्तन करैत रहथि आ संगहि शोध, समीक्षा, आलोचनाक पोथी-लेख आदि लिखितो रहथि। हुनके सभक योगदान अछि जे आइ हम सभ एतबो धरि आगू बढ़लहुँ अछि।

आलोचनाक स्वरूप, भाषा, प्रयोजन, प्रविधि, दृष्टि सभ पर पहिनहुँ विचार होइत रहल अछि, अहू पोथीक आलेख सभमे भेल अछि। आगूओ होइत रहत। आब ई सर्वमान्य भेल जा रहल अछि जे आलोचना सेहो एक रचना थिक। आलोचनाक सेहो आलोचना हेबाक चाही, केवल रचनाक आलोचनासँ आलोचनाक विकास नहि होयत। आब रचनाकारलोकनिमे सेहो अपन रचनाक आलोचनामे केवल प्रशंसा सुनबाक लौल कम भ' रहल छनि। सगर राति दीप जरयक संग आनो आयोजन, लेखन, विचार-विमर्शक एहिमे योगदान अछि। जे रचनाकार आत्ममुग्ध नहि छथि आ से हुनका रहबाको नहि चाही जँ ओ अपन रचनामे उतरोत्तर विकास चाहैत छथि तँ अपनामे सहिष्णुता, ग्रहणशीलता बनाक' राख' पड़तनि। सभसँ पहिने तँ अपन आलोचनात्मक विवेककेँ बना क' राखब जरूरी अछि।

एहि पोथीमे विचार-गोष्ठीमे निर्धारित सभ विषयपर लेख उपलब्ध नहि भ' सकल। सैद्धान्तिक, विधागत ओ कतेको आलोचक पर आलेख प्राप्त नहि भेल। किछु आलोचक तँ गोष्ठीमे भागे नहि लेलनि जे भाग लेलनि, से गोष्ठीमे

मौखिक वक्तव्यक बाद आलेख उपलब्ध नहि करा सकला। हमरा बहुत दुख अछि जे बहुतो बेर अनुरोधक बावजूद ई लोकनि आलेख नहि पठौलनि। ई सभ मैथिली साहित्यक जानल-मानल साहित्यकार सभ छथि। किछु ने किछु लिखते रहैत छथि वा करिते रहैत छथि मुदा हुनका लोकनिक आलेख नहि भेटबाक कारण योजनाक हिसाबसँ एहि पोथीक स्वरूपमे कमी रहि गेल, से हम अनुभव करैत छी। मुदा जे आलोचक सभ आलेख उपलब्ध करौलनि जाहिमे किछु एहनो छथि जे संगोष्ठीमे भाग त' नहि ल' सकला मुदा कृपापूर्वक अपन आलेख बादमे पठौलनि तकरा सभकेँ पढ़ि क' हम सभसँ पहिने अपने लाभान्वित भेल छी। आनन्दित भेल छी। नव-नव बात-विचार आ तथ्य सभ सँ अवगत भेल छी। ई विषय सभ नव आ कठिन छल, एकर परम्परा सेहो फड़िछायल नहि रहने विषय-विमर्शक स्वरूप निर्धारणमे हमरा स्वयं कठिनता रहय। मुदा भीमनाथ झा ओ तारानन्द वियोगीक सहयोगसँ हम निर्धारित विषय पर आलेख सभक योजना बना सकलहुँ। हमर अनुरोध पर जे आलोचक लोकनि आलेख गोष्ठी दिन देलनि वा बादोमे उपलब्ध करौलनि, हुनका सभक प्रति हम आभार व्यक्त करैत छी। एहि गोष्ठीमे नरेश मोहन झा सेहो सहभागी रहथि, हुनक देहावसान हमरा सभकेँ मर्माहत केलक। हुनका प्रति श्रद्धा निवेदित।

एहि पोथीक आलेख सभमे आलोचनाक सैद्धान्तिक ओ व्यावहारिक पक्ष सभ पर एक विमर्श आयल अछि। अनेक प्रश्न सभ उठाओल गेल अछि आ खुशीक गप जे ओहि प्रश्न सभक उत्तरो थोड़-बहुत रूपमे एहि पोथीमे आयल अछि। आलोचनाक आलोचनाक विभिन्न रूप, दृष्टि ओ भाषा एहि पोथीक विभिन्न आलेखसभ मे देखबामे अबैत अछि। एहि आलेख सभके पढ़ैत हम अनुभव करैत छी जे आलोचनामे लोकतंत्र कतेक जरूरी होइत छैक। से तहिना जेना लोकतंत्रमे आलोचना जरूरी होइत छैक। मुदा समाज हो वा साहित्य दुनू मे लोकतंत्र आ आलोचनाक विकास होयब कोनो एक दिनक बात नहि होइत छैक, कैक पीढ़ी लागि जाइत छैक। तेँ आन भाषा आ साहित्यक तुलनामे मैथिलीक आलोचना-साहित्यकेँ पछुआयल देखि क' कानब-बाजब छोड़ि क' पहिने हमरा लोकनि अपन समाजमे साहित्य आ साहित्यमे समाजक स्थिति पर सम्यक सोच-विचार करी। ई देखी जे समाज-साहित्य कतेक लोकतांत्रिक भेल अछि। एहि सँ होयत ई जे यथार्थसँ त' परिचित होयबे करब, निराशामे नहि जीबि क' किछु करबाक उत्साह बनल रहत। आलोचनाक विकास साहित्यक विकास लेल जरूरी छैक त' से समाज आ संस्कृतिक विकाससँ सेहो जुड़ल छैक।

पटना, 29/10/2019 **अशोक**

देवकान्त झा

मैथिली आलोचना आ भारतीय साहित्यशास्त्र

ध्वन्यालोककार आनन्दवर्द्धन डंकाक चोटपर अपूर्व वा विलक्षण काव्यवस्तुक निर्माणमे समर्थ निर्माता कवि आर सहृदय बोद्धा समालोचकक जयघोष करैत छथि :

अपूर्वं यद्वस्तु प्रथयति विना कारणकलां
जगद्भावप्रख्यं निजरसभरात्सारयति च।
क्रमात्प्रख्योपाख्याप्रसरसुभगं भासयति तत्
सरस्वत्यास्तत्त्वं कविसहृदयाख्यं वियजते।।

अर्थात् जे सहजहि अपूर्व वा एहन अभिनव सृष्टिक निर्माण करैछ, जे पाथर सन कठोर वा नीरस संसारकेँ अपन सरसताक योगसँ रसमय बनबैछ आर जे प्रख्या (कवि) आर उपाख्या (भावक) केर प्रसारसँ वस्तुजगतकेँ रोचक बनबैछ, तेहन कवि आ सहृदय द्वारा आख्यात सरस्वतीक तत्त्व अर्थात्, काव्यक जय हो, ओकर सर्वोत्कर्षता बनल रहय। अर्थात्, विधाताक एहि शुष्क दृश्यमान जगतसँ काव्य-जगतक उत्कर्ष बहुत बेसी अछि। विधि-निषेधक नियमसँ जकड़ल ब्रह्माक एहि उबाऊ संसारसँ रसमय काव्य-संसार सर्वथा विलक्षण ओ आनन्दमय अछि। व्यतिरेक अलंकारक व्याजसँ एतय वस्तु-जगतसँ काव्य-जगतक समुत्कर्ष ध्वनित अछि।

आङ् मर्यादया सम्यक् प्रकारेण आलोच्यते इति समालोचना। ध्वन्यालोकक प्रसिद्ध टीकाक नाम थिक 'लोचन'। कहल जाइछ जे अभिनवगुप्तक 'लोचन' टीका बिना ध्वन्यालोक नेत्रविहीन अछि। अर्थात्, लोचन भेल समालोचनाक आँखि। ओ आँखि जाहिपर मर्यादा वा तटस्थताक दोहरी लेन्सक चसमा सोनाक

फ्रेममे मढ़ल छैक। शीसाक एक भागसँ आलोच्य अंशकेँ भरि आँखिए देखू आर दोसर भागसँ ओकरा गुनू-परखू, बाहर-भीतर वा दूर-लग सबके फरिछाऊ। ई आँखि भारत-युद्धक बोद्धा संजयक ओ पारदर्शी आँखि थिक जे आलोच्य महासमरक एक-एक तारके वा एक-एक कोणकेँ प्रदर्शित करैछ जाहिसँ समुद्र-मंथनसँ निर्गत गीतामृत सन आनन्दक अमृत बहराइत अछि। 'सम्' उपसर्गक यैह चरितार्थता थिक जे आलोच्य ग्रन्थक एक-एक अंशके दोहरी छन्नासँ तेना ने छानि लियए जे ओहिमहक अमृत-घट देखार भ' जाए आर विष-घट अनेरे औन्हा जाइक जाहिसँ सहृदय पाठक सहज भावसँ आलोचनाक दर्पणमे आलोच्यक मुख-चन्द्रक यथेष्ट पान क' सकथि। चन्द्रमे अमृत छैक तँ कालिमा सेहो। तेँ दोषमुक्त गुणक ग्रहण करायब आलोचकक धर्म थिक। यैह थिक आलोचकक हंसग्राहिता अर्थात् नीर-क्षीर विवेक जे अनेरे दूधके दूध आर पानि के पानि साबित क' सकय। काव्यमीमांसाकार महान आलोचक राजशेखरक तत्त्वाभिनिवेशिता ओ आधुनिक मैथिली आलोचनाक महान निर्माता आचार्य रमानाथ झाक हंसग्राहिताक यैह वास्तविक रहस्य थिक। हुनक दृष्टिमे समीक्षा अर्थ-निर्णयक एक सुन्दर कला थिक जतय द्रष्टा सृजनात्मकताक मान्य वा ग्राह्य अँशक उत्सुकतापूर्वक निरीक्षण करैछ, पुनः उत्कण्ठापूर्वक ओकर रसास्वादन करैत क्रमशः आनो-आनकेँ आनन्दक ओहि रसधारमे निमग्न करा दैत अछि। हुनक एहि स्थापनापर पाश्चात्य साहित्यक महान मनीषी वाल्टर पीटरक विचारक अनुगूँज सुनल जा सकैछ : समीक्षा ओ कला थिक जे कलाक विषय-वस्तुके व्याख्यायित करैछ। ई लेखक ओ पाठ्यक मध्य ओ संवाद-सेतु थिक जे एकक भावके दोसराक प्रति विश्वसनीय बनबैत अछि।'

श्रुतिक परमानन्दमय रसो वै सः आर शुक्लयजुर्वेदक कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः - सृष्टिकल्पमे रसस्वरूप साक्षात् ब्रह्मसँ स्वयम्भू, अर्थात् मननशील ब्रह्मा कविक रूपमे अवतीर्ण भेलाह। हुनक मुखसँ जे मधुवेष्टित मोहक वाणी प्रकट भेल सएह थिक काव्य। तेँ ब्रह्मा साहित्य-संसारक प्रथम कवि थिकाह। कविक कर्मे काव्य थिक। अतएव दोसर स्थानपर काव्य प्रतिष्ठित अछि। ब्रह्माक मुहसँ निःसृत मधुमय बोलकेँ सुनि देव-मुनि सब महो-महो भ' गेलाह। फेर सब सुनलक-गुनलक। ओही दर्शक-मण्डल मध्यसँ कोनो सूक्ष्मद्रष्टा आलोचक सिद्ध भेलाह जे यथोचित रूपसँ गुण-दोषक विवेचना कयलनि। कवि, काव्य आर आलोचक यैह त्रिक साहित्यशास्त्रक आधारस्तम्भ थिक। त्रेधा विभक्त रहितो तीनू सर्वथा सम्पृक्त

अछि आर समरसता ओ समन्वयक बाटसँ साहित्य-संसारक रसमय उद्घाटन करैछ। वास्तवमे यैह भेल काव्यशास्त्र वा साहित्यशास्त्र जाहिमे लक्षण संग-संग लक्ष्यके सेहो निर्धारित कयल जाइछ। शास्त्रक परिमार्जित लक्षणो आर सर्जनाक सटीक उदाहरणो। कवि/काव्य/ आलोचक/आलोचनाशास्त्रक यैह चतुर्विध ओ सोपान थिक जाहिपर आरूढ़ भ' सहृदय-संसार काव्यानन्द ओ ब्रह्मानन्दक रसपान करैछ। पूर्वक्रममे कवि आर काव्य भेल सर्जना ओ आलोचना भेल शास्त्र। दुनूमे वस्तुतः उपकार्योपकारक भाव अछि, बाध्य-बाधक नहि। पूर्व शृंखलामे काव्यशास्त्र वा साहित्यशास्त्र चारिम स्थानपर बैसल अछि। कवि स्रष्टा आ द्रष्टा दुनू थिकाह; मुदा आलोचकक दृष्टि कवियोसँ सूक्ष्मतर ओ गाढ़तर रहैछ। हुनका पास शास्त्र आर बोधक एहन सूक्ष्मेक्षिका दृष्टि रहैत छनि जाहिमे सर्जनाक नम्हरसँ नम्हर आ छोटसँ छोट उत्कर्ष-अपकर्ष सहसा प्रत्यालोकित भ' उठैछ। यैह बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव कविकर्म ओ आलोचनाकार्यकेँ परिभाषित करैछ। एहिमे द्रष्टा-दृश्य वा बोद्धा बोधव्य भाव अछि। तेसर सबसँ महत्त्वपूर्ण अँश थिकाह सहृदय पाठक। शास्त्र ओ सर्जनाक चरम उद्देश्य थिक एही मध्य मणिक परितोष। मूलक निर्माण करब जँ कविक काज थिक तँ पाठककेँ कविक काव्यक रसास्वादन करायब आलोचकक कार्य-व्यापार। एहि तरहेँ कवि भेलाह निर्माता, काव्य भेल निर्मिति आर बोद्धा (काव्य-मर्मज्ञ) भेलाह आलोचक तथा बोधव्य भेल प्रबुद्ध पाठकक रसिक समाज। एहि रसविश्वमे सब एकरस अछि। यैह सामरस्य साहित्यालोचनक सर्वस्व थिक। कवि-कर्मक प्रख्यापन आर पाठककेँ कविक संवेदनासँ साक्षात्कार करायब आलोचकक महनीय कार्य थिक। आजुक समालोचना अंगरेजीक क्रिटिसिज्मक पर्याय अछि- "It is the art of judging the qualities and values of an aesthetic object whether in literature or in fine arts, it involves the formation and expression of a judgement." अर्थात्, आलोचना कोनो सौन्दर्यशास्त्रीय वस्तुक गुणवत्ता ओ मूल्यक निर्णय करबाक कला थिक। खाहे साहित्य हो वा ललित कला, एकर कार्यक्षेत्र रचना ओ अभिव्यक्ति-कौशलक मूल्यांकन थिक।

भारतीय साहित्य काव्य ओ शास्त्रमे द्विधा विभक्त अछि। सर्जनात्मक साहित्य लक्ष्य ग्रन्थ थिक आर व्यवस्थापक साहित्य लक्षण ग्रन्थ। परस्परं भावयन्तो श्रेयः - नीतिक अनुरूप दुहूमे अन्योन्याश्रय सम्बन्ध अछि। काव्य आ शास्त्रक यैह मणि-मुक्ता योग थिक काव्यशास्त्र। काव्य आर शास्त्रक मध्यसँ एक नव विधा

विकसित भेल अछि, सएह थिक साहित्यालोचन वा समीक्षाशास्त्र वा साहित्यशास्त्र। काव्य ओ शास्त्रालोचनमे यदा-कदा टकराहटि होइत रहल अछि जे विकासक एक स्वस्थ परम्परा थिक। ने समीक्षाके शास्त्रक लकीरक फकीर होमक चाही आ ने साहित्येकें निरंकुश वाग्जाल। जँ अपूर्व वस्तुक निर्माणक्षमा प्रज्ञा कविक विशेषता थिक तँ ओहि निर्मितिक संग तादात्म्य कय ओकरा सहृदयक भावनानुगम्य बनायब समीक्षक दायित्व। तेँ कवि निर्माता, काव्य निर्मिति तथा आलोचक, भावक ओ सहृदय समाज ओकर लक्ष्य थिकाह। रूसी समीक्षक लूनाचर्स्कीक ई कहब सर्वथा उपयुक्त अछि – "समीक्षक एक शिक्षक तुल्य छथि जे लेखककें नव-नव ज्ञान ओ नव-नव दृष्टि तथा पाठककें कृतिक वास्तविक आस्वादन कराय ओकर रुचिक परिष्कारमे सहायक बनैत छथि।"

साहित्यिक समीक्षा कोनो सर्जनात्मक कृतिक क्षमताक निर्णयक कला थिक। साहित्यक क्षेत्रमे निर्गत कोनो रचनाक प्रमुख विशेषताक सावधान मूल्यांकन करब बहुत कौशलक अपेक्षा रखैछ। ई पूर्णताक प्रतिमान निर्णयक स्तर तथा यदा-कदा प्रत्येक नव-नव प्रवृत्तिक उदयक निर्धारण करैत अछि। ई मानदण्ड ओ तकर प्रक्रिया प्रस्तुत करैछ, रूप आ विषयकें फरिछबैत अछि तथा शैक्षणिक प्रयोजनीयताक सम्पूर्ति करैछ। आर आगू बढ़ि ई साहित्यिक सर्जनाक गंहिरइमे उतरि ओकर सूक्ष्म निरीक्षण-परीक्षण करैछ तथा कोनो रचनाक गुण वा दोषक विशेषतापर पुनर्विचार करैछ। एम्हर समालोचना विभिन्न वाद'क जुआरि ओ विचारधाराक कठघरासँ दुर्वह बनि गेल अछि। विचारधाराक प्रहारसँ आवृत्त तथा प्रतिक्रियाक शृंखलासँ बेधल साहित्यिक समीक्षा सम्प्रति बहुत जटिल भेल जा रहल अछि। सूत्रबद्धता वा फॉरमुलासँ संग्रस्त बहु-आयामीय विषय कठिन प्रश्न सिद्ध भ' रहल अछि। आब समय परिपक्व भ' गेल अछि जे पूर्व ओ पश्चिमक बढ़ैत दूरीकें पाटि देल जाय जाहिसँ समृद्ध भूमण्डलीय महत्त्वक समेकित समीक्षाशास्त्र गढ़ल जा सकय।

जॉर्ज सेंट्सबरीक अवधारणा सोड़हो आना सही छनि जे समीक्षाक तुलनात्मक विधा निर्णयक सर्वोत्तम पद्धति थिक। आइ.ए. रिचार्ड्सक दृष्टिमे तुलना ओ विश्लेषण समीक्षाक प्रमुख अवयव थिक। आधुनिक मैथिली समालोचना समीक्षाक एहि प्रविधिक प्रयोग गीतकाव्यक कसौटीपर विद्यापतिक समुत्कर्षकें विश्वमंचपर सिद्ध करबाक लेल अपनौलक अछि। शिवनन्दन ठाकुरक महाकवि

विद्यापति प्रथमतः हिन्दीमे 1941 इसवीमे प्रकाशित भेल, जकर मैथिली अनुवाद हुनक पुत्र विद्यापति ठाकुर द्वारा 1979 मे कयल गेल। ई विद्यापति सम्पूर्ण अध्ययन करैत मूलपाठ्य ओ संरचनात्मक पृष्ठभूमिपर प्रकाश दैत अछि। संगहि कविक भाषाक समीक्षात्मक सर्वेक्षण; अमरुक, गोविन्दाचार्य ओ कालिदासक संग गीतात्मक आनन्दक तुलनात्मक मूल्यांकन एकर विशेष आकर्षण थिक। बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी द्वारा प्रकाशित नरेन्द्रनाथ दासक विद्यापति काव्यालोक (1986) विद्यापतिकें भूमण्डलीय मंचपर प्रतिष्ठापित करबाक दिशामे सर्वोच्च उपलब्धि थिक। ई व्यापक रूपसँ एक अभिनन्दनीय कृति अछि जे विद्यापति पदावलीकें संस्कृत, बाङ्गला, हिन्दी, मैथिली, अँगरेजी आओर उर्दूक सर्वश्रेष्ठ गीत साहित्यक संग तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करैछ। महाकविक संदेशक संग मूलपाठक निर्धारण तथा संरचनात्मक संवर्धनक दिशामे ई उल्लेखनीय सेवा कयलक अछि।

भरत-सागरनन्दीसँ रूपगोस्वामी-जगन्नाथधरि भारतीय साहित्यशास्त्रमे बहुतो मोड़ आयल अछि। तहिना पाश्चात्य काव्यालोचनमे अरस्तू-सिसरोसँ इलियट-रिचार्ड्सधरि कतेको शस्त्रान्दोलन भेल अछि। युनान, भारत आ रोममे जे किछु उथल-पुथल भेल अछि ताहिमे स्थानिक भेद रहितो, एकताक आश्चर्यजनक आयाम अछि। सर विलियम जोन्सक दृष्टिमे संस्कृत ग्रीकसँ बेसी परिपक्व, लैटिनसँ अधिक विशाल आ दुहूसँ कहीं बेसी परिष्कृत अछि। तहिना मैक्समूलरक प्रसिद्ध वक्तव्य छनि – "संस्कृत संसारक सर्वोच्च भाषा थिक– सर्वाधिक आश्चर्यकारिणी ओ सर्वाधिक परिपूर्ण।" फलतः साहित्य जगतमे पूब-पश्चिमक आदान-प्रदानक दुआरि आब फूजि गेल अछि। एहि ग्लोबल वर्ल्ड आ इण्टरनेटक युगमे आब ओ दिन दूर नहि अछि जखन पूर्व आ पश्चिमक लोक एकहि विश्वमंचपर बैसि प्रत्येक साहित्यिक क्रिया-कलापमे भागीदार बनत।

पूर्वमे जे अलंकारशास्त्र (काव्यशास्त्र) छल सएह मध्यकाल मे साहित्यशास्त्र कहौलक। राजशेखर अपन काव्यमीमांसामे कहैत छथि - 'पञ्चमी साहित्यविद्येति यायावरीयः'। तेँ ओ पहिल व्यक्ति छथि जे अलंकारशास्त्रक नाम साहित्यविद्या रखलनि। संभवतः एही अनुकृतिपर रुपयक अपन ग्रन्थक नाम साहित्यमीमांसा आर कविराज विश्वनाथ साहित्यदर्पण रखलनि। संस्कृत काव्यशास्त्रमे 'काव्य' शब्द साहित्यक पर्याय थिक। तेँ तुलनात्मक समीक्षाक प्रसिद्ध प्रतिमान गढ़ैत

कहल गेल अछि : गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति। काव्येषु नाटकं रम्यम्। नाटकान्तं कवित्वम्। अर्थात् गद्य कवित्वक कसौटी थिक। काव्यमे नाटक सर्वश्रेष्ठ अछि। नाटक कवित्वक चरम सीमा थिक। फलतः गद्यो काव्य आर नाटक सेहो काव्ये। गद्यसम्राट बाणभट्टो महाकवि आर नाटकसम्राट भवभूतियो महाकविये थिकाह। आनन्दवर्धन गीतसम्राट अमरुककेँ सेहो महाकविए सिद्ध करैत छथि। ज्ञातव्य जे संस्कृत काव्यशास्त्रे भारतीय साहित्यशास्त्र कहबैत अछि।

दू हजार वर्षक समृद्ध संस्कृत साहित्यशास्त्र आर छौ-सात सय वर्षक विकासमान मैथिलीक साहित्यशास्त्रक अन्विति बैसायब एहि समय-सीमाक अन्तर्गत संभव नहि अछि। तेँ अतिव्याप्ति दोषक परिहारार्थ एतय विषय-वस्तुक मात्र दिशा-निर्देशक तत्त्वकेँ रेखांकित कयल जा रहल अछि। चौदहम सदीक प्रथम चरणमे लिखित वर्णरत्नाकर आचार्य ज्योतिरीश्वरक एक विश्वकोषात्मक कृति थिक। ई वास्तवमे एहन वर्णन-रत्नाकर थिक जाहिमे काव्यशास्त्रक यावतो मणि-माणिक्य अन्तर्हित अछि। की काव्य, की नाटक, की गीत-नृत्य ओ वाद्यक समाहार अपूर्व संगीतशास्त्र, की लोकसाहित्यक हीरा-जवाहिरात जे चाही सएह एतय हस्तामलक अछि। गद्यकाव्यक ई अनुपम कृतिरत्न वस्तुतः राजशेखरक काव्यमीमांसाजकाँ एक अद्भुत कवि-शिक्षाग्रन्थ थिक। भारतीय गद्यसाहित्यक इतिहासमे बाणभट्टक शैलीमे लिखल ई एक एहन आकर ग्रन्थ थिक जे सम्पूर्ण उत्तर भारतक भाषासाहित्य मध्य मैथिलीक ध्वजोत्तोलन करैछ। जखन आन-आन भाषा गद्यक मुँह नहि देखने छल तखन एहन धारावाहिक परिमार्जित गद्य मैथिली साहित्यक चमत्कारक वस्तु थिक। यैह स्थिति मैथिली पद्यसाहित्यक सेहो अछि। पन्द्रहम शताब्दीमे महाकवि विद्यापतिक अवतरण स्वर्णाक्षरमे लेखनीय थिक। विश्वमंच पर प्रतिष्ठित विद्यापति साहित्य पर जतेक समीक्षा भेल अछि से एकटा विश्व-रेकर्ड थिक। एहन भाग्यशाली शेक्सपियर सन विरले रचनाकार हेताह जे संसारमे एतेक फूल-पान लोढ़ने होथि। एकहि संग कतोक भाषासाहित्यमे परिव्याप्त आ समादृत विद्यापति संसारक इतिहासक अनमोल रत्न थिकाह। विशेष रूपसँ बाङ्गला आर हिन्दी सिंहद्वार पर बैसल आ अजेय छथि। विद्यापति साहित्य पर आलोचनाक तेहन टकसाल अछि जे एक स्वतन्त्र अध्ययनक अपेक्षा रखैछ। साराँशतः अपन प्रस्थान-बिन्दुपर मैथिली गद्य ओ पद्य दुनू सर्जना ओ शास्त्रक अप्रतिम कीर्तिमान गढ़ैत अछि। उभयत्र भारतीय साहित्यक नेतृत्व मैथिलियेक हाथमे सुस्थिर छैक जे हमरा लोकनिक लेल अतिशय गर्वक विषय थिक।

बीसम सदी आलोचनाक युग रहल। साहित्यिक समीक्षा आइ मैथिलीक एक स्वतन्त्र विधा बनि गेल अछि। समीक्षाक ई नव विद्या सर्जनात्मक साहित्यक अन्तःसाक्ष्य ओ प्राचीन काव्यशास्त्रक पारस्परिक संगतिसँ विकसित भेल अछि। आजुक संदर्भमे ई स्वतः सर्जनात्मक सामर्थ्यके प्राप्त क' लेलक अछि। ई सिद्धान्त आ व्यवहारक सुन्दर मणिकंचन संयोग थिक तथा सामाजिक एवं मनोविश्लेषणात्मकताक नव बाट फोलि साहित्यकेँ आधुनिक युगक मनोदशाक अनुरूप बना देलक अछि। आजुक प्रत्येक साहित्य उच्चस्तरीय समीक्षात्मक विश्लेषण ओ मूल्यांकनक पूर्वपिक्षा रखैत अछि। पाश्चात्य साहित्यक प्रभाव भारतीय दृष्टिकोणमे क्रान्तिकारी परिवर्तन आनि देलक तथा युगीन परिवेशमे नव-नव धारणासँ आलोचनाक पथ प्रशस्त कयलक अछि। नवयुग देशक राजनीतिक, सामाजिक ओ साहित्यिक गतिशीलताक युग थिक।

आधुनिक मैथिली समीक्षाशास्त्रक जन्मदाता चन्दा झा (1831-1907) थिकाह जे ग्रियर्सनक बाँहि पूरैत तमसाच्छन्न पथके आलोकित कयलनि। हुनक दृष्टिमे मैथिली पूर्वकालमे अपनहि शास्त्रसँ जोड़ल छल। विद्यापतिक पुरुषपरीक्षाक अनुवादसँ प्रारम्भ करैत ओ मैथिली गद्यक सूत्रपात कयलनि। सोत्साही शोधकर्ता तथा प्रौढ़ समीक्षक रूपमे ओ मैथिलीक विकासक लेल भगीरथ प्रयत्न कयलनि। विद्यापति, गोविन्ददास, साहेब रामदास ओ लोचनपर जे हुनक महनीय कृतित्व छनि से कतोक कुज्झटिकाच्छन्न आ तमसावृत्त अँश पर आलोक-रश्मि प्रक्षेपित करैछ। हुनक विद्वत्तापूर्ण भूमिका, कतिपय निबन्ध आर विचारोत्तेजक अनुसन्धान मैथिलीमे साहित्यिक समीक्षाक समारम्भ करैछ। महान पुरोधा तथा समर्थ पथ-प्रदर्शक रूपमे नव-नव आयामकेँ उद्घाटित करैत ओ मैथिलीमे जे-जे संभावना अन्तर्हित छलैक तकरा सबकेँ तरासिके बाहर निकाललनि। पछाति झुण्डक झुण्ड लेखकगण चन्दा झाक पदचिन्हक अनुसरण करैत व्याकरण, भाषाविज्ञान तथा समीक्षात्मक खोजसँ मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध बनौलनि। एहि अभियानमे त्रिविध विचारधाराक लोक संलग्न छलाह। प्रथम संवर्गमे भारतीय काव्यशास्त्रक पृष्ठपोषक संस्कृतज्ञ छलाह। दोसर वर्गमे पाश्चात्य विद्याविद् क्रियाशील रहथि। तेसर संवर्गमे मध्यममार्गीय एहन विद्वान सब छलाह जे सर्वोत्तम परिणामक लेल पूर्व आर पश्चिमक विराट समन्वय चाहैत रहथि। राजदरबारमे शास्त्रार्थक परिपाटी, पोथीक समीक्षा, विभिन्न भाषाक महत्त्वपूर्ण पुस्तकक अनुवाद, पत्र-पत्रिकाक उदय, अर्चा-चर्चा आदि बहुविध क्रिया-कलापसँ समीक्षाक विकासक गतिमे तीव्रता आनल गेल। मैथिली

अकादमी ओ चेतना समितिक एहि क्षेत्रमे स्वर्णिम अवदान छैक। समयाभावक कारण तकर समग्र लेखा-जोखा करब एतय संभव नहि थिक।

कविशेखर बद्रीनाथ झा (1893-1973) केर मैथिली काव्याविवेक (1994) भारतीय काव्यशास्त्रपर देल गेल भाषणमालाक लिखित वक्तव्य थिक जे विद्वान वक्ता द्वारा 1961 इसवीमे पटना विश्वविद्यालयमे उपस्थापित कयल गेल छल। संस्कृत काव्यशास्त्रक ई एक प्रामाणिक प्रस्तुति थिक जतय सात अध्यायमे साहित्यशास्त्रक सिद्धान्त, एकर परिभाषा, काव्यक स्वरूप, काव्य ओ नाटक मध्यक अन्तर दरसाओल गेल अछि। ई रस, ध्वनि, रीति, गुण ओ दोषक संगहि परम्परागत शैलीमे अलंकारक विश्लेषण करैछ। पण्डित शशिनाथ झा द्वारा सम्पादित ई कविताक उपयुक्त उद्धरणसँ सम्पुष्ट अपन परिभाषाक संग साहित्यिक समीक्षामे एक प्रवृत्ति विशेषक निर्धारण करैछ। समीक्षाकेँ सही मार्ग पर आरुढ़ करबाक दिशामे एहि रचनाक दूरगामी प्रभाव अछि। कविशेखरजीक महत्त्वपूर्ण स्थापनाक प्रासंगिकताक कतोक झंझावातके सहितो एखनहु बनले अछि :

जँ जाइन भावक साम्य सूझि
संस्कृत काव्यक प्रतिबिम्ब बुझि
तँ करथु सुधीजन समाधान
भाषा-सौन्दर्यक गति न आन। (एकावली परिणय)

वास्तवमे गीतात्मक सारसँ आप्लावित सम्पूर्ण मैथिली साहित्यक अन्तश्चेतनामे व्याप्त संस्कृतक प्राणधारा ओ रसवादी चेतना तेना ने समाहित छैक जे विरोधक धाही पाबि ई आर सुवर्णमय भ' गेल अछि।

रमानाथ झाक प्रबन्धसंग्रह (1963) आओर निबन्धमाला (1963) मैथिली समीक्षाक शिखर कृति थिक। प्रथममे प्राचीन मैथिली साहित्यक रूपरेखा, मैथिली नाटक, शिवसिंह, विद्यापति आ चन्दा झा पर पाँच गोट महत्त्वपूर्ण निबन्ध संकलित अछि। हिनक दोसर रचना विद्यापति जीवन ओ समग्र व्यक्तित्व आकलन करैछ। विद्यापति पर हुनक पाण्डित्यपूर्ण विनिबन्ध सेहो साहित्य अकादमीसँ प्रकाशित छनि। अनुवादक क्रममे पुरुषपरीक्षाक सुदीर्घ भूमिका हुनक सर्वाधिक बहुमूल्य प्रस्तुति थिक। विद्यापति साहित्यक मर्मज्ञ विद्वानक रूपमे ओ कतोक कुहेसकेँ फाड़ि नव आलोक पसारलनि अछि। कवि आर मनुष्यक रूपमे विद्यापति सन्तुलित चित्र प्रस्तुत करैत ओ विद्यापतिक मनुष्यत्वकेँ कविृत्वसँ

भरिगर मानैत छथि। डॉ. झाक वैदुष्यपूर्ण भाषण, अर्थपूर्ण भूमिका तथा तत्त्वान्वेषी खोजी लेख हमरा लोकनिक समीक्षा साहित्यकेँ समृद्ध करैत मैथिलीक नवलेखनक अनुरूप नवसँ नव प्रवृत्तिक सूत्रपात कयलक। पूर्व आ पश्चिमक विचारधाराक पारस्परिक संगति बैसबैत मैथिली समीक्षाक विकासक दिशामे डॉ. झा एक ठोस आधारभूमि तैयार कयलनि। वस्तुतः ओ मैथिलीक आधुनिक समीक्षाक युग-निर्माता छथि।

जयधारी सिंहक काव्यमीमांसा (1962-64) मैथिली समीक्षाशास्त्रक एक मीलक पाथर थिक जे प्रथमतः भारतीय काव्यशास्त्रकेँ मैथिलीभाषामे रूपान्तरित करैछ। विशुद्धता आर निर्णयक संग दू खण्डमे विभाजित ई परम्परागत शास्त्रीय शैलीमे काव्यक विभिन्न विशेषताक दिग्दर्शन करैछ। विद्वान लेखक शास्त्रक अन्तस्तलमे पैसि यथास्थान अपन सोद्धरण मन्तव्य प्रस्थापित करैत छथि। विचक्षण अन्तर्दृष्टिक संग ओ अपन टिप्पणीकेँ अँगरेजी आओर हिन्दीक उदाहरणसँ सम्पुष्ट करैत छथि। विभिन्न प्रवृत्तिक एकत्र समाहारक चेष्टाक संग लेखक मैथिली आलोचनाक फूलडालीकेँ रंग-बिरंगक फूल-पानसँ भरि देलनि अछि। डॉ. सिंहक समालोचनाशास्त्र (1978) व्यापक परिप्रेक्ष्यमे समीक्षाक प्रकृति, विस्तार, उपयोग आर प्रकारक वर्णन करैत भारतीय काव्यशास्त्रकेँ यूरोपीय समीक्षाक नव्यतम प्रवृत्तिक संग अन्विति बैसयबाक उद्देश्यसँ व्यावहारिक समीक्षाक प्रक्रिया ओ निहितार्थ प्रस्तुत करैत छथि। काव्यमीमांसाक विरुद्ध समालोचनाशास्त्र मुख्यतः पश्चिमीय सरणिपर गढ़ल अछि। अरस्तूसँ आइ.ए. रिचार्ड्स धरि तथा भरतसँ पण्डितराज जगन्नाथधरिक रूपरेखा, प्रमुख विशेषता निरूपित करैत ओ प्रदर्शित करैत छथि जे दुनू विचारधाराक बीच किछु आश्चर्यजनक समानता ओ समन्वयक तथ्य अन्तर्निहित अछि। आइ.ए. रिचार्ड्सक गहन अध्येताक रूपमे अपन क्षमता प्रदर्शित करैत विद्वान लेखक भारतीय रस सिद्धान्तक संग समानताधायक तत्त्वकेँ फरिछबैत छथि। हिनक कृति मैथिली आलोचनाक प्रति एक भव्य योगदान थिक। ई समेकित समीक्षा पर जोर दैत अछि जतय मैथिली अपना पैर पर ठाढ़ भ' सकय। तथापि एतय आलोचनाक आयाम एतेक नमरल अछि जे विद्वान लेखक अपन व्यापक दृष्टिकोणकेँ धरातल पर नहि उतारि सकलाह अछि। संश्लिष्टता आ जटिलतासँ आक्रान्त एकर पाठकीयता बोधगम्य नहि अछि। काव्यमीमांसाक तुलनामे ई बहुत झुझुआन लगैछ। हिनक काव्यमीमांसा

सन अपूर्व ग्रन्थ आब दुष्प्राप्य भ' गेल अछि। तेँ चेतना समिति जँ एकर दुनू खण्डक प्रकाशन क' सकय तँ मैथिलीक शिक्षा जगतमे बहुत पैघ अभावक सम्पूर्ति हेतैक।

बालकृष्ण झाक आलोचना सिद्धान्त (1981) टी.एस. इलियटक तीन प्रसिद्ध आलोचकीय निबन्धक अनुवाद प्रस्तुत करैत अछि। निस्सन्देह इलियट ओ ध्रुवतारा छलाह जे बीसम सदीक अर्ध शतकधरि (1915-1965) अँगरेजी कविता ओ समीक्षा पर अपन प्रभुत्व कायम कयने रहलाह; मुदा वर्तमान अनुवाद पोथीक शीर्षककेँ चरितार्थ करबामे समर्थ नहि सिद्ध होइछ। अनुवाद खाली शाब्दिक वाग्जाल बनिके रहि गेल अछि आर सहृदय पाठककेँ किछु हाथ नहि लगैत छैक।

श्रीकृष्ण मिश्रक साहित्य समीक्षाशास्त्र (1992) अपना ढंगक प्रथम कोटिक काज थिक। पूर्व ओ पश्चिमक तुलनात्मक समीक्षा-तत्त्वकेँ प्रदर्शित करैत ई मैथिली समालोचना साहित्यक एक नव कीर्तिमान गढ़ैत अछि। एतय विद्वान लेखक दुनू समीक्षा-पद्धतिमे आश्चर्यजनक समानताक दर्शन करैत छथि। हुनक दृष्टिमे अभिनवगुप्त द्वारा प्रतिपादित भरतक रस-सिद्धान्त अरस्तुक कैथार्सिस, टी.एस. इलियटक 'ऑबजेक्टिव कोर्रिलेटिविटी', एस.टी. कोलरिजक 'अल्टीमेट रियलिटी' तथा आइ.ए. रिचार्ड्सक 'साइको-एनैलिटिक परसेप्सन' सिद्धान्तक समकक्ष अछि। कोलरिजक कल्पना ओ तीव्र मनोभावक कुंजी तथा निर्वैयक्तिक ओ तटस्थताक तत्त्व अभिनवगुप्तक साधारणीकरणक सिद्धान्तक बहुत सन्निकट अछि। रस, ध्वनि, आओर औचित्य भारतीय काव्यशास्त्रक अनिवार्य तत्त्व थिक जकर अनुगूँज पश्चिमीय समीक्षाक नव्यतम प्रवृत्तिमे सबतरि सुनल जा सकैए। भारतीय शास्त्रवाद ओ पश्चिमीय धारणाक अन्तस्तलमे प्रवेश क' विद्वान लेखक कतोक विस्मयकारी उद्घाटन करैत छथि। हुनक दृष्टिमे इलियटक आनन्द (इनजोआयमेंट) सिद्धान्त तथा अभिनवगुप्तक 'बोध' आओर 'आस्वाद'क मध्य कोनो महत्त्वपूर्ण पार्थक्य नहि अछि। एहि तरहेँ सन्तुलित दृष्टिक सूत्रपात करैत ओ मैथिली समीक्षाक विकासक एक महान पथ-प्रदर्शक सिद्ध होइत छथि।

अपन समीक्षाक दोसर खण्डमे विद्वान लेखक पूर्व-पश्चिमक समेकित सिद्धान्त पर किछु विशिष्ट मैथिली ग्रन्थक मूल्यांकनक योजना बनौने छलाह जकरा अपन असामयिक निधनक कारण ओ पूरा नहि क' सकलाह। अँगरेजीमे कोलरिज आर अभिनवगुप्त पर हुनक तुलनात्मक समीक्षाक एक बेस गतगर ग्रन्थ

प्रकाशित छनि जकर मैथिली अनुवाद भारतीय ओ पाश्चात्य समीक्षाक समन्वयक दिशामे अपूर्व मार्गदर्शन करत। विशिष्ट अनुवादक एहि क्षेत्रमे मैथिली अकादमी जतेक पोथीक प्रकाशन कैलक अछि से गर्वक विषय थिक। ओहि क्रममे मैथिली अकादमी डॉ. श्रीकृष्ण मिश्रक "कोलरिज एण्ड अभिनवगुप्त"क अनुवाद कराए प्रकाशित क' सकैत तँ मैथिली समालोचनाके एक नव धार भेटितैक। ओा चेतना समिति सेहो अनुवादक दिशामे एकरा प्रकाशित करैत अपन प्रकाशनके एक नव धार द' सकैत अछि।

हरिमोहन मिश्रक आधुनिक मैथिली कविता (1980) साहित्यिक समीक्षाक प्रादुर्भावक दिशामे एक मीलक पाथर थिक। 1936 इसवीसँ 1977 धरिक अर्थात्, 'भुवन'क आषाढ़सँ उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क बाजि उठल मुरली (1977) धरिक काव्य-प्रवृत्ति ओ रुझानक ई समग्र आकलन करैछ। विद्वान लेखक एकरा 'आधुनिक काल'क रूपमे स्वीकार करैत छथि। भुवनसँ प्रारम्भ करैत ओ ईशनाथ झा (1907-'65), जयमन्त मिश्र (1913) आओर सुरेन्द्र झा 'सुमन' (1911-2002) केँ रोमाण्टिक मानैत छथि। वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (1911-'98) केँ यथार्थीवादी वा प्रगतिवादी तथा राजकमल चौधरी (1929-'67), मायानन्द मिश्र (1934-2013), गंगेश गुंजन (1940), रमानन्द रेणु (1934-2011), मधुकर गंगाधर (1933) तथा जीवकान्त (1936-2013) केँ नव कवि मानैत छथि। पाश्चात्य काव्य-प्रवृत्तिक उल्लेख संग ई बाङ्गला ओ हिन्दी साहित्य पर ओकर प्रभाव निर्दिष्ट करैछ। अन्तमे ई सरसरी नजरिसँ व्यंग्यात्मक काव्य ओ प्रबन्ध काव्य पर सेहो अपन विचार रखैत अछि। स्पष्ट अन्तर्दृष्टिक संग अपन धारणाक प्रति दृढ़ तथा तर्क-शक्तिमे प्रभावशाली विद्वान लेखकक अवधारणा छन्हि जे मैथिलीक प्रगतिवादी कविता ओ नव कवि हिन्दी ओ अन्य भारतीय भाषाक समतुल्य अछि। वर्तमान रचनामे पहिल बेर तुलना ओ व्याख्याक संग हमरा लोकनिकेँ आधुनिक पश्चिमीय तर्ज पर प्रौढ़ समीक्षात्मक विश्लेषण उपलब्ध होइत अछि।

शृंखलाबद्ध पत्र-पत्रिकाक उदय नवयुगक प्रवक्ता सिद्ध भेल। मैथिलीमे समीक्षा साहित्यकेँ समृद्ध करैत ओ सब लेखनकेँ आधुनिकतावाद दिश मोड़ि देलक। चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क मैथिलीक पत्रकारिताक इतिहास (1981) एहि दिशामे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ थिक। साहित्य अकादमी एकरा सर्वाधिक उपयुक्त बूझि 1983 इसवीमे पुरस्कृत कयलक। चेतना समिति द्वारा प्रकाशित

मैथिली साहित्यक रूपरेखा (1973-'74) समीक्षाक नवयुगक प्रतिमान गढ़ैत अछि। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यमे साहित्यिक मूल्यांकनक ई एक भव्य प्रस्तुति थिक।

साहित्यक समालोचना : दशा दिशा - वर्तमान संदर्भमे आधुनिक मैथिली समीक्षाक विशेषता ओ प्रकृति-प्रवृत्ति केँ प्रतिबिम्बित करबाक कारण सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण थिक। प्रतिवर्ष महत्त्वपूर्ण विचारगोष्ठी ओ परिचर्चाक आयोजन द्वारा समिति मैथिलीक हित-साधनमे केन्द्रीय भूमिकाक निर्वहण करैछ। शिखरिणी (1992) चेतना समितिक एक उत्कृष्ट प्रस्तुति थिक जे 1966-'91धरिक साहित्य अकादमी पुरस्कार सँ सम्मानित तेइस गोट शिखर कृतिक एकत्र समालोचनात्मक सर्वेक्षण प्रस्तुत करैछ। ई मात्र पुनर्विलोकन नहि, अपितु कतोक प्रौढ़ लेखक-वर्गक सर्वश्रेष्ठ आलोचनात्मक मूल्यांकन थिक। पुरस्कारक सम्पूर्ण लेखा-जोखा करैत ई लेखकीय उपलब्धि केँ रेखांकित करैछ। 'शिखरिणी' प्रौढ़ समीक्षकक प्रथम कोटिक निबन्धक संकलन तथा मैथिलीक समीक्षात्मक मूल्यांकनक चिर निधान थिक। आवश्यकता अछि जे दोसर भागक प्रकाशन द्वारा शिखरिणीकेँ अद्यतन कयल जाय। अतिशय हर्षक विषय जे हाल-सालमे समिति 'चेतना' शृंखलाक अन्तर्गत विद्यापति, मणिपद्म आदिक सर्वेक्षणक दिशामे नम्हर डेग उठौलक अछि। मुदा विद्वान सम्पादक महोदयसँ अपेक्षा छल जे भाषणमालाक अंशके अविकल नहि छापि, ओकरा परिमार्जित ओ अद्यतन बनाकेँ समितिक गरिमा आ मर्यादाक अनुरूप सिद्ध करितथि। वर्तमान रूपमे प्रकाशन पुनर्प्रकाशनक अपेक्षा रखैत अछि।

विद्यापति अनुशीलन एवं मूल्यांकन, भाग, 1-2 (1973) विद्यापतिक काव्यात्मक मूल्यांकनक एक आर दमदार उपलब्धि थिक। ई वीरेन्द्र श्रीवास्तवक सम्पादकत्वमे बहुमूल्य निबन्धक विशिष्ट संकलन थिक जे बाङ्गला ओ हिन्दी प्रतिरूपक संग विद्यापति पदक मैथिली मूलपाठक बहुत विस्तारसँ अन्तर्विश्लेषण करैछ तथा शब्द ओ अर्थ, दृश्य ओ ध्वनि, लय ओ छन्द तथा लोकोक्ति ओ रूपकक विशिष्ट तारतम्यकेँ फरिछबैत अछि। संगहि आर आगू बढ़ि ई कीर्तिलता ओ कीर्तिपताकाक शुद्ध पाठावलीक निर्माणक दिशामे पुरजोर प्रयत्न करैछ। मूल पाठक जीर्णोद्धार ओ अर्थक स्पष्टीकरणक दिशामे हर प्रसाद शास्त्री, उमेश मिश्र, सुभद्र झा, जयकान्त मिश्र, वीरेन्द्र श्रीवास्तव, शैलेन्द्र मोहन झा आओर गोविन्द झाक भूमिका अतिशय श्लाघनीय थिक। तथापि बहुतो घुरछीक समाधान एखनहुँ

अटकले अछि। संगहि विद्यापतिक काव्यालोचन पर ततेक ने भ्रमजाल पसरि गेल अछि जे विद्यापति साहित्यक पुनर्मूल्यांकन अपेक्षणीय थिक। मूलतः कथाकार रहितो विभिन्न विचार गोष्ठीक संयोजन ओ साहित्यिक निबन्धक बहुमूल्य सम्पादित पोथीक प्रकाशन द्वारा अशोक आकर्षण केन्द्रमे आबि रहलाह अछि। आलोचनाक क्षेत्रमे बासुकीनाथ झाक महनीय योगदान छन्हि। आर बहुतो गोटे जे एहि क्षेत्रमे क्रियाशील छथि तनिक यथासंभव लेखा-जोखा हम साहित्य अकादमीसँ प्रकाशित अपन इतिहास ग्रन्थक साहित्यिक समीक्षा विभागमे कयल अछि से द्रष्टव्य थिक।

काव्यशास्त्र संदर्भमे कविक कवि महाकवि सुमनक दृष्टि बहुत फरीछ अछि। ओ रचनाकेँ सीता, रचनाकारकेँ गणपति ओ शास्त्रकेँ नियामक लक्ष्मण-रेखा मानैत छथि। आचार्य सुमन सत्यम्, शिवम् ओ सुन्दरम् केर समरसतेके काव्य मानैत छथि—

सत्य ध्येय, शिव समाधेय, सौन्दर्य साधन।
जीवन काव्यादर्श प्रकृत रस गुण उपासना।।

कवि-मर्मकेँ आलोचके बुझि सकैछ। चाननमे जे गमकक संसार बसल छैक तकरा सुवासक पारखी कोनो पवने वा आलोचके दिग्दिगन्तमे पसारि सकैछ :

समालोचकक उपर जनु, कवयिताक दायित्व।
गन्धवहहिकेँ यदि च हो, चन्दनक सुरभित्व।।

फलतः आलोचनाक चोट सहब रचनाकारक हितमे छैक। तखन एहन आलोचको नहि चाही जे गमके बिला दैक आ सबतरि दुर्गन्धे पसारि दैक। ककरो अकास ठेका देब आर ककरो पताल धसा देब, आलोचना-कर्मक क्रूर उपहास थिक। अहो रूपम् आर अहो ध्वनिः केर कोकिल-वृत्ति अथवा गुणोमे दोषे दोष देखबाक काक-वृत्ति आलोचनाक दुर्गति थिक।

आचार्यक हंसग्राही दृष्टिमे रस ओ छन्दक बिना कविता श्रीहीन आ शुष्क बनि जाइछ :

रस बिनु कविता, कण्ठ बिनु गायन
आनन नयनविहीन
रजनी बिनु चन्द्रक, सजनी जनु
बिनु प्रियतम छवि-हीन

रसवादक महान परम्परामे दीक्षित काव्यालोचनक संदर्भमे आचार्य सुमनक ई स्थापना सर्वथा संग्रहणीय थिक।

नहि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते – आद्याचार्य भरतक स्थापना आइयो अकाट्य अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक काव्यात्मा-विमर्शमे अलंकार, रीति आर वक्रोक्तिक जतेक मतवाद छल से ध्वनिप्रस्थान परमाचार्य मम्मटतक अबैत-अबैत धाराशायी भ' गेल अछि। आनन्दवर्धनक 'काव्यस्यात्मा ध्वनिः' केर प्रतिष्ठा कायम अछि। मुदा साहित्यदर्पणकार कविराज विश्वनाथ धरि अबैत-अबैत रस ध्वनिये काव्यक आत्मा सिद्ध होइत अछि : वाक्यं रसात्मकं काव्यम्। वस्तुध्वनि ओ अलंकारध्वनि पछुआ भ' गेल। पण्डितराज जगन्नाथ तक अबैत-अबैत रस-सिद्धान्त साहित्यक शिखर पर विराजमान भ' गेल अछि जकर खण्डनक साहस फेर कोनो महामनीषी जुटा नहि सकलाह। आचार्य क्षेमेन्द्रक औचित्य सिद्धान्त आइयो अकाट्य बनल अछि :

अलङ्कारास्त्वलङ्काराः गुणा एव गुणाः सदा।
औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यजीवितम्।।

अलंकार समप्रदायक महान प्रवर्तक भामहक स्थापना आब ध्वस्त अछि : न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितामुखम्। ललनाक मुखके आब कोनो सज-धजक अपेक्षा नहि रहि गेलनि, रसमय लावण्यसँ मण्डित ओ तँ आब ओहिना अपूर्व सुन्दरी लगैत छथि–

प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीषु ममहाकवीनाम्।
यत्तत्प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवाङ्गनासु।।

तहिना आचार्य वामनक 'रीतिरात्मा काव्यस्य' अथवा 'काव्यं ग्राह्यमलङ्कारात्, सौन्दर्यमलङ्कारः' आदि आब रसोन्मुख भ' गेल अछि। हिनक 'सौन्दर्यमलङ्कारः' आइयो बहुत महत्त्वपूर्ण बनल अछि। अत्यन्त मौलिक प्रतिभाशाली आचार्य कुन्तकक स्थापना – 'वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्' बहुत मूल्यवान रहितो आब रसक उत्कर्षाधायक बनिकेँ विन्यस्त अछि।

सर्वैकत्वेन कविराज विश्वनाथक विविध मतक ई समाहार, साहित्यशास्त्रक नियामक तत्त्व थिक : शब्दार्थौ तावत् काव्यस्य शरीरम्, रसादिश्चात्मा, गुणाः शौर्यादिवत्, दोषाः काणत्वादिवत्, रीतयोऽवयवसंस्थानविशेषवत्, अलङ्काराः

कटककुण्डलादिवत्। साहित्यशास्त्रक अन्तर्गत शब्द आ अर्थ काव्यक शरीर थिक, रसादि आत्मा, शूरत्व-वीरत्व आदि गुण काव्य शरीरक आन्तरिक धर्म, दोष देहक काणत्व-कुब्जत्वक समान, रीति शरीरक सन्तुलित अंग-विन्यास सदृश ओ अलंकार कटक-कुण्डलादिजकाँ शरीरक शोभाधायक धर्म अछि। एहि तरहेँ रस काव्यक आत्मा आ गुण ओकर निकटतम आन्तरिक गुण थिक। आन सब शरीरक शोभावर्धक तत्त्व अछि। तेँ काव्यकेँ सर्वांगसुन्दर बनयबाक लेल सब अँश अंगांगिभावसँ विन्यस्त अछि। रस भेल अंगी, गुण आत्माक धर्म आर अन्यान्य सब अंगरूपसँ शरीरक शोभावर्धक तत्त्व थिक। वामनक 'सौन्दर्यमलङ्कारः' आर स्मृतिवचन 'रसो ह्येवं लब्ध्वा आनन्दी भवति' आइयो संग्राह्य थिक। सर्वांगसुन्दर एहि काव्यक लक्ष्य आनन्दक उपलब्धि थिक। जे सुन्दर से सत्य हैबे करत। अतएव, भारतीय उपनिषदक 'सत्यम्, प्रियम्, हितम्' आर प्लेटोक 'The True, The Good, The Beautiful' अर्थात्, सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् केर सामरस्ये सत्काव्यक कसौटी सिद्ध होइछ। कीट्सक A thing of beauty is a joy for ever. अर्थात्, सुन्दरताक एक अँश शाश्वत सौन्दर्यक निधान थिक। हुनक दृष्टिमे सत्य आ सुन्दरमे कोनो तात्त्विक भेद नहि छैक :

Beauty is truth, truth beauty – that's all.

Ye know on earth, and all ye need to know.

सौन्दर्य सत्य थिक आर सत्ये सौन्दर्य, यैह अछि एकर सारांश। हमरा लेल जतेक जानबाक विषय थिक से बस एतबे अछि।

भारतीय साहित्यशास्त्रक समुद्र-मंथनसँ जे अमृत निर्गत होइछ से थिक रस, ध्वनि आर औचित्य सिद्धान्तक चरम उपलब्धि आर व्यापकता। अरस्तुक कैथार्सिस थेओरी भरतक रससिद्धान्तक सन्निकट अछि। कोलरिज ओ अभिनवगुप्तमे आश्चर्यजनक साम्य अछि। टी.ए. इलियटक आत्मामे भारतीय उपनिषद् आर साहित्य रसैत-बसैत छनि। पाश्चात्य साहित्यमे तुलनाक आरो बृहत्तर संदर्भ अछि जे निर्धारित समय-सीमामे निरूपित करब एतय संभव नहि थिक। तेँ एखन एतबे पर्याप्तः

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
रसभावप्रसक्तानां वसुधैव कुटुम्बकम्।।

खाली क्षुद्र हृदयेक लोकक मानसिकता एहन पतनशील छैक जे ओ सोचैछ जे ई हमर थिक आर ओ आनक। वस्तुतः रस ओ भावक संसारमे रमल उदारमनस्क लोक साधारणीकृत भ' सौंसे संसारकेँ अपन परिवार मानैत अछि। राग-तत्त्वक यैह सम्प्रसार ओ समष्टि चेतना साहित्यशास्त्रक कुंजी थिक। अग्निपुराणक ई उद्घोषणा सब कसौटी पर गस्सल अछि : वाग्वैदग्ध्यप्रधानेऽपि रस एवात्र जीवितम्। अर्थात्, वाणीक कविकौशलक प्रधानता रहितहुँ रसे साहित्यिक प्राण थिक।

अन्ततः एहि सारस्वत यज्ञक महान अनुष्ठानमे महामनीषी आचार्य मम्मटक तुकमे तुक मिला हम अपन काव्य-भारतीक जय-जयकार करय चाहब :

नियतिकृतनियमरहितां ह्लादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम्।
नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति।।

अर्थात् जे कविवाणी विधाताक संसारक प्राकृतिक नियमसँ मुक्त अछि, एकमात्र आनन्दक विधात्री अछि सुख-दुःख-मोह स्वभावात्मक नहि, विधि-निषेधक कारणादिक परतन्त्रताक पाशसँ मुक्त सर्व-तन्त्र-स्वतन्त्र अछि तथा जे शृंगारादि नौ रसक समावेश सँ मनोरम अथवा नित्य नूतन आनन्दसँ विमोहित करयवाली अछि — तेहन अपूर्व काव्य-सृष्टिक विधायिका कविक भारती अर्थात् वाग्देवीक जय हो, जय हो, जय हो!!!



ललितेश मिश्र

पाश्चात्य समालोचना शास्त्र ओ मैथिली साहित्य

आलोचना शब्द, जे समीक्षा, समालोचना, विवेचना आदि पर्यायवाची शब्दक रूपमे सेहो अभिहित होइछ, अंगरेजी मे प्रयुक्त क्रिटिसिज्म (Criticism) शब्दहिक रूपान्तर मानल जाइत अछि। अंगरेजीक क्रिटिसिज्म शब्दक मूल धातु रूप थिक 'क्रिटिज' जकर अर्थ होइछ निर्णय करब, विवेचन करब, मूल्यांकन करब।

संस्कृत मे आलोचना शब्द 'लुच' धातु सँ उत्पन्न थिक जकर अर्थ देखब थिक तथा एहि मे 'ल्युच' प्रत्यय जोड़ि देला सँ 'लोचन' शब्द निर्मित होइछ जाहि मे 'आङ' उपसर्ग लगाए आलोचना शब्दक व्युत्पत्ति भेल मानल जाइत अछि। एतावता, कोनो कृति केँ सम्यक् रूप सँ देखब चतुर्दिक दृष्टि राखि आ तकर मूल्यांकन, परीक्षण करब सैह आलोचना, समीक्षा, समालोचना कहाओत।

हिन्दी मे सेहो आलोचना, समालोचना वा समीक्षा कर्म एही अर्थ मे प्रयुक्त होइछ। ओना एतए ई कहब अनुपयुक्त नहि होएत जे हिन्दी अथवा आन कोनहु भारतीय भाषाक आलोचना शास्त्र मुख्य रूप सँ संस्कृतहि समालोचना विमर्श पर आधारित अछि, परन्तु पाश्चात्य आलोचना पद्धतिक व्यापक प्रभाव सेहो एहि सभ भारतीय भाषा केँ के कहए विश्व भरिक भाषा-साहित्य पर पड़ल अछि। दुनू-पाश्चात्य ओ पौर्वात्य समालोचनात्मक परम्पराक-समन्वय सँ एक गोट सशक्त, अर्थवान विधाक रूपमे उदित भए आलोचना कर्म साहित्यकेँ परिष्कृत ओ प्राणवन्त बनएबा मे सर्वतोभावेन सहायक भेल अछि।

संस्कृत मे ईसा पूर्व कालक भामह सँ लए कए दण्डी (छठम शती), आनन्द वर्धन (नवम शती), आचार्य मम्मट (एगारहम शती) विश्वनाथ (तेरहम शती)

राजशेखर, भट्ट नारायण आदि आलोचना कर्मक सिद्धान्त निरूपण विस्तार सँ कएने छथि। ओहि निरूपित मत सभहिक आधार पर कोनहु कृतिकार्यक अनुशीलन, विवेचन हेतु ज्ञान सम्पन्नता, तटस्थता, सहृदयता, रूचि परिष्करण, महत्त्व सिद्धि, रचनाकारक पथ प्रदर्शन आदि सदृश तत्व समालोचना साहित्य लेल अनिवार्य मानल गेल। आलोचना केँ 'दोषाविष्करण'क साधन नहि मानल गेल, अपितु तकरा हेय ओ मत्सर बूझल गेल।

एतए एहि तथ्यक उल्लेख करब आवश्यक अछि जे बहुत समय पूर्व संस्कृत ओ अंग्रेजी तथा पाश्चात्य साहित्यमे आलोचनाक अर्थ दोषाविष्करणे बूझल जाइत छल। परंच, बाद मे समालोचनाक स्वरूपमे परिवर्त्तन आएल आ दोषाविष्करण केँ खलत्व बूझि तकर त्याग कएल गेल।

इहो कहल जाइत अछि जे दोषाविष्करण पद्धति अथवा खलत्व सँ परिपूर्ण समालोचनाक कारणेँ अंग्रेजीक प्रसिद्ध रोमान्टिक कवि जे अंग्रेजी काव्यक उन्नैसम शती मे स्तंभ मानल जाइत छथि, अवसाद ग्रस्त भए अल्पजीवी भेलाह।

पाश्चात्य साहित्यहु मे समय-समय पर विभिन्न आलोचना संबंधी धारणा उपस्थापित कएल गेल। आलोचना कर्मक उपादेयता, महत्ता ओ एहि पांडित्यपूर्ण कार्य मे प्रदर्शित भेल साधित विवेक केँ ध्यान मे राखि पाश्चात्य जगत मे आलोचना-समालोचना केँ एक गोट स्वतंत्र शास्त्रक रूपमे परिगृहीत कएल गेल अछि। ई जनतब होएब आवश्यक अछि एहि प्रसंग मे जे पाश्चात्य समालोचना शास्त्र सँ अंगरेजी आलोचना कर्म बूझब असंगत ओ भ्रमपूर्ण अछि। वस्तुतः दुनूक अस्तित्व पृथक अछि। ओना दुनू साहित्यमे आलोचना संबंधी अवधारणा कोनो पैघ मौलिक विभेद नहि अछि। यथार्थ मे इहो एक गोट विस्मयक विषय अछि जे पाश्चात्य अथवा अंगरेजी आलोचना कर्मक स्वरूप मिला-जुला कएं ओएह अछि जे संस्कृतक आचार्य जन स्थापित कएने छथि। मूल रूप मे दुनू विचार सरणि। एकहि प्रकारक सिद्धांतक प्रख्यापन करैत अछि।

पाश्चात्य समालोचना शास्त्रक मूल उद्गम स्थल थिक यूनान (ग्रीस) आ पश्चात् रोम। अंग्रेजी साहित्यक आलोचना शास्त्र सँ बहुत पूर्वक पाश्चात्य आलोचना शास्त्र थिक। पाश्चात्य आलोचना शास्त्रक प्राचीनतम रूप हमरा लोकनि केँ होमर केर 'इलियड' एवं ओडिसी' नामक महाकाव्य मे देखाए पड़ैत अछि। होमरक पश्चात् तँ हेसियड, पिन्डार सन कतोक जन ओतए समालोचना

शास्त्र केँ विकसित कएलनि। यूनानक प्राचीन साहित्य चिंतक मे सुकरातक स्थान विशिष्ट मानल जाइत अछि। कारण जे ओएह अपन वैचारिक स्थापना सभहिक आधार पर नीतिपरक आलोचनाक मार्ग प्रशस्त कएल। हुनके शिष्य, दार्शनिक ओ कला मर्मज्ञ प्लेटो अपन तीस गोट संवाद आ कथोपकथन द्वारा पछाति अपन समालोचना संबंधी सिद्धांतक प्रतिपादन कएलनि आ तेँ पाश्चात्य काव्य शास्त्रक आरंभ हुनकहि सँ विदित होइछ।

प्लेटोक दृष्टिमे साहित्यक उद्देश्य मात्र आनन्द प्राप्त कराएब टा नहि थिक, अपितु, सत्यक आधार पर ओकर मूल्यांकन होएब थिक। हुनक मानब छलनि जे साहित्यक मुख्य प्रयोजन मानब चरित्र केँ प्रभावित करब थिक आ तेँ स्रष्टा द्वारा साहित्यमे आत्माक प्रच्छन्न शक्ति केँ प्रकाश मे आंनब कर्तव्य थिक। ओ एहू विषयक संकेत कएने छथि जे स्रष्टा साहित्य सृजनक माध्यमेँ मनुष्य जीवन केँ श्रेष्ठतम बनएबामे तथा जीवनक पुनर्निर्माण मे सहायक होअय।

तदनन्तर अरस्तू, जे प्लेटोक अत्यंत प्रतिभावान शिष्य छलाह सेहो समालोचना शास्त्रक दुई गोट प्रमुख सिद्धान्तक स्थापना कएल जे अनुकरण सिद्धान्त (Theory of Imitation) आ विरेचन सिद्धान्त (Theory of catharsis)क नामें जानल जाइछ। ओ साहित्यक प्रयोजन केँ स्पष्ट करैत कहल जे साहित्यक उद्देश्य उपदेशात्मक तथा आनन्दानुभूति थिक। साहित्य सँ मानवीय भावनाक सिंचन नहि विरेंचन होइत अछि ओ कलाक लक्ष्य मनोविकारक रेचन अथवा शुद्धि थिक। परन्तु महान यूनानी चिंतक लोंजाइनस अथा लोंगिनस (Longinus) किछु भिन्न रूप मे समालोचनाक कर्तव्य केँ बतौलनि। अंग्रेजीमे रूपान्तरित हुनक प्रसिद्ध कृति "ऑन द सब्लाइम (On The Sublime)" मे कहल गेल अछि जे साहित्यक आत्मा थिक उदात्तता आ उदात्तता भेल अभिव्यंजनाक श्रेष्ठता, विशिष्टता। साहित्यमे केवल आनन्दक बोध कराएबे उदात्त तत्वक कार्य नहि। अपितु कोनो मंत्र शक्ति सदृश ओहि बोध केँ उपर उठबैत आनन्दातिरेकक अवस्था मे पहुँचाए देब, सैह भेल उदात्तता।

लोंजाइनस अथवा लोंगिनसक विचार कैक दृष्टिएँ महत्वपूर्ण अछि। ओ साहित्यक उत्कृष्टताक हेतु आनन्द बोध केँ तँ प्रमुख तत्त्वक रूप मे स्वीकार करितहि छथि, संगहि स्रष्टाक लेल परम्परानुगामी होएब सेहो लाभप्रद मानल अछि तथा समालोचक मे कला, सौंदर्यशास्त्रक अध्ययन, अनुभव ओ ज्ञान केँ आवश्यक कहल अछि।

लोंजाइनसक पश्चात् यूनानमे समालोचना शास्त्रक प्रकाश मद्धिम भए रोम मे स्थानान्तरित भए गेल जतए सिसरो, वर्जिल, लुक्रेटियस, होरेस आदि सन मनीषी काव्य चिन्तक सेहो स्वतंत्र रूप सँ समालोचना कर्मक मानदंड स्थापित कएलनि। रोमी वा लैटिनी विद्वान सभहि मे साहित्यालोचनक क्षेत्रमे सर्वाधिक योगदान होरेस एवं क्विंटीलियनसक मानल जाइत अछि। होरेस साहित्य केँ मुख्यतया समाज सापेक्ष औचित्यक दृष्टि सँ देखबाक-परखबाक पक्षधर छथि तँ क्विंटीलियनस साहित्यमे शैली, शब्द चयन, शब्द संघटना, मूर्त्त विधान, भाषा शक्ति आदिक आधार पर ओकर श्रेष्ठता मानबाक आग्रही छथि।

क्विंटीलियनसक उपरान्त सँ रोमी समीक्षा शास्त्रक महत्व क्रमशः घटैत गेल ओ इंगलैंड मे प्रायः सोलहम शताब्दी सँ समालोचनाक क्षेत्र मे नव जागरण कालक आरंभ भेल मानल जाइत अछि। सोलहम सँ सत्रहम शताब्दी धरि अबैत-अबैत अंग्रेजी आलोचना शास्त्रक उल्लेखनीय प्रगति भेलैक। अंग्रेजी आलोचना पाश्चात्य आलोचना पद्धति सँ बहुत किछु प्रभाव ग्रहण कएलक तथा ओ स्वतंत्र रूपेँ आओरो विकसित हो, तदर्थ भाषाक विकास पर आलोचक जन विशेष ध्यान देल। एहि प्रसंग ई स्मरण राखब अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि जे अंग्रेजी आलोचनाक उत्तरोत्तर बृद्धिगत होएबा मे अंग्रेजीक विकसित गद्यक बहुत पैघ योगदान अछि। अब्राहम काउली, फिलीप सिडनी, बेन जानसन, जॉन ड्राइडेन, स्पेंसर, एलेक्जेंडर पोप, सैमुएल जॉनसन आदि सन समालोचना शास्त्री जनक विचार जानला सँ ताहि विषयक अभिज्ञान बेस नीक जकाँ होइत अछि।

तद्युगीन जॉन ड्राइडेनक दृष्टिमे साहित्य एक गोट कलात्मक अनुकरण होएबाक चाही तथा ओकर प्रयोजन आनन्दात्मकताक संग उपदेशात्मकता मे निहित हो। एलेक्जेंडर पोपक कहब छनि जे प्रकृतिक अनुकरण भेलाक उत्तरे कोनो साहित्यक प्रसंग कोनो आलोचनात्मक निर्णय देल जा सकैछ तथा ओहि कलाक परीक्षण संभव भए सकैछ। सैमुएल जॉनसन मानैत छथि जे अज्ञानजन्य अवस्था, मोनक काल्पनिक उड़ान तथा परीक्षण नियमक निरंकुशता सँ साहित्यिक आलोचना केँ दूर रखबाक चाही तथा बौद्धिक आधार पर साहित्यक मूल्यांकन आलोचकक कर्तव्य थिकनि। समीक्षक विवेकक आलोक मे कोनो कृति केँ देखथि आ ने तकर प्रशंसा करथि आ ने निन्दा।

एतए ई सूचित करब आवश्यक अछि जे सन् 1700 ई. मे जॉन ड्राइडेनक निधनक पश्चात् अंग्रेजी आलोचना जे बहुत समुन्नत भेल ताहि मे सामाजिक एवं बौद्धिक विकासक एक गोट विशेष कारण छल। बीसम शताब्दी धरि अबैत-अबैत अंग्रेजी ओ पाश्चात्य आलोचना मे सराहनीय अभिवृद्धि भेलैक आ विश्वक समस्त साहित्य पर पाश्चात्य समालोचना शास्त्र द्वारा स्थिर कएल प्रविधिक व्यापक प्रभाव पड़ल। वाल्टर पीटर, एडगर एलेन पो, मैथ्यू अर्नाल्ड क्रोंचे, आइ. ए. रिचर्ड्स, एफ.आर. लिविस, टी.एस. इलियट, जैक्स डेरिडा आदि साहित्यशास्त्री जन तँ समालोचना शास्त्रक व्यापकता, महत्ता, स्वरूप केँ एक गोट नव क्षितिज प्रदान कएलनि जाहि सँ साहित्य मे गतानुगतिकता, जड़ता आदिक समाप्तिक द्वार प्रशस्त भेल आ समालोचना कर्मक वैज्ञानिक ओ सुसंगत मार्ग प्रसृत भेल।

उपरोक्त साहित्य मीमांसक जन अपना अपना ढ़ंगे साहित्यमे समालोच्य तत्त्वक व्याख्या उपस्थित कएने छथि। किन्तु, सर्वांगपूर्ण व्याख्याकारक रूपमे बेनेदेतो क्रोंचे, आइ.ए. रिचर्ड्स ओ टामस स्टर्न्स इलियट बेस प्रतिष्ठित भेलाह अछि आ हुनका लोकनिक समालोचना सिद्धान्त व्यावहारिक स्तर पर सर्वमान्य भए सर्वत्र प्रशंसित भेल अछि। कारण एहि प्रकारक समालोचना सिद्धान्त मे शास्त्रीयता, व्यावहारिकता आ तत्वान्वेषण- सभ एकहि संग समाविष्ट भए समालोचना कर्म केँ एक विशिष्ट, अत्यंत उपादेय कार्य बनाए देने अछि।

उनैसम शताब्दीक उतरार्द्ध मे अवतीर्ण भेल इटली देशक बेनेदेतो क्रोंचके 'एस्थेटि' नामक पुस्तक लीखि कहल जे मनुष्यक आत्माक सैद्धान्तिक ओ व्यावहारिक—इएह दूई गोट क्रिया होइछ। मनुष्य सैद्धान्तिक क्रिया द्वारा ज्ञान प्राप्त करैछ आ व्यावहारिक क्रिया द्वारा ओहि ज्ञान केँ कार्य रूपमे परिणत करैछ। एही सँ उद्भूत प्रातिभ क्रिया (Intuitive activity) केँ ओ सहजानुभूति कहि साहित्य सँ ओकर संबंध मानल अछि। हुनक कहब छनि जे "संवेदना जखन अंतर्मनक क्रिया द्वारा परिच्छादित कए लेल जाइछ तखनहि ओकर मूर्त्त रूपक (Concrete form) सृजन होइछ। समालोचकक द्रष्टव्य इएह विषय थिक।

अंग्रेजी वा पाश्चात्य समालोचना साहित्य मे आइ.ए. रिचर्ड्स एक एहन साहित्य शास्त्री भेल छथि जे पहिल-पहिल आधुनिक मनोविज्ञानक आधार लए कए साहित्य (काव्य)क विवेचन ओ मूल्यांकनक आवश्यकता देखाए आलोचनाक वृहत्तर आयामक परिचय देलनि। रिचर्ड्स सौंदर्यानुभूति केँ काल्पनिक कहलनि,

कारण जे मनोविज्ञानक आधार पर ओ तकरा कोनो सुस्पष्ट मानसिक अवस्था नहि स्वीकार कएल। ओ सौंदर्यानुभूतिक संबंध आदर्शवाद सँ होयबाक बात कहलनि।

रिचर्ड्सक मतानुसार ''अनुभव केँ पृथक करब तथा ओकर मूल्यांकन करबाक प्रयत्ने आलोचना थिक।'' अनुभवक स्वरूप अथवा ओकर मूल्यांकन ओ सम्प्रेषण बिना तत्संबंधी सिद्धान्त के बूझने सहज-संभव नहि होइछ आ तेँ समुचित आलोचना पद्धति हेतु मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया केँ उपयोग मे आनब आवश्यक अछि।

रिचर्ड्सक कैक गोट सैद्धांतिक उपलब्धि मे सँ एक गोट प्रेषणीयताक सिद्धान्त (Theory of communication) अदि जकर चर्चा आवश्यक अछि। प्रेषणीयता सँ हुनक अभिप्राय यैह अछि जे दोसर जनक मोन मे स्वानुभूत भावक दशा उत्पन्न करब। ओ कहलनि जे ''जखन हम कोनो भावक अनुभूति करैत छी तँ आवेष्टनक संग हमर एक गोट विशेष संबंध भए जाइत अछि। जँ ओहने आवेष्टन आ संबंधक द्वारा साहित्य संयोजन कएल जाए तँ ओही प्रकारक भाव दोसरहु केँ होएतनि। उचित बिम्बक प्रयोग, विशिष्ट साहचर्य योजना एवं भावात्मक संबंध स्थापनक माध्यमेँ एहि प्रकारक कार्य साधित होएत। इएह अभिव्यक्ति ओ प्रेषणीयताक प्रक्रिया यथार्थ कलात्मक प्रक्रिया होएत।

बीसम शताब्दीक सर्वाधिक उल्लेखनीय आलोचक जे आधुनिक पाश्चात्य समालोचना शास्त्र केँ निर्विवाद रूपेँ सभ सँ बेसी प्रभावित कएल से छथि– टी. एस. इलियट। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न इलियट एकहि संग कवि, नाटककार, निबंधकार होइत आलोचनाक क्षेत्र मे बहुत महत्त्वपूर्ण ओ उल्लेखनीय कार्य सम्पादित कए अंग्रेजी वा पाश्चात्य समालोचना शास्त्र केँ सर्वथा नव स्वरूप प्रदान कएलनि। परम्परा, व्यक्तिगत प्रतिभा, जकरा ''कारयित्री प्रतिभा'' कहबैक, शास्त्रीयता, साहित्य सर्जन मे निर्वैयक्तिता, इतिहास बोध, तथ्य बोध आदि सन पद केँ वैज्ञानिक रीतिएँ व्याख्यायित ओ परिभाषित कए आलोचनाक दृष्टि केँ व्यापक, व्यावहारिक ओ सत्यान्वेषी बनाओल।

आलोचना कर्म ओ तकर प्रयोजन केँ स्पष्ट करैत लिखल जे लिखित रूप मे कोनहु कलाकृतिक व्याख्या-विवेचन ओ तकर प्रतिपादन करब सैह थिक आलोचना। मुदा ताहि व्याख्या-विवेचन ओ प्रतिपादन सँ रूचिक परिष्कृति

अवश्य होअए। इलियटक विचार मे आलोचक के अपन सभ पूर्वाग्रह सँ मुक्त भए तथ्य-बोधक संग अपन विचारक तुलना करैत यथार्थ धरि पहुँचब आवश्यक होयतनि। ओ आदर्श आलोचना कर्म केँ भावावेशक स्थान मे तथ्य-बोध (सेंस ऑफ फैक्ट) आधारित अनुशीलन कार्य बुझैत छथि तथा व्याख्यात्मक आलोचना केँ महत्त्वक विषय नहि स्वीकार कए समसामयिक जीवनक चिन्ता, भीषणता ओ महत्ताक अभिव्यक्तिहि केँ साहित्य (काव्य)क लक्ष्य मानैत छथि।

इलियट सर्जक ओ समालोचक लेल जातीय परम्परा आ इतिहास बोध केँ आवश्यक कहलनि अछि तथा परम्परा केँ व्यापक अर्थ मे बुझबाक निर्देश देलनि अछि। हुनक कहब अछि जे परम्परा केँ हमरालोकनि पूर्वज सँ विरासत मे नहि प्राप्त कए सकैत छी, अपितु, तदर्थ हमरालोकनि केँ ऐतिहासिक चेतना (हिस्टोरिकल सेंस) होएब आवश्यक अछि। ओ मानैत छथि जे जेना कोनो नव सर्जक परम्परा सँ प्रभावित होइत छथि, तहिना परम्परागत क्रम सेहो नवीन भाव-बोधक उदय सँ प्रभावित होइछ। आ तेँ वर्त्तमानक कारण अतीत मे परिवर्त्तन होइछ आ अतीत सँ सेहो वर्त्तमान निर्देशित होइछ। परम्परा हुनक दृष्टि मे प्रौढ़ता, परिपक्वताक सूचक थिक। परम्पराक महत्ता केँ निरूपित करैत ओ कहैत छथि– "By iosing tradition we iose owr hold on the present."

अपन निर्वैयक्तिताक सिद्धान्त (थ्योरी ऑफ इम्पर्सनल आर्ट)क प्रतिपादन करैत इलियट अपन मत व्यक्त करैत कहल अछि जे निर्वैयक्तिताक स्थिति मे कला विज्ञानक समीप पहुँचि जाइत अछि आ साहित्य व्यक्तिगत मनोभावक उत्कृष्टता पर निर्भर नहि भए कलात्मक प्रक्रियाक उत्कृष्टता सँ संबलित होइछ। ओ आगां कहलनि अछि जे साहित्य (काव्य) भावक उन्मोचन नहि, अपितु ताहि सँ पलायन थिक; काव्य व्यक्तित्वक अभिव्यक्ति नहि, ताहि सँ पलायन थिक।

आधुनिक मैथिली साहित्य मे वैज्ञानिक रूप सँ समालोचना कर्मक आधारशिला रखनिहार निविष्ट समीक्षक आचार्य रमानाथ झा इलियट द्वारा प्रतिपादित समीक्षा सिद्धान्तक प्रसंग कहल अछि जे ''इलियटक समालोचना कर्ममे दुइए टा कार्य छैक– एक तँ टीका ओ व्याख्या द्वारा साहित्यिक कृतिक आशय केँ स्फुट करब, आ दोसर, ओहि स्फुटीकरण सँ ओहि कृतिगत प्राशस्त्य केँ स्थापित कए ध्यान केँ अनावश्यक ओ आनुषंगिक विषय सँ हटाए आवश्यक ओ मुख्य विषय दिशि आकृष्ट करब जाहि सँ पाठकक रूचिक सम्यक्तया परिष्कार भए सकए....।'' (विविध प्रबंध)

एहि प्रकारेँ यूनानी, रोमी आ अंग्रेजी समालोचना शास्त्र पर जँ हमरा लोकनि दृष्टिपात करी तँ इएह ज्ञात होएत जे पाश्चात्य आलोचना शास्त्र मे आलोच्य विषयक समीक्षण लेल विषय बोध आ प्रभाव-ग्रहण, व्याख्या ओ विश्लेषण, मूल्यांकन ओ निर्णय, तटस्थता, सहृदयता, औचित्य ज्ञान, भाव प्रेषणक क्षमता, परम्परा ओ ऐतिहासिक चेतनाक संपन्नता आवश्यक तत्त्व थिक जकरहि आधार पर सुसंगत आलोचना कर्म संभव अछि, पाठकक रूचि परिष्कृति संभव अछि।

संस्कृत साहित्य मे काव्यशास्त्री जन सेहो एही रूपेँ समालोचना शास्त्र केँ निरूपित कएल अछि आ एहि प्रकारेँ कएल गेल आलोचना कर्महि केँ ''भावयित्री प्रतिभा''क प्रतिफल मानल अछि। संस्कृत काव्यशास्त्र तँ बहुत प्राचीन अछि आ तेँ ओकर वैचारिक क्षितिज विशिष्ट ओ व्यापक सेहो अछि।

मैथिली साहित्य मे समालोचना साहित्यक शिखर पुरुष आचार्य रमानाथ झा, जे पौर्वात्य ओ पाश्चात्य आलोचना पद्धति सँ पूर्णतः भिज्ञ छलाह, संस्कृत काव्यशास्त्रक व्यापकता, विशिष्टता, परम्पराक प्राचीनता तथा भारतीय भाषाशास्त्रक लेल तकर उपयोगिता केँ मुख्यतः दृष्टि मे राखि मैथिली मे व्यापक आलोचना-कार्य सम्पादन हेतु 1950क दशक मे तीन गोट निबंध यथा, समालोचना (1956), आलोचना साहित्य (1959) ओ समीक्षा वृत्ति, जे पहिने प्रथम अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलन, मैथिली साहित्य परिषद, मधुबनी मे पठित भेल छल ओ पछाति विविध प्रबंध (1970) मे संकलित भेल, लीखि मार्गदर्शन कएल। ओ स्वयं अपनहु ताहि मानकक आधार पर कतोक समालोचना-समीक्षा कएल जे आइ प्रतिमान बनल अछि। हुनक समालोचना मे अपूर्व वैचारिक एकतानता, व्याख्या-विश्लेषणक अपूर्व क्षमता, विषयक सम्यक ज्ञान, कृतिक सौंदर्यानुभूतिक विशद तथा पाठकक रूचि परिष्कृति हेतु प्रांजल भाषाक प्रवाहमयता, सुष्ठुता आदिक सभतरि दर्शन होयत।

''समालोचना'' शीर्षक निबंध मे ओ लिखल अछि : ''परन्तु जहिना कारयित्री प्रतिभा कवि कर्मक हेतु आवश्यक तहिना भावयित्री प्रतिभा सेहो अछि समालोचना कर्मक हेतु। परन्तु ई दुहू प्रतिभा दू रंगक अछि; कारयित्री प्रतिभाक संग-संग भावयित्री प्रतिभा रहिओ सकैत अछि ओ से रहला उत्तर कविकर्म दोष सँ शून्य भए सकैत अछि, परन्तु भावयित्री प्रतिभा स्वतंत्र थिक ओ जे व्यक्ति

कहिओ कोनहु प्रकारक कविकर्म नहि कएल अछि सेहो उत्तम समालोचक भए सकैत छथि। एतावता स्पष्ट अछि जे कारयित्री प्रतिभा शक्ति थिक... ओ भावयित्री प्रतिभा शास्त्र थिक। ओहि हेतु पूर्ण अध्ययनक अपेक्षा छैक ओ मुख्यतः ओहि कविलोकनिक क्रमबद्ध ओ नियमानुकूल अध्ययन आवश्यक छैक।''

दोसर स्थल पर ओ पुनः कहैत छथि : ''जे समालोचना कर्म थिक से भावयित्री प्रतिभा मात्रहि सँ नहि भए सकैत अछि, एतदर्थ शास्त्रीय ज्ञान सेहो आवश्यक ओ तेँ ई कर्म अत्यन्त कठिन ओ महत्त्वपूर्ण अछि।'' ओ भावयित्री प्रतिभाक तीन गोट श्रेणीअहुक यथा, विवेकी, मत्सरी तथा तत्त्वाभिनिवेशी, चर्चा कएने छथि आ विवेकी भावकत्त्व केँ उत्तम मानल अछि तथा समीक्षाक लेल कोनहु साहित्यिक कृतिमे गुण तत्वक नियोजन जे उपस्थापित विषय, भाषाशैली, वर्णनशैली ओ औचित्यक प्रकटीकरण मे निहित होइछ तकर परीक्षण करब आवश्यक बुझैत छथि। एहन परीक्षणक हेतु भावकता अर्थात काव्य रूचि ओ सहृदयता एक गोट अनिवार्य तत्व थिक सेहो मत ओ प्रकट कएने छथि।

एतावता विचार कएला उपरान्त स्पष्टतया ई प्रतिबोधित होएत जे पाश्चात्य समालोचना शास्त्र ओ संस्कृत साहित्यक काव्यशास्त्रक तात्विक आदर्श-सिद्धान्तहि पर आधारित आचार्य रमानाथ झाक समीक्षा संबंधी अभिमत छनि जकरा ओ मैथिली साहित्यक सर्वतोभावेन अभिवृद्धिक लेल प्रयोजनीय कहल अछि।

आब पाश्चात्य, पौर्वात्य एवं आचार्य रमानाथ झा द्वारा निरूपित समालोचना कर्मक आदर्शक पृष्ठभूमि मे मैथिली साहित्यमे आलोचना विधाक स्थिति पर दृष्टिपात कएला सँ इएह प्रतीत होइछ जे हमरा लोकनिक साहित्यमे आलोचना सदृश महत्त्वपूर्ण साहित्यक स्थिति अन्यंत खेदजनक अछि। मैथिलीमे प्रायः सभ विधा मे विपुल साहित्य निर्मिति भेल अछि, परन्तु समीक्षा साहित्य बहुत दुर्बल स्थिति मे अछि। आचार्य रमानाथ झा द्वारा तैयार कएल गेल भित्ति पर आश्रित भए मैथिली आलोचनाक स्वरूप बहुत व्यापक ओ प्रभावी बनाओल जाए सकैत छल; परंच से कार्य 1950क दशकक उपरान्त संगठित, सुव्यवस्थित रूपमे दुर्भाग्यवश भए नहि सकल।

बादक समय मे किछु विद्वजन तथा डा. रामदेव झा, मोहन भारद्वाज, डा. रमानन्द झा 'रमण', रामानुग्रह झा, डा. रमाकान्त मिश्र, डा. तारानन्द वियोगी,

मैथिली आलोचना केँ संबल प्रदान करबामे आगां तँ अवश्य भेलाह, मुदा मैथिलीमे निरन्तर साहित्य निर्माणक परिमाण केँ देखैत हुनकालोकनिक योगदान अल्पे प्रतीत होइछ। संगहि हुनकालोकनिक अवदान आलोचना कर्मक उच्च आदर्शक अनुकूल कतेक ओ केहन छनि तकरहु मूल्यांकन होएब अद्यावधि शेष अछि। तथापि हिनका लोकनिक अवदानक प्रसंग एतबा तँ निःसंशय कहल जाए सकैत अछि जे जैह-जतबा कार्य ई विज्ञजन कएलनि अछि से, भूमिका लेखन, संपादकीय टिप्पणी ओ इतिहास लेखन जकरा एखनहुँ मैथिलीमे आलोचना साहित्य बूझि मान्य कएल जाइछ, नहि थिक। ओकरा स्वतंत्र समालोचनात्मक विचार अथवा दृष्टिकोण निश्चयपूर्वक कहल जाए सकैत अछि। हिनका लोकनिक महत्त्व एहू लेल अछि जे रमानाथ बाबूक पश्चात् जतए किछु नहि ततए हिनक अवदान, कार्य धन्यवादार्ह अछि।

आलोचना साहित्यमे, जेँ कि आलोचना केँ एक गोट शास्त्र बूझल जाइत अछि, स्वरूचिक कोनो स्थान नहि अछि। कारण, स्वरूचि अथवा वैयक्तिक रूचिक कोनो स्वरूप नहि होइत अछि। स्वरूचि आधारित समालोचना स्वच्छन्दता थिक जे अधिकांशतः अराजकता उत्पन्न करैछ। एहि सँ यथार्थमे आलोचना कार्यक सम्पादन कठिन अछि।

दुःखक प्रसंग ई अछि जे किछु अपवाद केँ जँ छोड़ि देल जाए तँ छिटपुटो रूपमे लिखल जाइत मैथिली आलोचनाक बहुलांश शास्त्रीयताक निकष पर अवलंबित नहि भए वैयक्तिक रूचि आधारित अछि ओ तेँ मैथिली आलोचनाक विकास सम्यक् रूपेँ नहि भए पौलैक अछि। स्वरूचिगत आलोचना मे प्रायः सदिखन प्रेय अप्रेय, ग्राह्य अग्राह्य ओ सुन्दर असुन्दर भए जाइत अछि तथा कोनो कृतिक मूल्यांकन पक्षभावित भए जाइछ। प्रायः एही सभ कारणेँ मैथिली आलोचना मे संबंधवादी, वर्गवादी ओ क्षेत्रवादी भावनाक आरोपण होइत रहल अछि। मैथिलीमे तत्काल प्रभूत मात्रा मे साहित्यक सृजन भए रहल अछि ओ तेँ एहि विषयक प्रयोजन अछि जे समालाचना कर्मक मान्य सिद्धान्त पर उपनीत भए कृति सभहिक समीक्षण होअय जाहि सँ सत्साहित्यक दर्शन भए सकए एवं पाठक जनक रूचि परिष्कृति सुनिश्चित करैत रचनाकारहु केँ सम्यक् रीति-नीतिक अनुधावन लेल प्रेरित कएल जा सकनि।

आइ एहन सन आलोचना कर्मक स्थिति ओ अवगति नहि रहलाक कारणहि सुमन जी, यात्री जी, किरण जी, मधुप जीक घनेरो काव्य रचना हमरा लोकनिक चित्तकेँ आह्लादि कए मोन-मस्तिष्क मे अवस्थित अछि, मुदा, हुनकालोकनिक पश्चात जे साहित्य निर्मिति भेल अछि तकरा जँ स्मृति पथमे आनब तँ कोनहु रचना ताहि प्रकारेँ मोन मस्तिष्क केँ आच्छादित कएने नहि प्राप्त होयत।

स्मरण कएल जाए ''कोन महल नाम रखबै एकर, ''मधुरमनि'', ''आम खयबाक मुँह'', ''रूसल जमाय'', ''ललका पाग'', ''साँझक गाछ'', ''बजन्ताक पोता'', ''सीरक'' आदि सन कथा सभहिक रचना जे आइयो हमरा लोकनिक मोन प्राण मे रचल बसल अछि। मुदा, आई जे-जेहन कथा-रचना भेटि रहल अछि ताहि मे ओहन भाव-बोध, संवेदना, संस्कृति बोध, अभिव्यंजन, सार्वकालिकता, स्मृत रहबाक गुण नहि प्राप्त भए रहल अछि। तकर एकमात्र कारण अछि सुदृढ़, सम्यक्, विवेकी समालोचनाक अभाव। तेँ एहि विधा मे अभिनिवेशक हेतु विशेष प्रकार अभ्यास, दृष्टिकोण, रूचि-संपन्नता, अध्ययन, इतिहासक परिचिति ओ वैचारिक गतिशीलता कोनो समीक्षकक लेल आवश्यक अछि आ से संभव होएत स्थापित समालोचना कर्मक अवलम्बनहि सँ। शास्त्रीय मानदंडक अनुधावन कएलहि सँ सत् साहित्य ओ असाहित्यक विभेदीकरण संभव भए सकत आ जकर प्रयोजन मैथिलीमे तत्काल अछि। एहनो आरोप व्यक्त भेल अछि जे एम्हर कतोक वर्ष सँ कतोक एहन पोथीक प्रकाशन भेल अछि जकर लक्ष्य अछि पुरस्कार प्राप्ति भलँहि गुणवत्ता ताहि मे हो अथवा नहि। तेँ स्थापित शास्त्रीय मानदंडक प्रयोजनीयता सिद्ध होइत अछि।

मैथिलीमे शुद्ध, स्वतंत्र, पक्षभाविता सँ रहित सहृदयता सँ भरल गुणग्राही समालोचनाक अभावक विकरालता सँ आपद्धर्मी समीक्षाक उदय एम्हर किछु वर्षमे सेहो भेलैक अछि। जीवकान्त, राजमोहन झा ओ डा. भीमनाथ झा सदृश मैथिलीक सिद्धहस्त रचनाकार समय-समय पर आलोचनात्मक लेखन कार्य कए जँ एक दिसि मैथिली आलोचनाक रूग्णता केँ देखार कएलनि अछि तँ दोसर दिस स्वस्थ आलोचनाक प्रतिमान सेहो स्थापित कएल अछि। मुदा हम तकरा सम्यक ओ स्वतंत्र समालोचना नहि कहैत छी। कारण इएह जे हुनका लोकनिक एतद्विषयक अभिमत मूल साहित्य सर्जनक प्रतिभा-कौशल सँ अभिभूत प्रतीत होइछ। परंच,

तकर अर्थ ई कदापि नहि अछि जे मूलतः कवि अथवा कथाकार आलोचना कर्म नहि कए सकैत छथि वा नहि करथि। पाश्चात्य साहित्य तथा संस्कृत साहित्यमे कतोक एहन लोक छथि जे निविष्ट कवि-कथाकारक संग निविष्ट समालोचको भेल छथि। अंगरेजीक टी.एस. इलियट तकर अनुपम उदाहरण छथि।

ई विषय तँ प्रायः सभ विज्ञ जन कें विदित छनि जे मैथिली साहित्यमे समालोचना कर्मक इतिहास पुरान नहि अछि। एकर स्वरूप तँ व्यवस्थित रूप सँ बीसम शताब्दीक उत्तरार्ध मे फड़िछाएल। पूर्व मे जँ किछु दृष्टो भेल होएत तँ तकर कोनो क्रमबद्ध रूपरेखा हमरा लोकनिक मध्य नहि अछि। तेँ पाश्चात्य समालोचना दर्शन किंवा संस्कृतक काव्य शास्त्र ओ तकर परम्पराजन्य विकास क्रम कें देखि मैथिलीमे जे स्थिति अछि तकरा छुछुन्ने कहल जाए सकैत अछि। ई तथ्य सेहो अत्यंत क्षोभकारक अछि जे संस्कृत साहित्यक प्रभावक विषय कें जँ छोड़िओ देल जाय तँ पाश्चात्य, विशेष कए अंगरेजी, साहित्यक बेस प्रभाव बीसम शताब्दीमे मैथिली गद्य-पद्य लेखन पर पड़ल। ताहि प्रभावक अंतर्गत मैथिली लेखनक स्वरूपहु मे परिवर्त्तन कालक्रमें होइत गेल। परन्तु मैथिली आलोचना ताहू रूपमे परिवर्तित ओ परिवर्धित नहि भए सकल जे मैथिली साहित्यक सर्वविध विकास लेल अपेक्षित छल। मैथिलीमे समालोचनाक सिद्धान्त पक्षक अनुशीलन भलहि थोड़-बहुत भेटि जाए, किन्तु व्यावहारिक ओ तुलनात्मक आलोचना साहित्य निर्माण एखनहु गर्भहिमे अछि। फलतः साहित्यमे जे किछु भैयो रहल अछि से ''सभ धन बाइस पसेरी'' जकाँ अछि।

आलोचनाक व्यावहारिक ओ तुलनात्मक पद्धति सँ, जे पाश्चात्य साहित्यमे बेस प्रचलित अछि, मैथिली साहित्यक कतोक करोट लागल विधा, यथा, यात्रा साहित्य, बाल साहित्य, संस्मरण साहित्य, लोकगाथा साहित्य आदि कें निखारि, भास्वर बनाए, साहित्यक मुख्य धारामे चमत्कृत स्वरूप मे आनल जएबाक महत् प्रयोजन छैक ओ तदर्थ विज्ञ जन, अनुसंधानी जन कें आबहु आगाँ आएब आवश्यक अछि।



विभूति आनन्द

मौलिक लेखन आ आलोचनाक अंतर्द्वन्द्व

ई अंतर्द्वन्द्व हमर मोनमे अधिक काल चलैत रहैत अछि। साहित्यक छात्र रहबाक चलते पढ़ल अछि जे, जे सृजन करी, से भेल मौलिक। अर्थात् कथा, कविता, नाटक, आत्म-संस्मरणादि। तहिना आलोचना-समालोचना आ ओकरे उपांग टिप्पणी, मूल्यांकन, समीक्षा इत्यादि एहि सँ फराक। क्रम एहन सन जे स्वयंमे एकर अपन ओ अस्तित्व नहि जे उपरोक्त विधाकें प्राप्त छै। अर्थात् ई पराश्रित अछि।

आ एही ठाम आबिक' हमर मन दिक् होब' लगैत अछि। मने टिप्पणी, आकि समीक्षा, आकि मूल्यांकन अर्थात् मूलतः आलोचना, सृजन किएक नहि। मानल जे विवेच्य विधाकें स्वयं अस्तित्वमे अयबाक लेल कोनो-ने-कोनो आधारक खाँहिस पड़ैत छै, अर्थात् ई उपलब्ध सामग्रीक आधार पर अपन निर्णय प्रस्तुत करैत अछि। तखन तँ कथा, कविता, नाटक आदि सेहो कोनो-ने-कोनो स्थितिक आधारे ल'क' लिखल जाइत अछि। फेर एहन सन मान्यताक की तर्क जे ओ फराक कोटिक मानल जाइत अछि।

जँ पूर्वक आलोचना विधाकें थोड़ेक काल लेल मौलिक लेखन मानबा सँ परहेज कैयो ली, जे मूलतः सिद्धांत ओ स्थापनामूलक भेल करैत छल, आजुक आलोचना विधा तँ ताहि सभ सँ फराक, शुद्ध रूप सँ व्यावहारिक आलोचना थिक। एकर लेखन हमरा जनैत साहित्यक आन कोनहुँ विधा सँ कम मौलिक नहि अछि।

तेँ एहि तरहें हमरा कह'मे कनेको असोकर्य नहि होइत अछि जे मैथिलीक रमानाथ झा प्रभृति लेखकक आलोचना साहित्यकें कने कालक लेल जँ मौलिक

लेखन सँ बेराक' राखियो दी, जे मूलतः स्थापनामूलक थिक, तँ कमोबेश रामानुग्रह झा सहित भीमनाथ झा, ललितेश मिश्र, कुलानन्द मिश्र, मोहन भारद्वाज प्रभृति लेखक लोकनिक आलोचना-लेखनकेँ कथमपि एहि घेरामे नहि आनल जा सकैत अछि। हिनका सभक एहन लेखन स्पष्टतः सृजनात्मके कोटिक होइत देखल जाइत अछि। तेँ आइ आब आवश्यक ई भ' गेल अछि जे मौलिक लेखनक रूढ़-परिधिकेँ विस्तारित क'क' सोचल जाय आ आलोचनाकेँ असौजनियाँ नहि बूझि विमर्श-परिधिमे आनल जाय।

से एही ठाम हमर ध्यान आलोचनाक भाषा पर केन्द्रित होइत अछि, जकर गप कुलानन्द मिश्र (बदलैत सौन्दर्य-बोध आ कविता) सेहो बरोबरि करैत रहथि। ओ आलोचना-लेखन लेल भाषाक सत्ताकेँ अहम मानैत रहथि। जेँ हुनक एहि कथन केँ मानि लेल जाय तँ ताहि आधार पर मोहन भारद्वाज (अनवरत, एकल पाठ, बलचनमा : पृष्ठभूमि आ प्रस्थान, डाक-दृष्टि, कथा-गोष्ठी, अर्थात्, काव्य-पाठ, मैथिली आलोचना : वृत्ति आ प्रवृत्ति) सहित एखनुक अशोक (मैथिल आँखि, संवाद, उपन्यासक कथा आ कथाक उपन्यास), शिवशंकर श्रीनिवास (बदलैत स्वर), देव शंकर नवीन (समकालीन मैथिली परिदृश्य, मैथिली साहित्य : दशा, दिशा, संदर्भ), तारानन्द वियोगी (कर्मधारय, बहुवचन), रमेश (निकती) सहित पंक्ति-लेखकक (ललित, स्मरणक संग, हरिमोहन झाक रचना-कर्म, रंगमंच पर नाटक) एहि तरहक लेखनकेँ खारिजक' देल जा सकैए। आ तखन फेर ई एक अलग विमर्शक विषय बनि जा सकैए जे तखन ई कोन श्रेणीक लेखन थिक। आ फेर तखन एहि क्रमक आर अनेक फुटकर लेखक सभकेँ सेहो संज्ञानमे लेल जा सकैए जे कविता, कथा, नाटक लिखैत आलोचना विधामे सेहो सक्रिय छथि। ओना एहि ठाम एहू स्थिति पर ध्यान देब जरूरी अछि जे मैथिलीमे सुच्चा आलोचना-लेखकक अभाव सदा सँ रहल अछि। अधिक लेखक बहुविधावादी रहल छथि। आ से मैथिली ओ एकर दुःस्थितिकेँ देखैत जरूरी सेहो लगैत अछि।

ओना एहि बिन्दुपर कने बिलमैत ई कह'मे सेहो असोकर्य नहि होइत अछि जे सृजनात्मक लेखन कयनिहारक आलोचना-लेखन अपेक्षाकृत बेसी सहज ओ बोधगम्य होइत अछि। आ जे कम आकि बेसी, सृजनात्मक आलोचनाक स्वाद दीते अछि। अस्तु।

आब जँ पुनि भाषा पर घुरिक' अबैत छी, तँ तखन ईहो प्रश्न उठैत अछि जे कुलानन्द मिश्र स्वयं भाषाक स्तर पर बेसी निकट रमानाथ झा, दुर्गानाथ झा 'श्रीश', यशोदा नाथ झा प्रभृति लेखक सँ छथि, जे आलोचनाक लेल भाषाक सत्ताकेँ अहम मानैत छथि। मोहन भारद्वाज एहि सँ भिन्न छथि! जखन कि ईहो सत्य अछि जे जँ कुलानन्द मिश्र नहि होइतथि तँ मोहन भारद्वाज आलोचक नहि भ' पबितथि। आ तेँ मैथिली निश्चयतः एक सोझरायल लेखक सँ बंचित रहि जाइत।

तखन तँ इहो कहि सकैत अछि जे मोहन भारद्वाज भने कुलानन्द मिश्रक कारणे एहि विधामे सक्रिय भेलाह, किन्तु भाषा-शिल्पक स्तरपर बेसी समय धरि हुनका संग समझौता नहि क' पौलनि। अपितु एहि सोच पर स्वयकेँ माँजैत रहलाह, आ अन्ततः एकरा सृजनात्मक लेखनक श्रेणीमे अनबाक लेल गंभीरतापूर्वक लागि गेलाह।

ओना आरंभमे मोहन भारद्वाज स्वयं सेहो आलोचना-लेखन लेल एक विशेष भाषा-शिल्पक अनिवार्यताकेँ महत्व दैत देखल जाइत छथि, आ ताही आधार पर अपन एक प्रकाशित आलेखमे रामदेव झा सन आलोचक-व्यक्तित्वकेँ खारिजक' दैत छथि। मुदा बादमे हुनक से स्टैण्ड नहि रहलनि, ओ आम-भाषा संग स्वयंकेँ जोड़ैत तकरा अपडेट करैत रहलाह।

आब विमर्शक एहि मोड़ पर हम कथाकार राजमोहन झाकेँ मोन पाड़ब अपरिहार्य बुझैत छी। हुनकर मत छलनि जे आब'वला समय सृजनात्मक आलोचनाक समय रहत। आ से हुनक प्रकाशित किछु पुस्तक 'गलतीनामा', 'टिप्पणीत्यादि', 'भनहि विद्यापति', 'प्रसंगतः' तथा विभिन्न पत्रिकामे छपल अनेक असंकलित आलेख सभकेँ पढ़ैत बूझल जा सकैत अछि। कखनो काल तँ हमरा एतद्संबंधी आलेख सभ पढ़ैत राजमोहन जीक मूल परिचिति, कथा-लेखन हमरा अधिक दिमाग खाइत अछि। अर्थात् हुनक कथाक शिल्पक अपेक्षा ई टिप्पणी शिल्प अधिक सरल, सहज आ 'बात जानी साफ' सनक लगैत अछि।

हुनक पत्र-लेखन सेहो हमर उक्त सोचकेँ पुष्ट करैत अछि। आ से सभ आब धीरे-धीरे प्रकाशमे आबहु लागल अछि। पुष्टि लेल भीमनाथ झाकेँ लिखल आ दमन कुमार झा द्वारा संकलित ओ संपादित पोथी 'लिखि पठाओल आखर'

तथा 'भारती मंडन' मे आबि रहल अनेक पत्र सभक अवलोकन करैत तकरा अकानल सेहो जा सकैत अछि।

फेर ई एकटा फराके रेखांकित कर'बला बिंदु बनैत अछि जे पत्र-लेखन सेहो सृजनात्मके आलोचनाक तँ ने अंग थिक। एहि प्रसंग तत्काल जीवकान्तक द्वारा लिखल आ प्रदीप बिहारी द्वारा संपादित पुस्तक 'स्वस्ति श्री प्रदीप बिहारी' केँ बानगी रूपमे प्रस्तुत तँ कएले जा सकैत अछि, शंकरदेव झा द्वारा संपादित पोथी 'अमर जी ओ हुनक पत्र संसार'केँ सेहो देखल जा सकैत अछि।

अस्तु, आगू बढ़ैत स्पष्ट करी जे भाषाक स्तर पर भीमनाथ झाक समीक्षा-लेखनकेँ सेहो मोहन भारद्वाजक संग पंक्तिबद्ध कएल जा सकैत अछि। ओ रूढ़ आलोचकीय भाषाक विरूद्ध क्रमशः ठाढ़ होइत स्पष्ट होइत छथि, जे हुनक प्रकाशित विभिन्न समीक्षा पुस्तक, यथा 'विमर्श', 'साहित्यालाप', 'काल पात्र', 'परिचायिका' आदिकेँ पढ़ला पर स्पष्ट बूझि सकैत छी। हुनका संग अलग सँ एक आर निजता जुटैत अछि जे ओ अपन समीक्षा-लेखनमे एके संग ललित निबंध, कविता, कथा, संस्मरणादि विधाक संगहि व्यंग्य पढ़बाक स्वाद सेहो पाठककेँ दैत छथि।

ओना तँ जीवकान्तक एतद्विषयक कोनो पोथी एखन धरि प्रकाशमे नहि आबि सकल अछि, मुदा पत्रिकादिमे जे टिप्पणी सभ, आ सेहो यथेष्ट मात्रामे, उपलब्ध होइत अछि, एहि विधाक भाषा-संबंधी रूढ़ मान्यताकेँ तोड़ैत अछि।

मौलिक लेखन ओ आलोचनाक अन्तर्द्वन्द्व संबंधी अवधारणाक पक्षमे एक आर जे कारण बनैत अछि, से थिक वैचारिक स्पष्टता-अस्पष्टताक बीच अंतर्द्वन्द्व। ई अन्तर्द्वन्द्व कोनो टिप्पणीक रूप, ध्वनि ओ कथ्यकेँ बेस प्रभावित करैत अछि।

असलमे कही तँ आजुक लेखन प्रमुख रूप सँ प्रगतिशील धारा पर आधारित रहैत अछि। आ से स्पष्टतः लेखककेँ संस्कृतनिष्ठ भाषासँ मुक्तिक संग आम दैनंदिन भाषाक निकट आनि दैत अछि।

पूर्वमे प्रायः एहन सनक स्थिति नहि रहल छल होयत। साहित्य गतानुगतिकतामे गुजर-बसर करैत रहैत छल होयत। जखन-जहिया आ जाहि स्थितिमे एकर विस्तार-व्याख्या लेल समीक्षा-वृत्ति सनक कोनो नव विधाक आवश्यकता पड़ल होयत, स्वभाविके अछि जे तकर लिखनिहार सेहो ताही कुल-गोत्र-मूलक रहल छल होयताह।

दोसर बात, जे हमर मोनमे अबैत अछि कि भाषा तँ अभिव्यक्तिक एक माध्यम होइत अछि, जे मनुष्यक चिन्तनक संग स्वतः जीवनक नव-नव दिशामे प्रवहमान होइत रहैत अछि। जेना-जेना मनुष्यक चिन्तनमे विकास होइत जाइछ, भाषाक रूप-सौंदर्य सेहो ताहि सँ प्रभावित होइत जाइछ। तेहना ठाम ओ अपन मनोभावकेँ खास सँ आम धरि पहुँचयबाक यत्न करैछ, आ ओकर ओ भाषा-प्रयोग व्यावहारिक हथियार साबित होइछ।

आ इएह जे प्रयास-प्रयोग, साहित्य-लेखनमे आलोचनाक संग लागू भेल छल होयत, ओ खास सँ आम बनबाक दिस बढ़ल चल गेल होयत। एहि प्रसंगमे अनेक समीक्षककेँ पढ़ैत काल ई अनुभव भेल अछि जे लेखकक समाज-अध्ययन जेना-जेना बढ़ैत गेल अछि, भाषा-प्रयोगमे उदारता सेहो बढ़ैत गेल अछि। आ से आरंभहि काल सँ। अर्थात् रमानाथ झा सँ होइत भीमनाथ झा, मोहन भारद्वाज प्रभृति धरि।

एहि बिन्दुपर कुलानन्द मिश्र समेत, बहुत अंशमे प्राध्यापक लोकनिक नामोल्लेख कएल जा सकैत अछि जे आलोचना-कर्म लेल फराक भाषा-शैलीकेँ आवश्यक मानैत छथि। ओना प्रगतिशील सोचक आधार पर कुलानन्द मिश्रकेँ एहि कोलामे नहि राखल जा सकैत अछि। हिनक आलोचना पद्धति कतहु सँ प्राध्यापकीय आलोचना पद्धति नहि थीक।

मैथिलीमे एक समय एहनो आयल छल जे एहू प्रवृत्ति पर काफी विचार-विमर्श ओ घमर्थन भेल छल, जे कतहु-कखनो अशोभन सेहो भ' गेल करैत छल। असलमे एहि विमर्शकेँ एतय आनबाक पाछू हमर उद्देश्य ई अछि जे प्राध्यापकीय आलोचना ओ गैर प्राध्यापकीय आलोचनामे अन्ततः अन्तर की थिक।

सत्य कही तँ प्राध्यापकीय आलोचना सही अर्थमे मौलिक लेखन नहि थिक। एहिमे स्पष्टतः शब्दाडम्बरक बाहुल्य रहैत अछि, जे मूलतः 'कट एण्ड पेस्ट' अथवा फुटनोट शैलीमे प्रस्तुत कएल गेल रहैत अछि। एकर आदिगुरु राजमोहन झा जयकान्त मिश्रकेँ मानैत छथि, जे परम्परा एखनो एना भ'क' जड़िआयल अछि जे अद्यपर्यंत ताहि सँ मुक्ति नहि भेटि सकल अछि। आ से विश्वविद्यालय सभमे यथेष्ट मात्रामे शोध-प्रबंध, लघु शोध-प्रबंध, प्रोजेक्ट सहित सालो भरि आयोजित होइत रहय वला सरकारी-गैर सरकारी सेमिनार सभमे तकरा बेसीकाल बेसी कंठे अगराइत देखल जा सकैत अछि।

वस्तुतः आलोचना विधाकेँ आरम्भहि सँ प्राध्यापक लोकनिक जिम्मा लगा देल गेल छलनि। ओतहि ई अपन गतिये फड़ैत, फुलाइत, पिराइत, औंघाइत रहल। राजमोहन झा तेँ एहि तरहक आलोचना-लेखनकेँ 'फालतू आलोचना' कहि साफे 'रिजेक्ट' करैत छथि। ओ एतहि नहि थम्हैत आगू लिखैत छथि जे एहन गप नहि छै कि एहि प्रकारक लेखनक लेल मात्र प्राध्यापके लोकनि सक्रिय रहैत छथि। एहि तरहक लेखन गैर प्राध्यापक सभ सेहो करैत छथि। आ एहि लेल ओ खासक' रमानंद झा 'रमण'क नामोल्लेख करैत छथि।

मुदा हुनकर एहन आक्रामक स्वर पर पूर्णतः सहमत नहि भेल जा सकैत अछि। 'रमण'क दीर्घ लेखन-अवस्थाकेँ देखैत कहल जा सकैत अछि जे ओ सही अर्थमे समन्वयवादी दृष्टि रखनिहार एकटा एहन स्वर छथि जे अपन मुद्रामे कतहु पूर्णतः स्पष्ट तँ नहि होइ छथि, मुदा जँ होइतो छथि, तँ से ओतेक विस्तृत फलक पर अपनाकेँ स्पष्ट नहि क' पबैत छथि। आ से ई हुनका लेल ऋणात्मक पक्ष बनैत छनि। मुदा वर्तमानमे हुनका द्वारा कएल जा रहल शोध-मूलक प्रयास आ तकर संकलन ओ संपादन संगहि प्रकाशनक लेल साहित्य सदा ऋणी रहत, ताहिपर संदेह नहि कएल जा सकैछ।

एहि विधामे एक आर प्रयोग प्रचलनमे रहल अछि, आ जकरा 'झटहा'मूलक आलोचना कहि सकैत छी। एकर श्रीगणेश कतोक दशक पूर्वे भ' चुकल, जकर कारण अंततः राजमोहन झाकेँ पोथी छपबाय पड़ल छलनि 'गलतीनामा'। एहन प्रयोगमे कोनो वस्तुकेँ पढ़बाक प्रयोजन नहि होइत छै। ई झटहा-आलोचना संबंधित लेखकक प्रति हुनक निजी धारणा पर निर्भर करैत अछि।

अस्तु, आब हम पुनः अपना मूल विषय पर अबैत छी। अर्थात् इएह सभ एहन कारण बनल होयत जे ई विधा दुर्बल रहि गेल होयत। प्राध्यापक वर्ग अपन-अपन हाथमे संठीक छड़ी लेने मौलिक लेखनक गुरू जी बनल रहि जाइत गेलाह। आ तकर परिणाम समक्ष अछि।

अभिप्राय ई जे प्राध्यापक वर्ग, जे भावयित्री प्रतिभाक प्रथम पुरुष मानल जाइत रहलाह, अपन दायित्वक पूर्ण निर्वहन करबामे तेना भ'क' सफल नहि भ' सकलाह. जखन कि ई विधा, जेना कहल, सभ दिन सँ हुनके सभक क्षेत्राधीन रहल।

आइ मुदा समय, सोच आ आवश्यकता, तीनू स्तर पर परिवर्तन अयलै अछि। आब ई साफ-साफ अनुभव कएल जा सकैत अछि जे मैथिलीक एहि आलोचना विधाक अन्हार-युगकेँ पूर्णविराम कहैत, इजोतक मार्ग प्रशस्त करबाक जिम्मा जहिया सँ कारयित्री प्रतिभाक लेखक लोकनि अपन-अपन हाथमे लेलनि अछि, स्पष्टतः परिदृश्य बदलल अछि। एकरा शुभ संकेत मानल जा सकैत अछि, जे ओ सभ जाही सहजता सँ कथा-कविता-नाटक आदि लिखल करैत छथि, ताही सहजता सँ मूल्यांकन, समीक्षा ओ टिप्पणी सेहो करैत छथि। ओना तँ नामक सूची पैघ भ' जा सकैत अछि, तथापि वीरेन्द्र मल्लिक, राजमोहन झा, भीमनाथ झा, कुलानन्द मिश्र, मोहन भारद्वाज आदिक अतिरिक्त महेन्द्र मलंगिया, गंगानाथ गंगेश, अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास, तारानंद वियोगी, देवशंकर नवीन, कमल मोहन चुन्नू, फूलचंद्र झा 'प्रवीण', अशोक कुमार मेहता, अभिलाषा सहित पंक्ति-लेखककेँ, जनिका सभक पोथी आबि चुकल अछि, पढ़ब आ एहि विधाकेँ सृजनात्मक मानब, दुनूक प्रति आश्वस्त करैत अछि।

एहि क्रममे पत्रिका तथा सोशल मीडिया सभपर जे टिप्पणीत्यादि आयल, आबि रहल अछि आ जकर संख्या पुस्तकक लेखक सभक संख्या सँ बहुत अधिक अछि, आलोचना विधाक एक अलग परिदृश्य उपस्थित करैत अछि। नाम सभक उल्लेख करबामे ओना तँ खतरा अछि, तथापि पत्र-पत्रिका सभमे पद्मनारायण झा 'विरंचि', रामानुग्रह झा, जीवकांत सहित वर्तमानमे सुकान्त सोम, उदय चंद्र झा 'विनोद', हरेकृष्ण झा, कुणाल, केदार कानन, रमण कुमार सिंह, श्रीधरम्, पंकज पराशर, गौरीनाथ, अजित आजाद, नारायण जी, कमलानंद विभूति एवं सोशल मीडियाक टटका स्वर चंदन कुमार झा, मनोज शाण्डिल्य, विकास वत्सनाभ, गुंजनश्री, बालमुकुंद आदिकेँ एहि लेल स्पर्श कएल जा सकैत अछि।

हमर अनुभव तँ ईहो कहैत अछि जे, जेना कविता-कथा-गीत स्पार्क करैत छै, तहिना ई विधा सेहो अपन विविध रूपमे स्पार्क करैत रहैत छै। ई सेहो एक सृजन थिक, रचना-कर्मक एक प्रमुख अंग थिक, से बोध करबैत रहैत छै। से जहिया सँ कविता-कथा-नाटक लिखनिहार सेहो आलोचना लिखब सेहो शुरू कयलनि अछि, सृजनशीलताक एक नव सुगंधि साहित्यमे पसरल अछि।

ओना ई विधा आन विधाक अपेक्षा अधिक मानसिक व्यायाम करबैत अछि। उदाहरणक लेल जेना हमरा कोनो कविताक पुस्तकक मूल्यांकन करबाक अछि, तँ ताहि लेल हमरा कवि-हृदय बनि, कविताक विभिन्न बिन्दु पर मनन करैत अपन सृजन करबाक होइत अछि। तँ ई विवेच्य विधा विविध विषयक अध्ययनक संग बहुत बेसी श्रम सेहो मंगैत अछि। अस्तु।

एहि प्रसंग एक आर विषयक उल्लेख करय चाहब जे आजुक एहि व्यावहारिक आलोचनाकेँ जँ अहाँ पढ़ब तँ पायब जे कतहु काव्य-बिम्बक प्रयोग सँ विषयकेँ स्पष्ट कयल गेल अछि, तँ कतहु कोनो ओझरायल कथ्यकेँ सोझरयबा लेल कथा-शिल्पक आधार लेल गेल अछि। कतहु-कतहु तँ संवाद-शिल्पक प्रयोग सेहो कएल गेल अछि।

अभिप्राय जे उपस्थापनक ढंग बदलने एहि विधापर सँ दुरूहताक हंटर हटलैक अछि। ई फूल सन कोमल आ आमजनक भाषा सन सहज-सरल भेल अछि। आ जाहि सँ आलोचना अपन विभिन्न उपविधा, यथा मूल्यांकन, टिप्पणी, समीक्षा आदि संग अधिक विस्तारित आ मुखर भेल अछि।

एमहर तँ एहि आलोचनाक एक आर शिल्प विकासशील अछि, कहन शिल्प। एकर माध्यम सँ प्राश्निक, समक्षक व्यक्तित्व सँ गपे-सपमे गूढ़-सँ-गूढ़ विषयक हल करबा लैत छथि। एहन हल तँ स्वयं उत्तर देनिहार सेहो लिखबाक समय नहि क' पबैत छथि। ई शिल्प एहि विधाकेँ जेना एक नब आयाम प्रदान करैत अछि।

तेँ अंतिम सत्य ई जे आजुक ई विधा अपन परंपरागत स्वाद सँ अलग भ'क' लिखल जा रहल अछि, जाहिमे एक दिस जँ कथात्मकता अछि, तँ दोसर दिस काव्यात्मकता सेहो। कतहु-कतहु तँ व्यंग्यात्मकता ओ नाटकीयता सेहो। तेँ ई विधा साहित्यक राजसिंहासन नहि भ', आइ आम-जनक मचान बनल अछि। तेँ ईहो जे जें एहि विधाक लेखन शुद्ध रूपें सृजनात्मक मूड संग भ' रहल छै, तें एकरा लेल पूर्वक भाँति कोनो खास परिभाषा नहि गढ़ल जा सकल अछि। सभ क्यो सहोदरा, आ तें सभ क्यो सहचर अछि।

एक मिनट आर! हमर तँ स्पष्ट मानब अछि जे साहित्य एक एहन कौलिक हवेली थिक, जाहिमे अनेक घर, उपघर सभ अछि। ओत' सभक मान बराबर छै। रूप सभक फराक, भंगिमा सभक फराक, सौंदर्य-बोध आ जीवन-दर्शन सभक। सभ अपन-अपन सृजन-कर्ममे लागल। तें ओ कौलिक-हवेली तँ सभक एक्कहि, रक्त सभक एक्कहि। क्यो आन नहि, क्यो भगिनमान नहि। तखन एहन विभेद किएक, आ तें तकर अन्तर्द्वन्द्व कथीक।



भीमनाथ झा

शोधेतर समीक्षा-ग्रन्थ

शोध आ समीक्षा तेहने सहचर शब्द थिक जेहन हास्य आ व्यंग्य। अस्तित्व दुनूक स्वतंत्र तँ छैके, मुदा जुड़ि गेने दुनूक बल बढ़ि जाइत छैक। लेखक जँ एहि प्रसंग बहुत सावधान नहि रहय तँ बहुधा जुड़ि जाइते छैक। आ, सावधान रहबाक काजे कोन छैक? हँ, शोध आ समीक्षे जँ शोध आ समीक्षाक विषय भ' जाइक तँ बात भिन्न भेलैक। मुदा से बात एत' छैक नहि। बात एत' छैक पोथीक। केहन पोथी तँ समीक्षाक पोथी। मुदा ओ समीक्षा-पोथी शोधग्रन्थ नहि हो। शोधग्रन्थक एत' विशेषार्थ लेबाक थिक। ओहन ग्रन्थ जाहि प्रबन्ध पर कोनो विश्वविद्यालय द्वारा कोनो शोधोपाधि (जेना एम.फिल., पीएच.डी., डी.लिट. आदि) प्राप्त भेल हो। एहनो पोथी महत्त्वपूर्ण थिक। समीक्षा विधाक विस्तारमे सर्वाधिक योगदान, हमरा जनैत, एही कोटिक ग्रन्थकेँ छैक। तखन एतबा आवश्यक जे विश्वविद्यालयीय शोधक अपन एक अनुशासन होइत छैक, एक साँच बनल छैक, ताही पर ठकुआ ठोक' पड़ैत छैक। कोनो लेखक मुक्त विचरण आनक अनुशासनमे रहिक' क' नहि सकैत अछि, से तँ स्वाधीने भ'क' भ' सकैत छैक। नीक-बेजाय हम नहि कहैत छी। ओ तँ व्यक्ति क्षमता सापेक्ष थिक।

स्वतंत्र रूपेँ लिखल समालोचना समीक्षा पोथीक कमी नहि अछि अपनहुँ ओत'। पहिनहुँ अबैत तँ छले, सवैधानिक मान्यताक केबाड़ खुजि गेने साहित्यमे सभसँ बेसी सुरफुरा गेल अछि यैह विधा। हर्षक विषय थिक। आब तँ कविता-कथाक बाद, समानान्तरो कहि सकैत छी, समीक्षेक पोथी अबैत अछि। तखन तँ समीक्षक वा आलोचकक संख्या सेहो बहुत बढ़ि जयबाक चाही। की से बढ़ल अछि? सुनैत तँ सभ ठाम सँ यैह छी जे आलोचक आङुरे पर गनल छथि, सेहो आङुरक पोरपर

नहि। ताहूमे जे चल जाइत छथि, हुनक आसन खालिए रहि जाइत अछि— जेना कुलानन्द मिश्रक, मोहन भारद्वाजक। आगन्तुकमे जगजियार भेनिहार ठेकनाब' पड़त। तारानन्द वियोगी तँ पहिनहिँ सँ जमल छथि, कमल मोहन चुन्नू प्रतिभा देखा रहलाह अछि। निराश किएक होइ? नवतुरिए आबओ आगाँ। से अबस्से आओत। अयबे करत।

किन्तु, जे समीक्षा पोथीक प्रवाह चलि रहल अछि से की थिक? ओ लगभग सभटा थिक समीक्षात्मक निबन्धक संग्रह, जकर प्रत्येक निबन्ध विभिन्न कालखण्डमे, विभिन्न विषय पर, विभिन्न उद्देश्येँ लिखल गेल रहैछ। ओ सभ संग्रह तहिना थिक जेना कथा-संग्रह, कविता-संग्रह रहैछ। कथा-संग्रह आ कविता-संग्रह तँ तेना रहि सकैछ, समीक्षात्मक निबन्धक संग्रहो तहिना रहि तँ सकैत अछि, रहिते अछि, मुदा समीक्षाग्रन्थ ओकरा कतेक दूर धरि कहल जा सकैत अछि, से विचारणीय थिक। असलमे, समीक्षा-ग्रन्थ ओ थिक जाहिमे कोनो खास विधाक अथवा खास व्यक्तिक अवदानक अथवा हुनक कोनो खास वा समस्त कृतिक महत्त्वक सम्यक्, सांगोपांग विश्लेषण, समीक्षण एवं मूल्यांकन कयल गेल हो, साहित्य मे ओकर वा हुनक स्थानक निरूपण भेल हो। एहन ग्रन्थमे अध्याय तँ अनेक रहैत अछि, मुदा परस्पर सभ सम्बद्ध रहैत अछि, सभक तार मूल विषयसँ जुड़ल रहैत छैक।

एहि प्रकारक ग्रन्थमे किछु स्मारक भाषण थिक, जाहिमे ऐतिहासिक क्रमे विवरणक अधिकता अछि, समीक्षो अछि तँ से कोनो मे पौरस्थ्य तँ कोनोमे पाश्चात्य काव्य-शास्त्रीय सरणि पर आधृत अछि। एहि श्रेणीमे मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव (सुरेन्द्र झा सुमन), मैथिली नाटक पर संस्कृतक प्रभाव (जयमन्त मिश्र), साहित्य समीक्षा-शास्त्र (श्रीकृष्ण मिश्र), मैथिली रेडियो नाटक (छत्रानन्द सिंह झा), मैथिली गीत साहित्यक विकास आ परम्परा (वीणा ठाकुर) प्रभृति ग्रन्थक नाम लेल जा सकैछ। एही क्रममे तीन विधाक तीन गोट आर पोथीक विशेष उल्लेख कर' चाहब, जकर विवेचनमे नव कसौटी अपनाओल गेल अछि व्यावहारिक आलोचनाक, पुनर्मूल्यांकनक। ओ पोथी थिक 'आधुनिक मैथिली कविता' हरिमोहन मिश्रक, 'मैथिली नाटक : अधुनातन सन्दर्भ' गोविन्द झाक एवं 'कथाक उपन्यास आ उपन्यासक कथा' अशोकक। तीनू पोथी मैथिली समीक्षाक परवर्ती प्रवृत्तिक सुन्दर उदाहरण थिक। आधुनिक मैथिली कविता पर हरिमोहन

मिश्रक एही नामक पुस्तक आधुनिक कविताक प्रकृति एवं वैशिष्ट्यकेँ विश्लेषित करैत अछि। पोथी एगारह अध्यायमे विभक्त अछि, यथा— आधुनिकता, आधुनिक काल, मिथिला मैथिली भाषा ओ साहित्य, भारतीय साहित्य पर यूरोपीय साहित्यक प्रभाव, आधुनिक कालक आरम्भ, रोमांटिक प्रगीत काव्य, प्रगतिवाद, अवचेतनावाद तथा अन्यान्य साहित्यिकवाद, नव कविता, प्रबन्धकाव्य, उपलब्धि अभाव ओ संभावना। एही सँ पोथीक स्वरूप स्पष्ट भ' जाइछ। समकालीन काव्यधाराक प्रसंग एक ठाम जतेक जनतब एहिमे अछि से अन्यत्र नहि। आधुनिक कवि एवं जिज्ञासु पाठक पर्याप्त लाभान्वित भ' सकैत छथि। 'मैथिली नाटक : अधुनातन सन्दर्भ' मे पं. गोविन्द झा नाट्येतिहासकेँ नवीन दृष्टि सँ देखलनि अछि आ तकर विश्लेषण कयलनि अछि। संगहिँ, दू गोट चिर विवादित विषय 'कीर्तनियाँ' एवं 'बिदापत' पर अपन दू टूक एवं निर्णायक मत देलनि अछि। 'कथाक उपन्यास आ उपन्यासक कथा'मे मैथिलीक आरंभिक उपन्यासक परिदृश्यकेँ आजुक आँखिसँ देखल गेल अछि आ आजुक लोककेँ ओकर महत्ता आ प्रासंगिकताक सूत्र बुझाओल गेल अछि।

स्मारक भाषणसँ इतरकृति, जे एकहि विषय पर केन्द्रित अछि आ जाहिमे न्यूनाधिक समीक्षोक जोग छैक, से थिक— अंकीया नाट विवेचन (नवीनचन्द्र मिश्र), मैथिली नाटक ओ रंगमंच (प्रेमशंकर सिंह), रामकथा ओ मैथिली रामायण (तारानन्द वियोगी) प्रभृति।

शोधग्रन्थ सँ अतिरिक्तो विद्यापति पर अनेक समीक्षा पोथी आयल अछि, जाहिमे कवि कोकिलक जीवन आ काव्य पर व्यापक विचार कयल गेल अछि। शैलेन्द्र मोहन झाक 'विद्यापति' एवं विश्वेश्वर मिश्रक 'विद्यापतिक राधा' एही कोटिक ग्रन्थ थिक। शोभाकान्त झा 'गणदेवता कवि विद्यापति' मे हुनका जनमानसक आप्त कवि सिद्ध कयलनि अछि तँ प्रेमशंकर सिंह 'पुरुषार्थ आ विद्यापति' मे हुनक नीतिनिपुणता एवं नायकत्वकेँ आगाँ अनलनि अछि। एही क्रममे विश्वेश्वर मिश्रक 'महाकवि विद्यापति' एवं 'विद्यापतिक काव्यसाधना', देवकान्त झाक 'लेखाञ्जलि', सीताराम झा (कानपुर)क 'भारतविभूति विद्यापति' प्रभृति अबैत अछि।

मैथिलीक अनेक साहित्यिक विभूति पर साहित्य अकादेमी एवं मैथिली अकादमी सँ विनिबन्ध सभ (Monographs) अबैत रहल अछि। किछु लेखक

ओकरा समीक्षाक पोथी बना देलथिन अछि तँ किछु जीवनीपरक क' देलथिन अछि, जखन कि मूल चरित मोनोग्राफक दुनूमे कोनो ने थिकैक। अतएव प्रस्तुत विवेचनक परिधिमे ओ नहि अबैत अछि। व्यक्तिपरक समीक्षा पोथीमे किछुएक नाम ल' रहल छी— महाकवि गोविन्ददास (दिनेश्वर लाल आनन्द), प्रेरणापुरुष चन्दा झा (विश्वेश्वर मिश्र), महाकवि लालदासक कृतित्वक साहित्यिक मूल्यांकन (राधाकृष्ण चौधरी), मणिपद्मक साहित्य-यात्रा (इन्दिरा झा), तथा बहुआयामी जनकवि सोमदेव (सुधाकर चौधरी)। ई सभ कृति परिचयात्मक अधिक अछि, समीक्षात्मक थोड़।

लोकसाहित्यक विभिन्न पक्ष पर समीक्षोक पोथी अपेक्षया बेसी आयल अछि। एत' ई स्पष्ट करब आवश्यक जे जकरा शुद्ध अर्थमे समीक्षा ग्रन्थ हम कहलहुँ अछि, तेहन तीन गोट कृति लोकेसाहित्य पर हमरा भेटल अछि। ओ थिक— मोहन भारद्वाजक 'डाकदृष्टि', महेन्द्र मलंगियाक 'मैथिली लोकनाट्यक विस्तृत अध्ययन-विश्लेषण' तथा ओम प्रकाश भारतीक 'मैथिली लोकनाट्य'। एहि पर चर्चा करबासँ पहिने ई कह' चाहब जे जँ कने उदार भ' जाइ आ ओहू प्रकारक ग्रन्थ केँ समेटि ली जाहिमे निबन्ध सभ (एहि ठाम समीक्षात्मक निबन्ध सँ तात्पर्य अछि) तँ लिखल गेल रहैछ स्फुट रूपमे, विभिन्न कालखण्डमे, किन्तु समान विषय अथवा विधा रहलाक कारणेँ एक ठाम संगृहीत क' देल गेल अछि, जे वास्तवमे थिक तँ समीक्षात्मक निबन्ध-संग्रह, किन्तु मानि ली समीक्षा ग्रन्थो तँ ताहू कोटिक अधिक पोथी लोकेसाहित्यमे देखैत छी हम। नाम ल' रहल छी किछुएक—मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य (रामदेव झा), लोकगाथा विवेचन (राजेश्वर झा), लोकदर्शन, लोकसन्दर्भ (दुनू महेन्द्र नारायण राम), लोकरचनाक सुरभि-सुषमा (विश्वेश्वर मिश्र), मैथिली लोकसाहित्यक स्वरूप (रेवती रमण लाल), मैथिली लोकगाथा-अनुशीलन (प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन), मिथिलाक सपूत : राजा सलहेस (राम भरोस कापड़ि भ्रमर), लोकजीवन आ लोकसाहित्य (योगानन्द झा) आदि।

आनो विधामे एहि प्रकारक संग्रह सभ आयल अछि, यथा—मोहन भारद्वाजक 'कथागोष्ठी', हिनके 'काव्यपाठ', रमानन्द झा रमणक 'मैथिलीक न'व कविता,' प्रेम शंकर सिंहक 'नाट्यान्वाचय', विभूति आनन्दक 'रंगमंचपर नाटक', कमल मोहन चुन्नूक 'निनाद' प्रभृति।

शुद्ध अर्थमे तीन गोट समीक्षा-ग्रन्थक नाम हम लोक साहित्यक प्रकरणमे लगले लेने छी। ओकर अतिरिक्त तीन गोट आर पोथीक नाम एत' ल' रहल छी। से थिक— मोहन भारद्वाजक 'बलचनमाः पृष्ठभूमि आ प्रस्थान', कुलानन्द मिश्रक 'बदलैत सौन्दर्यबोध आ कविता' तथा यशोदानाथ झाक 'मैथिल ब्राह्मण-समाजक सांस्कृतिक मरौसी एवं मैथिलीक कुकाव्य'। दूटा आर पोथी हमर ध्यानमे अछि जाहिमे एकटा थिक टीकाग्रन्थ ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरक। ओहो सम्पूर्ण नहि, केवल तीने कल्लोलक। मुदा, हमर दृष्टिमे ओ उच्च कोटिक समीक्षा ग्रन्थ थिक। वर्णरत्नाकर, जे एखन धरि लगभग अज्ञेय रहल अछि, एहि पोथीमे बहुत तार्किक ढ़ंग सँ लुप्त भ' गेल शब्दक सुसंगत अर्थ क' तत्कालीन समाजक विश्वसनीय चित्र उपस्थित करबाक प्रयास पहिल बेर सफल भेल लगैत अछि। शब्दकेँ शुद्ध करब, पुनि ओकर टिप्पणी सहित संगत अर्थ करब, तदुत्तर पारिभाषिक एवं तत्कालीन वस्तुक नामवाची शब्दकेँ फरिछायब अत्यधिक अन्वेषण साध्य थिक, मलंगियाजी से साधना कयलनि अछि। ग्रन्थक आधा सँ अधिक अंश जे बाँचल अछि, ताहू दिस ई भिड़ल होयताहे। ओ सम्पूर्ण भ' गेला उत्तर अवश्य विशिष्ट आकर ग्रन्थक महत्ताकेँ प्राप्त करत।

दोसर ग्रन्थ थिक बच्चा ठाकुरक 'मैथिली आलोचना साहित्यक दिशाबोध'। ई ग्रन्थ पाश्चात्य आलोचना पद्धतिक परिचय करबैत अछि तथा ताहि कसौटी पर मैथिलीक चारि गोट विशिष्ट विद्वान (रमानाथ झा, सुधांशु 'शेखर' चौधरी, जयधारी सिंह एवं बासुकीनाथ झा)क आलोचना कृतिकेँ कसैत हुनका लोकनिक आलोचना क्षेत्रमे योगदानक निरूपण करैत अछि। सामान्य अर्थमे समीक्षा-पोथी एकरा नहियोँ कहल जा सकैछ, कारण ई तँ समीक्षाकर्मक दिशा निर्देश करैत अछि तथा समीक्षके केँ कसौटी पर चढ़बैत अछि। मैथिली समीक्षाक उल्लेखनीय पोथी तँ मानिते छी हम एकरा।

आब उक्त ओहि छबो पोथीक प्रसंग कह' चाहब, अति संक्षेपमे, जकर नाम पहिने ल' चुकल छी आब जे हमरा दृष्टिमे शुद्ध समीक्षा ग्रन्थ थिक। एत' ई स्पष्ट करब आवश्यक जे हम केवल ओतबे पोथीक बीच एकरा चुनलहुँ अछि जे हमर पढ़ल अछि, जखन कि मैथिलीमे प्रकाशित आधो पोथी हमरा देखल-बुझल नहि होयत। चयनो मे रूचि हमर अपन थिक, तथापि भिन्नो मतक महत्त्व हमरा लेल ओतबे रहत।

बलचनमा : पृष्ठभूमि आ प्रस्थान : 'बलचनमा'क महत्त्व जे छैक से अपन जगह पर छैके, मुदा एकर लेखन-प्रकाशनकेँ विवादस्पद बना देल गेल। ई मूल रूप सँ मैथिलीमे लिखल गेल कि हिन्दीमे, मैथिली बलचनमा अनुवाद थिक सेहो बेसी अनके कयल, हिन्दी आ मैथिलीमे किछु स्थल पर कने भिन्नता अछि से किएक भ' गेल? मैथिलीक वस्तु हिन्दीकेँ सौँपि देल गेल। सोपनिहार के तँ लेखकक खास अपने। एहन अनेक प्रश्न ठाढ़ कयल गेल। मोहन भारद्वाज तार्किक ढ़ंग सँ ने केवल सभ विवादक निराकरण कयने छथि, अपितु 'बलचनमा'केँ मैथिली उपन्यास साहित्यक प्रस्थान-बिन्दु मानने छथि— सभ दृष्टिएँ। हमर तँ मत अछि जे आधुनिक साहित्य पर लिखित समीक्षा ग्रन्थमे ई सर्वश्रेष्ठ थिक।

डाकदृष्टि : मिथिलाक लोकजीवनमे अदौसँ घुलल-मिलल डाकवचनकेँ, जकरा फकड़ा बुझल जाइत अछि, ओ एतेक मूल्यवान साहित्यिक सम्पत्ति थिक, ओकर रचना-विधान, भाषा, शिल्प, अर्थगांभीर्य कतेक उच्च कोटिक अछि, ओकर इतिहास, अन्य प्रान्तमे प्रचलित ओहि प्रकारक वचनक संग तुलना प्रभृति अनेक पक्षक खुलासा भेल अछि। डाकवचनक सामाजिक महत्त्व तँ पूर्वहुसँ छल, एतेक विशिष्ट ओकर साहित्यिको महत्त्व अछि, से एही ग्रन्थसँ प्रमाणित भेल अछि।

बदलैत सौन्दर्यबोध आ कविता : कुलानन्द मिश्रक ई लघुपुस्तिका असलमे सटीक आलोचनाशास्त्र थिक। सौन्दर्य जतबे सृष्टिमे छैक, ततबे देखनिहारक दृष्टियोमे छैक। सौन्दर्य-दर्शन बाह्य आ अभ्यन्तर दुनू दृष्टिसँ होइत छैक। अभ्यंतर दृष्टि व्यक्तिक शिक्षा, परिवेश, विचारधारा प्रभृति अनेक तत्त्व पर निर्भर करैछ। लेखक मार्क्सवादी सोचक कवि-समीक्षक छथि। सौन्दर्यबोधमे परिवर्तन समाजक परिवर्त्तित सोचक परिणाम थिक— लेखकक चिन्तन ताही पर केन्द्रित छनि— दृष्टान्त मैथिली कवितासँ देल गेल अछि। मैथिली समीक्षाक लक्ष्मणरेखा केँ ई कृति टपैत अछि — ताहू दृष्टिएँ एकर महत्त्व स्वीकार्य थिक।

मैथिल ब्राह्मण-समाजक सांस्कृतिक मरौसी एवं मैथिलीक कुकाव्य : काव्यक एहन शाखा, जकरा साहित्यमे अपांक्तेय मानल गेल, कुकाव्य कहि तिरस्कार कयल गेल, से साहित्योक सम्पदा थिक, ओकर समृद्धिक एक कारक थिक, शब्दक उच्चस्थ शक्ति लक्षणा-व्यंजनासँ चमकैत अछि— तकरा साहित्यिक मर्यादा पहिल बेर यशोनाथ झाक एहि कृतिमे देल गेल अछि। एक

समय छल जहिया लगभग प्रत्येक सुसंस्कृत गाममे संभ्रान्त समाजक कोनो बाबूक असामान्य व्यवहार केँ लक्ष्य करैत व्यंग्य कविताक टुकड़ी मुँहामुहीं सौंसे इलाकामे पसरि जाइत छल। बात सामान्य छलैक, मुदा असरि गंभीर होइत छलैक। एही विषयकेँ ल'क' श्रोत्रिय समाजक सांस्कृतिक ओ समाजशास्त्रीय अध्ययन कयल गेल अछि आ ताहि सन्दर्भमे एहि प्रकारक काव्य (कुकाव्य)क लेखन-प्रसारण-प्रभाव आ बदलाव पर विभिन्न दृष्टिएँ व्यापक विवेचन अछि, संगहि सामाजिक स्वरूपमे होइत परिवर्तनक परिप्रेक्ष्यमे एकरो विकास आ ह्रास पर प्रकाश देल गेल अछि। ईहो तँ काव्ये थिक, जे एक समयमे समाज पर अपन अमिट छाप छोड़ने छल, जन-जनक ठोर पर चढ़ल छल, हलचल मचौने छल आ जे एखन धरि अविवेच्य छल, ताहि पर एतेक गंभीर विवेचनक पोथी उत्कृष्ट समीक्षा ग्रन्थ-रूपमे गण्य तँ होयबेक चाही।

मैथिली लोकनाट्यक विस्तृत अध्ययन एवं विश्लेषण : पोथीक शीर्षके एकर विषयवस्तुक विस्तारक संकेत द' दैत अछि आ जखन लेखकक रूपमे महेन्द्र मलंगियाक नाम उभरैत अछि तखन एकर प्रामाणिकता तथा विषयपर गम्भीर पकड़क प्रति सहजहिँ आश्वस्त भ' जाइत छी। ग्रन्थ छौ अध्यायमे विभक्त अछि, से थिक— लोकनाट्यक अवधारणा, जन्म विकास आ प्रसार, लोकनाट्यक मंच आ प्रस्तुतीकरण, लोकनाट्यक विविध प्रकार, लोकनाट्यक उदाहरण आ समीक्षा तथा लोकनाट्यक वर्तमान आ भविष्य। अवश्य ई एक प्रोजेक्टक अन्तर्गत लिखल गेल अछि, किन्तु विश्वविद्यालयीय शोधग्रन्थ नहि थिक। सम्बद्ध विषयक ई मानक ग्रन्थ थिक, मैथिली समीक्षाक सेहो।

मैथिलीक लोकनाट्य : ओम प्रकाश भारती लोकनाट्य साहित्य एवं ओकर अभिनय पक्षमे विशेषज्ञता अर्जित कयने छथि। ई संगीत नाटक अकादेमीक नाट्य अनुभागमे पदाधिकारी रहल छथि तथा देश भरिक लोकनाट्य सँ परिचय रखनिहार छथि। पोथी मे दू भाग अछि — पहिलमे लोकनाट्यक सैद्धान्तिक पक्षकेँ लेल गेल अछि एवं भारतीय परिप्रेक्ष्यमे एकर विकास यात्रा पर संक्षेपमे विचार कयल गेल अछि। दोसर भाग, जे विस्तृत अछि, ताहिमे मैथिली लोकनाट्य साहित्यपर प्रकाश दैत बिदापत, नटुआ नाच एवं जट-जटिनक विस्तारपूर्वक नाट्य-विवेचनक संग ओकर प्रदर्शन आलेख सेहो देल गेल अछि। एहि पोथीक महत्त्व असलमे प्रदर्शन आलेख ल'क' छैक, समीक्षा-अंश गौण छैक, मुदा जतबे छैक से एकर महत्त्वकेँ द्योतित अवश्य करैत छैक। अतएव, लोकनाट्यक सन्दर्भमे एकरा हम उच्च कोटिक समीक्षा-ग्रन्थ मानैत छी।



वीणा ठाकुर

मैथिली शोध पत्रिकाक आलोचनात्मक मूल्यांकन

उपर्युक्त शीर्षक मे शोध और आलोचना दू गोट शब्द ध्यान आकृष्ट करैत अछि। सभसँ पहिले प्रश्न उठैत अछि जे आलोचनाक प्रस्थान बिन्दु कतय सँ आरम्भ होइत अछि, त' सहजहि कहल जा सकैत अछि जे कोनहु साहित्यिक कृति केँ ओकर प्रयोजन, उद्देश्य तथा लक्ष्यक कुहेससँ बाहर निकालि जौँ मात्र ओकर "आत्यन्तिक सत्य" पर केन्द्रित कयल जाय, तखनहि ओकर मूल्यवत्ताक मूल्यांकन कयल जा सकैत अछि। भारतीय साहित्यमे आलोचनाक परिगणना एकटा शास्त्रक रूपमे होइत अछि, और एकर अन्तर्गत रस, गुण, ध्वनि, अलंकार आदि पर विचार कयल जाइत अछि। मुदा आधुनिक कालमे आलोचना साहित्यक विशिष्ट अंग भ' गेल अछि। आलोचना और आलोचकक परिभाषा दैत कहल जा सकैत अछि जे– "आलोचना शब्दक रूढ़ अर्थ निर्णय होइत अछि और जतेक व्यापक रूप सँ एहि शब्दक प्रयोग कयल जाइत अछि, ओहिमे यैह विचार निहित रहैत अछि। साहित्यिक समालोचक सँ प्रधानतः ओहि निपुण व्यक्तिक बोध होइत अछि जे विशेष प्रतिभा एवम् प्रशिक्षण सँ कोनहुँ साहित्यिक कला अथवा कोनो लेखकक रचनाकेँ प्रस्तुत करैत अछि, ओकर गुण-दोषक विवेचन करैत अछि तथा ओहि पर अपन निर्णय दैत अछि। एकर अन्तर्गत ओ समस्त साहित्य अबैत अछि, जे साहित्यक विषयमे लिखल गेल अछि, भनहि ओकर उद्देश्य विश्लेषण, व्याख्या अथवा मूल्यांकन होमय, अथवा एकर मिश्रित रूप होमय। एतेक धरि जे आलोचनाक विचार सेहो आलोचनाक अन्तर्गत कयल जाइत अछि।

जौँ रचनात्मक साहित्यक परिभाषा विभिन्न विधाक माध्यम सँ कयल जाय बला जीवनक व्याख्या थिक, त' आलोचनात्मक साहित्यकेँ ओहि व्याख्याक

व्याख्या तथा ओहि कलारूपक व्याख्या कहल जा सकैत अछि, जाहिमे जीवनक व्याख्या कयल जाइत अछि। निसन्देह आधुनिक साहित्यमे आलोचना निजी महत्व प्राप्त क' लेने अछि तथा आलोचना पर विचारक अन्तर्गत एकर आरम्भ और परिणति दुनूक समावेश होइत अछि। सम्यक रूपसँ विचार कयल जाय त' आलोचना विचारक सृष्टि थिक। शोध अथवा अनुसन्धान आधुनिककालीन सर्वाधिक विकसित विधा थिक। जहिना राजनीतिक इतिहास अतीतक व्यतीत-वर्णन थिक तथा वर्तमानक मूल्यांकन हेतु राजनीतिक इतिहासक अध्ययन अभिप्रेत होइत अछि, तहिना साहित्यक इतिहासमे काव्य-युगक-प्रवृर्तिक आधार पर जनचेतनाक आकलन होइत अछि और जे वर्तमानक अध्ययनमे सहायक होइत अछि। जनचेतनाक अध्ययन हेतु प्रवृत्ति निर्धारण आवश्यक होइत अछि और जे साहित्यक इतिहासक काज थिक। इतिहासक काज जाहि ठाम समाप्त होइत अछि, आलोचनाक काज ताहि ठाम सँ आरम्भ होइत अछि। मुदा आलोचनाक काज जाहि ठाम समाप्त होइत अछि, शोधक काज ताहि ठाम सँ आरम्भ होइत अछि।

भारतीय भाषा-साहित्य मध्य आधुनिक काल उन्नैसम शताब्दीक उत्तरार्द्ध मानल जाइत अछि। एहि नवीन साहित्य-युगकेँ आधुनिक शब्द सँ अभिहित करबाक एकटा विशेष दृष्टिकोण अछि। ई विशाल मुगल साम्राज्यक अवसानक अवधि थिक, जकर पश्चात् अंग्रेजी शासनकालमे जाहि सामाजिक चेतनाक उदय भेल, ताहिमे 1857 ई.क पश्चात् तीव्रता आयल। तकर कारण छल जे एहि नवीन चेतनाक प्रतिनिधित्व नवीन शिक्षित बुद्धिजीवी वर्ग करय लागल। ई बुद्धिजीवी वर्ग एक दिश त' प्राचीन सांस्कृतिक सुरक्षाक प्रति उत्सुक भेल, त' दोसर दिस युगक नव आलोकक स्वागत कयलक। फलतः एहि संस्कृतिक अनुष्ठान सँ भारतीय भाषाक विकास भेल, तथा साहित्य सम्पन्न एवम् समृद्ध भेल।

एहि सांस्कृतिक पुनरुत्थानक प्रभातमे जे कार्य सभसँ महत्त्वपूर्ण और सर्वप्रथम भेल, जे छल देशवासीक हृदयमे आत्म गौरवक बोध। सन् 1784 ई. मे बंगालमे सर विलियम जोन्स "ऐशियाटिक सोसायटीक" स्थापना कयलनि, जकर मुख्य उद्देश्य छल भारत वर्षक प्राचीन साहित्यिक वैभवकेँ प्रकाशमे आनब। नव आलोचनात्मक दृष्टि द्वारा एहि विशाल साहित्यिक वैभवक परायणसँ नव पृष्ठभूमिक दर्शन भेल। पश्चात् ई संस्था बंगाल रायल एशियाटिक सोसायटीक नामसँ प्रसिद्ध भेल। एहि संस्थाक माध्यम सँ अनेको यूरोपीय विद्वान भारतक प्राचीन साहित्यमे

डूबि ओकर लुप्त इतिहासकेँ आकार देमय लगलाह। जकर परिणम भेल जे विश्वक संगहि भारतवासीक हृदयमे पूर्ण विश्वास भ' गेल जे भारत महान देश थिक, तथा एकर सभ्यता ओ संस्कृति अत्यन्त प्राचीन अछि। एकर प्राचीन साहित्य ओ दर्शन ग्रन्थक समता विश्वक कोनो देशक साहित्य ओ दर्शन नहि क' सकैत अछि। एकर प्रभावस्वरूप भारतीय विद्वान सेहो अनुसंधान कार्यमे प्रवृत्त भेलाह। जकर परिणामस्वरूप भारत वर्षक प्राचीन इतिहास दैदीप्यमान भ' उठल, तथा एहि नव आलोकमे भारतक नव इतिहास लिखल जाय लागल।

मैथिली साहित्यक आधुनिक काल 1857 ई0 सँ मानि क' एकरा देशक विशाल परिसरमे के राखि देखबाक प्रयास थिक। साहित्य और समाज दुनूक परस्पर गहन सम्बन्ध अछि। अतः अनिवार्य छल जे नव सामाजिक चेतनाक प्रभाव साहित्य पर पड़य और ओ रूढ़ परम्परा छोड़ि नवीन दिशा संकेत प्राप्त करय। मैथिली साहित्यक इतिहासमे ई चन्दा झाक रचना काल छल। हिनक राजनीतिक सामाजिक रचनाक आधार पर अनुमान कयल जा सकैत अछि जे ई 1857क पश्चातक परिवर्त्तित परिस्थितिक सहज प्रतिक्रिया छल। चन्दा झा मैथिली साहित्य मध्य नवयुग स्थापित कयलनि तथा अपन गद्य रचना द्वारा आधुनिकताक द्वारि खोलि देलनि। क्रमशः साहित्यमे नव आलोक पसरल तथा साहित्य नव किसलय सँ सज्जित भेल।

साहित्यमे जखन कोनो नवीन प्रवृत्ति प्रवेश करैत अछि, त' ओ क्रमशः विकसित होइत नव-नव स्वरूप सेहो धारण करैत जाइत अछि। आधुनिक मैथिली साहित्यकेँ गद्य-युगक संज्ञासँ सेहो अभिहित कयल जा सकैत अछि। मैथिली साहित्यक मध्य गद्यक रचना त' भेल छल, मुदा एकर समुचित विकास वर्तमान कालमे भेल अछि। युगक सक्रिय संघर्षमय जीवन, भाषाक मर्यादा एहि रूपमे स्थापित क' देने अछि जे गद्य अभिव्यक्तिक असाधारण साधन बनि गेल अछि। वर्तमान युग भाव प्रवणताक निराकरण करैत अछि तथा विचारक गाम्भीर्यक समर्थन। वस्तुतः वर्तमान संघर्षपूर्ण जीवनमे जाहि व्यावहारिक बुद्धिक विकास भेल अछि, ताहिमे गद्य अधिक अनुकूल प्रमाणित भेल अछि।

मैथिली गद्यक विकासमे सभसँ प्रमुख कारक तत्व प्रमाणित भेल पत्रकारिताक आविर्भाव। गद्यक विभिन्न रूप विधाक जन्म पत्र-पत्रिकाक माध्यम सँ भेल। पत्र-पत्रिका गद्यक प्रर्वद्धन कयलक, ज्ञानक प्रसार कयलक, मातृभाषामे मनोरंजन

साहित्य केँ प्रोत्साहन देलक तथा मातृभाषानुरागी पाठकक वर्ग तैयार कयलक। संगहि प्रेरणा और प्रोत्साहनक फलस्वरूप नव लेखकक दल सेहो तैयार भेल, जे मैथिलीक श्रृंगार विन्यासमे लगन सँ लागि गेलाह। मैथिली पत्र-पत्रिकाक सम्मुख सभसँ पैघ समस्या छल मातृभाषाक महत्वक प्रचार-प्रसार करब। मैथिल विद्वानक असावधानी सँ मैथिली युगक दौड़मे पिछड़ि गेल छल, तकरा आँगुर पकड़ि दौड़ेबाक भार एहि पत्र-पत्रिका पर आबि गेल।

एहि क्रममे 1905 ई. मे जयपुरसँ "मैथिली हित साधन", 1906 ई. मे काशीसँ "मिथिला मोद" प्रकाशित भेल। 1908 ई.मे दरभंगासँ मिथिला मिहिरक उदय भेल। प्रथम महायुद्धक पश्चात् पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनमे तीव्रता आयल। मैथिल प्रभा (1920-26), मैथिली प्रभाकर (1929-30), श्री मैथिली (1925-27), मिथिला (1929-31), मिथिला मित्र (1931-32), मैथिल बन्धु (1935-), मैथिल युवक (1931-41), जीवन प्रभा (1940-50), भारती (1937) विभूति (1931-38), मैथिल साहित्य पत्र (1937-39) आदि पत्र-पत्रिका साहित्य जागरणमे सहयोग दैत रहल। पत्र-पत्रिका दीर्घजीवी त' नहि भेल, तथापि मातृभाषाक प्रति जे शिक्षित वर्गक ध्यान आकृष्ट भेल, तकर प्रतिफल त' एकरा अवश्य कहल जा सकैत अछि।

स्वाधीनताक पश्चात् मातृभाषाक महत्वमे अत्यधिक वृद्धि भेल। जनसाधारणक ध्यान मातृभाषा दिस गेल और ओ सचेष्ट भ' एकर श्रृंगार-विन्यासमे संलग्न भ' गेल। स्वतन्त्रताक पश्चात दरभंगासँ स्वदेश (1948)क उदय भेल। पटनासँ "मिथिला ज्योति" छिटकल, त' सीतामढ़ीमे "वैदेही" प्रकट भेलीह। मातृभाषाक एहि नवोत्थानमे पल्लव, किरण, मिथिला दर्शन, मिथिला (साप्ताहिक) मिथिला सेवक, धियापुता, चौपाड़ि, मिथिलादूत, निर्माण, इजोत, बटुक, नूतन विश्व आदि पत्र-पत्रिकाक महत्वपूर्ण स्थान अछि।

वर्तमानमे मैथिली साहित्य मध्य शोध विधाक रूपमे स्थापित भ' गेल अछि। मुदा एकर प्रारम्भिक श्रेय विदेशी विद्वान डा. ग्रियर्सन केँ छनि। ग्रियर्सन अपन "लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया" नामक ग्रन्थक पाँचम भागक दोसर खण्डमे मैथिली पर विस्तार सँ विचार करबाक क्रममे मैथिलीक भाषागत विशिष्टताक संगहि मैथिली साहित्यक सेहो परिचय देलनि। उमापतिकृत "पारिजात हरण" मनबोध रचित "कृष्ण जन्म" आदि ग्रन्थक सम्पादन, काल-निर्धारण तथा परिचय

संकलन द्वारा ग्रियर्सन निसन्देह मैथिली क्षेत्रमे अनुशीलन परम्पराक श्रीगणेश कयलनि। हिनक 1882 ई.मे ''मैथिली क्रेस्टोमेथी'' तथा वर्ष 1884मे ''ट्वेन्टी टू वैष्णव हिम्स'' प्रकाशित भेल, संगहि हिनक मैथिली व्याकरण सेहो प्रकाशमे आयल। एवम् प्रकारेँ ग्रियर्सन मैथिलीकेँ आधुनिक भारतीय भाषाक रूपमे अध्ययनक मार्ग प्रशस्त कयलनि तथा विद्वान लोकनिकेँ अपन भाषा, विशेषतः ओकर व्याकरणक अनुशीलन हेतु प्रोत्साहित कयलनि, प्रेरित कयलनि। निसन्देह ग्रियर्सन मैथिली साहित्य मध्य शोधात्मक अध्ययनक क्षेत्रमे अपन अधिपत्य स्थापित कयने छथि।

पूर्वहिमे निवेदन कयल जे पत्र-पत्रिकाक विकासक संगहि मैथिली गद्यक रूपमे परिष्कार भेल तथा मैथिली साहित्यक समृद्धि एवम् विकास हेतु विद्वतगण शोध-कार्यक प्रति जागरूक भेलाह। फलतः एवम् क्रमेँ शोधपत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ भेल। शोध-पत्रिकाक संक्षिप्त विवरण एवम् विश्लेषण निम्न रूपेँ प्रस्तुत अछि–

1. मैथिली-साहित्य परिषद् पत्रिका – 1962 ई. मे दरभंगा सँ रमानाथ झा, सुमनजी, किरण जी एवम् श्रीकृष्ण मिश्रक सम्पादकत्वमे ''मैथिली-साहित्य परिषद पत्रिका''क प्रकाशन आरम्भ भेल। ई त्रैमासिक शोध पत्रिका छल। एकर एकमात्र अंक प्रकाशित भेल, जे शोध साहित्यक प्रकाशनक दृष्टिसँ एकटा मानदण्ड स्थापित कयलक। परिषद द्वारा 1986 ई. मे नवीन चन्द्रमिश्रक सम्पादकत्वमे एहि पत्रिकाक पुनः प्रकाशन आरम्भ भेल। एकर प्रारम्भिक स्वरूप पूर्णतः गवेषणात्मक छल, मुदा परवर्ती स्वरूप सामान्य पत्रिका सदृश भ' गेल।

2. मैथिली प्रकाश – वर्ष 1968मे मैथिली प्रकाशन समिति कलकत्ता द्वारा ''मैथिली प्रकाश'' नामक अर्धवार्षिक शोध-पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ भेल। सम्पादक मण्डलक सदस्य छलाह इन्द्र गोविन्द झा, जयकान्त झा ''श्रुतधर'', मदन चौधरी, नन्दन झा एवम् श्यामानन्द पाठक। शोध एवम् अनुसन्धानकेँ प्रोत्साहनक उद्देश्य सँ एहि पत्रिकाक प्रकाशन कयल गेल। पाछाँ एकर स्वरूप चतुर्मासिक भ' गेल, तथा साहित्यक अन्य विधाक रचना सेहो प्रकाशित होमय लागल। मुदा एकटा तथ्य महत्वपूर्ण अछि जे एकर वार्षिकांक शोध विषयक रहैत छल। रमानाथ झाक ''विद्यापतिक गीत'', उपेन्द्र ठाकुरक ''दार्शनिक उदयनाचार्य'', शैलेन्द्र मोहन झाक ''विद्यापतिक दू गोट अप्रकाशित गीत'', दुर्गानाथ झा

'श्रीश'क ''मैथिली साहित्यमे हास्य रस'', बासुकी नाथ झाक ''विद्यापति पदावलीमे ध्वनि'', रामदेव झाक ''चण्डीदास पदावलीक अनभिज्ञात स्रोत'' तथा ''जगज्ज्योतिर्मल्लक दशावतार नृत्यम'' आदि श्रेष्ठ शोधात्मक आलेख प्रकाशित करबाक श्रेय एहि पत्रिका केँ अछि।

3. मिथिला भारती (त्रैमासिक) : मैथिली साहित्य संस्थानक स्थापना वर्ष 1969मे विशुद्ध शोध पत्रिका मिथिला भारतीक प्रकाशन आरम्भ भेल। मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास एवम् गौरवशाली परम्परा विषयक अनुसन्धानात्मक आलेख प्रकाशित क' मैथिली भाषा-साहित्य मध्य शोध-कार्य स्थापित करबाक उद्देश्य सँ एहि पत्रिकाक प्रकाशन कयल गेल। ''मिथिला भारती''क प्रबन्ध सम्पादक पण्डित राजेश्वर झा एवम् मुख्य सम्पादक श्री जगदीश चन्द्र झा छलाह, मुदा मात्र दोसर खण्डक मुख्य सम्पादक बाबू लक्ष्मीपति सिंह छलाह। संगहि एकटा सम्पादक मण्डल सेहो बनाओल गेल। एकर अतिरिक्त एकटा परामर्शदात्री समितिक सेहो निर्माण कयल गेल।

प्रकाशन वर्ष 1969 मे मिथिला भारती एक खण्डमे प्रकाशित भेल। एहि खण्ड (volume) मे दू भाग छल। पहिल भाग मे 1-2 अंक तथा दोसर भागमे 3-4 अंक प्रकाशित भेल। दोसर वर्ष अर्थात् 1970मे एक खण्डक प्रकाशन 1-4 भागमे भेल। पुनः वर्ष 1972 मे तेसर खण्ड 1-4 भागमे ''कुमार गंगानन्द सिंह स्मृति अंक''क रूपमे प्रकाशित भेल। एहि खण्डमे पाँच गोट निबन्ध और संस्मरण कुमार गंगानन्द सिंहक व्यक्तित्व और कृतित्व सँ सम्बन्धित संकलित अछि तथा बारह गोट शोध आलेख मिथिलाक धरोहरि और पुस्तक समीक्षाक रूपमे प्रकाशित भेल अछि। संगहि मिथिला भारतीक एहि तीनू खण्डमे रमानाथ झाक ''पञ्जी व्यवस्था'' तथा राजेश्वर झाक ''मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास'' सदृश महत्त्वपूर्ण शोध-आलेख प्रकाशित भेल। पश्चात् एहि शोध आलेखक स्वतन्त्र रूपसँ पुस्तक सेहो प्रकाशित भेल। अनुसन्धानक क्षेत्रमे एहि दुनू कृतिक वर्तमान धरि प्रासंगिकता बनल अछि।

तत्पश्चात् 1977मे मिथिला भारतीक चारिम खण्ड 1-4 भागमे ''राजेश्वर झा मेमोरियल भोल्यूम'' रूपमे प्रकाशित भेल। एहि खण्डमे उन्नैस गोट शोध आलेख तथा एगारह गोट मौलिक रचना एवम् निबन्ध राजेश्वर झाक व्यक्तित्व और कृतित्व सँ सम्बन्धित प्रकाशित भेल अछि। एहि पत्रिकाकेँ तत्कालीन

मिथिलाक इतिहासकार, साहित्यकार, पुरातत्ववेत्ता, न्यायविद् एवम् पत्रकार लोकनिक अभूतपूर्व सहयोग भेटैत रहय। फलतः एकर स्तरीयताक निर्वाह होइत रहल। मुदा राजेश्वर झाक मृत्युक पश्चात् एहि पत्रिकाक कार्यकलाप क्रमशः शिथिल होमय लागल। 1977मे प्रकाशित मिथिला भारतीक चारिम खण्ड राजेश्वर झाक स्मृति अंक रूपमे प्रकाशित भ' एहि श्रृंखलाक अन्तिम खण्ड प्रमाणित भेल।

मैथिली अकादमी, पटना द्वारा वर्ष 1979 सँ मिथिला भारतीक द्वैमासिक रूपमे प्रकाशन आरम्भ भेल। एहि पत्रिकाक प्रकाशनक उद्देश्य यद्यपि छल जे मिथिला भारती (त्रैमासिक)क उज्ज्वल परम्पराकेँ अग्रसर कयल जाय, मुदा ई विशुद्ध साहित्यक पत्रिका भ' गेल। एकर मात्र तीन अंक प्रकाशित भेल तथा एकर प्रकाशन स्थगित भ' गेल।

2014 ई0क आठ जनवरी, कें मैथिली साहित्य संस्थान पटनाक तत्वावधानमे 'मैथिली दिवस'क आयोजन कयल गेल, संगहि शिव कुमार मिश्र और भैरव लाल दासक संयुक्त सम्पादनमे मिथिला भारतीक नव श्रृंखलाक प्रकाशनक निर्णय कयल गेल। एहि पत्रिकामे मैथिलीक संगहि अंग्रेजीक शोध आलेखक प्रकाशनक सेहो निर्णय भेल। अंग्रेजीक शोध आलेखक प्रकाशनक पाछाँ सम्भवतः पाठकक संख्यामे वृद्धि करब, उद्देश्य छल। 2014-2018 धरि एकर पाँच गोट अंक प्रकाशित भेल अछि। एकर स्वरूप वार्षिक अछि। मिथिलाक संस्कृति, परम्परा, धरोहरि, पुरातत्व, भाषा-लिपि, धर्म-दर्शन, लोक कला-परम्परा आदि विषय पर स्तरीय शोध आलेखक कारणेँ देशी-विदेशी शोधार्थीक आकर्षक केन्द्र वर्तमानमे ई पत्रिका भ' गेल अछि।

मैथिली साहित्यक पत्र-पत्रिका मध्य सम्भवतः ई प्रथम पत्रिका थिक जकरा भारत सरकारक भारतीय इतिहास परिषद्, नई दिल्ली द्वारा गठित विशेषज्ञक एकटा कमिटी द्वारा, एकर शोध आलेखक समीक्षा कयल गेल और जाहि आधार पर एहि पत्रिकाकेँ भारतीय इतिहास परिषद एवम् भारतीय भाषा संस्थान द्वारा आर्थिक सहयोग भेटि रहल अछि। ई वस्तुतः मिथिला भारतीक संगहि मैथिली पत्र-पत्रिका हेतु सेहो सुखद भविष्यक सूचक थिक।

4. मैथिली अनुसन्धान पत्रिका— वर्ष 1971मे शोध-विधाक विकास ओ प्रोत्साहनक उद्देश्य सँ मैथिली एकेडमी इलाहाबाद द्वारा डा. सुधाकान्त मिश्रक सम्पादकत्वमे वाराणसी सँ अद्धवार्षिक ''मैथिली अनुसन्धान पत्रिका''क प्रकाशन

आरम्भ भेल। यद्यपि एहि पत्रिकाक एक मात्र अंक प्रकाशित भेल, तथापि एहि मे प्रकाशित आलेख शोधक क्षेत्रमे एकटा मानदंड स्थापित कयलक, यथा— रमानाथ झाक ''महाकवि विद्यापति एवं हुनक परिचय'', पण्डित शोभाकान्त झा ''जयदेवक'' ''संस्कृत साहित्यक रस-सिद्धान्त'' म0म0 उमेश मिश्रक ''परमानन्दक साधन विद्यापतिक गान'', डा. बासुकी नाथ झाक ''विद्यापति पदावलीक रीति-विवेचन'', अमरेश पाठकक ''मैथिली उपन्यासमे शैली तत्व'' आदि शोधपरक प्रकाशित आलेखक उल्लेख कयल जा सकैत अछि।

5. मैथिली समीक्षा - वर्ष 1973 मे रमानन्द रेणु द्वारा लहेरियासराय सँ ''मैथिली समीक्षा'' नामक पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ भेल। ई अनियतकालीन पत्रिका छल। यद्यपि एहि पत्रिकाक प्रकाशनक मुख्य उद्देश्य छल मैथिली पोथीक प्रकाशन और वितरणक अव्यवस्थाकेँ दूर करबाक प्रयास। तथापि एहि उद्देश्यक पूर्ति हेतु किछु महत्वपूर्ण पुस्तकक शोधपूर्ण समीक्षा एकर उपलब्धि रहल। मुदा एकर मात्र दू गोट अंक प्रकाशित भेल।

6. जिज्ञासा — वर्ष 1995 मे गोविन्द झाक सम्पादकत्वमे अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिकाक प्रकाशन ''सेन्टर फॉर द स्टडी ऑफ इंडियन ट्रेडिशन्स'' राँटी (मधुबनी) सँ आरम्भ भेल। जून 1995 सँ जून 1999 धरि एकर मात्र छह गोट अंक प्रकाशित भेल। एहि पत्रिकामे भारतीय परम्परा, संस्कृति एवम् वाङ्मय पर बहुतो शोधपरक आलेख प्रकाशित भेल छल।

7. मैथिली - वर्ष 1996मे ललित नारायण मिथिला विश्व-विद्यालयक मैथिली विभागसँ ''मैथिली'' नामक शोध पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ भेल, सम्पादक छलाह तत्कालीन विभागाध्यक्ष अमरनाथ झा। वर्ष 1996 मे विश्वविद्यालय मैथिली विभागमे विश्वविद्यालय अनुदान-आयोग द्वारा ''रिफ्रेशर कोर्स'' आयोजित कयल गेल। रिफ्रेशर कोर्स मे पठित विद्वतगणक शोधपूर्ण आलेखसँ मैथिली पत्रिकाक आरम्भ भेल। एहिमे विभिन्न विद्वानक उन्नैस गोट शोध आलेख प्रकाशित भेल। पुनः किछु वर्षक अन्तरालक पश्चात् वर्ष 2007 मे एकर दोसर अंक प्रकाशित भेल। वर्ष 2018 धरि एहि पत्रिकाक तेरह गोट अंक प्रकाशित भेल अछि।

वर्ष 2010 मे एहि पत्रिकाक रजिस्ट्रेशन भेल, फलतः एकरा ISSN नम्बर भेटि गेल। संविधानक आठम अनुसूचीमे मैथिली भाषाकेँ स्थान भेटल, परिणामस्वरूप

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षामे मैथिली-भाषा साहित्य सेहो संयुक्त कयल गेल। स्वभाविक अछि जे रोजगारक दृष्टिसँ ''मैथिली'' पत्रिकामे प्रकाशित आलेखक महत्त्व बढ़ि गेल। दोसर महत्त्वपूर्ण तथ्य अछि जे 2010 मे प्रकाशित मैथिलीक पाँचम अंक उपन्यास पर केन्द्रित अछि। वर्ष 2011 मे प्रकाशित एकर छठम अंक 'महाकाव्य' पर केन्द्रित अछि, त' वर्ष 2012क सातम अंकमे विविध विषय पर पचीस गोट आलेख संकलित अछि। पुनः वर्ष 2013मे एकर आठम अंक प्रकाशित भेल, एहि अंकमे ''आधुनिक मैथिली साहित्यक निर्माता'' पर केन्द्रित विविध विद्वानक शोधपूर्ण आलेख प्रकाशित भेल। संगहि एहि अंकक वैशिष्ट्य थिक जे रामदेव झा रचित ''मैथिली : परिशिष्ट शब्द सञ्चय'' प्रकाशित भेल। दू खण्ड मे विभाजित एकर खण्ड—एक मे अड़तीस आलेख संकलित अछि, तथा खण्ड-दू मे ''मैथिली : परिशिष्ट शब्द सञ्चय'' संकलित कयल गेल अछि।

पुनः वर्ष 2017 मे प्रकाशित एकर बारहम अंकमे बियालिस गोट आलेख प्रकाशित भेल। जाहिमे विभागीय शिक्षक और विद्वान लोकनिक छह गोट आलेख अछि, त' शेष छत्तीस गोट आलेख दिसम्बर 2016 मे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित एवम् विश्वविद्यालय मैथिली विभागमे आयोजित सेमिनार मे विभिन्न शिक्षक एवम् छात्र द्वारा पठित आलेख संकलित कयल गेल अछि। वर्ष 2018मे प्रकाशित एकर तेरहम अंकमे पुनः यू.जी.सी. द्वारा प्रायोजित सेमिनार मे पठित, ''आधुनिक मैथिली कविता : दशा ओ दिशा'' विषयक एकासी गोट आलेख प्रकाशित कयल गेल अछि। गुणात्मक अपेक्षा संख्यात्मक दृष्टिसँ एकर उल्लेख कयल जा सकैत अछि।

वस्तुतः अनुसन्धान अथवा शोध आधुनिककालीन सर्वाधिक विकसित विधा थिक। शोधक प्रतिपाद्य विषयक विवेचनमे शोध प्रक्रियाक यथासम्भव निर्वाह आवश्यक अछि, तथा शोध प्रक्रियाक निर्वाह लेल आवश्यक होइत अछि — प्रमाण पुष्ट विषय-प्रतिपादन, उपलब्ध सामग्रीक सुव्यवस्था, तुलनात्मक अध्ययन-परीक्षण। तथ्यानुशीलन हेतु समुचित विश्लेषण-विवेचन केँ ग्रहण क' वैज्ञानिक परिणाम धरि पहुँचबाक चेष्टा आवश्यक होइत अछि। एहि दिशामे जतय तथ्यक उद्घाटन सम्भव होइत अछि, ओतहि ओकरा स्वायत्त क' अन्य विद्वान द्वारा प्राप्त तथ्यक आलोकमे नवीन अर्थानुसन्धानक प्रवृत्ति आवश्यक

होइत अछि। ताहि हेतु आवश्यक अछि जे साहित्यक विकासकेँ ओकर परिपूर्णतामे देखल जाय, तथा आलोचनात्मक अध्ययन द्वारा ओकर परीक्षण कयल जाय।

तथ्य निरूपण निःसन्देह अनुसन्धानक विज्ञान सम्मत आधार भूमि थिक, मुदा तथ्य सीमित दृष्टिसँ अधिकसँ अधिक वैज्ञानिक होइतहुँ श्रेयस्कर नहि मानल जा सकैत अछि। विशेष क' एम्हर आबिक' साहित्यिक शोध एकटा व्यवस्थित विधा भ' गेल अछि और जाहिमे तथ्य संकलनक संगहि तत्व चिन्तनक समुचित उपयोग भेटैत अछि।

अनुसन्धानक ई दुनू अनुबन्ध तथ्य संकलन एवम् तत्व चिन्तनक संतुलित सहयोगसँ शोध-प्रक्रिया एकटा नव प्रतिमान स्थापित क' रहल अछि। जाहिमे पत्र-पत्रिका अपन महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह क' रहल अछि। श्रेष्ठ शोधमे मात्र वृत्ति पर ध्यान नहि द' साहित्यक आभ्यन्तरिक प्रवृत्तिक अनुशीलन आवश्यक होइत अछि। वस्तुतः वैज्ञानिक शोध प्रणालीक कोनहुँ प्रकारेँ अवमूल्यन नहि क' विवेच्य वस्तुक तात्विक दृष्टिसँ उद्घाटनक प्रयास, साहित्यक विकासमे निरीक्षण करबाक विनम्र प्रयास होइत अछि। शोध पत्रिकाक संख्या अल्प अछि, मुदा महत्वपूर्ण अवश्य अछि।



अरुणाभ सौरभ

मैथिली आलोचनाक वर्त्तमान

मनुख जखन अपन नेनपन सँ जे विभिन्न चेष्टादि करैत अछि तखने सँ भाषा ओ बूझैत अछि। नेनाक कननाइ हँसनाइ विभिन्न संकेत सभ, चेष्टा सभ आ क्रिया आदि सभ किछु भाषाक अंतर्गत होइत अछि। भाषा अपन सभ रूप सँ एकटा नेना कें क्रियाशील बनबैत अछि। तार्किकता आ तर्कणा शक्ति जखने मनुखक बढ़ैत अछि भाषा गहींर हुअ' लगैत अछि। गहींर भाषा मे तार्किकताक संग सृजनात्मक गप्प जखने ओ नेना आरंभ करैत अछि ओ आलोचक भ' जाइत अछि। आलोचना शक्ति मनुखक जीवनक्रम के स्वाभाविक विकास छी। आलोचना पाठ धरि सीमित विधा किन्नहु नहि थिक। आलोचना समुच्चा जीवनक अध्ययन सेहो नहि थिक।

साहित्यमे जखन आलोचना पर गप्प हुअए त' स्पष्ट रहबाक चाही जे आलोचना स्वतंत्र विधा छी। आलोचना रचनात्मक विधा थिक। कोनो पाठ के प्रति एकटा जवाबदेह पाठकक प्रतिक्रिया थिक– आलोचना! जवाबदेही सँ भरल प्रतिक्रिया जकरामे स्थापना आ समाधान दुनू होइत अछि। रचनाक विभिन्न कोण सँ आलोचनाक विकास हेतै सेहो आवश्यक नहि! आलोचना एकटा विवेकवान प्रक्रियाक परिणति होइत अछि, जकरा मे आधार आ अधिरचना दुनू लेल आवश्यक आ अनिवार्य जगह होइत अछि। एकटा विवेकवान प्रक्रियाक सामाजिक स्वीकृति आलोचना कें संबल दैत छैक। ध्यान रहबाक चाही जे आलोचना शास्त्रीय प्रक्रिया थिकै। आलोचना सँ रचनाक मूल्यांकन मात्र नहि होइत अछि, अपितु ज्ञानक मुख्य अनुशासन सँ साहित्य कें जोड़बामे (रचनाकें) आलोचना सेतु जकाँ काज करैत अछि।

मिथिला समाज मे आलोचनाक लेल उर्वर भूमि रहल अछि। मिथिला प्रयोगक लीला भूमि छी। सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक प्रयोग, साहित्य, कला आ रंगमंच आदि लेल मिथिला एकटा उर्वर प्रयोग भूमि शुरूहे सँ रहल अछि। मिथिलाक भाषा मैथिली आ ओकर साहित्यमे आलोचनाक स्थिति नेनाक प्रथम बोली जकाँ रहल अछि। मैथिली साहित्य मे आलोचनाक स्थिति कमजोर रहल अछि से गप्प नहि। तखन ई गप्प स्वाभाविक अछि जे आलोचना लेल जे आधुनिक स्कूल ऑफ थॉट चाही से एहिठाम नहि रहल। आ जौं रहल त' कोनो स्कूल एहिठाम आलोचनाक विधागत चिंतन कें ओतेक गरिमा नहि द' सकल! हम सभ 'मैथिल आँखि' आ मैथिल टॉर्च सँ मैथिली साहित्यक मूल्यांकन करैत रहलहुँ जे साहित्य कें मुक्त करबाक अपेक्षा बान्हलक बेसी!

स्वतंत्र भारतक प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू भारतीय इतिहास कें बाहरी आलोचकक आँखि सँ देखबा पर बल दैत रहलाह। हमर मैथिली साहित्यक आलोचक लोकनि मैथिली साहित्य कें 'मैथिल आँखि' सँ देखबाक लेल दुराग्रह करैत रहलाह अछि। ई एकटा बालहठ जकाँ छल, तें हम बीसम-एकैसम शताब्दीमे बढ़ल मैथिली आलोचनाकें बाल्यकाल मे देखैत छी। बालहठ, जिद आ बालकोचित स्वाभाव मे निर्मित 'मैथिल आँखि' संकुचन दिस हमरा सभ कें ल' गेल अछि। ई 'मैथिल आँखि' वला टर्मनिलॉजी किरण जी जखन देलनि ओ समय किछु आर छल। आरंभिक समय मे बालहठ स्वीकृत कएल जा सकैछ। मूल्य, समय आ समाज आब एकदमे विपरीत भ' गेल अछि। एककात नेहरूक इतिहास कें बाहरी आलोचक जकाँ देखबाक बेगरता आधुनिक भारतीय मानस गढ़बा मे सहायक भेलनि आ दोसरा कात मैथिल आँखि सँ मैथिली साहित्यकें देखबाक हठ प्रतिगामी सोच दिस धकेल देलक आ हम सभ आलोचना मे पछुआ गेलहुँ! मोहन भारद्वाज सन आलोचक जे अपन गंभीर स्थापना लेल जानल जाइत छथि अपन एकटा साक्षात्कारमे ''मैथिली साहित्यक आलोचना मिथिला कें पढ़ि क' कयल जयबाक चाही।'' सन गप्प कहैत आलोचनाक वितान कें सीमित करैत छथि। मिथिला कें पढ़ब नीक गप्प मुदा मिथिला कें मैथिले आँखि सँ पढ़ब बालहठ नहि त' आर की? मिथिला कें बाहरी आलोचकक आँखि सँ पढ़ला पर अतीतक प्रति दुराग्रह नहि रहत! ई 'मैथिल आँखि वला सिद्धांत भावुकता दिस उन्मुख अछि। एहन भावुकता जे 'मिथिले मे रहबै' ...टाईप दुराग्रह रखने होअय। भावुकता, करूणा आ संवेदनशीलता पर्याप्त रहलाक बाद 'मैथिल आँखि' वला सोचमे

तार्किकता, वैज्ञानिकता, वस्तुनिष्ठता आदि अपर्याप्त अछि। आलोचनाक तेवर एहि सभ सँ कमजोर होइत अछि– तार्किकताक धार कुंद भ' जाइछ, वस्तुनिष्ठता अपन प्राण त्यागि दैत अछि आ वैज्ञानिकता अपन बाट बदलि एकठाह नाह पर सवार भ' जाइत अछि। असहमति तखन उत्पन्न भेनाइ बन्न भ' जाइत अछि। असहमतिक साहस रचना आ आलोचना लेल बहुत आवश्यक अछि। तेँ जखन अपन धरती सँ अपन धरतीक मूल्यांकन हएत त' भावुकताक खतरा ओहिठाम स्वाभाविक रूपेँ रहत। हम स्पष्ट छी जे मैथिली साहित्यक मूल्यांकन मिथिला केँ पढ़ि त' हुए मुदा मैथिल आँखि सँ नहि, इतिहासक बाहरी आलोचकक दृष्टि सँ हो त' बेसी नीक।

आलोचना सँ लोकतंत्र केँ मजगूती भेटैत अछि। लोकतांत्रिक विवेक आलोचना संस्कृति सँ विकसित होइत अछि आ आलोचनात्मक विवेक ओ लोकतांत्रिक संस्कृति एहि दुनू लेल असहमति बहुत आवश्यक अछि। अपन समाज, कला, वैज्ञानिकता, अपन मूल्य, अपन ज्ञान-परंपरा सभ सँ आ अपन रचनात्मक सोच आ अपन स्वयं सँ सेहो असहमति विराट सोच लेल जरूरी छै। असहमति जखने नीक सँ हेतैक आलोचना ओतबे मजगूत हेतैक, जाहि लेल बाहरी आलोचक भाव सँ साहित्यक मूल्यांकन बेसी गंभीर हेतैक! आ ओहि सभ लेल मैथिल आँखि नहि, अंतरराष्ट्रीय सोच चाही। तखने अपन साहित्य केँ वैश्विक पटल पर ल' जेबा मे अपना सभ समर्थ होयब। अपन एकटा साक्षात्कार मे मोहन भारद्वाज कहैत छथि– ''मैथिली आलोचनाक एकटा इतिहास छैक। ओना मैथिली अनुसंधान आ व्याख्याक काज करयवला पहिल रचनाकार छथि चन्दा झा। किन्तु ओ आजुक अर्थ मे आलोचक नहि छलाह। एहि दृष्टिकोण सँ मैथिलीक पहिल आलोचक छथि रमानाथ झा। किन्तु, रमानाथ झाक आलोचनाक सीमा छनि। ओ अंग्रेजीक विद्यार्थी भइयो क' संस्कृत मानसिकताक लोक छलाह। साहित्यक प्रति हुनक अवधारणा संस्कृत काव्यशास्त्रक पृष्ठभूमि मे पल्लवित भेलनि। मैथिली साहित्यक ओ जे व्याख्या आ विश्लेषण कयलनि तकर कसौटी छल संस्कृत काव्यशास्त्र।

हुनका बाद अथवा हुनका संग दू व्यक्ति आओर एहन छथि जे मैथिली साहित्यकेँ बुझबाक आँखि देलनि। ओ सभ छथि काञ्चीनाथ झा 'किरण' तथा रामकृष्ण झा 'किसुन'। ....सोझ शब्दमे कही जे मैथिली साहित्य केँ अर्थात्

सर्जनात्मक साहित्य केँ मार्क्सवादी आधार देलनि यात्री आ मैथिली आलोचना केँ मार्क्सवादी आधार देनिहार छथि– कुलानन्द मिश्र।[1]

मोहन भारद्वाज अपन एहन स्थापना देबाक क्रममे बहुत रास गप्प करै छथिन। मैथिली आलोचना मे रमानाथ झाक बाद जे नाम बहुत गंभीरता सँ किछो देखलनि से छथि मोहन भारद्वाज। मोहन भारद्वाज लग सोझराएल आलोचना दृष्टि रहनि। अपन बात कहबा जोगर आ स्थापना देबाक जोगर सेहो छलनि। तैयो जे गद्य कुलानन्द मिश्रक रहनि ओ गद्य आ गद्य मे कहबाक हुनर मोहन भारद्वाज वा कोनो दोसर मैथिली आलोचक लग नहि रहल। तटस्थताक अभाव कतहु नहि रहनि तैयो भारद्वाज जी समकालीन कविता मे एक्को डेग नहि बढ़लाह।

आइ जखन 'ट्रांस रियलिज्म' आ पोस्ट टुथ के गप्प कएल जा रहल अछि। जखन उत्तर मार्क्सवाद के स्थापना सँ साहित्यक मूल्यांकन होइछ तखन ई स्वाभाविक जे खाली मैथिल आँखि अपर्याप्त अछि। मिशेल फूको सवाल उठौने छलाह कि विज्ञान केँ हम समकालीन समय मे कोना देखब? एकरा स्पष्ट करैत ओ कहने छथिन जे सैद्धांतिक भौतिकी एवं कार्बनिक रसायन, अर्थव्यवस्था एवं राजनीति सँ जाहि तरह संबद्ध अछि, की ओकर सहज व्याख्या संभव अछि?

फूको लिखैत छथिन–

''...हम कखनो नहि कहने छी जे ताकत के अवधारणा सँ सभ चीजक व्याख्या कएल जा सकैत अछि। हमर कोशिश अर्थव्यवस्थाक भूमिकाक स्थान पर ताकतक भूमि केँ स्थापित करबाक कखनो नहि रहल। हम ओहेन तमाम भिन्न विषयक बीचमे समन्वय स्थापित करबाक प्रयत्न कएल जे ताकत सँ संबद्ध रहल अछि। ....हमरा लेल ताकत वएह अछि जकर व्याख्या कएल जा सकैत अछि।''[2]

पाश्चात्य जगतमे स्थापित फ्रैंकफर्ट स्कूल दर्शन, आलोचना, साहित्य आ विचारधारा केँ नव आयाम देने अछि। हेबरमास (जर्मन दार्शनिक जुरगेन हेबरमास) 1956मे एडोर्नोक सहायक बनि फ्रैंकफर्ट स्कूल सँ जुड़ैत अछि। हेबरमास लेल आधुनिकता महज दृष्टि नहि अपितु समयक गतिशीलते आधुनिकता छी। हिनक बहुचर्चित लेख प्रकाशित छनि–Modernity an unfinished project जाहि मे ओ एकठाम लिखैत छथि–''सभ कालमे एक नव विषय वस्तुक संग

आधुनिकताक अभिव्यक्ति, एकटा एहन युग चेतना सँ स्वयं केँ अलग करैत अछि जाहि मे कोनो अतीतक शास्त्रीय चेतना होइत अछि।"[3]

राजकमल चौधरी एकटा बड़ नीक टिप्पणी कविताक अर्थ प्रक्रिया पर केने छथिन–

..."कविता मे अर्थ ताकब, दूधक बाटी मे राखल अनन्त भगवानकेँ ताकब नहि थिक, जे आङुर राखि, इच्छा करि अर्थ भेटि जायत। रस प्राप्त करबाक लेल पहिने रससिद्ध होयब आवश्यक आ अर्थ प्राप्त करबाक लेल अर्थ-शिक्षित।[4]

ई गप्प आलोचनाक संदर्भमे सेहो प्रासंगिक लगैत अछि। राजकमल जी आलोचनाक संधान कहियो नहि कएलाह। ओ आलोचनाक बनल-रटल-रटाएल परिपाटीसँ भिन्न एकटा निभ्रांत रचनाकार रहला आधुनिकतम मानुष।

हमरा जनैत मैथिलीक आलोचना पंरपरामे असहमतिक परंपरा कुलानन्द मिश्र गढ़ैत छथि। कुलानन्द जी मैथिलीक कविता परंपरामे बदलैत सौंदर्य बोधक खोज' वला एकसर आ सार्थक आलोचक छथि। सौंदर्य बोधक स्वरूप कोना बदलतै आ कविताक विवेचनक कोन आधार रहतै तकर विश्लेषण मे कुलानन्द जी "बदलैत सौंदर्यबोध आ कविता" शीर्षक सँ प्रकाशित एकटा महत्त्वपूर्ण पोथी मे केने छथि। ध्यान रहए जे कुला बाबूक विश्लेषण आ चिंतनक धार मार्क्सवादी रहल। मार्क्सवादी सौंदर्यबोध, कलाक प्रति वैज्ञानिक समाजवादी अप्रोच सँ विश्लेषण करबाक अद्‌भुत क्षमता हिनके मे रहलनि। एहि परंपराक डारि कुलानन्द मिश्रक बाद सुखा गेल। समाजवादी संकल्पनाक गप्प करैत लिखैत छथिन–

"समाजवादी संकल्पनां व्यक्ति आ समाजवादी सामाजिकताक वास्तविकताक बीच सामंजस्यक विचार केँ सर्वोपरि महत्त्व दैत अछि। एकर ई अर्थ नहि जे मनुष्य आ विश्वक अध्ययनमे समाजवादी कला आ साहित्य अस्तित्वक कठिनता तथा परिस्थितिजन्य अनिवार्य विरोधक बात पर ध्यान नहि रखैत अछि, तथापि ओहि साहित्य आ कलामे मुख्य बात ई देखबा मे आओत जे ओहि मे जीवनक विषमता आ विरोध पर बिनु कोनो आवरण देने ओ व्यक्ति संकल्पनाक निरूपण एहि प्रकारे करैत अछि जाहि सँ व्यक्तिक विश्वक संग, जे विश्व आब मनुष्यक शत्रु नहि रहि गेल अछि, जोड़ वला सूत्र सभ अधिक स्पष्ट हो।"[5]

कुलानन्द मिश्र लग एकटा समर्थ साम्यवादी दृष्टि रहनि ताहि अनुरूप हुनकर आलोचनाक प्रतिमान स्पष्ट छल। तेँ ओ मैथिली आलोचनामे एकटा प्रतिमान ठाढ़ करबामे सक्षमो भेलाह। मोहन भारद्वाज मैथिलीक खाँटी आलोचक छलाह। आलोचना केँ ओ संपूर्ण जीवन द' देने छथि। ओ आन विधा मे हाथ-पएर नहि भाँजैत छलाह। एकर अर्थ ई किन्नहु नहि भेल जे आन आन आलोचक जे बहुविधावादी छथि हुनकर आलोचना कतहु सँ कमजोर भेल हो। डॉ. रामदेव झा, डॉ. भीमनाथ झा सभ विशिष्ट प्राध्यापक सेहो मैथिली केँ भेटबाक गौरव भेल अछि। ईहो दुनू गोटए बहुविधावादी छथि। तैयो आलोचना पर जखन गप्प करबै आ ओकर वस्तुनिष्ठता पर गप्प करबै तखन बेसी काज तथ्यक संकलन धरि सीमित रहल भेटत आ प्राध्यापकी ज्ञानक दवाब आ मजबूरी सेहो देखल जा सकैत अछि। एकटा जरूरी नाम अबैत छनि– डॉ. रमानन्द झा रमणक। रमणजी सेहो आलोचना केँ एकमात्र संपूर्ण ऊर्जा दैत छथिन। आलोचना छोड़ि आन विधा मे ओहो नहि गेलाह। मुदा दृष्टिक जे गंभीरता आलोचना केँ चाही, तहि मे सभ ठाम हुनको लग अभाव छनि। तेँ नीक सँ नीक विषय वस्तुक संग आलोचनात्मक विवेकक अभाव रमण जीक काज केँ झूस करैत छनि। ओ काज अखियासल, बेसाहल, बेराएल, काज होइतो कोनो नीक विमर्श ठाढ़ करबामे असमर्थ भ' जाइत छनि। ओना तथ्यात्मकता रमणजी केँ सेहो विशिष्ट बनबैत छनि। आलोचना मे ध्यान रहए जे तथ्यक संकलनक विशिष्टता केँ इग्नोर नहि कएल जा सकैछ। तथ्य मे नहि, तथ्यात्मकते नहि तखन आलोचना कथिक?

रमानाथ झा मैथिली आलोचनाक भीष्म पितामह छथि। शरशय्या सँ हुनका मुक्ति देनिहार केओ योद्धा जे अर्जुन जकाँ रहितथि त' पितामह सभ दिनुका महाभारत देख लितथि।

"आचार्य रमानाथ झा सँ पूर्व मैथिली आलोचनाक रूपरेखा निर्विवाद रूपेँ संकुचित ओ अपुष्ट छल। कवीश्वर चन्दा झा सँ एकर विकास मानबा मे कोनो आपत्ति नहि, कारण मैथिल साहित्य मे आधुनिकता ओएह अनलन्हि।"[6]

मैथिली आलोचनामे आलोचक लोकनिक खगता तेहन कहियो नहि रहलन्हि। बेसी लोक गवेषक, विश्लेषक आ अनुसंधानकर्त्ता छथि आ बेसी काज तथ्यक संकलन पर भेल अछि। मोहन भारद्वाज जौं खाँटी आलोचक छथि त' एहि भाषा

मे पं0 गोविन्द झा, डॉ. दिनेश कुमार झा, डॉ. रामावतार यादव सन भाषा-वैज्ञानिक सेहो छथि। प्रो. उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' सन अंतरराष्ट्रीय भाषा वैज्ञानिक एहि भाषा केँ भेंटबाक सौभाग्य भेटल। नचिकेता जी कविता, नाटक, आलोचना (संपादकीय) खूब लिखलनि मुदा भाषा-विज्ञान पर एकटा पोथी मैथिली केँ देने रहितथि त' हमरा सभ लेल बहुत नीक रहितैक।

अशोक तारानन्द वियोगी, रमेश, विभूति आनंद, श्रीधरम सन आलोचक मैथिलीमे छैक तैयो ई लोकनि मूलतः आलोचक नहि, बहुविधावादी रचनाकार छथि। कमलानंद झा विभूति मूलतः हिन्दीक विद्वान आलोचक आ शिक्षाशास्त्री छथि। आलोचनाक अपन तेवर संग मैथिली आलोचना केँ समृद्ध करबामे लागल छथि। पत्र-पत्रिकामे मैथिली आलोचना करैत छथि, स्वतंत्र पोथी नहि छनि!

डॉ. तारानन्द वियोगी आ अशोक मैथिली आलोचना केँ नव-नव विमर्श दिस झीकबाक प्रयास केलनि अछि। तारानन्द वियोगी अपन दुनू पोथी 'कर्मधारय' आ 'बहुवचन' मे तकर प्रभाव देलनि। अशोक जी लग वएह 'मैथिल आँखि' के समस्या छनि, जाहि 'मैथिल आँखि' के पावर बड्ड कमजोर अछि। ओना 'बात विचार' पोथी होइ वा 'मैथिल आँखि' ई सभटा अशोक जीक नीक काज छनि। मुदा नीक काज सँ विमर्श ठाढ़ करबाक क्षमताक भरण-पोषण नहि भ' सकैछ! 'मैथिल आँखि' सँ मिथिलामे पसरल लोक-साहित्य हो अथवा मैथिलीक समग्र साहित्य तकर मूल्यांकन मे बाधा आएब स्वाभाविक! मिथिला समाज तर्क, न्याय, वैशेषिक वला समाज रहल अछि। दर्शन, ज्ञान-मीमांसाक समृद्ध परंपरा एहिठाम पुष्पित-पल्लवित भेल अछि। आधुनिक मिथिला समाजक लोक अपन आदिम परंपरा सँ व्यंग्य लेलनि, कटाक्ष लेलनि। तर्कवादी आ नीतिवादी हएब ई समाज बिसरि गेल। आलोचना आधुनिकताक उपज छी, आधुनिक समाज बनेबामे आलोचनाक हस्तक्षेप बहुत आवश्यक अछि।

जाहि समाजमे आलोचनाक संस्कृति कमजोर भेल अछि, तकर विखंडन भ' गेल अछि। जकर बहुत नीक उदाहरण अछि— सोवियत यूनियन। सोवियत यूनियन अन्यान्य बहुतो कारण सँ ध्वस्त भेल, मुदा ओहिठाम आलोचनाक संस्कृति कमजोर भेल जाहि सँ एकटा पैघ समाजवादी स्वप्न पूर्णतया भंग भेल तेँ आलोचनाक संस्कृति आ असहमतिक स्वागत समाज मे हेबाक चाही। जौं समाज

मे आलोचक नहि रहतै त' ओकरा मे आंतरिक लोकतंत्र कोना बहाल हएत। मिथिला समाज केँ अपन जड़ि मे जेबाक निश्चिते जरूरत अछि, मुदा जड़ि मे जा क' जड़ियाक' जरदगब हेबाक किन्नहु जरूरति नहि अछि। तखन ई गप्प बड्ड अबूह लगैत अछि जे मिथिला समाज आलोचना प्रेमी समाज रहल अछि ओकर आलोचना दृष्टि एतेक कमजोर किएक? अशोक अविचल, रवीन्द्र कुमार चौधरी, देवेन्द्र झा, इन्दुधर झा सन किछु अध्यापक लोकनि सेहो अपन अध्यापकीय आलोचनाक विकास मे नीक सँ जुटल छथि। हिनका लोकनि मे भीमनाथ झा आ रामदेव झा सन आलोचकीय दृष्टिक अभाव छनि। भीम बाबूक बहुधा अधीत दृष्टि आ संरचनावादी मूल्य मैथिली आलोचना केँ नव अध्याय सँ जोड़ैत अछि। रामदेव बाबू लग विराट गवेषणात्मक दृष्टि, शोधपरक अवधारणा आ समीक्षात्मक मूल्य छनि। ओ जतेक पोथी संकलित केलनि ओकर भूमिका मे मारिते रास स्थापना देलनि।

साहित्यक इतिहास लिखबाक जतेक चेष्टा मैथिलीमे भेल अछि ओ सभ इतिहास लेखन आलोचना विधा सँ बेसी मजगूती सँ सोझाँ आयल अछि। मैथिली साहित्यक इतिहास जयकांत मिश्र, दुर्गानाथ झा श्रीश, दिनेश कुमार झा, मायानन्द मिश्र ओ बालगोविन्द झा 'व्यथित' आदि जतेक काज इतिहास लेखन पर नीक जकाँ भेल आलोचना संग ततेक निसाफ नहि भेल। रामदेव बाबू आ भीम बाबूक अध्यापकीय आलोचना परंपरा केँ केष्कर ठाकुर आ अरूणा चौधरी आगू बढ़ाबै मे सफल भेल छथि। केष्कर ठाकुर अपन पोथी 'सम्बोधित स्वर' मे से गंभीरतापूर्वक विचार केलनि अछि। योगानंद झा सेहो नीक गवेषक, शोधकर्त्ता आ अनुसंधानकर्त्ता छथि तथापि आलोचक नहि छथि। योगानन्द झाक काज सभमे गंभीर शोध के सभटा तत्त्व अनिवार्य रूपेँ उपस्थित रहैत अछि।

महेन्द्र नारायण राम एकटा बेछप बेराएल लोक छथि। मैथिली फोकलोरक विशेषज्ञ जेना प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'। लोक अस्मिता, संस्कृति आ मिथिलाक दलित/वंचित समुदायक लोककथा, लोकगाथा आ सांस्कृतिक अध्ययन मे ओ सिद्धहस्त छथि। भाओ भगैत गायन नामक संकलन हो, अथवा हुनक संपूर्ण पोथी 'लोक संदर्भ' ओ लोक जीवनक विशुद्ध अध्येता छथि। महेन्द्र नारायण राम लग

लोक जीवन आ लोकसंस्कृत आदिक अध्ययन नीक छनि मुदा व्यक्त कर' वला गद्य शोधपरक बेसी छनि, आलोचनात्मक गद्य के अभाव सेहो। मैथिलीक नीक गद्य लिखबामे तारानंद वियोगी बेजोड़ छथि। ओमप्रकाश भारती सेहो अपन पोथी मे कोसी अंचलक गीत सबहक संकलन केलनि अछि। लोक संस्कृति सँ विमर्श ठाढ़ करबाक हुनर भारती जी मे खूब छनि। मिथिलाक लोक संस्कृति सबहक नीक सँ अध्येता रहलाह ओम प्रकाश भारती, महेन्द्र नारायण राम मुदा पैराडाइम सिफ्टिंग वला दृष्टि छनि तारानंद वियोगी लग।

मैथिलीक समकालीन आलोचना पर कोनो गप्प होयत त' देवशंकर नवीन आ रमेश पर गप्प केने बिना अपूर्ण हएत। ध्यान रहए जे देवशंकर नवीन एकटा प्रतिमान सदिखन बनौने छथि। एकटा संरचना निर्धारणक प्रयास करैत छथि। 'अक्खर खंभा' मैथिली कविता संकलनमे अखन धरि जे पोथी सभ आयल अछि ताहिमे सर्वश्रेष्ठ रहल अछि। एनबीटी सँ प्रकाशित 'अक्खर खंभा'क भूमिका मैथिली कविताकेँ बुझबामे, सभ काल के स्थापनामे आ मैथिली कविताक संरचनाकेँ चिन्हबामे सर्वाधिक महत्वपूर्ण पोथी अछि।

मैथिली साहित्य : दशा दिशा संदर्भ, वर्ष 2011 मे नवारंभ प्रकाशन सँ बहराएल नवीन जीक अल्टीमेट काज अछि। नवीन जी लग आलोचना केँ बुझबाक जेएनयू स्कूल केर सूत्र रहल अछि। नवीन जी केँ प्रो. नामवर सिंह, प्रो. मैनेजर पांडेय, केदारनाथ सिंह सन दिग्गज गुरु लोकनि सँ आलोचनाक थाती भेटलनि आ मिथिलाक बुझबाक एकटा सुधड़ दृष्टि। मुदा अफसोस जे मैथिली केँ जतेक नवीन सँ उमेद अछि, जे ततेक काज नहि भ' सकलै। तखनो राजकमल चौधरी सन विराट रचनाकारक सभटा सामग्री प्रकाशित करबाक करेज नवीने जीकेँ छनि। मैथिलीमे आलोचना विधा मे काज भेल अछि। तखन ई अवस्से जे संकलन, संपादन, अनुसंधान आ शोध बेसी भेल अछि आ आलोचना कम! ई सुखद आश्चर्य जे साहित्यक प्राचीनतम विधा नाटक पर लोक सबहक ध्यान कने गेलनि अछि। महेन्द्र मलंगिया सन मैथिलीक श्रेष्ठ नाटककार आलोचना लिख' लगलाह अछि। कमल मोहन चुन्नू जे मैथिली आलोचना मे सभ सँ टटका लोक छथि ओ साहित्यक सभ सँ पुरान विधा नाटक पर शानदार पोथी 'निनाद' लिखने छथि। नाट्यालोचन दिस मैथिली केँ बढ़ैत देखब सुखद।

कहल बहुत किछु जा सकैत अछि। तखन एकेटा लेख मे सभटा गप्प नहि कहल जा सकैछ! मैथिली आलोचना अखन धरि बाल्यकाल मे अछि। तकर बेसी रास कारण एत' थिंकिंग स्कूलक कम्मी अछि। मार्क्स बीसम शताब्दी केँ क्रांतिक शताब्दी कहने छथि। हुनकर परिकल्पना सँ बीसम शताब्दी केँ क्रांतिक सदी भेनाइ छल। पूंजीवादक गहराइत अंतर्विरोध पर सर्वहाराक निर्णायक प्रहार भेनाइ छल। से बीसम शताब्दी मे जतेक भ' सकल से भेल। एकैसम शताब्दी मे उन्नैसम शताब्दीक टूल्स काज नहि करत। आब उत्तर मार्क्सवादी चिंतनक स्कूल केँ सेहो देख' पड़त, नव मार्क्सवाद केँ सेहो। मार्क्यूज़ एकठाम लिखैत छथि—

''जखन मार्क्स विकसित औद्योगिक समाज मे समाजवादी रूपांतरणक गप्प केने रहथि त' ओकर मूल मे नहि केवल उत्पादन संबंधक परिपक्वताक गप्प छल, ओकर गैर रचनात्मक उपयोगक सेहो गप्प छल। पूंजीवादक विरोधक गहींर भेनाइ आ ओकरा नष्ट हेबाक आकांक्षा ओकर मूल मे छल। सदीक नव काल मे विकसित औद्योगिक देश मे आंतरिक अंतर्विरोधक बढ़नाइ कुशल संतुलन मे बदलि गेल। सर्वहाराक क्रांतिकारी चेतना कुंद होमय लागल।[7]

मैथिलीमे आलोचना करबाक काल ध्यान रहए जे की मैथिले आँखि सँ देखब आकि बाहरी चश्मा सँ। एहि मे बाहरी चश्मा मे कनेक संभावना बेसी ई रहत जे तार्किकता प्रबल रहत आ एक भगाह सोच नहि रहत। ध्यान ईहो रहए जे आलोचना आ कीर्त्तन दुनू भिन्न चीज़ अछि। एकायामी सोच मैथिल आँखि केँ हठपूर्वक प्रस्तुत करबाक आग्रह (दुराग्रह) मैथिली आलोचना केँ बाल्यकाल मे ठाढ़ देखना योग्य हमरा लगैत अछि। मैथिली आलोचना केँ बहुआयामी होमय पड़तै।

मार्क्यूज कहते छथि— एकायामी मनुखक भीतर प्रबोधन चेतना नष्ट भ' जायत अछि। ओ स्वतंत्रता केँ नष्ट कर' लगैछ। स्वतंत्रताक अर्थ अछि— ज्ञान, इच्छाशक्ति; ई बूझि सकनाइ कि हम की चाहैत छी, चूनि सकबाक क्षमता, ठहराव के विरोध क' सकबाक साहस। आइ जखन संवाद के स्थिति कमजोर होमय लागल अछि, आलोचनात्मक विवेक शून्य होमय लागल अछि, तर्कवादी मानसिकता केँ ध्वस्त कयल जा रहल अछि, एकायामी, एकभगाह, एकरंगा फासिस्ट दुनिया बनेबाक सूरसार तेज भ' रहल अछि त' आलोचनाक धार आ आलोचनाक मूल्य एकमात्र आ अंतिम विकल्प रहत कोनो लोकतांत्रिक गणराज्य मे।

संदर्भ सूची :

1. मोहन भारद्वाज सँ आशुतोष कुमार झाक भेंटवार्ता मैथिली साहित्यक आलोचना मिथिलाकेँ पढ़िक' कयल जयबाक चाही, सन्धान 4, पृ.-56-57
2. मिशेल, फूको-Essential works - Vol. 3 p. 284
3. Jurgen Habermas, The Philosophical discourse of Modernity, Polity Press-1998
4. राजकमल चौधरी, कविता राजकमलक, पृ0-148, सं.-मोहन भारद्वाज, मैथिली अकादमी पटना, सं0-1981
5. कुलानन्द मिश्र — बदलैत सौन्दर्यबोध आ कविता, पृ0-3, मैथिली अकादमी पटना, सं0-2014
6. इन्दुधर झा — आचार्य रमानाथ झा ओ मैथिली आलोचना, पृ.-114
7. Marcuse Herbert, Reason And Revolution Hegal and The Rise of Social Theory, Routledge And Kegan Paul, London and Henley Re-print, 1986, P.-436.



रमेश

मैथिली आलोचना आ कथागोष्ठी-विमर्श

मैथिली आलोचनाक विकास तँ अपेक्षित. गुणवत्ताक संग, सही दिशा मे सेहो आ विविध दिशा मे सेहो, भ' रहल अछि अथवा एना कही जे मूल्यांकन-साहित्य बहुमुखी भ' रहल अछि, से शुभ लक्षण थिक। मुदा से भ' रहल अछि, अत्यंत मन्थर गतिएँ। नाटक, गजल आ कविताक आलोचना-साहित्य समृद्ध भ' रहल अछि, जखनकि उपन्यास, नव गीत-लेखन, बाल साहित्य आ कथाक आलोचना, कमजोर भ' रहल अछि। आलोचनाक प्रत्यालोचना तँ आर विरल भेल जा रहल अछि। अनेक आ विविध दृष्टिकोण सँ मैथिली आलोचना-साहित्य लिखल जायब तँ स्वागतेय अछि। मुदा एहि विधाक लेखन-गति ततेक दयनीय आ चिन्तनीय अछि मैथिली मे, जे परिमाण मे कम रहबाक कारणें समीक्षा-साहित्ये डँड़खिल रहि जाइत अछि, तँ आलोचना-समालोचना-मूल्यांकन मे कम्मे कलम उठि पबैत अछि। व्यक्तिगत ईर्ष्या-आमर्ष सँ प्रेरित व्यक्तिगत टिप्पणी, सामूहिक आलोचनात्मक सोच मे परिणत नहि भ' पबैत अछि प्रायः। तहिना मौखिक टिप्पणी, साहित्य-संवर्गक जड़ता, असहिष्णुता-अनुदारताक कारणें, लिखित-मूल्यांकन साहित्य मे बरमहल नहि बदलि पबैत अछि। परिणामतः आलोचना-साहित्य छुछुन्न बनल रहि जाइत अछि। आचार्य रमानाथ झा आ मोहन भारद्वाजक मोड़-बिन्दु केँ छोड़ि, प्राध्यापकीय आलोचना हो अथवा एकेडेमिक, निबन्धात्मक प्राचीन परंपरा मे लिखल गेल मूल्यांकन हो अथवा बौद्धिक उद्धरण सँ लादल समीक्षा, परिमाण मे मैथिली-समालोचना केँ धनीक बनेबाक वनिस्पत, आलोचनाक गुणवत्ता पर कोनो विशेष उपकार नहि क' सकल अछि। कुल्लम जड़-परिस्थिति आलोचना-साहित्य केँ फड़य-फुलाय नहिं द' रहल अछि। ताहि पर सँ नोतल

राकस जकाँ ई जड़-धारणा बथा गेल अछि, जे समालोचना मूल-विधा नहि थिक, जखनकि आन कएक भाषामे एकरा सृजन आ मूल-विधाक हैसियति प्राप्त भ' चुकल अछि। अनपेक्षित हल्लुकपनाक संग लिखल गेल आलोचना-साहित्य, अपेक्षित गंभीरताक संग लिखल गेल मैथिली-आलोचना केँ बहुते क्षति केलक अछि। वस्तुतः अकादेमी सभक जड़ विचारधारावला प्रतिनिधिगणक आलोचनाक प्रति जड़मति-सोचक संग, हल्लुक ढ़ंगें लिखल गेल अगंभीर-आलोचना मैथिली-आलोचना-साहित्यक चेहरा केँ विकृत आ खलनायकी बना देलक अछि, जखनकि मैथिली-आलोचनाक मुख्यधारा आ दिशा (डाइमेंशन) वर्त्तमान मे, विविध दृष्टिकोणक अमीरीक संग, सही रेल पर अछि। मुदा सेहो पसिंजर-ट्रेनक गतिएँ चलि रहल अछि। नव आ नव्यतम पीढ़ीमे सेहो, गोटपगरे प्रतिभा एहि विधा दिस आकर्षित भ' रहल अछि। जनपक्षधर-आलोचना केँ सम्पुष्ट करबाक प्रयास, कविता-आलोचनाक समानान्तर, कथा-आलोचनाक विकासक प्रयास, सम्यक्-मूल्यांकनक परंपरा-विकास थिक। तकरो कमजोरे प्रयास भ' रहल अछि, मैथिलीमे। तथापि, भ' तँ रहल अछि, ताही सँ तत्काल संतोष करए पड़ि रहल अछि। कविता-आलोचनाक अपेक्षा कथा-आलोचनाक गति कम भ' गेलए। असलमे, आलोचना-साहित्यक बीजमंत्र आ बुनियादी-सूत्र, फ्रांसीसी-क्रान्ति (18म सदी)क प्रक्रियामे उभरि क' आयल, फ्रांसीसी दार्शनिक वाल्टेयरक स्वातंत्र्य-दर्शनक ओ सूत्रवाक्य थिक, जाहि मे ओ कहने छलाह जे, 'यद्यपि हम अहाँक विचार सँ सहमत नहिं छी, मुदा अहाँक से विचार अभिव्यक्त करबाक अधिकारक रक्षा लेल, हम अपन जान द' सकैत छी।' विश्व-स्वातंत्र्य, स्वतंत्रता-समानता-भ्रातृत्व, नागरिक जीवन मे सहिष्णुताक संस्थापना आ विश्व भरिक सभ भाषामे आलोचना-साहित्य केँ स्थापित करबामे एहि सहनशीलताक अवधारणाक महती भूमिका रहल। आलोचना-साहित्यक सहिष्णु-स्वरूप आ उदार चेहरा वाल्टेयरक एहि अवधारणाक ऋणी अछि, जाहि सँ अनकर विचार सँ असहमत रहितो, ओकरा उचित आदर देवाक परंपराक विकास भेल।

से परंपरा मैथिलीमे पहिने क्षीण छल। मैथिली आलोचना-साहित्यमे अत्यधिक असहिष्णुता छल। सभ गुटक आलोचना मे, सभ प्रतिपक्षी गुटक प्रति रहबे करय से। कोनो लेखक-समूह आ कोनो लेखक, भरिसक्के वंचित छल एहि अनुदारता सँ। ताहि अस्वस्थ परंपरा केँ अंत करबाक आ साहित्यिक-सहिष्णुताक विकास करबाक परंपरा केँ स्वस्थ आधार देबाक काज, 1990 ई० सँ प्रारंभ भेल मैथिली

कथा-गोष्ठी-अभियान क' सकल आ तकरे ई सुयश आ श्रेय प्राप्त छै। एहेन बात नहिं छै जे, आब आलोचना करबाक आ लिखबाक चलतें, संवादहीनता आ झगड़ा एकदम्मे नहिं होइत छै। मुदा तेहेन संवादहीनता आब अल्पसंख्यक भेल अछि। पहिने जे ठाँहि-पठाँहि रेक्का-तोक्की, तत्खनाते भ' जाइत छल, से आब लोक अपनो मुँह पर आ परोक्षोमे, अपन आलोचना, सून' लागल अछि। असल मे, आजुक नव पीढ़ी आ नव्यतम पीढ़ीक रचनाकार, ई बूझ' लागल अछि, जे आलोचक ओकर दुश्मन नहिं, हितचिन्तक अथवा असहमत लेखक थिक। अन्तर विचारधारा आ दृष्टिकोणक थिक, दियादी अथवा अड़ियानंघान-झगड़ा-झंझट नहिं। जँ लेखक केँ सही दिशा-निर्देश अपेक्षित अछि, तँ ओकरा आलोचकीय आपत्ति आ विचार-विश्लेषणक संज्ञान लेब' पड़तैक, यद्यपि ओकरो सहमत हेबाक बाध्यता नहिं छै। असहमत रहबाक अधिकार, मूल-लेखकक सेहो सुरक्षित छै, मुदा अपना आलोचक केँ सुनबाक उदारता ओकर मजबूरी छै। जेना किरण-जयन्ती मे लोहना मे, 1989 ई. मे, कार्यक्रम सम्पन्न भेलाक उपरान्त, जहिया, हम दस टा लेखक 'सगर राति दीप जरय' कथागोष्ठीक प्रस्ताव पर हस्ताक्षर क' परिचालित केने रही, तहिया वरिष्ठ लेखक उदय चन्द्र झा 'विनोद' एहि सँ असहमत रहथि आ से असहमत हेबाक हुनका अधिकारो रहनि, यद्यपि असहमत रहितो, बादमे, एकाध कथागोष्ठी मे ओ भागो लेलनि। असल मे, कथा-आलोचना, मैथिली आलोचनाक पीठक रीढ़ थिक। से आलोचना-परंपरा, कथागोष्ठी-अभियानक पूर्व, अस्वस्थ-निन्दन आ निन्दा-रस, निन्दा-प्रवृत्ति सँ लादल रहैत छल। आब से मैथिली-आलोचनाक स्वास्थ्य सुधरि रहल अछि आ मैथिलक निन्दा-प्रवृत्ति सँ मैथिलीक आलोचना-परंपरा, क्रमशः मुक्त होअ' लागल अछि। आलोचना पर सँ निन्दाक वर्चस्व समाप्त भ' रहल अछि। मौखिक-आलोचना सेहो निन्दा सँ फराक दृष्टिगोचर होअ' लागल अछि आ व्यक्तिवादी आलोचना, रचना आधारित होअ' लागल अछि। से हठात् नहिं भेल अछि। बीसम् सदीक अन्तिम दशक आ एकैसम सदीक पहिल दशक अर्थात् दू दशकक कथागोष्ठी अभियान केँ, तकर श्रेय देबहि पड़त। आजुक नव रचनाकार केँ निन्दा आ आलोचना मे, प्रारंभहिं मे, अन्तर बुझा जाइत छै। कारण, आलोचना के अस्तित्वे, स्तरीय-साहित्य-आधारित अछि। जे साहित्य न्यूनतम स्तरक शर्त्त पूरा करय, तकरे आलोचना संभव आ उचित अछि। 'बाजारू साहित्यक' संज्ञाने, आलोचना-साहित्य किए लेत? ओ तँ 'निन्दा' केँ आमंत्रित करिते अछि। मुदा, 'मूल-सर्जक लेखक

थिक आ तकर मूल्यांकन कर्त्ता मूल-लेखक नहिं थिक', से खतरनाक अवधारणा, आब मैथिलीएक किछु अहम्मन्यताक शिकार लेखक अथवा किछु प्रतिनिधि-टाइप स्वयंभू-विद्वान मे रहि गेल अछि।

बीसम सदीक नवम् दशक धरि, आन गुटक लेखकक रचनाक संज्ञाने नहिं लेल जेबाक परंपरा बलवती छल, खाहे रचनाक स्तर केहनो आ कतबो नीक रहल हो। मुदा कथागोष्ठी-अभियान, जकर नाम प्रति तीन मास पर बदलि देल जाइत छल, रहैत छल मूलतः कथापाठ आ विवेचनाक स्थल। से फोरम, सभ विचारधाराक, सभ दृष्टिकोणक, सभ कथाकार आ विश्लेषणकर्त्ता कें, मनोलोक बदलबाक, मानसिकता मे उदारता अनबाक अवसर प्रदान केलक, जाहि सँ, इच्छापूर्वक अथवा अनिच्छापूर्वक, कथागोष्ठी मे प्रत्येक भागीदार, सभ रचनाकारक संज्ञान लेबा लेल, विमर्श करबा लेल, बाध्य भ' गेल, जँ ओ जागि क' कथा आ विश्लेषण सुनि सकल। जे जगरना नहिं क' सकलाह, सेहो विवरण सूनि, परिस्थितिवशात् बाध्य भेलाह, रपट सुनवाक लेल, पत्रिका मे पढ़बाक लेल आ अपन मानस-लोकक अनुदारता दूर करबाक लेल।

ओना कथागोष्ठीक आयोजन साहित्य-अकादेमी आ कथापाठक आयोजन मैथिली अकादेमी सेहो केलक। मुदा संस्थानिक-आयोजनक सीमाक कारणें, तकर कथा-विश्लेषण शून्य आ कथापाठ औपचारिके रहल। अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली परिषद् द्वारा आयोजित 'दिवा-कथागोष्ठी' सभमे डॉ. धनाकर ठाकुर, कमलकांत झा आ भुवनेश्वर गुरमैताक विचार-अनुकूलहिं प्राचीनतावादी जड़-विश्लेषणक वर्चस्व रहल, जाहि सँ जनपक्षधर-सहनशीलताक योग, आलोचना कें नहिं प्राप्त भ' सकल। ओतहि गजेन्द्र ठाकुर, जगदीश प्रसाद मंडल, उमेश मंडलवला-कथागोष्ठी मे, विश्लेषण कहियो गुटबाजी-लाइन पर आ कहियो उलाड़, तँ कहियो गजपटहा आ कहियो जहपटार होइत रहल। गुट-सापेक्ष आलोचना जखन अपने गट्टी, भरि पनिबट्टी भ' जाइत अछि, आ से चरम पर आबि जाइत अछि, तखन कथागोष्ठी रात्रि-कालीन सँ दिवाकालीन भ'क', अपन अस्तित्व बँचा लैत अछि, से तरलता, तहिना, मैथिली-आलोचनाक सहिष्णु-प्रवृत्ति मे सेहो, समानान्तर आबि रहल अछि। तेँ मुख्य धाराक कथागोष्ठी, वैह सगर राति दीप जरए, भरि राति भोर, कथा-कोसी, अथवा विभिन्न नामधारी 'कथा-संवाद' रात्रिकालीन कथागोष्ठी वा एही वर्षक दिवा कथागोष्ठीक आरंभ 8 सितंबर, 2018 ई. (दरभंगा-कथागोष्ठी)

बनल रहल। कारण, एही टा कथागोष्ठी अभियान मे विमर्शक स्तर, विभिन्न दृष्टिकोणक टिप्पणी चेतन साहित्यिक संवर्ग आ श्रोताक, नीक-सँ-नीक सहभागिता रहल, जाहि सँ विश्लेषण, मैथिली-आलोचना मे योगदान क' सकल। आब कोनो समीक्षक आनो गुट वा विचारधाराक लेखकक पोथी-चयन, समीक्षा-आलोचना लिखबाक लेल, ओतबे उदारतापूर्वक करैत अछि, जतेक उदार-भावें, अपना गुट वा विचारधारा सँ सम्पृक्त लेखकक। से करबा मे, आलोचकीय दृष्टिकोण आ वैचारिकता अक्षुण्ण रखैत, आलोचक ने तँ पोथी आ लेखकक भठ्ठा बैसाबैत अछि आ ने आसमान मे उछालैत अछि। संतुलनक से संयम, हठात् विकसित नहिं भेल अछि आ ने आलोचकक माथमे जन्मना, स्वर्गे सँ उतरल अछि। कोनो साहित्यक वा आनो क्रान्ति सरंगोलिया नहिं होइत अछि। ओकर पृष्ठभूमि रहितहिं अछि। मैथिली आलोचना केर उदार-प्रवृत्तिक विकासमे, आनो तत्व सभक योगदान रहल अछि। मुदा कथागोष्ठी-विमर्शक, ताहि मे सर्वाधिक योगदान रहल अछि।

तकरो फेर कारण अछि। जाहि उदारताक संग कथागोष्ठी अभियानमे पठित कथा सभक चयनित संग्रह सभ 'श्वेत-पत्र' 'कथा-कुंभ' 'भरि राति भोर' 'एकैसम सदीक घोषणा-पत्र' 'कथा-पारस' आदि प्रकाशित कयल गेल, ताहि सहिष्णुता-सरलता-उदारता आ दृष्टिकोणक प्रगतिशीलताक संग, अकादेमी-प्रायोजित कथा संग्रह सभ नहिं छापल गेल। संपादकीय-अनुदारताक वर्चस्व, 'शताब्दी-संचयन' कथासंग्रह सभकें कालातीत बना देलक। मुदा नव लेखकगण कथागोष्ठी कथासंग्रह सभ पढ़ि-पढ़ि 'अँखिगर' होइत गेलाह आ मोहन भारद्वाज सन पैघ आलोचक अपन कथालोचना-संग्रहक नामकरण 'कथागोष्ठी' करबा लेल बाध्य भेलाह। कथा-आलोचना जुआइत गेल आ मैथिली-आलोचना कें धनीक बनबैत गेल।

से थिक कथागोष्ठी-विमर्श द्वारा आलोचनाक उपलब्धि। कथाक कथ्य-शिल्प आ भाषा पर कथागोष्ठी मे टिप्पणी भेल, विश्लेषण भेल, विमर्श आ बहस भेल, मत-मतान्तर भेल, आलोचना आ समालोचना भेल, कथा सभक सांगोपांग, नख सँ शिख धरिक शल्य-क्रिया भेल। सैह भेल करैत छल। कथा-आलोचना कें, जे किछु चाहैत छल, से सभटा समय आ समाज-सापेक्ष भेल। एक-सँ-एक यंत्रनाथ मिश्र एलाह आ गेलाह। कथागोष्ठीक सक्रियताक समक्ष कोनो प्राचीनतावादी जड़ मूल्य ठठि नहिं सकल। कथा गोष्ठी-विरोधी जड़द्गव सभ, (जेना अनलकांत-

गौरीनाथ) केर नकारात्मकताक कोनो प्रभाव कथा-विमर्श पर नहिं पड़ल आ ई अभियान कोनो 'पिकनिक' नहिं बनि सकल। कथाक विश्लेषणक धार पिजाइते चलि गेल। से रमानन्द झा 'रमण'क गोधियाँवादक आरोप के खारिज करैत, सम्पूर्ण पारदर्शिताक संग भेल।

आम जनता, समय आ समाजक सापेक्ष 'निधोख टिप्पणीक' बर्खा करैत रहल आ कथाकारगण आमजनक जीवनक विसंगति पर प्रहार करैत, लोकक रूचिक आ साहित्यिक रूचिक सेहो, परिष्कार करैत रहल। कोनो साहित्यिक अभियानमे एतबा जन-भागीदारीक रेकट बनैत रहल। टिप्पणीक विविधता आ टिप्पणीक जमीनी-स्वरूप, कथाकार- भागीदारक संख्या शताधिक बना देलक। पंजाबी कें 'दीवा बले सारी रात' सँ जतेक फायदा नहि भेल से सभ फायदा कए गुणा बेसी मैथिली कथा आ तकर आलोचना कें भेल। गैर-साहित्यिक विद्वत्-संवर्गक, जीवनक-आन-आन-क्षेत्रक विद्वानक भागीदारी, भरिसक्के कोनो आयोजन मे, एतेक संख्या मे, टिप्पणीकर्त्ताक रूपमे भेल हो, जतेक कथागोष्ठी सभमे भेल। एहेन बात नहिं छल, जे कहियो एकोटा 'हूसल टिप्पणी' नहिं भेल वा उतरा-चौरी नहिं भेल। जखन आन रचनाकार टिप्पणी करथि वा आन विद्वान टिप्पणी करथि, तं कएबेर 'टाइ' वला परिस्थिति अबैत छल। मुदा तकर समाधान लेल, औंघायल रहितो, अस्वस्थ प्रभास कुमार चौधरी एना तत्पर रहैत छलाह आ एतेक साकांक्ष रहैत छलाह, जें 'टाइ-ब्रेकर'क भूमिकाक निर्वाह, सक्षम खिलाड़ी जकाँ करैत छलाह। 'निष्पक्ष सरपंचक' आ भाषाशास्त्रीक भूमिकामे, प0 गोविन्द झा कें, कथागोष्ठीमे बहुते सफलता भेटल छनि। भाइ सैहैब राजमोहन झाक कथाक कथा-कला पर टिप्पणी, सदा-स्वागतेय होइत छल, भने क्यो असहमत रहय, तैओ। रमानन्द झा 'रमण'क नियमित सहभागिता सँ, संयोजक हुनक भागीदारी आ भाषा-सम्बन्धी शुद्धतावादी आलोचनाक प्रति, निचैन आ साकांक्ष रहैत छलाह, जे कम-सँ-कम एकटा आलोचक तँ उपस्थित रहबे करताह। लोक कत्त' कहाँ सँ अपन किराया खर्च क' टिप्पणी करबाक आ सुनवाक लेंल अबैत छल आ अबैत अछि। मोहन भारद्वाज अपन अस्वस्थताक चिन्ता नहिं क' कथा-आन्दोलनक प्रगति देख' आ ताहि मे योगदान देब' जाइत छलाह। डॉ. भीमनाथ झा 'काव्यमय शब्द-छटावला विश्लेषण' सँ अनुप्राणित करैत छलाह। वस्तुतः आमजन कथा पर 'टिप्पणी' करैत छलाह, रचनाकारगण 'व्याख्या-विश्लेषण' करैत छलाह आ विद्वान

आलोचकगण आलोचना आ विमर्श करैत छलाह। आलोचकगण अपन स्तरीय आलोचना आ अपन विचारधाराक अनुकूल, खोंइचा छोड़ा-छोड़ा क' दिशा-निर्देश करैत छलाह आ अपन विचारधारा कें देखार करैत छलाह, तँ नव-पीढ़ीक कथाकारक आँखि मे हुनकर सम्यक् छवि, हुनकर लिखित आलोचना-साहित्य पढ़नहुँ बिना, बनि जाइत छल, नव्यतम कथाकार 'खन्नास आलोचक' के दृष्टिकोण, अपना गाम-कस्बा-शहर मे, अपन पहिले कथा लिखैत, बूझि जाइत छल आ टिप्पणी-विश्लेषण-आलोचनाक महत्वो बूझि जाइत छल, ताहि सँ पैघ उपलब्धि की होइत? मैथिली मे पत्रिकाक अकाल-बेला तँ सभदिन रहल। मुदा ताहि अकाल के, कथागोष्ठी सदा दूर करैत रहल आ पत्रिका सभमे, समीक्षाक फराक स्तंभक अभाव कें सेहो, अपन विशेष स्वरूप मे, दूर करैत रहल। कथागोष्ठी कथा-आन्दोलनक संग-संग, आलोचना-आन्दोलन सेहो छल। कथाक आलोचना, समय आ समाजक आलोचना, कथाकार आ आलोचकक आलोचना, आलोचनाक प्रत्यालोचना, कथाभाषाक आलोचना, शिल्प आ शैलीक आलोचना, कथाक 'प्लॉट आ थीम' केर आलोचना, समाज मे होइत नकारात्मक परिवर्त्तन आ जड़ मान्यताक आलोचना, कथाक कालातीत होइत प्रवृत्तिक आलोचना, जीवन आ साहित्यमे प्रगतिशील सोचक कथा आ टिप्पणीक माध्यमें मूल्यांकन, कथामे समकालीनताक मूल्यांकन, आदि...आदि.... कथागोष्ठी-विमर्श मे की-की नहिं भेल? कथागोष्ठी अभियान आ विमर्शक प्रति नकारात्मक सोच रखनिहार गगन-विहारी 'पिकनिक प्रेमी' कएटा लेखक एहि सभ लाभ सँ वंचित रहलाह आ तकर घाटा हुनका सभकें आ मैथिली साहित्यो कें भेलैक। जे सभ कथा-गोष्ठी-विमर्श सँ सम्पृक्त रहलाह, से सभ अपना शैली आ दृष्टिकोण मे निश्चिते आर प्रखर भेलाह, सहिष्णु भेलाह आ अपन विकासक संग नव-पीढ़ीक आलोचनात्मक प्रखरताक विकास मे कथाक स्वरूप आ उद्देश्य कें जनोन्मुखी बनेबा मे अपन महत्वपूर्ण योगदान देलनि। तहिना योगदान दैत गेलाह, आलोचना कें आमजन सँ जोड़य मे, अजित आजाद आ तकर बादक नव्यतम पीढ़ी धरि पहुँचेबा मे। आइ कथागोष्ठीक आयोजन घटबाक कारणें, कथा-लेखने नहि थकमका गेल, अपितु आमने-सामनेक साक्षात् विमर्श-प्रक्रिया सेहो थकमका गेल। आलोचक-समीक्षकक संख्या कम रहबाक कारणें, कथाकार अपने अयना मे अपन मुँह देखि पबैत छथि, जखनकि कथा गोष्ठी-विमर्शक अयना मे अपना मुँह देखि, कथाकार कार्यशालाक अवधारणा सँ, कथा कें फेर-फेर राँजैत-माँजैत आ चमकाबैत छलाह। से कथाक

परिष्कार बन्न भ' गेल छल, जे आब पुनः दरभंगा-कथागोष्ठी सँ (सितम्बर-2018) आरंभ भ' गेल अछि। कथागोष्ठीक विमर्श, मैथिली कथा-आलोचना लेल आइयो ततबे प्रासंगिक अछि, जतेक दू-अढ़ाइ दशक धरि रहल। तें तकर आइयो ओतबे स्वागत, कारण पत्र-पत्रिका आ समाजक साहित्य-प्रेमक वा पोथी-बिक्रीक आइयो सैह परिस्थिति अछि। तें कथागोष्ठीक स्तरीय विमर्शक प्रासंगिकता सदा बनल रहत। कारण, 'कथा-संवादक' संग 'आलोचना-संवाद' अन्योन्याश्रित अछि। कथागोष्ठीक टिप्पणी-विश्लेषण-आलोचना-बहस, अलिखित रहि गेल, से तं मोन मे 'कचकैत खेंक' गड़ैत अछि। मुदा तकर बावजूद, नव-पुरान लेखक-कथाकार, जे आलोचनाक नव-नव दृष्टिकोण, तकर प्रखरता आ पारदर्शिता सँ लाभान्वित भेलाह, से अनुपमेय अछि। मैथिली कथा, जे अपन कथ्य-शिल्प-भाषा मे अद्यतन (अप-टु-डेट) आ धनीक भेल, कथाकारक पीढ़ी सभक सशक्तिकरण आ नव पीढ़ीक निर्माण भेल, से अनुपमेय अछि। कथा आ आलोचनाक माध्यमें जे मैथिली भाषा आ साहित्यक सेवा भेल, देशज-विदेशज शब्द सभक मैथिलीकरण भेल आ मैथिलीक शब्द-सम्पदाक कथामे प्रयोग भेल वा विमर्श मे उपयोग भेल, से सभ कथागोष्ठी-आन्दोलन मे भाग लेनिहार लोकक मनोलोकक थाती थिक, जकर दस्तावेजीकरण नहिंयों भेलाक बावजूद, विमर्श आ आलोचनाक परंपरा कें, अपेक्षित सहिष्णुताक संग आगू ल' गेल अछि। मैथिली आलोचना, कथागोष्ठी-विमर्श कें धन्यवाद दैत अछि आ कथागोष्ठी-विमर्श मैथिली आलोचना कें। फायदा तँ दुनू कें, दुनू सँ भेल। मुदा फायदा तँ मैथिली भाषा, साहित्य, मिथिला समाज, कथा आ आलोचना मे रूचि रखनिहार लेखक-संवर्ग आ युवा-तुर्क कें भेल। एकदिस लोक डॉ. फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' केर प्राचीन संस्कृतनिष्ठ समीक्षा-दृष्टि सँ अवगत भेल, तँ दोसर दिस डॉ. सुभाष चन्द्र यादवक सारगर्भित प्रगतिशील दृष्टि सँ। एकदिस कथा मे 'बदलैत स्वर' कें लोक शिवशंकर श्रीनिवासक कथालोचना मे अकानलक, तँ दोसर दिस विभूति आनन्द, अशोक जी आ तारानन्द वियोगीक विश्लेषण आ टिप्पणी सभमे। वस्तुतः मैथिली-आलोचनाक विभिन्न मानदण्ड आ दृष्टिकोण कथागोष्ठी-आन्दोलन मे फड़िच्छ भ' गेल। कथा पर होइत बहस मे, तकर व्यावहारिक उपयोगो भेल आ समाज अवगतो भेल। अनेक कथागोष्ठी मे, अनेक कथा पर माटिपानिक दृष्टिएँ, जमीनी-संपृक्तिक दृष्टिएँ विमर्श भेल। ग्रामीण बनाम नागर पृष्ठभूमिक विमर्श भेल आ मिथिला समाजक रूढ़ि तोड़ैत कथा सभ, आधुनिक दृष्टिकोण सँ विमर्शित भेल। घनेरो

कथा मार्क्सवादी दृष्टिकोण सँ मूल्यांकित भेल, तँ दर्जनो कथा मे, दलितवादी दृष्टिकोण विश्लेषण कयलक। उत्तर-आधुनिक पाश्चात्य निकष के प्रयोग कथालोचना मे कयल गेल, तँ प्राचीन भारतीय मूल्यांकन पद्धति सेहो अपना कें मैथिली-कथालोचना मे अजमौलक। प्रखर सामाजिक चेतनाक दृष्टिएँ, मुखर खाँटी आलोचक मोहन भारद्वाज, लेखने जकाँ, कथागोष्ठीक कथालोचना मे टिप्पणी करैत रहलाह, तँ सांस्कृतिक चेतनाक दृष्टिएँ शिवशंकर श्रीनिवास। 'मैथिल आँखिक' विश्लेषण-प्रतिमान अशोक जी ठाढ़ करैत रहलाह, तँ राजनैतिक चेतनाक दृष्टिएँ शैलेन्द्र आनन्द मूल्यांकित करैत रहलाह। दरिहरेजी आ जीवकांतजी भारतीय संस्कृतिक दृष्टिएँ, मैथिली-समाज आ कथामे आयल विकृतिक आलोचना करैत रहलाह, तँ साकेतानन्दजी आ धूमकेतुजी आधुनिकताक पाश्चात्य दृष्टिएँ, भारतीय आ मिथिला समाजक जड़ प्राचीन आ मध्यकालीन मूल्य मान्यता, जे कथा मे आयल छल, तकर चीड़-फाड़ खुशफैल सँ केलनि। सम्पूर्ण श्रोता-समाजक सांगोपांग-विवेचना सँ 'कथाक सांगोपांग विवेचना' भइए जाइत छल। एहेन स्वतंत्र, निर्भीक आलोचना जे कमलेश झा, राजमोहन झा आ रामचन्द्र खानक मुँह सँ भड़खड़ि झहरैत छल, प्रदीप बिहारी आ नारायणजीक परभाषिक तुलनात्मक टिप्पणी सँ नव कथाकारक रचना-दृष्टिक परिष्कार होइत छल आ तकरा सुनबाक धैर्य-सहनशीलता, बरमहल, लिखित आलोचना मे नहिं भेटि पबैत छल। कथागोष्ठीमे विकसित आलोचनात्मक दृष्टिकोण आ आलोचनाक प्रति विकसित सहनशीलताक परंपरा, मैथिली कथा, मैथिली आलोचना आ आन सभ विधा लेल भाषा आ समाज लेल, अत्यंत कल्याणकारी भेल अछि। कथागोष्ठीमे विकसित परंपराक प्रसादें, रचनाकारक व्यक्तित्व आ छवि-आधारित निकृष्ट-आलोचना आब लजाय आ डेराय लागल अछि, जखन कि रचना-आधारित मूल्यांकन-परंपरा फड़ि-फुला रहल अछि, जे समय-सापेक्ष आ समाज-सापेक्ष आलोचना-कर्म मे इमानदारीयो देखा रहल अछि। आलोचना मे उदार-प्रवृत्तिक विकास, कथागोष्ठी-विमर्शक प्रति नत-शिर अछि आ रचनाकार मे आलोचनाक प्रति उदारताक विकास सेहो, कथागोष्ठी विमर्शक प्रति नत-शिर अछि। कथागोष्ठी विमर्श आ मैथिली आलोचनाक प्रखर मुदा उदार आ सहिष्णु धाराक विकास मे, कथागोष्ठी आयोजक-प्रायोजक-संयोजक-संचालक के महत्त्वपूर्ण भूमिका चिर-स्मरणीय रहत।



शिवशंकर श्रीनिवास

मैथिली उपन्यासक आलोचना

मैथिली साहित्यकार ओ पाठक द्वारा सतत कहल जा रहल अछि, जे मैथिली साहित्यमे अन्य विधा जकाँ आलोचना साहित्य विकसित नहि भेल अछि। हमरा जनैत उक्त मन्तव्य सर्वथा सत्य नहि अछि। ओना विविध विषय मे कतेको एहन महत्वपूर्ण कार्य अछि, जाहि पर ध्यान नहि देल गेल अछि। जकर पहिल कारण अछि पाठकक एहि दिशामे उत्साहक अभाव, चाहे ओ पाठक साहित्यकर्मी होथि वा साहित्यमर्मी। असलमे मैथिली साहित्यमे एखन तक आलोचनाक खगताक प्रबल बोध नहि उत्पन्न भेल अछि। जहिया कलकत्तामे वा मिथिलामे विभिन्न रंगमंच द्वारा नाटक बेसी होइत छल ओहि दिन बेसी नाटक लिखायल। एखनो पटना, जनकपुरक संस्था द्वारा वा किछु दिल्लीमे रंगमंच सँ नाटक होइत अछि त' नाटक लिखल जा रहलए किन्तु संख्या हिसाब सँ नाट्य लेखन घटल अछि, मिथिला मिहिर वा वैदेहीक प्रकाशनकाल कथा जतेक लिखल गेल ओ पुनः तहिया जोर पकड़लक जहिया 'सगर राति दीप जरय'क आयोजन होब' लागल किन्तु क्रमशः कथा-गोष्ठीक उत्साहक कमी कथा लेखनकेँ घटौलक अछि। कवि-गोष्ठी बढ़लए त' कवितो लेखन बढ़ल'ए। पत्र-पत्रिकाक अभाव वा पाठकीय रूचिक अभाव गद्य लेखन केँ कने सुस्त बनौलक अछि। ओना एखनो पाठकक हिसाबे बहुत लेखन होइत अछि। सभ विधा मे रचना भ' रहल अछि, हँ आवश्यक अछि, ओहि सभ विधा के अख्यासब।

आलोचना विधा पर जँ ध्यान देब तँ आश्चर्य लागत जे मिथिला-मिहिर (सप्ताहिक) मे जतेक आलोचनात्मक आलेख अछि, ओहि आलेख केँ जँ फुटका-फुटका पोथीक रूप देल जाय तँ कतेको पोथी हैत, एहिना विभिन्न

पत्र-पत्रिकामे विभिन्न महत्वपूर्ण आलोचनात्मक आलेख छिड़ियाल अछि। जकरा पोथीक रूप नहि देल गेल अछि। अन्यो विधाक ई हाल अछि। किन्तु आलोचना एहिमे सर्वोपरि अछि। एखनो कतेको सक्रिय रचनाकार छथि जनिक आलोचनात्मक आलेख अन्य विधा सँ कम नहि अछि। आचार्य रमानाथ झाक बाद डा. काञ्चीनाथ झा 'किरण, रामानुग्रह झा वा एहि सँ पहिने बलदेव मिश्र, म0म0 उमेश मिश्र ओकर बाद किसुन जी ओ कतेको महत्वपूर्ण रचनाकारक आलोचनात्मक आलेख अछि, जकर पोथीक स्वरूप नहि आयल अछि।

आलोचक मोहन भारद्वाज आ डा. रमानन्द झा 'रमण' त' अपन सम्पूर्ण लेखन कार्य आलोचने लेल समर्पित रखलनि। हिनका लोकनिक बहुतो एहन महत्वपूर्ण कार्य अछि जकरा परखब आवश्यक अछि। डा. भीमनाथ झा, डा. बासुकीनाथ झा, डा. ललितेश मिश्र आदि अनेको गोटय, आलोचना क्षेत्रमे उल्लेखनीय कार्य कयने छथि। एहि समयमे डा. विभूति आनन्द, अशोक ओ तारानन्द वियोगी आदि लोकनिक अन्य विधासँ आलोचना मे कम कार्य नहि अछि, जे कतेको दृष्टिएँ महत्वपूर्ण अछि। एहि सँ पूर्व कुलानन्द मिश्र आलोचनाक क्षेत्रमे रेखांकित करयवला कार्य कयने छथि। आर एहन कतेको नाम अछि जिनक कार्य अछि, जिनका लोकनिक कार्य आलोचना साहित्य के विस्तार देलक अछि। किंतु एहि बात संग एखन हम अपन विचार केँ आगू नहि बढ़ा सम्प्रति अपन आलेखक प्रसंग अबैत छी, हमर आलेखक प्रसंग अछि—''मैथिली उपन्यासक आलोचना''।

उक्त विषय जखन चेतना समिति द्वारा आयोजित होब' जा रहल 'विचार-गोष्ठी'क हेतु ओकर संयोजक अशोक लिखलनि तँ हमरा समक्ष दूटा बात आयल। पहिल, जे आइ तक प्रायः आलोचंना पर आलोचनाक 'विचार-गोष्ठी' नहि भेल छल, ई एहन पहिल गोष्ठी थिक। एना किएक? जकर कारण मे हमरा लगैए, आलोचनाकेँ सृजन साहित्यक कोटि मे नहि राखब। खास क' मैथिली साहित्यमे आलोचनाक आलोचना नहि जकाँ भेल। जँ कोनो आलोचक कोनो आलोचनाक आलोचना लिखैत छलाह तँ ओकरा प्रत्यालोचना कहल जाइत छल। जिनका रचना पर कोनो आलोचना रहैत छल तँ ओकरा एना क' नकारल जाइत छल जे ओकरा असहिष्णु विचार मानि लेल जाइत छल। ई सभ बात आलोचना साहित्य धारा केँ बाधित कयलक, जकर यैह कारण थिक जे आलोचना केँ

सृजन-साहित्य धारा सँ कात राखल गेल, जखनकि आलोचना वर्तमान समयमे सृजन-साहित्यक कोटिमे आबि गेल अछि। एखन आलोचक अपन आलोचकीय रचनामे कोनो रचनाक मात्र गुण-दोषे टा नहि देखि ओहि रचनाक समयक विभिन्न पक्ष पर विचार करैत, ओहि आलोचनीय रचना पर गप करैत एहन अपन दृष्टि सेहो रखैत छथि जे कोनो विधाक हेतु एकटा मार्ग सेहो प्रदान करैत, नवदृष्टि दैत अछि। ओ दृष्टि हुनक अपन चिन्तन रहैत छनि। तँ की एहन चिंतन सृजनक कोटिमे नहि आयत? हमरा हिसाबे एहि पर सेहो विस्तार सँ गप करबाक आवश्यकता तँ अछि, किन्तु एते बात अवश्यं जे वर्तमान समयक आलोचना एकटा सृजन साहित्यक प्रकार थिक आ ओहि पर ओहिना विचार राखब आवश्यक जेना कोनो विधाक होइत अछि। अन्यथा आलोचना अपना अराजकताक स्थिति सँ नहि उबरि सकत। आ ई सभ सोचि हम चेतना समिति के धन्यवाद दैत छियैक जे एहि विषय पर गोष्ठी रखलक।

दोसर, उपन्यास पर विभिन्न विद्वान द्वारा जतेक लिखल अछि ओ आलेख रूपमे, पोथी रूपमे संग्रहीतो अछि आ अधिक तँ पत्रिके सभमे अछि। ओहि सभकेँ समक्ष राखि विश्लेषण प्रस्तुत करब श्रम साध्य ओ समय साध्य अछि आ ओहि सभकेँ एकटा लघु आलेख मे समेटब असंभव अछि, एहन पोथी जे सम्पूर्ण रूप सँ उपन्यासे पर केन्द्रित राखल गेल ओहिमे छहटा हमरा प्राप्त भ' सकल– डा. अमरेश पाठकक– ''मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन (शोध प्रबन्ध 1975), डा. ब्रजकिशोर मिश्रक ''मैथिली उपन्यासक पृष्ठभूमि (1984), मोहन भारद्वाजक 'बलचनमा : पृष्ठभूमि आ प्रस्थान (2006), अशोकक ''कथाक उपन्यास : उपन्यासक कथा (2014), डा. रमानन्द झा 'रमण' द्वारा सम्पादित ओ विभिन्न लेखक द्वारा लिखित ''मैथिली उपन्यासमे चित्रित समाज (2003)।' ओ अशोक अविचल द्वारा सम्पादित ओ विभिन्न लेखक द्वारा लिखित– ''मैथिली उपन्यासक विकास'' (2016)।

हम अपन सुविधाक लेल उक्त पोथी सभसँ दूटा पोथी केँ समक्ष आनि अपन विश्लेषण केँ आगू बढ़बैत छी।

(1) बलचनमा : पृष्ठभूमि आ प्रस्थान - उक्त पोथी यात्रीक प्रसिद्ध उपन्यास 'बलचनमा' पर केन्द्रित अछि। बलचनमा एकटा किसानक कथा थिक। जाहिमे बलचनमाक आत्मकथाक शैलीमे उपन्यासकार सम्पूर्ण उपन्यास कथा

कहि जाइत छथि। ओहि उपन्यासके केन्द्र-बिन्दु बना मोहन भारद्वाज सम्पूर्ण पोथी लिखि जाइत छथि। हमरा जनैत मैथिली साहित्य ई पहिल पोथी अछि, जकर विषय मात्र एकटा उपन्यास अछि।

मोहन भारद्वाजक उक्त आलोचनाक पोथी सात परिदृश्य मे बाँटल अछि। आ, ओ एहि हिसाब सँ मिथिला समाजके देखैत उपन्यासक विश्लेषण कयलनि अछि।

मोहन भारद्वाज कहैत छथि ''बलचनमा मिथिलाक इतिहास थिक। ऐतिहासिक उपन्यास नहि औपन्यासिक इतिहास।'' आ आगू ओ अपन बात के सिद्ध करबाक प्रयास करै छथि, जाहिमे हमरा सफल बुझाइत छथि। एहिठाम हमरा समक्ष ई प्रश्न अवश्ये ठाढ़ होइत अछि, ओ ई, जे आलोचक मोहन भारद्वाज उक्त उपन्यासकेँ ''मैथिली जनपदक सामाजिक तथा सांस्कृतिक इतिहास'' रूपमे देखैत अपन विवेचना केँ आगू बढ़बैत, ओहि उपन्यासमे आयल कथा पर कहैत स्वयं सेहो मिथिलाक सांस्कृतिक परिवेश केँ परिभाषित करैत छथि। ओ एकदिश जँ उपन्यासक सांस्कृतिक ऐतिहासिकता केँ समक्ष अनैत अछि तँ दोसर दिश ओहि मे आलोचकक दृष्टि सेहो स्पष्ट होइत अछि, आ जाहि सँ मिथिलाक सांस्कृतिक परिवेशक ऐतिहासिकता सेहो स्पष्ट होइत अछि, जे महत्वपूर्ण अछि। किंतु हमरा समक्ष जे प्रश्न अछि ओ ई अछि जे हमर वरेण्य आलोचक मिथिला समाजकेँ मैथिली समाज किएक कहलनि? जखन कि सम्पूर्ण उपन्यास मिथिला समाज ओ ओकर जीवन संघर्षक बात करैत अछि। दोसर बात मैथिली भाषी यदि मिथिलासँ बाहर अछि आ ओहि ठामक समाद कहि रहल अछि तँ ओ ओहिना कहत जेना ओकर अपन भूमि सँ कहबाक संस्कार भेटल रहतै, हँ, ओहि संस्कार मे बाहरी संस्कृतिक संस्कार सेहो युक्त भ' सकै छै किन्तु ओ मूलकें नष्ट नहि क' सकैए। हमरा जनैत कोनो भूमिक संस्कृतिक बीच पलल संस्कार विकसित जकरा विद्रुपित (पहिल संस्कारक मोहमे) कहि सकैत छी, किन्तु ओ एना परिवर्तित नहि हैत जकरामे अहाँ मूल नहि पाबि सकब।

आलोचक स्वयं अपन विवेचनाक क्रममे उपन्यासक पंक्तिके उद्धृत करैत छथि जे बलचनमा कें फूलबाबू बुझा देने छलथिन–''अपन ओइठाम माने खाली अपने जिला-जवार नहि होइ छइ। एकर माने होइ छह अपन प्रान्त, अपन कमिश्नरी, अपन जिला, अपन थाना, अपन इलाका, अपन देश।'' उक्त उद्धरण

केँ उद्धृत करैत आलोचक कहैत छथि—"बलचनमा व्यक्ति वाचकसँ समूहवाचक आ समूहवाचक सँ व्यक्तिवाचक बनैत रहैत अछि।" हिनक एहि उक्तिसँ सहमत होइत कहब, जे बलचनमा अपन बात कहैत सम्पूर्ण समाजक काल-परिस्थितिक कथा कहैत अछि, किन्तु ओकर समाज मिथिलाक समाज छलैक आ ओ अपने समाजक कथा कहैत अछि, जे सम्पूर्ण भारतक कथा सेहो भ' जाइत अछि। ई स्पष्ट अछि जे एक व्यक्तिक कथा भलें अहाँ के ओहि व्यक्तिक, ओकर खास भूमिक कथा लागय किन्तु विश्लेषण कयला सँ स्पष्ट हैत जे ओ कथा ओहि व्यक्तिक रह'वला इलाकाक माध्यमे सम्पूर्ण देश-कालक कथा थिक। एहि हिसाबे हमरा जनैत सेहो आलोचक मोहन भारद्वाज केँ मैथिली समाज नहि मिथिला समाज कहक चाही। मैथिली भाषाक मूल भूमि मिथिला समाज थिक।

मिथिलामे बहुत पैघ-पैघ विद्वान भेलाह। बहुतो विद्वान द्वारा ई कहल गेल अछि जे मिथिला विद्याक धरती थिक। जे विभिन्न उदाहरण द्वारा स्वतः सिद्ध भ' जायत। एक एक एहन विद्वान ओ हुनक कृति समक्ष आयत जकर विद्याक क्षेत्रमे महती भूमिका अछि। आ से अक्षरे रूपमेटा नहि, गीत-नादसँ ल'क' लिखिया-पढ़िया ओ विभिन्न अन्य स्वरूपमे। जे सहजहिं गौरव प्रदान करैवला अछि। किन्तु मिथिला-क्षेत्रक जे आबादी रहलए ओहि हिसाबे देखब तँ लागत जे एहि भूमि पर शिक्षित जनक संख्या आश्चर्यजनक रूप सँ बहुत अल्प अछि। जकर कारण अछि एहि भूमिक सामाजिक संरचना जे एहि ठामक शिक्षा केँ एकटा खास वर्ग ओ जाति मे घेर क' रखलक, जे विस्तृत विवेचनाक माङ्ग करैत अछि। किन्तु एतेक कहब आवश्यक जे एहि भूमि पर जकर जीवन श्रम सँ जुड़ल छलैक अर्थात् जे श्रमिक छल ओकरा लग जीवन लोक कला जन्य विभिन्न विद्या छलैक, किन्तु अक्षर बोध नहि छलैक आ ओ सभ अशिक्षित छल। तथाकथित उच्च जाति जिनकर जीवन श्रम सँ नहि जुड़ल छल हुनकामे शिक्षा छलनि। एहि ठाम ई विडम्बना रहल, जे पढ़लक ओ काज नहि कयलक वा जे काज कयलक ओ पढ़लक नहि। ई बात एखनो स्पष्ट समाज मे दृष्टिगोचर हैत।

मोहन भारद्वाज कहैत छथि—'मिथिलामे उच्च जातिक लोक शिक्षित त' छलाहे, धनवानो छलाह।" हम हिनक उक्त दुनू बात सँ सहमत नहि छी। उच्च जातिमे पढ़ल होइत छलाह किन्तु एहि जातिमे सेहो पढ़ल सँ बहुत बेसी निरक्षर रहलाह, धनवान त' गोटपंगरा छलाह, गरीबी बेसी छल। राज दरभंगाके समक्ष राखि जँ कहब त' ओ समीचीन नहि हैत।

दरभंगा राज ओ ओकर अमला लग धन छल, बाँकी ऊँच जातिमे नहिये जकाँ। निम्नजातिमे सेहो धन छल किन्तु से एहि इलाका मे खास क' ओहेन लोकमे जे वनिज व्यापार करैत छलाह। हँ, श्रमिकक जीवन खास क' क' निम्ने जाति मे छल। उच्च जातिमे जे श्रमसँ जुड़ल छलाह हुनक कार्यक पसार सीमित छल, दोसर एहन लोक जन-बोनिहारक रूपमे कार्य नहि करैत छलाह, किन्तु भयानक गरीबीक जीवन जीबै छलाह, जातीय अहंकार त' अवश्ये हिनका छल, मात्र धन नहि छल। गरीब उच्च जातिक लोकमे बहुत कम एहन छलाह जिनका लग शिक्षा छल किन्तु धन नहि छल। एतावता ई कहब जे उच्च जातिक जे लोक छलाह हुनका लग धन आ शिक्षा दुनू छल, ई समीचीन नहि अछि।

आगू मोहन भारद्वाज लिखलनि अछि जे—"एहिमे (उपन्यासमे) उच्चवर्गीय परिवार आ ओकर जीवन-शैलीक वर्णन कम नहि अछि। बहुत ठाम त' एहन-सन लगैत अछि जे यात्री चटनी बना क' ओकरा रखलनि अछि।" एहिठाम हमरा जनैत आलोचक केँ ई स्पष्ट करक चाही जे, सो कोना? से नहि कयलनि अछि।

आलोचक लिखैत छथि मैथिलक घरघुस्सा स्वभाव आइ धरि बनल अछि। 'बलचनमा : पृष्ठभूमि आ प्रस्थान' 2006 मे प्रकाशित अछि। जाहि समयमे सेहो मिथिलामे पड़ाइन लागल छल जे दिनानुदिन बढ़ि रहलए। हमरा जनैत मिथिलाक लोक ताहि दिन अपन भूमिसँ आगू नहि बढ़ैत छल जहिया द्वारा नहि भेटल छलैक। एहि बात पर आलोचक के सोचक चाही आ बात स्पष्ट करक चाहैत छलनि।

मैथिली संस्कृति, जकरा हम मिथिलाक संस्कृति कहब, एहि विषयमे मोहन भारद्वाज कहैत छथि—"भूगोल आ ओहिसँ उपजल किसान मानसिकता मैथिली संस्कृतिक मूलाधार" थिक। हमरा जनैत एहिमे ओहेन लोक जकरा अपन खेत नहि छलैक तात्पर्य जे किसान नहि छल मात्र श्रमिक छल, जकरा जन-मजदूर कहब ओकरो एहि मे मानब आवश्यक अछि। एकरा हम कहब जे कृषि-जीवनक मानसिकता मिथिलाक संस्कृतिक आधार छल, जाहि मे किसान ओ जन-मजदूर दुनू आबि जायत। ओना जे जन-मजदूरक काज नहि करैत छलाह, तथाकथित उच्च जातिक छलाह हुनको लग जीवन शैली छलनि जाहिमे श्रमिक जनक योगदान छलै। ओहिमे सँ यदि हुनक अभिजात्य ओ बड़प्पन हटाक' देखब त'

ओहिमे सेहो कृषि जीवनके पुष्ट करैत विभिन्न विशिष्टता देखाएत, जे मिथिला संस्कृतिक अंग छल तेँ हम एहि ठामक संस्कृति केँ कृषि-संस्कृतिक संज्ञा दैत छी।

आर्थिक पराभवक रूपमे बलचनमा उपन्यासक विवेचन प्रस्तुत करैत जाहि रूपें ओ धनी ओ गरीबक अन्तर स्पष्ट कयलनि अछि, ओ हमरा जनैत बहुत स्पष्ट ओ महत्त्वपूर्ण अछि। अपन विवेचना के आगू बढ़बैत विवेच्य उपन्यासक उदाहरण द' स्पष्ट कयलनि, जे एहि ठाम जातीय विषमता सँ आर्थिक विषमता अधिक शोषणपूर्ण छल। एहि लेल ई आरो अनेक उदाहरण देलनि अछि।

हमरा जनैत मिथिलामे जन-बोनिहारक स्थिति दासवत छल। कोनो बोनिहार ककरो बहिया होइत छल आ ओकर बाद ओकर सन्तानक सेहो सैह स्थिति रहैत छलैक। मोहन भारद्वाज लिखलनि अछि—''मैथिली समाजक आर्थिक संरचनाक विशद वर्णन विद्यापतिकृत लिखनावलीमे भेटैत अछि। ओहिमे, अन्य बातक अलावे, दास प्रथाक वर्णन अछि।'' भारद्वाज जी मानैत छथि जे जन-बोनिहारक स्थिति कोना दास जकाँ छल जे बलचनमामे यात्री स्पष्ट कयलनि अछि। आ स्वयं ओकर विवेचन करैत विभिन्न ऐतिहासिक उदाहरण दैत ओकरा स्पष्ट कयलनि। एहि तरहें आलोचना माध्यमे जाहि रूपेँ ई एहिठामक श्रमिक वर्गक जीवनसँ परिचय करबैत छथि, जे हिनक वर्गीय दृष्टिकेँ सेहो स्पष्ट करैत युगक परिवर्तित दिशाके समक्ष अनैत अछि। हमरा जनैत एहीठाम कोनो आलोचना सृजन साहित्यक रूप ल' लैत अछि जकर पुनः विवेचन आवश्यक भ' जाइत अछि।

मिथिलाक जनपदमे राजनीतिक गतिविधिक संग एहिठामक किसान आन्दोलनक सेहो विवेचन कयल गेल अछि। एहि ठामक श्रमिक जन के काँग्रेस प्रति अरूचि ओ समाजवादी आन्दोलनक प्रति रूचि कोना बढ़ि रहल अछि ओकरा आलोचक बलचनमाक अनेक उदाहरण सँ पुष्ट कयलनि अछि किन्तु हमरा कहबाक अछि जखन स्वतंत्रता प्राप्ति सँ पूर्वे जन-मजदूर, जकर संख्या तहियो सभसँ बेसी छल, ओकर आकर्षण समाजवादी आन्दोलनक प्रति छलैक तँ ओहिमे आर एहन कोन बात छलैक जे स्वतंत्रताक बादो राजनीतिक सफलता काँग्रेसक हाथ रहलैक, एहि बातकेँ सेहो राखक चाही जे आलोचना क्रममे स्पष्ट नहि अछि।

भारद्वाज जी लिखैत छथि यात्री गामक कथा लिखलनि अछि किन्तु ओ एहिठामक ग्रामीण परिवेशक भीतर जा कए वर्णन नहि कयलनि किएक तँ एहि

भूमिक प्राकृतिक सौन्दर्यक व्यामोहमे ओ अपन उपन्यासक मुख्य ध्येय के अटकाब' नहि चाहैत छलाह। किंतु हम एहि बात सँ सहमत नहि छी, कारण कोनो यथार्थक साक्षात्कार कोनो ध्येयकेँ नहि रोकि सकैत अछि, यहि अहाँ कोनो सत्यसँ परिचय करब' चाहैत छी तँ सम्पूर्ण स्थिति समक्ष आनब अधिक प्रभावशाली होइत। हमरा जनैत आलोचककेँ एहि ठाम विचार करक चाहैत छलनि।

एहि रूपेँ मोहन भारद्वाजक उक्त पोथी एहि लेल सेहो महत्वपूर्ण अछि जे ओ बलचनमाक उपन्यासक माध्यमे स्वतंत्रता पूर्व मिथिलाक इतिहास सेहो कहि जाइत अछि जाहि क्रममे हुनक समाजवादी दृष्टि सेहो समक्ष अबैत अछि जे अनेकानेक रूप सँ विवेचनीय अछि, आ, विस्तृत आलोचनाक मांग करैत अछि।

(2) कथाक उपन्यास : उपन्यासक कथा— अशोक अपन एहि पोथी मे मुख्य रूप सँ उपन्यासक जन्मक कथा कहैत छथि, ताहि लेल ओ विश्वपटल पर विभिन्न भाषाक किछु विशिष्ट उपन्यासक चर्चा करैत छथि आ कहैत छथि जे कोनो भाषामे उपन्यासक रचना ओहि देशक जन्म संग होइत अछि आ एहि लेल आलोचक अशोक विभिन्न भाषाक आलोचकक दृष्टि संग अपन कथनक पुष्टि करैत छथि। आ एहि क्रममे ओ एकटा बात कहैत छथि—''देशक रूपमे भारतक अवधारणा 1857 सँ शुरू होइत अछि। जखन कि ओहि काल मे भारत सम्प्रभु राष्ट्र नहि छल। हमरा सभके मोन रखबाक थिक जे भारत मे उपन्यास सभ ओही कठिन संघर्षपूर्ण वर्षक बाद लिखल जाय लागल।'' वस्तुतः भारतक इतिहास तँ बहुत पुरान अछि किन्तु 300 ई.पू. मौर्यकालमे भारतीय उपमहाद्वीपक एकीकरण भेलैक। किन्तु, एक देशक रूपमे अवधारणा 1957क सिपाही-विद्रोहक बादे भेलैक आ भारत 15 अगस्त 1947के एक संप्रभु राष्ट्र रूपमे एक स्वतंत्र राष्ट्रक उदय भेलैक। संगहि, देश संग अपन भाषाक भूमि के सेहो ओहिना देख' लागल जेना लोक अपन गामक रक्षा संग अपन घरक रक्षा करैत अछि। एहि क्रममे भारतक विभिन्न भाषामे उपन्यासक रचना होब' लागल। एहि क्रममे अपन विवेचन केँ आगू बढ़बैत अशोक जी कहैत छथि मिथिला मे ई चेतना बाद मे अयलैक। जकर फलस्वरूप उपन्यास सेहो बहुत बादमे लिखाय लागल। हमरा उपन्यास लिखेबाक पछाति कारणमे पहिल ई लगैए जे अखिल भारतीय स्थितिमे ज्योतिरीश्वरक वर्णन रत्नाकर भलें गद्यक रूपमे हमरा सभक माथ ऊँच करैत हो किन्तु विद्यापतिक 'पुरुष-परीक्षा'क चन्दा झा द्वारा अनुवाद सँ पहिले एहिठाम कोनो एहन रचनो नहि भेल तखन उपन्यास लेखन कोना संभव छल? हमरा जनैत

देशक अवधारणाक संग देशक उन्नति, गुलामी सँ मुक्तिक इच्छा कारणे स्वतंत्रता आन्दोलन प्रारंभ भेल तँ भारतक प्रत्येक भूमि पर मातृभाषाक विकासक कार्य सेहो प्रारंभ भेल। जे बात अशोक सेहो अपन विवेचनमे कहैत छथि। जयपुरसँ मैथिल हित साधन (1905), काशीसँ मिथिला मोद (1906) दरभंगा सँ 'मिथिला मिहिर (1908) आदि पत्रिकाक प्रकाशन शुरू भेल। आ तकर बादे गद्यक विकास अपन गति धयलक आ विभिन्न विधामे गद्य लिखाय लागल।

अशोक उपन्यासक जन्म कथा अर्थात् उद्भव ओ विकासक कथा कहैत तत्कालीन चेतनाक विश्लेषण करैत जाहि रूपें ओहि कालक सामाजिक संरचनाक गतानकें खोलि समक्ष अनैत छथि, ओ अपूर्व अछि। एहि रूपें आगाँ औपन्यासिक विश्लेषण संग सामाजिक संरचनाक विश्लेषण सेहो करैत छथि जे हमरा हिसाबे मैथिली आलोचनाशास्त्रमे, किछु हद तक मोहन भारद्वाजक बाद पहिले पहिल मैथिली उपन्यासक समाजशास्त्रीय अध्ययन सेहो प्रस्तुत करैत छथि। मोहन भारद्वाज लेल किछु हद तक एहि हेतु कहलहुँ अछि जे ओ बलचनमाक दृष्टि संग अपन दृष्टि कें आगू बढ़बैत छथि। अशोक लग सम्पूर्ण समाज छनि आ उपन्यास छनि ओ से जाहि तरहें विश्लेषण करैत छथि ओ मैथिली आलोचनाक धाप के आगू बढ़बैत अछि। ओना मैथिली आलोचना साहित्यमे मोहन भारद्वाजक खास विशेषता यैह रहल जे ओ कोनो रचनाक आलोचनाक क्रममे सामाजिक पृष्ठभूमि कें सेहो देखैत छथि। हमरा जनैत मोहन भारद्वाजक ओ विशिष्ट दृष्टि अशोकमे आबि विस्तार पौलक अछि।

विवेच्य पोथीमे अशोक ओहि समयक समाज, शासन ओ पत्र-पत्रिका संग उपन्यासक अनुपलब्धता पर सेहो चिन्ता व्यक्त करैत छथि आ ओ एहि कारणें भेल विभिन्न भ्रम कें देखबैत सत्य कें उद्घाटित करैत छथि। ओ असल मे कहैत छथि मैथिली साहित्यक विभिन्न विधामे जे किछु लिखल गेल ओकरा जोगाक' रखबाक चेतना मिथिला समाजमे नहि छल, जाहि सँ कोनो विचार जँ साहित्य माध्यमे आयलो तँ ओ समाज कें आगू नहि बढ़ा सकल।

ओ एहि लेल ब्रिटिश प्रशासन संग दरभंगा राजा कें सेहो जिम्मेदार मानैत छथि। ओ कहैत छथि जे दरभंगा राज खास क'क' "महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह 1879 मे गद्दी पर बैसला त' ओ उत्साहपूर्वक राष्ट्रीय उदारवादी विचारकें लागू कर' लगला। एहि क्रममे ओ राष्ट्रीय एकताक दृष्टिसँ देवनागरी लिपिकें राजमे प्रवेश देलनि ओ लोकप्रिय बनेबामे अपन योगदान देलनि।" हिन्दीकें आगू

बढ़ेबाक हुनक क्रिया-कलापकें सेहो अशोक विश्लेषण कयलनि अछि। ई मैथिली भाषाक विकासमे बाधक तत्वमे मैथिल महासभा (1910) कें सेहो मानैत छथि से एहि रूपें जे मैथिली भाषा ओहि महासभाक कारणे मात्र दू जाति ब्राह्मण ओ कायस्थक जातिक घेरासँ घेरा गेल, किन्तु सहरसा आ पूर्णिया जाहि ठामक गोपक प्रतिनिधित्व छल ओ लोकनि अपना कें उच्च साबित करबाक लेल जे 'गोप महासभा (1911) कयलनि ओ सभ अपन जातिक उच्चता संग अपन भाषाक उत्थान पर किएक ध्यान नहि देलनि? एहि पर आलोचक अशोककें सेहो विचारक चाही, से नहि कयलनि अछि। एहि बात सँ हम सहमत छी जे दरभंगा राज जँ ओहि समयमे निज भाषाक उन्नति हेतु ध्यान देने रहितय तँ मैथिलीक उन्नति आइ दोसर रहैत। संगहि कोनो प्रशासन जँ कोनो विषयकें वा कोनो समूहकें कोनो हितसँ कात करैत अछि तँ ओहिसँ समाजकें बहुत हानि होइत छैक। जे मैथिली कें भेलैक फलतः बहुत दिन तक उक्त दुनू जातिक अतिरिक्त लोक मैथिली साहित्यमे नहि अयलाह, किन्तु ईहो सत्य थिक जे चन्दा झा महाराजे आज्ञासँ पुरुष-परीक्षाक प्रकाशन मैथिली गद्यमे कयलनि। मिथिला-मिहिर दरभंगे राजसँ प्रकाशित भेल, भलें ओहिमे पहिने हिन्दी सेहो रहैत छल किन्तु बादमे 'मिथिला-मिहिर' योगदान के केओ बिसरि नहि सकैत अछि। किन्तु मिथिला समाज अपन भाषाक उत्थान पक्षमे किएक ने ठाढ़ भेल? एना अशोक ई बात कहैत छथि जे मिथिला समाज दोहरी शासन (ब्रिटिश ओ राज दरभंगा) व्यवस्था मे पीड़ित छल, जखन कि मिथिलामे एक सँ एक स्वतंत्रता आन्दोलनी भेल छथि किन्तु अपन भाषाक उन्नतिक विषय राष्ट्रीय चेतनाक उत्साहमे ओ बिसरि गेलाह।

अशोक एहि बात के स्पष्ट रेखांकित करैत सफल भेलाहे जे आर्थिक ओ जातीय विषमता कारणे जे दबल छल ओकरा समक्ष अपन जीवन बचेबाक संकट छलैक ओकर विषयमे एना कहलनि अछि जे ओ सभ शोषण तर दबल छल, किन्तु जमीन्दार जमीन्दारक बीच अद्भुत घालमेल छल। जाहि कारणें एते तक जे ब्राह्मण ओ मुसलमान जमीन्दार बीच कएकटा प्रथा एकहि रंग छल, मतलब जे एहना स्थितिमे आमलोक मुखर भ' अपन भाषाक उन्नति मे आगू नहि अयलाह।

"पूर्वांचलमे सुधार-युगक सूत्रपात केनिहार विद्यापति के मानल जाइत छनि"— एहि बात के उठबैत अशोक कहैत छथि जे विद्यापति संग जे भाषा

विवाद भेल ओहि विवाद सँ उपजल मैथिली जागरण भेल ओहि सँ लेखक लोकनि अपन समाजमे होइत दुर्दशा पर सेहो चिन्तन कयलनि आ एहि कारणेँ विभिन्न विधामे 'स्त्रीक रूप' के (जे समाजमे छल), ओकरा जगेबाक हेतु, ओ समाजके सचेत करक हेतु, लिखल गेल। एहि क्रममे ओ मुंशी रघुनन्दन लाल दासक मिथिला नाटक (1923)क एकटा गीत सेहो प्रस्तुत कयलनि अछि। एहि संग ई कहैत छथि 'जेना मैथिल स्त्रीमे स्वाधीनता विचारक जन्म यात्रीक 'पारो' उपन्यास सँ भेल तहिना सीताराम झा अपन पूर्वज विद्यापतिक स्मृतिमे कविता लिखैत नारीकेँ समाजक नेतृत्व करबाक लेल कहैत छथि।'' आ एहि क्रममे हुनक कविता से उद्धृत करैत छथि। कहबाक अर्थ एहिमे पोथीमे ओ उपन्यासके सोझाँ रखैत ओहि कालक सामाजिक जागरण के सेहो समक्ष रखैत अपना बातकेँ आगू बढ़बैत छथि जे महत्त्वपूर्ण अछि।

मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासक प्रवृत्ति के ई मीनाक्षी मुखर्जीक कथनक आधार पर दू वर्गमे बटलनि अछि— (1) समाज-सुधार आ उपदेशक प्रवृत्ति-जाहिमे जनार्दन झा 'जनसीदन'क निर्दयी सासु आ पुनर्विवाह, जीबछ मिश्रक रामेश्वर, रास बिहारी लाल दासक सुमति गंगानन्द सिंहक 'मनुष्यक मोल' पुण्यानन्द झाक 'मिथिला दर्पण' आदिकेँ रखलनि अछि (2) समकालीन समाजक वास्तविकताक यथार्थपरक चित्रण-कांचीनाथ झा 'किरण'क चन्द्रग्रहण, हरिमोहन झाक कन्यादान, द्विरागमन, योगानन्द झाक भलमानुष, उपेन्द्र झा 'व्यास'क कुमार, यात्रीक पारो तथा बलचनमा एवं चतुरानन मिश्रक कला मे भेटैत अछि जखन कि अशोक स्वयं कहैत छथि—''बुच्ची दाइक चुप्पी पारो मे आबिक' टूटि गेल अछि'' आ कला अपन डेग उसाहि लैत अछि। हमरा जनैत पारोक चुप्पी टूटब आ कला केँ अपन डेग उसाहब की समकालीन समाजक वास्तविकताक यथार्थपरक चित्रण सँ आगूक बात नहि थिक? एहि पर आलोचकके ध्यान देबाक चाही छल।

अशोक 'कन्यादान'क बुच्ची दाइक चुप्पी के जाहि अर्थमे उद्घाटित करैत छथि ओ स्त्री-पुरुषक सम्बन्धके नव दृष्टिए सोचबाक लेल प्रेरित करैत अछि। हिनक कहब अछि जे बुच्ची दाइक चुप्पी मात्र हुनक अयोग्यता नहि थिक, अपितु हमर समाजमे पुरुषक प्रति जे धारणा रहलैक अछि ओकरे प्रतिक्रिया वा सहज प्रक्रिया थिक। ओना ई प्रश्न करैत कहैत छथि ''बुच्चीदाइक चुप्पी पर विचार कयला सँ हुनकर संस्कार, ज्ञान, शिक्षा संग समक्ष बैसल पुषक प्रति घृणा सेहो

स्पष्ट होइत अछि।'' एहि घृणा केँ हम एना कहब जे पुरुष जाति समाजमे स्त्रीकेँ तेना डरा क' रखने छल जे ओकरा भीतर पुरुषक उपस्थिति अवचंक उत्पन्न क' दैत छलैक आ ओ ओकर सुसुप्त मनमे पुरुष प्रति घृणा उत्पन्न क' दैत छलैक। अन्य आलोचकसँ भिन्न अशोक समाजमे स्त्रीक स्थिति के देखैत बुच्ची दाइक चुप्पीकेँ देखैत छथि, ओतबे नहि ई रेवती रमणक ठकपनी केँ स्त्री प्रति पुरुषक भावना के अगम्भीर आ संवेदनहीन कहैत छथि। जे हमरा उचित लगैत अछि। एहि तरहें कन्यादान पर नव ढ़ंगे सोचैत अपन विचारकेँ रखैत ई कहबा मे सक्षम भेलाहे जे कोनो पात्र के ओकर सामाजिक स्थितिके देखैत ओकरा परखक चाही आ अपन विश्वलेषण केँ आगू बढ़ेबाक चाही जे बात आलोचनाक दृष्टि के स्पष्ट करैत अछि।

अपन पोथी कथाक उपन्यास : उपन्यासक कथा मे मिथिलाक स्वतंत्रता सँ पहिनेक स्थिति ओ स्वतंत्रताक हेतु आन्दोलन समयक जागरण के जाहि तरहेँ बिटिया क' समक्ष अनैत छथि, ओ निश्चित रूपसँ साहित्यिक चेतनाकेँ प्रेरित करैत सृजन साहित्यक रूपमे समक्ष अबैत अछि, जे महत्वपूर्ण अछि।

अशोक मैथिली उपन्यास ओ ओहि संग ओहिकालक सामाजिक संरचनाक विवेचन करैत जाहि रूपेँ उपन्यासक विकास केँ स्पष्ट करैत छथि ओ विवेचनाके नव दृष्टि प्रदान करैत अछि।

आलोचक अशोक उक्त पुस्तकमे मैथिली भाषा-साहित्यक विकास कोन तरहेँ बाट पकड़लक, चन्दा झाक अनुसंधान प्रवृति ओ मैथिली भाषा साहित्यक लेल बनल विभिन्न संस्थाक गतिविधि आदि पर संक्षिप्त रूपेँ सेहो सुन्दर प्रकाश देलनि अछि।

अपन विवेचनामे आलोचक विभिन्न उपन्यास पर फूट-फूट अपन विचार दैत किछु उपन्यास पर कने फैलसँ गप कयलनि अछि, जाहिमे काञ्चीनाथ झा 'किरण'क 'चन्द्रग्रहण' हरिमोहन झाक 'कन्यादान', ओ यात्रीक 'पारो' आदि अछि।

'पारो' केँ ओ 'कन्यादान'क बादक अर्थात ओकर विकास मानैत छथि। हिनक कहब अछि पारो मे बुच्चीदाइ (नारी)क चुप्पी टुटैत अछि। ''अपन मनोरथ ओ सेहन्ताक ताप सँ ओ लोकोचारक प्रति सेहो विद्रोही भ' उठैए।'' पारोक मनक गप जे 'भाइये-बहिनमे जँ विवाह दान होयतैक तँ केहन दिव होइतै।' हमरा जनैत

पारोक मनमे भाइ-बहिनक बीच जे विवाहक बात उठैत छैक ओ ओहिना अछि जेना कोनो भयानक अत्याचार देखि केओ कहैत अछि जे एहि सँ बढ़ियाँ एहि धरतीक उल्टन भ' जैतै। ओहि समयमे जहिया उक्त उपन्यास प्रकाशित भेल ओहि समयक किछु पाठक ओ समालोचक पारोक मनस्थिति पर विचार नहि क' सीधा अर्थ लेलनि, जाहि कारणें 'पारो'क विरूद्ध बहुत बात कहल गेल। ओना बहुतो प्रसिद्ध आलोचक पारोकेँ ठीकसँ बुझबो कयलनि आ विवेचनो कयलनि। हमर विवेच्य पोथी मे 'पारोक कथा वस्तु, ओकर प्रभाव ओहि पर भेल आलोचना आदि पर अशोक बहुत तीक्षणता संग विचार करैत छथि। आद्य उपन्यास सँ 'पारो' (यात्री), ओ कला (चतुरानन मिश्र) तकक विचार करैत उपन्यासक उद्‌भव ओ विकास के सोझाँ अनैत छथि, जे पठनीय ओ विवेचनीय अछि।



कुणाल

नाटक-आलोचना

आलोचनाक अर्थ हम तर्कपूर्ण वैज्ञानिक गुण-दोष विवेचन मानैत छी। ई विवेचन नाटक-रचना-उद्देश्यक संग सामयिक-स्थानिक परिस्थिति स' विश्व-मानवीय दृष्टिकोणक संपृक्तिक अपेक्षा रखैत अछि, एहन हमर मान्यता अछि।

आलोचना कोनो अध्येता द्वारा प्रस्तुत तथ्य आ निष्कर्ष होइत अछि आ फेर अध्येता-विचारक-रचनाकार समूह द्वारा जकरा गोष्ठी-सेमिनार कहैत छी (जेना कि इ आयोजन) मैथिलीमे व्यक्ति द्वारा स्वतंत्र रूप स' उपस्थित विमर्श नगण्य अछि। परंतु गोष्ठी-सेमिनार वला औपचारिक एवं अनौपचारिक, दुनू रूप मे होइत अछि आ कोनो कम नहि होइत अछि। एहि मे औपचारिक आयोजनक घोषित-अघोषित कामना होइत छैक एक निष्कर्षक। आब एकरा विडंबना कहू की विशेषता इ विमर्श सब निष्कर्षक बदला रचना आ रचनाकार सभक नाम कीर्तन भ'क' रहि जाइत अछि। हमरा इ पूजा-पाठ जकाँ लगैत अछि, विशुद्ध टाइम-पास बुझाइत अछि। मैथिली मे एकर सुदीर्घ आ बलशाली परंपरा छैक। इ परंपरा हानिकारक अछि।

नाटकक परिभाषा करैत काव्येषु नाटकम् रम्यम् स'ल'क' जीवनानुकृति नाटकम् तक मे निहित छैक, जीवनक सत्यके जंचनाइ आ तकरा लेल नाटकीय सत्यक सृष्टि, जें दृश्यमान रूपमे मंच पर सोदाहरण व्याख्या प्रस्तुत करैत अछि। एत' देखबाक इ रहैत छैक जे विश्व मानवीयताक परिप्रेक्ष्य मे इ सोदाहरण व्याख्या, की देखा रहल अछि, की नुका रहल अछि, ककरा देखार करैए आ की अनठबैए....। अंततः एना ओ किए करैए? एत' कतिपय लक्षणक आधार पर किछु कहबाक प्रयास करैत छी। जेना कि आधुनिक मैथिली नाटक कहांदन,

मैथिलीक आधुनिक नाटक रचना सौ स' बेसीए बरख पहिने भेल! एना नाटक पर बात करैत काल हरदम कहल लीखल जाइत छैक। प्रश्न उठक चाही, ओ केना आधुनिक अछि? ओ कथी मे आधुनिक अछि? कथ्य मे? शिल्पमे? स्थानिकता मे? नाट्य-युक्तिमे? एहि प्रश्न सभक संग जखन अहाँ ओ रचना पढ़ब त' हमरा विश्वास अछि जे अहाँ मानि लेब जे, धोतीक बदल पेंट पहिरि नेने अहाँ आधुनिक भ' गेलौं? माने, संवाद-भाषा के अत्यंत छोट-समुदायक बोली मे लिखनाइ आधुनिक? दृश्य-संरचनाक लेल मिथिलेतर तथाकथित यथार्थवादी शिल्प के अविकल ग्रहण केनाइ आधुनिक? सामयिक चरित्रक शील के अतीतक अनुरुप रखनाइ आधुनिक? इतिवृत्तक प्रस्तुतिकरणमे पुनः अन्यक अनुकरण मे नाट्य युक्तिक प्रयोग आधुनिक? ....मैथिलीक विमर्श संसार एहि प्रश्न स' निरपेक्ष रहि क' आधुनिक होइत अछि। निष्कर्षतः आधुनिकताक अर्थ होइत छैक अपन नाट्य परंपराक अवहेलना आ मैथिली स' इतर वस्तुक नकल। कने साकांक्ष भ'क' अपना चारू भर देखू, मैथिलीक समस्त सांस्कृतिक परिदृश्य नकल आर नकल के उदाहरण अछि। इ सहज मार्ग छैक। अपन नाट्य परंपराक अनुरूप, विश्व मे होइत नाट्य-परिघटना के बूझबाक आ अभ्यास करबाक प्रक्रिया जटिल छैक, श्रमसाध्य छैक आर अपन स्थानिक बहुलांश के निष्कृष्ट मानबाक स्थापित अवधारणाक विरुद्ध छैक। त' अहाँ नकल के उचित मानबाक लेल स्वयं के बलजोरी आधुनिक घोषित करैत छी।

नहि! इ बात नहि जे अहाँ बाहरी शिल्प स' प्रभावित नहि होइ। जखन हम विश्व मानवीय दृष्टिकोणक बात करैत छी, ताहू मे आजुक 'ग्लोबल एरा' मे, से ने संभव छैक आ ने उचित। परंतु जँ अहाँ अविकल कोनो वस्तु के उठा लैत छी त' ओ नकल ने कहाओत? अहाँक नाटक-रंगमंच कहियो आन के प्रभावित करैत छल। ओकरा अपना ओत' ल' गेल। मुदा ओकरा अपना रंग मे रंगलक। पहिने संवादक वाचनमे तखन संगीतमे आ तकर बाद शिल्प मे। अंततः ओ ओकर अपन रूप भ' गेलै आ सेहो एहन जे ओकरा, अहाँ सँ प्रभावित कहबाक लेल अहाँ के बड्ड अध्ययन आ साहस के आवश्यकता पड़त। जे किओ अंकिया नाट आ जात्रा दलक पारिजात हरण देखने हैब, से अवस्से हमरा स' सहमति राखब। हँ, मैथिली मे एहन काज भेल छैक जत' तथाकथित यथार्थवादी शिल्प के मैथिलीक नीजी रंगमंचक विचार स' अपनाओल गेल अपना बाहरी शिल्प के

कथ्य आ शिल्पक स्थानिकताक संग मैथिलीक नाटक बनाओल गेल। परंतु सम्यक आलोचनाक अभाव मे ओ नाटककारक निजी प्रयोग टा बना देल गेल, मुख्यधारा नहि! एत' त' कोनो विशेषण स' युक्त करबाक लेल बस कोनो 'महंथ' के घोषणा करक देरी कहैत छैक। झट द' आँखि मूनि हं-मे-हं केनिहार जुटि जाइत छथि आ महानता सिद्ध भ' जाइत अछि। एहि स' तात्कालिक आनन्द भले भेटि जाए, कनिए दूर जाक' ओ घातके टा होइत अछि। इ सत्य मात्र नाटकक लेल नहि, साहित्यक सब विधा पर घुरझाड़ लागू अछि।

जेना कि नाटककार के रंगमंचक व्यावहारिक अनुभव हेबाक चाही। नाट्य-लेखनक लेल इ बात, बिना अपवाद के विद्वान लोकनि बेस दृढ़ताक संग बजैत छथि। परंतु इ नहि कहल जाइत छैक जे कोन रंगमंचक व्यावहारिक सैद्धांतिक अनुभव हेबाक चाही? की अहाँ लग स्पष्ट अछि जे कते तरहक रंगमंच अर्थात् अभिनय शिल्प-विधान छैक? ओहिमे स' अहाँ लग माने मैथिलीमे कते तरहक एहन शिल्प-विधान अछि? ओहि सब शिल्प-विधानक सूत्रबद्धता भ' गेल अछि? से सब किछु नहि अछि तैयो मानि ली जे अछि त' नाटककार, रंगमंच स' किएक निर्देश ग्रहण करए? की ओ साहित्यक विधा नहि रहल आब? कथा-कविता वगैरहक लेल त' अहाँ पत्रिका वा ओकर संपादक स' निर्देश ग्रहण करक लेल नहि कहैत छी। तखन नाटक किए रंगमंच स' निर्देश ग्रहण करओ? साहित्यक एक विधाक रूपमे ओ किएक ने लीखल जाए। भ' सकैए आ भेल अछि जे नाटक, रंगमंचक निर्माण क' दिअए। मुदा अहाँ त' ओकरा रंगमंचक कच्चा माल बनाबक लेल व्यग्र छी! किएक? अहाँ एक साहित्यक विधाक रूपमे ओकर विवेचन करबाक कामचलाउओ पद्धति नहि बना सकलहुँ अछि। तैं ओकरा रंगमंच दिस ढेलि क' भारमुक्त होब' चाहैत छी। इ प्रवृत्ति एक विधा के साहित्य स' बेदखल करबाक षड्यंत्र अछि।

एत, रंगमंचक विवेचन करबाक स्पेस नहि अछि। तैयो प्रसंगवश कहि दी जे मैथिली रंगमंच दूइए तरहक अछि। पहिल गामक रंगमंच जकरा भिन्न करबाक लेल लोक-नाट्य कहैत छी आ दोसर, शहरक रंगमंच!

गामक रंगमंचक माने तथाकथित लोक-नाट्य के मारबाक प्रयास, मिथिलाक शिक्षित अभिजन कम नहि केलनि। इ त' ओकर जड़िए तत्ते गहींर छै जे आइयो जेना-तेना जिबिते अछि। विमर्श ओकरो पर होइत रहैए। सत्यनारायण पूजा कथा-

जकाँ इतिवृत कहल जाइए नाम गना-गना क' ज्ञान प्रदर्शन होइत रहैए। प्रदर्शन-शिल्प, अभिनय-विधान, भाषिक स्तर आ सतह प्रभृति पर कोनो वर्णन पर्यंत लाख तकनहु नहि भेटत। किए? देखले नै गेल छै, तैं। अझक्के वा दुर्योगे देखलो गेल छै त' गूनले नै गेल छै तैं। शहर मे जे एहि रंगमंचक अत्यल्प प्रायोगिक प्रदर्शन भेल छै ओकरो देखलाक बावजूद नै गूनल गेल छै—सायास। ....स्पष्टतः 'समरी डिस्पोजल'क गुण, मैथिलीक बुद्धिजीवी मे कूटि-हुरि क' भरल छैक। मूँह पर वाह कहिक' अनाठाउ-मटिआउ। आलोचना करबाक ने उहि छै ने इच्छा...

परिणामतः इ रंगमंच अपडेट नहि भेल। प्रगतिकामी रहितो, प्रगतिगामी नहि भेल। बस अपना जड़ि भरोसे जीबैत रहल। ओ जड़ियो सुखा रहल छै, गालि रहल छै.... शहरक मैथिली रंगमंच, प्रयोगधर्मी अछि, महत्वाकांक्षी अछि, पेशेवर हेबाक कामना रखैत अछि। अपना उत्कर्षक लेल ओ विवेचनाक संदर्भमे मिथिला स' बाहर क मूँह जोहैए। त' स्वभाविक छै जे ओ बाहरेक बात स' प्रभावित हैत। मैथिली मात्र स' प्रतिबद्ध नै रहत आ मैथिलीक परिसीमा स' बाहर चलि जेबा मे कोनो संकोच नै करत आ मैथिलीक नाटकक प्रतीक्षा सेहो नै करत आ नहिए क' रहल अछि ओ नाटकक बदला कथा-कविता कथू सँ विषय ल'क' स्क्रिप्ट लिखि रहल अछि आ अहाँ नाटकके ओम्हर ठेलि, नाटककार के स्क्रिप्ट राइटर बनाबक लेल व्यग्र छी, किछु रंगदलक अध्ययन-विश्लेषण क' क' देखब त' अहाँ हमरा स' सहमत हैब। परंतु से करब तखन ने...

जेना कि 'ग्रामीण-रंगमंच'। ई एखन बेस चर्चा मे अछि। नहि-नहि! ओ रंगमंच नहि जकर चर्च हम एखने केलहुँ अछि। इ रंगमंच फराक अछि। इ अछि, शिक्षित-अभिजन द्वारा स्थापित नाट्य-कला-परिषद सब जे पछिला सदीक आरंभ स' स्थापित होब' लागल। एहि मे स' कतेको गेल्डेन जुबली, डायमंड जुबली मना रहल अछि। विमर्श सब मे एकर बेस गुणगान होइत छैक। कलाकार सबहक भरिपोख स्मरण आ प्रशंसा होइत छैक। मुदा इ नहि कहल जाइत छैक जे एहि परिषद सब द्वारा कोन नाटकक प्रदर्शन होइत छलैक वा होइत छैक। ओ सब अछि पारसी रंगशिल्पक बाहरी नाटक सब। सेहो अनुवाद पर्यंत नहि। अविकल हिन्दी-उर्दूमे। एना किएक भेलैक? इ शिक्षित अभिजन मैथिली के मनोरंजनक भाषा किएक नहि बूझलक? चलू, गामक ओहि पुरातन रंगमंच स' घृणा करैत छल, तैं ओकरा लेल किए किछु करैत। परंतु किरतनिञा त' कमोबेश उपशास्त्रीय नाट्य-रूप छल। ओकरे पर किछु करैत... नहि केलक। किए? चलू

हमहीं अनुमान लगबैत छी; ओ अपन मनोरंजन रूप तकैत छल। ओकरा, पुरातन गामक रंगमंचक विरूद्ध ठाढ़ हेबाक छलै। किरतनिञा प्रयोग करैत से ओकरो कलाकार त' पुरातन रंगमंचेक लोक स' छलै जकरा स' घृणा करैत छल। ओ सब मैथिली भाषा मे छलै त' इरखा स' भरि क' की निकृष्ट रंगमंचक भाषा के अपन मनोरंजनक भाषा मान स' नासकार गेल आ नकल कर' लागल। हम जान' चाहब विद्वत समाज स' जे इ बात नै छलै, त की छलै?

आब एलै दोसर बात। इ शिक्षित अभिजन, अपना बुत्ता स' भारी-भरकम दर्शक समूह नै बनि सकैत छल। आर ओकरा गामक रंगमंचक दर्शक के सेहो फोड़बाक छलै, दल-बदल करेबाक छलै। बस एहि हिन्दी-उर्दूक नाटकक दू दृश्यक बीच नटुआ नचाब' लागल। नटुआ, सेक्सुअली ओवरलोडेड गायन आ नर्तन कर' लागल। एकरे परिणति भेलैक डी.जे. आ आर्केष्ट्राक बर्चस्वक। विद्यापति पर्व समारोह सब एहि प्रवृत्ति मे विस्तार करैत अपन महान योगदान कर' लागल। एकर वर्णन फेर कखनो। अंततः मिथिलाक सौम्य अपरूप मनोरंजन संस्कृतिक लतखुर्दनि भ' गेल। से नहि, त' कहू ने जे किए संगीतक मुख्य धारा मे पैरोडी चलैए आ सिनेमा बनैए त' भोजपुरीक विधानमे?

नहि, हमरा कहबाक अर्थ किन्नहु नै जे ओहि समस्त दोषी अभिजन के सारा पर स' उठा क' फांसी द' देल जाए। परंतु इ अर्थ अवश्य अछि जे जावत तक अहाँ अतीतक गलती के नहि चीन्हब वर्तमानक लेल बाट नहि बना सकब। आर अहाँक सांस्कृतिक भविष्य अन्हारे मे रहत।

एत' जते जे हम कहलौं से अपूर्ण अछि। संगहि सबटा बात एक्केठाम कहनाइयो असंभव छैक एवं अनुचित सेहो। परंतु, हम अपन द्रोणाचार्य, वर्टोल्ट बेख्तक एकटा कविता अवश्य सुनाब' चाहब।

कविताक शीर्षक अछि – आलोचना।

किछु गोटेक अभिमत छन्हि
आलोचना स' कोनो लाभ नहि
उर्जाक अपव्यय मात्र।
किएक त'
जकर आलोचना करैत छी
तकरा लेल धनसन

कोनो फर्क नहि पड़ैत छैक ओकरा
जेना सत्ता।
जेना व्यवस्था। जेना समाज।
हम कहब
अनवधानल आलोचना बेकार होइए
सुविचारित आलोचना करू
आलोचना के दृढ़ता दियौ
धार दियौ
हथियार दियौ
तखन देखियौ जे कोना ने फर्क पड़ै छै।
एहन आलोचना
सत्ता के धराशायी क' सकैए
व्यवस्था मोड़ि सकैए
समाज के बदलि सकैए।
नदी पर बान्ह बन्हनाइ
नहरि कोड़नाइ
फल देब'बला गाछ रोपनाइ
कोनो एक गोटे के शिक्षित केनाइ
किछु उदाहरण अछि सम्यक आलोचनाक
आर कलाक उदाहरण सेहो।



महेन्द्र नारायण राम

किरणजीक आलोचना-दृष्टि

कोनोहु विषय के ओकर लक्ष्य कें ध्यान मे रखैत, ओकर गुण-दोष ओ उपयुक्तताक विवेचन कर' वला साहित्यकें 'आलोचना-साहित्य' अभिहित कयल जा सकैत अछि। कवि, कथाकार डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण' के सेहो आलोचनाक अपन संदर्भमे बिशिष्ट मान्यता रहनि, से तखन हमरा बुझबा मे आयल जखन हम अपन पी-एच.डी. शोध-बिषयक क्रमें 'निदेशक' हेतु आग्रह करबाक लेल हुनका ओहिठाम गेल रही। पहिल बेर जखन हुनका सँ भेंट भेल त' हम हुनको घास कें पेना सँ झाड़ैत देखने रही। हम हतप्रभ भेल रही। एतेक पैघ विचारक, चिन्तक, समाज-सुधारक, अभियानी विद्वान एक कृषकक रूपमे घसबाहक भूमिका-निर्वहन क' रहलाह अछि। उद्देश्य ओ परिचय बुझला संता ओ अपन मंतव्य आरंभ क' देने छलाह। हमर विषय छल– "कारिख पजियार लोकगाथाक समालोचनात्मक अध्ययन।" एहि विषय पर शोध करबाक लेल ओ हमरा आशीर्वाद देने रहथि। 'समालोचना' शब्द पर जे ओ उद्धृत कयने रहथि, एहि ठाम उल्लेख समीचीन लगैत अछि। ओ कहने छलाह–

"मैथिलीमे 'समालोचना'क अर्थ होइछ 'गुण-दोष'क विचार।" तखन किछु व्यक्ति कें समालोचनाक अर्थ दोषाविष्कणेटा बुझाइत पड़ैत छनि। एकर कारण इएह जे वर्त्तमान मैथिल समाज सामंतक समूह थिक। एकर गह-गह मे सामंतवादी भावना भरल छै। पैघक स्तुति पूजा करब आ छोट सँ स्तुति-पूजा करायब।" एकरे अभ्यास छै। सत्यक संग संपर्क छुटि गेल छै। दोष देखाएब अर्थात सत्य बजबाक साहस रहैक तखन ने सत्य सुनबाक धैर्य अबैक। केवल प्रशंसाएटा करैत रहैछ तैं प्रशंसाएटा सुन' चाहैछ। अतः समालोचक द्वारा दोषक

उल्लेख होइतहि ओकरा दोषविकार मानि लैत अछि। समालोचक द्वारा कहल गुण पर ओकर अपने ध्यान नहि जाइत छै। दश गुणक संग एकोटा दोषक उल्लेख मात्र सँ तिलमिला उठैत अछि। समालोचक केँ दोषाविष्कारक कहि सकैत छी।''

ओ कहैत छथि—

मूल्यांकनक आधार गुण-दोषक योगफल थिक।

एक व्यक्ति केँ कोठा-सोफा, खेत-पथार, घोड़ा-हाथी सभ छै। संग-संग करजो छै। ओहि व्यक्तिक मूल्यांकन सम्पत्तिक मूल्य सँ कर्ज घटा क' कयल जेतै कि केवल सम्पत्तिक मूल्य पर? सपेता आमक आदरक आधार की अछि? खोंइछा पातर, आँठी छोट, गुद्दा अधिक, कोगर, स्वाद नीक, टिकनमा खूब, खोंइचा-आँठी खबैयाक लेल अकार्यक थिक तँ ओकर अल्पता दाम केँ बढ़ा दैत छै। दोष ऋणात्मक गुण थिक। ऋणक अभाव धन केँ बढ़ौते। ऋण धन के घटौने खोईंचा मोट आँठी पैघ भेलैं गुद्दा थोड़ भ' जेतै। सनाह रहने कोगर नहि हयत।

कविक संदर्भ मे ओ कहलनि—

जे कवि आन के कुबड़ देखि हँसैत छथि आ समाज केँ हँसबैत छथि जे कवि आनक बेटीक अंग-प्रत्यंगक वर्णन क' अपन कलुषित वासनाक पूर्ति करैत छथि आ आनो के ओहने बनब' चाहैत छथि, से थिक सहदय। ई कवि केँ आ काव्य केँ अनावश्यक भरिआएब थिक। हमर मतेँ सहृदयक अर्थ थिक सविचार।' हृदयं चेतना स्थानम्। चेतनाक स्थान मस्तिष्क थिक। अतः सहृदयक अर्थ भेल समान मस्तिष्क अर्थात समान विचार।''

समान मस्तिष्क ओ समान विचार धर्मा हुनक एकटा महत्वपूर्ण तथ्य ज्योतिरीश्वर लिखित 'वर्णरत्नाकर' माँदे उल्लेख आवश्यक। ई पोथी मैथिलीक आदि पोथीक रूपेँ सत्यापित अछि, मुदा से ततबे विवादग्रस्त सेहो। एकरा सम्बन्ध मे किरणजी स्पष्ट रूपेँ लिखैत छथि—

''हमर मतेँ वर्णरत्नाकर मिथिलाक भूमि सँ स्वयं संजात सलहेसक जातिक वस्तु थिक। छंदशास्त्रक अनुसार कोनो छंद एहि मे नहि अछि। कविशेखर जानिए क' ओकर आश्रय नहि लेलनि। हुनकर आगू मे तँ अनपढ़-निरक्षर समाज छल। ओकर रूचि, ओकर क्षमता केँ देखि रचना करय बैसल छलाह।....कविशेखर

सलहेस जातिक गीतक एहि विलक्षणता केँ पकड़लनि आ ओहि तर्ज पर रचना कयलनि।''

स्पष्ट अछि जे किरण जीक अनुसार वर्णरत्नाकर एक साहित्य रचना थिक। काव्य-ग्रंथ थिक। एहन लोकक लेल ई रचना कयल गेल छल जे अशिक्षित ओ अनपढ़ छल। ओकरा लेल गद्ये नहिं पद्यो उपयोगी छल। ई महराइ जकाँ रचना थिक जकरा गेयता अछि। स्वरक आरोह-अवरोह केँ स्वराघातक द्वारा संकेतिक कयल गेल अछि। एतबहिं नहिं किरणजी आगाँ कहैत छथि— ''वर्णरत्नाकर कथा वाचकक उपयोगक लेल नहिं, मिथिलाक अनपढ़ मुदा शिक्षित व्यक्तिसभक उपयोगिता केँ ध्यान मे राखि क' रचल गेल। मिथिला आ भारतीय समाज आ संस्कृतिक विशिष्ट वस्तुक मादे जानब ओकरा लेल ज्ञानेक नहि, गर्वक बात सेहो छलैक। मिथिलाक एहन जन-समुदाय केँ जकरा संस्कृत के कहय, मैथिलीओ लिखबाक-पढ़बाक अवगति नहि रहैक, अपन भाषामे अपना ढंगे बात-विचार बुझबाक अवसर भेटलैक। साधन उपलब्ध भेलैक। वर्णरत्नाकरक इएह प्रयोजन आ उपलब्धि थिक।

किरणजीक ई रेखांकन समालोचनाक बिशिष्ट बिन्दु अंगेजल जा सकैत अछि। किरणजीक ई पाँति नीक लागल। हुनकर ई फरिछाएल विचार सेहो द्रष्टव्य—

''जहिना मिथिलाक जीवनक पूर्ण परिचय पयबाक लेल लोक साहित्यक अध्ययन आवश्यक अछि।''

स्पष्टतः किरणजीक ई उक्ति हुनक समान मस्तिष्क ओ समान विचार केँ झलकबैत अछि।

ओ हमरा कहने छलाह—

''हमरा आइ प्रसन्नता भ' रहल अछि। अहाँ सन-सन युवक अपन साहित्य आ समाज दिस अग्रसर भेलहुँ अछि। एकरे आइ आवश्यकता अछि एहने सन वस्तु केँ निकालि अपन समालोचनात्मक विचार प्रस्तुत करी हमर सहानुभूति ओ पूर्ण आशीर्वाद अछि।''

से! महामना किरण जी लोक चेतनाक रचनाकार छलाह। ओ समीक्षा केँ समाज सापेक्षता ओ समाज चेतनता मानैत छलाह। ओ कहैत छलाह—

''साहित्य समाजक मानस-क्षेत्रक उपजा थिक। जखन भूमिक उपजा पर देश-कालक प्रभाव स्पष्ट देखैत छी तखन मानव-मानस-क्षेत्रक उपजा पर एकर प्रभाव कोना नहि पड़तै?''

''जहिया सामंती शासन-व्यवस्था रहय तहिया राजशास्त्र आ राजदरबारक रीति-नीति जानब चतुर सुजान पंडितक लेल पर्याप्त छल। मुदा आजुक स्थिति भिन्न अछि। आजुक रचनाकार लग लाखों-करोड़ों लोक अछि, सौंसे दुनियाँ अछि।''

स्पष्ट अछि जे किरणजीक अनुसार मिथिलाक विशाल जन-समुदायक हीन भावना कें दूर करब जरूरी छल। ओ ताहि दिशा मे प्रयत्नशील भेलाह। ताहि स्थिति मे संघर्ष स्वाभाविक छल। अपरिहार्य कार्य छल। किरणजीक सम्पूर्ण लेखन संघर्षक साहित्य अछि। प्रतिक्रियावादी नहि अपितु प्रतिकारवादी साहित्य अछि। प्रतिपक्ष आ प्रतिरोधक साहित्य अछि। मतांतरणक ई साहित्य किरणजीक मात्र एकटा मान्यता ओ विचारक साहित्य छल, व्यक्तिगत विद्वेषक नहि। निःसंकोच दृढ़तापूर्वक राखल गेल हुनक मत स्वयं एकटा एक्टिविस्ट रचनाकारक मत अछि। हुनका भाषामे शिष्टजनक वचन चातुरी नहि अछि, ठाँहि-पठाँहि कहल गेल एकटा सोझ लोकधर्मी एकटा विचारधारा अछि। एहि विचारधारामे एकटा प्रवर्त्तनकर्त्ता देखाइत छथि ओ। एहि सँ हुनकर आलोचना बेसी फरीछ अछि। कहल जा सकैत अछि जे किरणजी आलोचना नहि, प्रत्यालोचना लिखलनि अछि। रचनाक पुनर्पाठ कयलनि अछि।

हुनकर बहुत रास विविध विषयक निबंध प्रकाशित/अप्रकाशित अछि। गहन सँ देखल जाए त' प्रायः सभ निबंध मे किरणजीक विशिष्ट आलोचना तत्व समाहित अछि।

बहुत रास उदाहरण प्रस्तुत करैत ओ कहैत छथि– ''श्रृंगार रस मूल प्रवृत्ति थिक। एकर विकास युवावस्था मे होइछ। तैं युवावस्था मे ई रस बड़ प्रिय होइत अछि। देशक प्राणों तँ युवके थिक। ओकरे विचारधारा पर देश निर्भर करैछ। तैं विद्यापति श्रृंगार रस मे सानि क' अपन उपदेश देलनि जाहि सँ युवक स्वाधीनताक संग संघर्ष करय, तदर्थ अपन अपन चरित्रक गठन करय आ युवती अपन कुल धर्मक सतीत्वक रक्षा करैत युवक समाज कें जीवन मे प्रेरणा आ स्नेह दैत रहैक। परन्च गोविन्द दासक काव्य शुद्ध श्रृंगारिक थिक। एहि मे स्वादेटा छैक। भीतर

मे दोसर कोनो वस्तु नहि। राधाकृष्णक नाम जाहि मे छैक तकरा पढ़ला सँ भक्तिभाव मे वृद्धि होइक तँ बात भिन्न थिक मुदा राधाकृष्णहुक जे चित्र हृदयमे उपस्थित होयतैक से श्रृंगार रंसाविष्टेचित्र अतः गोविन्द दासे एकनिष्ठ श्रृंगारक प्रेमी छथि, विद्यापति नहि।''

तहिना बहुत रास उदाहरण प्रस्तुत करैत किरणजी कहैत छथि–

''मनबोध जाहि छंद मे सौंसे कृष्णजन्म लिखने छथि ताहु छंद मे विद्यापतिक काव्ये अछि। चंदा झा जाहि छंदक प्रयोग रामायण मे कयने छथि– ताहु छंद मे हुनक काव्य अछि आ मधुप जी, सुमन जी, अमरजी, मोहन जी, अणुजी, निरंकुश जी आदि जाहि छंद मे कविता रचने छथि, तांहु छंद मे विद्यापतिक काव्य अछि। तथापि, मनबोध कें राग ताल लयाश्रित गीतक मोह कें छोड़ि देबाक श्रेय भेटनि, मधुपजी, सुमनजी कविताकार मानल जाथि आ ओही सभ छंदमे रहलो संता विद्यापतिक सभटा पद्य गीतक संज्ञा पाबय ओ गीतकारेटा कहाबथि एहि मे हुनक कोन सक?''

किरणजी भूपरिक्रमणक रचयिता कवि कोकिल विद्यापति के नहि मानैत छथि। ओ बहुत रास तथ्यक उदाहरण प्रस्तुत करैत अंत मे कहैत छथि।

''हम अपन विचार विद्वान लोकनिक नजरि पर राखि देलहुँ अछि। अहि सँ अधिक हमरा किछु बजबाक नहि अछि।

हमरा तँ इएह आश्चर्य लगैत अछि जे भूपरिक्रमणक भ्रष्ट श्लोकक बीच-बीचमे पुरुष-परीक्षाक कथा आंकड़-पाथरक बीचमे मनिक खण्ड जकाँ चमकैत अछि तथापि क्यो एकरा एके विद्यापतिक रचना मानबाक भ्रम कोना कयलनि?

एहि पोथीक नाम थिक–भूपरिक्रमण। विद्वान लोकनि विद्यापतिक कृतिक लिस्ट मे उल्लेख करैत आयल छथि– भूपरिक्रमाक। अतः विद्वान लोकनि एहि पोथी कें नहि देखने छलाह से निश्चय संभव थिक, विद्वान लोकनिक द्वारा उल्लिखित ग्रंथ 'भूपरिक्रमा' एहि सँ भिन्न ग्रंथ हो।''

एकर अतिरिक्त किरण जी कतोक ठाम कतोक रूपक अपन तर्क दैत समालोचनाक कसौटी पर अपन विचार-धारा कें कसैत छथि। ओ कहैत छथि–

विद्यापतिक गीत कें चिन्हबा ले मैथिल आँखि चाही।'' ओ विद्यापतिक राधाकृष्णक तीन रूप कियक, पर तार्किक प्रश्न उठाओल।'' कीर्त्तनियाँ नाच छल की नाटक''? ओ साहित्यिक भाषा ओ लोकभाषा के विश्लेषित कयलनि। मैथिली भाषाक व्याकरण पर दृष्टिपात कयलनि। कतोक कविता, कथा, निबंध, आन्दोलन, पर्व-समारोह माध्यमे अपन समालोचकक विराट व्यक्तित्वक परिचय देलनि। व्यावहारिक ओ सैद्धान्तिक स्वरूपाकार देलनि।

प्रसिद्ध आलोचक मोहन भारद्वाज हिनका संदर्भ मे कहैत छथि– ''किरणजी आन्दोलनकर्त्ता छलाह, साहित्यकार छलाह। हुनका लेल ई दुनू काज एक दोसराक पूरक छल। किन्तु किछु गोटे हुनक आन्दोलनकर्त्ता कें रूपमे तेना क' प्रस्तुत कयलनि जाहि सँ हुनक साहित्यकार पक्ष गौण भ' जाय। ई उचित नहि। किरणजी आन्दोलनकर्त्ता अवश्य छलाह। विद्यापति-गोष्ठी अवश्य स्थापित कयलनि। विद्यापति पर्वक सप्ताह आ पक्ष अवश्य मनौलनि। उद्देश्य मात्र एक छलनि– मातृभाषाक प्रति आकर्षण उत्पन्न करब। मातृभाषाक विकास करब। मातृभाषाक विकास ओ एहि लेल चाहैत छलाह जे ''मातृभाषाक विकास सँ जे जन-जागरण होइत छैक... ओ जागरण धन-कुल- जातिमूलक गरिमा कें चूरि दैत अछि।''

तात्पर्य स्पष्ट अछि जे ओ एक दिस लोक चेतनाक विभिन्न रूप कें प्रत्यक्षीकृत कयलनि त' दोसर दिस सूतल चेतना कें जगयबाक अभियान सेहो चलौलनि।''

एतावता हम निष्कर्षतः ई कहि सकैत छी जे किरणजीक आलोचनाक दृष्टि समाजक संवेदनशील ओ प्रगतिशील विचारक जागरूक लोक के रूप मे छलनि। हुनका मे समाजक धुकधुकी जानबाक क्षमता छलनि। समाज मे व्याप्त असमानता, अशिक्षा, भूख, अभाव, रोग-शोक, शोषण-अत्याचार, सामाजिक कुरीति, अंधविश्वास धार्मिक पाखंड, आडंबर, जाति-वर्णक आधार पर लोक के खंड-खंड मे बाँटब के विरूद्ध एकटा सोझ आ स्पष्ट विचारधारा छलनि। व्यवहार मे आत्मीय छुअन आ विचार मे स्पष्टता ओ प्रखरता छलनि। निर्भीकपूर्वक अपन तथ्य लोकक समक्ष रखबाक अपूर्व कौशल ओ क्षमता छलनि।

हुनक ई दृष्टि आइ प्रासंगिक अछि आ भविष्यो मे ओ मौन पड़ैत रहताह– एक सोझ सैद्धान्तिक, निर्णयात्मक, प्रभाविव्यंजक आ व्याख्यात्मक प्रेरक आलोचकक रूपमे।



रमानन्द झा 'रमण'

जयधारी सिंहक समालोचना-कर्म

कुल-परिचय

खण्डबला कुलमे पाण्डित्यक सुदीर्घ परम्परा अछि। पहिने पाण्डित्यक माध्यम संस्कृत भाषा छल। पछाति जखन भारतमे उपनिवेशवादी शासन-व्यवस्थाक संग पाश्चात्य शिक्षा-प्राणाली आ अङरेजी भाषाक प्रचार-प्रसार भेल आ महत्त्व बढ़ल तँ एहि कुलमे भारतीय ज्ञान-परम्परा आ पाश्चात्य ज्ञान-परम्पराक धारा समान रूपसँ प्रवाहित होअए लागल। खण्डबला कुलक ओही वैदुष्य परम्परामे डा. जयधारी सिंहक जन्म 16 सितम्बर, 1929 कें बाबू क्षेमधारी सिंह (1894–29 मार्च,1961) प्रसिद्ध 'श्रीकर' साहेबक द्वितीय पुत्रक रूपमे भेलनि। श्रीकर साहेब बी.ए. आ 'वेदान्तविनोद'क संग मिथिलाक तान्त्रिक परम्पराक ज्ञाता आ साधक छलाह। अनेक भाषा आ शास्त्रक अधीत विद्वानक रूपमे हुनक गणना होइत छल। 'निबन्ध चन्द्रिका', 'श्रीकर भक्तितरंग' एवं दर्शन विषयक अनेक ग्रन्थ मैथिलीमे छनि। अङरेजीमे 'दुर्गाशप्तशती'क अनुवाद कएने छथि। मैथिलीमे दर्शन विषयक ग्रन्थ लिखि श्रीकर साहेब ओहि मैथिल विद्वान सभमे प्रमुख स्थान प्राप्त कए लेल, जेसभ मैथिलीकें शास्त्रक भाषाक गरिमा प्रदान करबामे अग्रगण्य छथि। डा. जयधारी सिंहक अग्रज प्रो. बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर' (04 अक्टूबर,1919–14 अगस्त,1991) मैथिलीक यशस्वी प्राध्यापक एवं ख्यातलब्ध साहित्यकार भेल छथि। डा. जयधारी सिंहक उपनाम 'प्रभाकर' छनि। 'गोविन्द काव्यालोक' श्रीजयधारी सिंह 'प्रभाकर'क नामसँ प्रकाशित अछि आ 'बौद्धगानमे तान्त्रिक सिद्धान्त'(1969) श्रीजयधारी सिंहक नामसँ। परन्तु जेना प्रो. बुद्धिधारी सिंह अपन उपनाम 'रमाकर'सँ प्रसिद्ध भेलाह, ओहि प्रकारें डा. जयधारी सिंह उपनामसँ ख्यात नहि छथि। पारिवारिक लोकक लेल ओ 'भैयनजी' सेहो छलाह।

डा. जयधारी सिंह बाल्यकालहिसँ कुशाग्र बुद्धिक छलाह। ओ पहिने पटना विश्वविद्यालयसँ 1952 ई मे गणितमे एम.ए. कएलनि। 1953 मे मैथिलीमे स्नातकोत्तर डिग्री (प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान) प्राप्त कएल। डा. सिंह अध्यापन-कार्य चन्द्रधारी मिथिला कालेज, दरभंगा(1953-54) सँ आरम्भ कएल। पछाति रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनी आबि गेलाह। ओतए ओ किछु वर्षधरि गणित आ मैथिली विभागमे अध्यापन कएल। कालान्तरमे जखन एक विषयक विकल्पक अनिवार्यता कएं देल गेलैक तँ मैथिली भाषा-साहित्यकेँ प्राथमिकता देल आ मैथिली विभागमे स्थायी रूपसँ आबि गेलाह। प्रो. रमाकर जीक सेवानिवृत्तिक उपरान्त डा. जयधारी सिंह मैथिली विभागक अध्यक्ष नियुक्त कएल गेलाह। हिनकहि कार्यकालमे आर. के. कालेजमे स्नातकोत्तर मैथिली विभागक पी.जी. सेन्टर स्थापित भेल जे अद्यावधि चलि रहल अछि। 'बौद्धगानमे तान्त्रिक सिद्धान्त' विषयपर आचार्य रमानाथ झाक मार्ग-निर्देशनमे ओ पी.एचडी.क उपाधि अर्जित कएल। डा. जयधारी सिंहक देहावसान 21 जनबरी, 2007 केँ भए गेलनि।

प्रकाशन

विद्यानुरागी मैथिलीक प्राध्यापक डा. जयधारी सिंहकेँ अनेक भाषापर असामान्य अधिकार छलनि। हिनक रचना मैथिली, अङरेजी आ हिन्दी भाषामे अछि। मुदा अछि सभटा मैथिली भाषा-साहित्य एवं मिथिलाक संस्कृतिक सन्दर्भहिमे। ओ भाषाक चयन मंच आ आयोजकक अनुरोधपर करैत छलाह। विशेषतः राष्ट्रीय स्तरक संगोष्ठीमे जतए ओ मैथिली भाषा-साहित्य अथवा मिथिलाक तन्त्र-परम्पराक वक्ताक रूपमे आमन्त्रित रहैत छलाह, व्याख्यानक माध्यम हिन्दी वा अङरेजी रहैत छल। ओहिना चेतना समितिक विचार-गोष्ठीमे आमन्त्रित पूर्वाञ्चलक विद्वानसभकेँ मैथिली साहित्यक गतिविधि आ उत्कर्षसँ अवगत करेबा हेतु अपन आलेखक अङरेजीमे प्रस्तुत करबाक अनुरोध कएल जाइत छल। जेना अछि Tradition and Modern Poetry (1975)

मधुर स्वरक धनी डा. जयधारी सिंह कहिओ काल कविता आ गीतक रचना सेहो करैत छलाह। अध्यापनक क्रममे ओ अनुभव कएल जे मैथिलीमे काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ, अर्थात् लक्ष्यग्रन्थ आ लक्षणग्रन्थक अभाव अछि। एहि अभावसँ मैथिलीक छात्रकेँ आन भाषामे लिखित काव्यशास्त्र विषयक ग्रन्थक आश्रयमे जाए पड़ैत छलनि। एहि अभावक पूर्तिक लेल डा. सिंह मैथिलीमे लक्ष्यग्रन्थ एवं लक्षण-ग्रन्थक लेखनपर अपन ध्यान केन्द्रित कएल। शीघ्रहि ओ मैथिली समालोचना आ

अनुसन्धानक क्षेत्रमे रमि गेलाह। संस्कृत काव्यशास्त्रक आधारपर 'काव्य-मीमांसा(1962-63) तथा पाश्चात्य एवं पौर्वात्य काव्यसिद्धान्तपर 'समालोचना शास्त्र'(1978) लिखल। 'काव्य-मीमांसा'मे भारतीय काव्यशास्त्रक अनुकूल काव्यक लक्षण, काव्य-रचनाक कारण, काव्यक उपादेयता, शब्द-शक्ति, ध्वनि, रस आदि विवेचित अछि। मूलतः पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्तक आधापर लिखित 'समालोचनाशास्त्र' समालोचना साहित्यक विकासक सैद्धान्तिक आ व्यावहारिक पक्षक विवेचन थिक। एहिमे अनेक उपशीर्षक छैक। यथा - आलोच्य तत्त्वविवेचन, समालोचनाक आधार, शब्दार्थ तत्त्व, भावतत्त्व आ मैथिलीक समालोचना साहित्य (किछु प्रेरक कार्य, मैथिलीक प्राध्यापक वर्गक कार्य, किछु अन्य विषयक प्राध्यापकक कार्य, अन्य समालोचकगणक कार्य) अछि। 'आचार्य रमानाथ झा : एक समालोचक'(अभिनन्दन ग्रन्थ), 'आलोचनाक स्वरूप'(1977) तथा 'आधुनिक आलोचनामे परिवर्तनक स्वर'(1984) समालोचना सिद्धान्तक दृष्टिसँ अत्यन्त उपादेय अछि। ई सभ डा. सिंहक पौर्वात्य एवं पाश्चात्य समालोचनाशास्त्रक गम्भीर अध्ययनक द्योतक थिक। लक्षणग्रन्थमे प्रमुख अछि 'गोविन्द काव्यालोक'(1958) एवं 'बौद्धगानमे तान्त्रिक सिद्धान्त'(1969)। एकर अतिरिक्त समय-समयपर विभिन्न प्रयोजनक हेतु लिखित विविध विषयक अनुसन्धानपरक समालोचनात्मक निबन्ध सभ अछि। ई सभटा असंकलित अछि, सुलभ नहि छैक। लक्ष्यग्रन्थ, लेखादिमे विषयक विविधताकेँ देखैत डा. जयधारी सिंहक साहित्यकेँ निम्न खलमे राखि सकैत छी -

(क) मैथिली आन्दोलन सम्बन्धी - भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिली किएक? Claims of Maithili for inclusion in the Indian Constitution, Place of Mother tongue Vis-a Vis National Language of Maithili : Manority.

(ख) सम्पादन - मैथिली कथा-संग्रह 1974 आ कथा-सरिता, 1992

(ग) तन्त्रसम्बन्धी साहित्यक विवेचन - 'दुर्गाभक्तितरङ्गिणी', 'Some thoughts on Buddhist Tantra', 'Some Salient Features of Shakt tantra', 'तान्त्रिक साधना के मैथिल रूप', 'बौद्ध योग और शैव योग' आदि।

(घ) साहित्यक विभिन्न विधाक विवेचन - 'मैथिली कथा साहित्यक विकास', 'मैथिली उपन्यास : एक विहंगम दृष्टि', 'पूर्वाञ्चलीय गीत साहित्य : अनुसन्धानक व्यापक परिवेश', 'कीर्तनिञा नाटकक भावपक्ष', 'मिथिलाक लोकगीतक विविधता', 'विद्यापतिक पदमे संगीत', 'साहित्यक गतिविधि आओर साहित्यकारक दायित्व' आदि। तथा,

(ङ) आधुनिक कृतिकारपर केन्द्रित लेखन - 'हर्षक ध्वनिपर', 'एक समालोचक : रमानाथ झा', 'कथाकार तन्त्रनाथ झा' आदि।

हमर प्रतिपाद्य अछि 'डा. जयधारी सिंहक समालोचना-कर्म'। समालोचना-कर्मक दू टा पक्ष अछि - सैद्धान्तिक पक्ष आ व्यावहारिक पक्ष। यद्यपि डा. जयधारी सिंहक समस्त लेखन हुनक समालोचना कर्महिक अर्न्तगत अछि, तथापि सौविध्यक लेल सर्वप्रथम समालोचनाक अर्थ आ अर्थविस्तारक प्रसंग हुनक विचारक चर्चा करब।

डा. जयधारी सिंह 'समालोचनाशास्त्र'क विषय-प्रवेशमे सर्वप्रथम किछु पारिभाषिक शब्द, यथा - 'समालोचना', 'समीक्षा'आ 'क्रिटिसिज्म'पर विचार कएल अछि। ई व्युत्पत्तिक आधारपर अर्थ-निर्धारण एवं अर्थक भेल विस्तारक विवेचन थिक। 'समालोचना' शब्दक व्युत्पतिकेँ अर्थबैत ओ कहैत छथि जे एहि कर्ममे, व्यापारमे, आलोच्य पदार्थक एक वा अनेक वैशिष्ट्यकेँ भीतरसँ, बाहरसँ चारूकातसँ देखल जाइत अछि, सेहो पुनः समीचीन रूपसँ अर्थात् कोनहु व्यवस्थाक आधारपर। व्यवस्थाक तात्पर्य ओ तत्त्वसभ थिक जाहि आधारपर कृतिविशेषक परीक्षण एक समालोचक करैत छथि। एहिक्रममे डा. सिंह 'ईक्ष' धातुमे 'सम्' आ 'परि' उपसर्ग जोड़लासँ बनल 'समीक्षा' तथा 'परीक्षा' शब्दक व्युत्पत्यार्थक संग 'समालोचना' शब्दक अर्थक मिलान सेहो कएल अछि। ओ मानैत छथि जे 'सम्' उपसर्ग 'सम्यक रूपसँ अभिप्राय रखैत अछि तथा 'परि' तँ चारूकात देखबाक अर्थमे प्रयोग होइते अछि। एतावता 'लोचृ' धातु रहए(आलोचना), 'ईक्ष धातु (समीक्षा) रहए वा 'आ' उपसर्ग रहए अथवा 'परि' उपसर्ग' रहए अथवा 'सम्' उपसर्ग जोड़ल रहए, समस्त व्युत्पन्न अर्थ सम्यक् रूपसँ चारूकातसँ देखब, देखि चिन्हब, सेहे थिक। एहिना डा. सिंह अङरेजीक 'क्रिटिसिज्म'शब्दपर विचार करैत ओकर शब्दकोशीय अर्थक मिलान कएल अछि। अङरेजीक शब्दकोशमे 'क्रिटिसिज्म' शब्दक अर्थ 'सविस्तर परीक्षा' अथवा 'सविस्तर जाँचब' (detailed examination) होइछ जे 'समालोचना' 'समीक्षा' अथवा 'परीक्षा'सँ भिन्नार्थक बोध नहि करबैत अछि। एहि प्रकारें क्रिटिसिज्म'क अर्थक भारतीय पर्याय 'समालोचना' सर्वथा संगत अर्थात् समानार्थी मानल अछि। तथापि 'समालोचना'क अर्थ-निर्धारणमे मात्र व्युत्पत्यार्थधरि सीमित नहि छथि, ओ व्यावहारिकताकेँ सेहो महत्त्व देल अछि। आ तेँ एहि दृष्टिसँ 'समालोचना' शब्दक अर्थ मात्र 'देखब' तथा 'चिन्हब'

कर्म मात्र नहि थिक, देखि तथा चीन्हि अपन धारणा व्यक्त करब सेहो मानल अछि।

अङरेजीक 'क्रिटिसिज्म' तथा 'समालोचना', 'समीक्षा' अथवा 'परीक्षा'सँ भिन्नार्थक बोध नहि होएबाक सन्दर्भमे डा. जयधारी सिंह आचार्य रमानाथ झा द्वारा प्रयुक्त 'समीक्षा-वृत्ति'क उल्लेख कएल अछि। आचार्य झा समीक्षा-वृत्तिक सामान्य लक्षण निर्दिष्ट कएने छथि। ओहि सामान्य लक्षणक अनुसार 'समीक्षा ओ साधु तात्त्विक प्रक्रिया थिक, जाहिमे लोक कोनहु दर्शनीय वस्तुकेँ देखबाक इच्छा करए, देखए ओ देखिकेँ जाहिमे जे द्रष्टव्य होइक, तकरा दोसराकेँ देखयबाक इच्छा करए, देखाबए'। डा. जयधारी सिंह आचार्य रमानाथ झा द्वारा प्रतिपादित समीक्षा-वृत्तिक तात्त्विक प्रक्रियाकेँ देखैत एहि निष्कर्षपर छथि जे ओ(आचार्य रमानाथ झा) 'समीक्षा-वृत्ति' आ 'समालोचना-वृत्ति'मे तत्त्वतः अन्तर नहि मानल अछि। एहि प्रकारें डा. जयधारी सिंह अपन मतक सम्पुष्टि आचार्य रमानाथ झाक मतमे देखैत छथि। इहो मानि सकैत छी जे 'समीक्षा-वृत्ति' आ 'समालोचना-वृत्ति'क सन्दर्भमे डा. सिंहक मत आचार्य रमानाथ झाक मतक अनुरूपहि अछि।

समालोचना-कर्म : जेना कहल अछि समालोचना-कर्मक दू टा पक्ष अछि - सैद्धान्तिक आ व्यावहारिक। कोन पहिने आ कोन बादमे तकर निर्धारण कठिन अछि। मुदा, सामान्यतः निर्धारित सिद्धान्त वा नियामकक आधारहिपर कृतिक परीक्षण व्यवहारमे अछि। एहि प्रसंग डा. जयधारी सिंहक मत छनि जे 'समालोचना'क व्युत्पत्तिक अनुसार जे अर्थ होइत हो, तथा ओकर स्थानमे जे अन्य शब्द 'समीक्षा' आदि प्रयुक्त होइत अछि, से सभ ओहि अन्तर्निहित अभिप्रायकेँ वा वैष्ट्यिकेँ प्रभावोत्पादक ढ़ंगसँ अभिव्यक्त नहि करैत अछि। एहि लेल ओ समालोचना-शास्त्र (Science of Literary Criticism) आवश्यक मानैत छथि। अर्थात् समालोचना-कर्मक लेल समालोचना-शास्त्र आवश्यक अछि, अन्यथा दृष्टि कोना भेटतैक, कोन आधारपर साहित्यक समीक्षण-परीक्षण सम्भव होएत आ बिना आधारक समीक्षण-परीक्षण की आ केहन होएतैक?

समालोचना-कर्मक नियामक तत्त्व सभक निर्धारण एहि बातपर आधृत छैक जे समालोचनाक प्रयोजन की अछि? साहित्यशास्त्रमे साहित्यक प्रयोजन निर्धारित अछि। समालोचना सेहो साहित्यक एक विधा थिक। तेँ ओहि प्रयोजन सभक परिधिसँ समालोचना-कर्म वहिष्कृत नहि मानल जाएत। किन्तु व्यावहारिक जीवनमे

किछु अति यशाकांक्षी लेखकसभकेँ समालोचकक सत्यनिष्ठता आ नीर-क्षीर विवेचन सोहाइत नहि छनि, ओ समालोचनाक स्पष्टता आ निष्पक्षताकेँ अपन लोकप्रियतामे बाधक मानए लगैत छथि तथा वैरभावसँ परिचालित संकल्पित आचरण एवं लेखनपर आरूढ़ भए जाइत छथि। समस्त साहित्य-सृजनमे समालोचना-कर्मक अतिरिक्त साहित्यक अन्य विधाक लेखकक प्रति एहन वैरभाव दुर्लभ अछि। एहिसँ अप्रीतिकर स्थिति उत्पन्न भए जाइत छैक। तथापि, समालोचना-कर्ममे अप्रसन्नता बेसाहबाक लेल, प्रवृत्त होएबाक कोन प्रयोजन?

समालोचना-कर्ममे प्रवृत्तिक प्रसंग डा. जयधारी सिंहक मत स्पष्ट अछि। ओ मानैत छथि जे विश्वक इतिहासमे कोनो साकार देवता, महापुरुष वा कलाकार दोषरहित भए अवतीर्ण नहि भेल छथि। तात्पर्य जे व्यक्ति वा रचना सर्वथा दोषरहित नहि होइत अछि, बिन्दु-बिन्दुपर वा दृष्टि-विशेषसँ गुण वा दोष रहिते छैक, जकर मात्राक अनुसार ओ समाजमे पूज्य वा अपूज्य होइत अछि, स्तुत्य वा निन्दनीय होइत अछि वा मोन पाड़ल जाइत अछि। जेना प्रकाण्ड पण्डित, विभिन्न शास्त्रज्ञ, परम शिवभक्त रावण कोना निन्दनीय भए गेल। ओ मानैत छथि, जे व्यक्ति निन्दित भेलाह से एहि हेतु जे ओ गुणसँ काज नहि लए, दोषकेँ समुत्साहित कएल। ई तथ्य साहित्यिक कृतिक सन्दर्भमे सेहो समान रूपसँ मान्य अछि। संक्षेपमे कहल जा सकैछ जे यश आ अभ्युदय दोषक अभावपर निर्भर नहि अछि, जतेक गुणक सदभाव वा विकासपर निर्भर अछि। अर्थात् समाज वा व्यक्ति विशेषकेँ उपर उठएबाक हेतु दोष निराकरण रूप निषेधात्मक निगेटिव प्रक्रिया प्रयोजनीय नहि अछि, प्रयोजनीय अछि गुण विकास रूप विधिपरक पोजिटिव प्रक्रिया। समालोचनाक उद्देश्यक प्रसंग डा. जयधारी सिंह एहि प्रकारक मतक पुष्टि आचार्य रमानाथ झाक समालोचना कर्मक विवेचनमे विस्तारसँ भेल अछि। ओ स्पष्टतः लिखने छथि जे हुनक समालोचनात्मक गुणक प्रोत्साहन समाजक आ तें हमरहु कर्त्तव्य थिक।

डा. जयधारी सिंहक अनुसार जखन अङरेजीक निर्णय बुद्धिबला (Judgement view) समालोचनाक प्रथा द्वारा दोष देखेबाक प्रवृत्ति अनुचित मानल गेल तँ मोजर देबाक बुद्धिबला समालोचनाक (appreciation or recognition) महत्त्व बढ़ल। ओकरहि विकास भेलैक। तेँ समालोचनाक क्षेत्रमे प्रोत्साहन-दृष्टिक अपेक्षा भेलैक। सम्भवतः इएह कारण थिकैक जे आइ. ए. रिचार्डस अत्यन्त उदारभावसँ, भविष्यहिक समालोचनाशास्त्रक एकान्ततः भिन्न रूपक, किन्तु समृद्ध रूपक,

विकसित रूपक परिकल्पित वा अनुमित कएलनि। आइ. ए. रिचार्डसकेँ एकर चिन्ता भेलनि जे तीन हजार इस्वीक लोकसभकेँ जे विद्या आ ज्ञान उपलब्ध रहतैक, ताहि तुलापर आजुक समस्त सौन्दर्यशास्त्र दयनीय भए जाएत। डा. जयधारी सिंह एकरा आइ. ए. रिचार्डसक उदारता मानल अछि। डा. सिंह आचार्य रमानाथ झाक समालोचना-कर्ममे ओहनहि उदारता देखैत छथि। रमानाथ बाबूक ई उदारता एहि तथ्यमे निहित अछि जे यथार्थ समालोचक लक्ष्य साहित्यकेँ सहानुभूतिक संग पढ़थि आ नीर-क्षीर विवेचनपटु हँस जकाँ गुण-ग्रहण कए प्रकाशन करथि।

समालोचना-कर्मक निर्धारणक क्रममे डा. जयधारी सिंह यद्यपि प्रायः समस्त प्रमुख पौर्वात्य एवं पाश्चात्य मत आ सिद्धान्तक उल्लेख करैत विवेचन कएल अछि, मुदा हुनक शास्त्र-चिन्तनक प्रमुख आधार आइ.ए.रिचार्डस एवं आचार्य रमानाथ झाक मत अछि। कहि सकैत छी जे एही दूनू महानुभावक समालोचना-कर्मक चौखटिमे डा. जयधारी सिंहक मत प्रतिपादित अछि। एहि प्रतिपादनमे वैविध्यपूर्ण व्याप्ति छैक, जे एक स्वतन्त्र ग्रन्थक अपेक्षा रखैत अछि, जाहि लेल हम सक्षम व्यक्ति नहि छी। तथापि, समालोचनाक उद्देश्य आ ओहिसँ लाभक प्रसंग डा. जयधारी सिंह द्वारा प्रतिपादित मतक संक्षिप्त चर्चा प्रस्तुत अछि।

डा. जयधारी सिंह साहित्यिक समालोचनाक उद्देश्यक प्रसंग विस्तारसँ विचार कएने छथि। ओ कहैत छथि जे साहित्यिक समालोचना वैज्ञानिक विचारसँ भरल, व्यवस्था आ उत्तरदायित्वसँ निबाहल रहैत अछि। ई अपनामे काव्य-कलाक उभड़ैत-घुमड़ैत भाव-प्रवाहकेँ संयत दिशामे अग्रसित करबाक शिल्पकेँ समेटने एक नूतन सहृदयोच्छ्वास स्वरूप अछि। समालोचनाक वैज्ञानत्वक अर्थ भेल विचार तथा भाषाक सुव्यवस्था तथा स्फीतता। एहि हेतु पुनः तीन टा गुणके अनिवार्य मानल गेल अछि - सत्यनिष्ठा(तीव्र बुद्धिक प्रयोग), स्फीत चिन्तन एवं पारिभाषिकताक आदर। ओ मानैत छथि जे समालोचना-कर्मकेँ सशक्त बनेबाक लेल एक शास्त्रक प्रयोजन छैक। शास्त्रसँ भावक एवं समालोचककेँ अन्तर्दृष्टि भेटैत छनि। एहि प्रसंग ओ दू टा प्रश्न उठाओल अछि-

1. कोन उद्देश्यसँ भावककेँ समालोचना एवं समालोचनाशास्त्रमे अभिरुचि उत्पन्न कएल जाए, तथा

2. की समालोचनाक उत्तरदायित्वपूर्ण तथा शास्त्रीय परिचयक अभावमे पाठकक अध्ययन-अनुशीलनक सफलता सम्भव छैक?

काव्यानुशीलन एवं रुचि-परिष्कारक सन्दर्भमे डा. जयधारी सिंह ग्रन्थ-चेतनाक महत्त्व प्रतिपादित कएल अछि। ओ मानैत छथि जे लोक अपन-अपन रुचिक अनुसार ग्रन्थक चयन आ अध्ययन-अनुशीलन करैत आएल अछि। एकर सुदीर्घ परम्परा छैक। मुदा, कोन प्रकारक साहित्य पढ़ल जाए तथा कोन तरहक ग्रन्थ मूल्यवान अछि, तकर परिज्ञान रहब आवश्यक छैक। इएह परिज्ञान थिक ग्रन्थ-चेतना। एहि चेतनाक अभावमे काव्यानुशीलनक माध्यमसँ रुचि-परिष्कार सम्भव नहि अछि। कहबाक आशय छनि जे काव्यानुशीलन व्यवसायमे ग्रन्थ वा कलाकृतिक चयनक पूर्व उद्देश्यक परिज्ञान रहब परमावश्यक।

दोसर प्रश्न छनि काव्यकृतिक पढ़ल-गुनल जएबाक दृष्टिकोण। पोथी पढ़बाक अनेक विकल्प अछि, जेना-मुद्रणक दृष्टिसँ पढ़ब(प्रूफ रिडिंग), भाषा सिखबाक दृष्टिसँ पढ़ब, सारांश ठेकनेबाक दृष्टिसँ पढ़ब, सूचना एकत्रित करबा लेल पढ़ब आदि। समालोचना आ समालोचनाशास्त्र पाठकमे विकल्प चयनक दृष्टि विकसित करबामे सहायक होइत अछि।

अध्ययन-अनुशीलनक लेल अध्ययनक सत्यनिष्ठा(sincere reading)आवश्यक मानैत छथि। सत्यनिष्ठ अध्ययनक लेल तात्त्विक ज्ञान आवश्यक अछि। तात्त्विक ज्ञान शास्त्रीय मर्यादा, निष्कलुष हृदयक परिचायक आ प्रोन्नत मस्तिष्कक निर्मल सम्पदा थिक। ई पारिभाषिक शब्दावलीक जनतब आ प्रयोगसँ विकसित होइत छैक जे समालोचना आ समालोचनाशास्त्रसँ सुलभ अछि। ओ मानैत छथि जे तात्त्विक ज्ञानक अभावमे पारिभाषिक शब्दावलीक प्रयोगसँ प्रयोगकर्ताक स्थिति हास्यास्पद भए जाइत छनि। जेना संसदीय विचारक्रममे राजनीतिक शब्दावलीक प्रयोग होइत अछि, न्यायालयमे कानूनक भाषाक प्रयोग होइत अछि, चिकित्सालयमे चिकित्साशास्त्रीय पारिभाषिक शब्दवलीक प्रयोग होइत अछि, तहिना समालोचनामे ओकर व्यवस्थाक रक्षाक हेतु काव्यशास्त्रीय वा अन्य सांस्कृतिक शब्दवलीक प्रयोगकेँ प्राथमिकता देब आवश्यक।

समालोचना आ सामान्य मत-निर्देशमे बड़ पैघ अन्तर अछि। समालोचना सोद्देश्य होइत अछि, आ सामान्य मत-निर्देश निरुद्देश्य, बौआएल-ढ़हनाएल। जेना उदाहरण अछि - 'ई कलाकृति मूल्यवान', ओ कलाकृति मूल्यवान', 'ओ नीक वा प्रमुख'। एहि प्रकारक भावनाकेँ हटाओल नहि जा सकैत अछि। मुदा, एहिसँ मत-स्थापन विवादित भए जाइत अछि। समालोचनासँ अपरिचित पाठक कोनहु

एक मतपर स्थिर नहि रहैत छथि, घबड़ा जाइत छथि। डा. जयधारी सिंह एकरा पाठकक मानसिक दौर्बल्य मानल अछि। ओ मानैत छथि जे समालोचनाशास्त्र यथासाध्य अनेक प्रकारक वाद-प्रतिवादसँ परिचित करबैत अछि, समन्वयक प्रेरणा दैत अछि। विभिन्न धारासँ परिचित समालोचक प्रत्येक धाराक वैशिष्ट्यपर दृष्टि रखैत छथि, उपयुक्त धाराकेँ बीछि, चित्तमे आनि पुनः अपन मौलिक दृष्टिक संग समन्वय करैत लक्ष्य-साहित्यक प्रसंग अपन मत प्रतिपादित करैत छथि। एहि प्रकारें सत्यान्वेषी समालोचक पाठकक रुचि-परिष्कारमे सहायक होइत छथि।

समालोचना एवं विज्ञापनमे अन्तर अछि। समालोचना औचित्यक दृढ़रक्षक होइत अछि। समालोचनाक लक्ष्य थिक पाठकवर्गमे अनुशासित आह्लाद जागृत करब, कविक आशयक स्फुटीकरण आ काव्यक अनुभूति-विवेचन। एहिसँ पाठकवर्गक हृदयमे निर्द्वन्द्व आकर्षण उत्पन्न होइत छैक। विज्ञापन अनौचित्यहुकेँ रागवशात औचित्यमे परिणत करबाक प्रयास थिक। ई काव्यग्रन्थक प्रकाशक वा कविक मित्रमण्डलीक आकर्षण-कर्मक लेल प्रचार- बुद्धिसँ प्रेरित रहैत अछि जे पाठककेँ दिगभ्रमित करबा लेल पर्याप्त अछि। विज्ञापनमे तटस्थताक सर्वथा अभाव रहैत छैक। कालान्तरमे ओहन लेखनक परवंचना आ आत्मवंचना देखार भए जाइत अछि। समालोचना एवं विज्ञापनमे जे तात्त्विक अन्तर छैक तकरा समालोचनाशास्त्र फरिछाए, पाठकक आस्वादन-कर्ममे परिष्कार अनैत अछि।

डा. जयधारी सिंहक अनुसार समालोचना आनुषंगिक रूपमे तीन प्रकारक मनोवृत्त उत्पन्न करैत अछि - चयन-वृत्ति, जिज्ञासा-वृत्ति एवं अहं-वृत्ति। चयन-वृत्ति थिक विधा विशेषक चयनसँ लएकेँ ग्रन्थमे वर्णित विषय विशेषक तत्त्व-चयन आ तदुनुकूल अभिव्यक्तिशैलीक चयन। जेना शैलीविज्ञानमे चयन, विचलन, समानान्तरता एवं अप्रस्तुत- विधानमे प्रथम स्थानपर चयन अछि, ओहिना समालोचना-कर्ममे चयन-वृत्तिक महत्त्व छैक। जिज्ञासा-वृत्तिक लक्ष्य अछि प्रतिपाद्य विषय विशेषक सन्दर्भमे अन्वेषण बुद्धिसँ नव-नव सूचना एकत्र करब, नव-नव विचार ग्रहण करब, आदि। सभसँ महत्त्वपूर्ण अछि अहं-वृत्ति। एकर लक्ष्य थिकैक लेखन एवं वाणीमे दृढ़ता आनब, लेखनीमे शक्ति भरब। एकर उदाहरण अछि 'हम जे लिखैत छी, से ठीक।' किन्तु एहन धारणा पोसब सर्वथा निरापद नहि होइत अछि। एहिसँ लेखक आ वक्तामे आत्मदुर्बलता आ मानसिक संघर्ष-रोगक खतरा उत्पन्न भए जाइत छैक। जकर परिहार सप्रमाण बजबाक आ लिखबाक अभ्याससँ सम्भव छैक।

हमरालोकनि देखैत छी, पढ़ैत छी, 'अमुख व्यक्ति लिखने छथि, असत्य आ प्रमाणहीन नहि होएत।' इएह थिक अहं-वृत्तिक सुपरिणाम। समालोचकक अहं-वृत्तिसँ पाठकमे समालोचनाक प्रति विश्वास घनीभूत होइत छैक। समालोचक विशेषक लेखनीपर अध्येताकेँ आस्था होइत छनि। ई भेल डा. जयधारी सिंहक समालोचना-कर्मक प्रसंग प्रतिपादित विचारक संक्षिप्त प्रस्तुति, विवेचन।

डा. जयधारी सिंहक अनुसन्धान-वृत्ति

आचार्य रमानाथ झा डा. जयधारी सिंहक अनुसन्धान-वृत्तिक प्रसंग लिखल अछि जे ओ केवल मैथिली साहित्यकटा विशेषज्ञ नहि तन्त्रशास्त्रहुक अधिकारी विद्वान छथि। तन्त्रशास्त्रमे पाण्डित्यक हेतु तन्त्रक रहस्यक ज्ञाने टा अपेक्षित नहि छैक, ओहि हेतु ज्ञानक अनुरूप क्रिया सम्पादन सेहो चाही। जेना तन्त्रक ज्ञाने पर्याप्त नहि, तदनुरूप क्रिया सेहो आवश्यक अछि, ओहिना आलोचना-कर्मक सिद्धान्त-निरूपण करब पर्याप्त नहि अछि, निरूपित सिद्धान्तक समालोचना-कर्ममे घटित कए देखाएब सेहो आवश्यक अछि।

डा. जयधारी सिंह समालोचना-कर्मक प्रसंगमे जिज्ञासा-वृत्तिक उल्लेख कएने छथि। एही जिज्ञासा-वृत्तिक विस्तार थिक अनुसन्धान-वृत्ति। अनुसन्धान-वृत्तिक दूटा पक्ष छैक। पहिल अछि लक्ष्य साहित्य, सामग्रीक अनुसन्धान। लक्ष्य-साहित्यक उपलब्धिसँ अध्ययन- अनुशीलनक जिज्ञासा-भाव प्रबलतर होइत छैक। ओहि क्रममे भेल अन्तःस्फूर्तिसँ विभिन्न प्रकरण एवं सन्दर्भमे अर्थानुसन्धानक आवश्यकता अनुभव होइत छैक। जेना एकटा उदाहरण अछि। मल्लकालमे रामभद्रशर्मा 'हरिश्चन्द्रनृत्यं'(1651) नाटक लिखल। जकर प्रकाशन 1891मे जर्मनीमे भेलैक। एहि तथ्यक उल्लेख डा. जयकान्त मिश्र अपन इतिहासमे कएने छथि। एक पाठककेँ उपर्युक्त नाटकक प्रति जिज्ञासा भेलनि। मूलप्रति उपरेबाक प्रयास कएल। अध्ययन-अनुशीलन भेल। सर्वसाधारणकेँ सुलभ भेलापर अनुसन्धान-वृत्तिक परिपाक पूर्ण भेलैक।

आब देखल जाए जे डा. जयधारी सिंह निरूपित समालोचना-कर्म द्वारा सिद्धान्तकेँ अपन ग्रन्थ 'बौद्धगानमे तान्त्रिक सिद्धान्त'मे कोना घटित कएने छथि। मैथिलीमे अनुसन्धान-वृत्ति आ लक्ष्यसाहित्यक व्यावहारिक समालोचनाक एक उत्कृष्ट उदाहरण थिक 'बौद्धगानमे तान्त्रिक सिद्धान्त'। डा. सिंहकेँ लक्ष्य साहित्यक अनुसन्धानक प्रयोजन नहि छलनि, ओ उपलब्ध छलैक। हुनका समक्ष समस्या

छलनि ओकर अर्थानुसन्धान एवं प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावलीक व्याख्या करैत ओकर आधारँपर समाज आ दार्शनिक चिन्तन एवं आचरणक अनुसन्धान। ओ अर्थानुसन्धानकेँ प्राथमिकता देलनि। सामान्यतः ई धारणा परिव्याप्त छैक जे सिद्धलोकनि बौद्ध धर्मानुयायी छलाह। हुनक गीतसभमे बौद्धधर्मक सिद्धान्त सभ पिऔल अछि। एकर अन्वेषणक लेल डा. जयधारी सिंह बौद्धगानक विषयकेँ बौद्ध ओ शैव-शाक्त तन्त्रक सिद्धान्त ओ मान्यताक दृष्टिसँ तुलनात्मक अध्ययन कएल। गीतसभमे प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावलीक व्याख्या आ अर्थानुसन्धान कएल। ओहिसभ आधारपर डा. सिंहक निष्कर्ष अछि जे सिद्धलोकनि कोनहु सम्प्रदाय-विशेषक प्रचारक नहि छलाह। ओलोकनि सिद्धिक प्रेप्सु साधक मात्र छलाह। हिनकालोकनिक सिद्धान्त शैव-शाक्तक अनुकूल अछि। जतए कतहु बौद्ध-तन्त्रमे निबद्ध विषय-वस्तु भेटैत अछि, ततहु भेद केवल नामहिक छैक। ओहिमे शैव-शाक्त सम्प्रदाय ओहिना अनुस्यूत अछि। बौद्ध आचार्यलोकनि ओकरा ग्रहण कए नब नाम देलनि। अर्थानुसन्धानक क्रममे डा. सिंह पारिभाषिक शब्दक बौद्ध अर्थ, पुनः शैव आ शाक्त अर्थ देल अछि। पारिभाषिक शब्दक अर्थानुसन्धानक ई क्रम ओही तथ्यकेँ स्पष्ट करैछ जे हिनका लोकनिक सिद्धान्त पृथक नहि, शैव-शाक्तक अनुकूलहि अछि। बौद्धतन्त्र कोनो नव वस्तु नहि, ओकर आधार रहलैक अछि प्राचीन आगम-शास्त्र।

गीत सभक अर्थक समीक्षाक प्रसंग डा. जयधारी सिंहक निष्कर्ष अछि जे ओसभ प्रतीकात्मक शब्दसभसँ भरल अछि, तथा ओहि प्रसंग समीक्षात्मक विचार ताधरि सत्याश्रित नहि होएत जाधरि सिद्धलोकनिक सामाजिक-दार्शनिक-साहित्यिक पार्श्वभूमिमे ओहिमे व्यक्त विचारक संगति नहि बैसत। एहि लेल डा. जयधारी सिंह विभिन्न शास्त्रक अध्ययन- अनुशीलन कएल। तदुपरान्त, सिद्धसाहित्यमे प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दक अर्थानुसन्धान कएल। हुनक गम्भीर अध्ययन-अनुशीलनक उदाहरणार्थक एक शब्द 'मुद्रा'क उल्लेख करैत छी।

'दोहाकोष'मे चारि प्रकारक मुद्राक उल्लेख अछि - कर्ममुद्रा, धर्ममुद्रा, ज्ञानमुद्रा आ महामुद्रा। ओ कहैत छथि जे गीतसभमे 'मुद्रा'क शब्दतः उल्लेख केवल ताड़क पादक गीतमे महामुद्राक 'महामुदेरी' रूपमे प्रयुक्त अछि, सेहो एकहिठाम। ओ मानैत छथि जे डा. धर्मवीर भारती द्वारा 'मुद्रा'क अर्थ 'मोदप्रदा केनिहारि' करब आ तकरा बौद्धतन्त्रक अपन व्याख्या मानल ठीक नहि छनि। ओ डा. भारतीक 'मुद्रा'क अर्थक खण्डन करैत कहैत छथि जे डा. भारतीकेँ प्रायः 'शिवोक्त

कुलार्णवतन्त्र'पर दृष्टि नहि गेल छलनि। अन्यथा एहन अर्थ नहि करितथि। 'कुलार्णव'मे 'मुद्रा'क व्युत्पत्तिक प्रसंग ईश्वर (श्रीशिवजी) देवीसँ कहैत छथिन -'देवतासभकेँ आनन्द दैत अछि तथा मनकेँ द्रवित कए दैत अछि, मुद दैत अछि, तेँ मुद्रा।' अपन अर्थानुसन्धानकेँ स्पष्ट करैत डा. सिंहक मत अछि जे एही आनन्द देनिहारि स्त्रीक रूपमे कल्पित कए भगवतीक साधना करब, सएह महामुद्राक अभिप्राय थिक। एहिसँ इहो स्पष्ट भए जाइछ जे ओहि रूपमे भाविंताशक्ति 'महामुद्रा' कहबैत अछि।

डा. जयधारी सिंहक अर्थानुसन्धानक प्रतिभाक एक आर उदाहरण प्रस्तुत अछि। ओ मानैत छथि सिद्धसाहित्यक गीतक अर्थानुसन्धानक लेल अपभ्रंश-वाग्धाराक अधिगति आवश्यक अछि। अन्यथा, अप्रयुक्तता-दोष सर्वथा सम्भव अछि। एहि सन्दर्भमे अनेक उदाहरण अछि। एकटा उदाहरण प्रस्तुत अछि - ''डोम्बीत आगलि नाहि छिनालि''- डोम्बीसँ आगाँ केओ छिनारि नहि।'' डा. सिंह मानैत छथि जे एहिठाम 'र-ल'क साम्यसँ 'छिनाली'केँ 'छिनारी' मानि तथा पुनः गेयताक करणें दीर्घ मानि शुद्ध रूप 'छिनारि' प्राप्त अछि जे मैथिलीक प्रसिद्ध तथा प्रयुक्त शब्द थिक। शान्ति भिक्षु शास्त्री संस्कृत छायामे कोष्ठकमे 'पुंश्चली' दए सन्देहक प्रश्ने नहि रहए देल अछि। किन्तु टीकाकार 'छिन्ननासिका नागरिका वा' कएल अछि। डा. सिंह मानैत छथि जे 'नागरिका'क अर्थ, पापीकेँ नागरिक मानब जँ वेश्या संगतो होएत तँ एहिमे अप्रयुक्तता-दोष होइत अछि। एहि दोषक कारण थिक अपभ्रंश-वाग्धाराक अवगति नहि रहब।

डा. जयधारी सिंह सिद्धसाहित्यमे प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावलीक अर्थक अनुसन्धान समस्या नहि मानल अछि। ओ समस्या मानैत छथि टीकाकार आ समीक्षकक पक्षधरता। पक्षधरतापूर्ण एहन चिन्तनक अनुसार बौद्ध पारिभाषिक तत्त्वसभ हिन्दूधर्मक दृष्टिसँ एकान्ततः विजातीय अछि तथा हिन्दूधर्मक विजातीय बुझैत सिद्धसाहित्यक अर्थानुसन्धान आ समीक्षा कएल जाएब। डा. जयधारी सिंह बौद्धिक जगतमे व्याप्त एहि धारणाक खण्डन कएल अछि जे बौद्धतन्त्र हिन्दूतन्त्रक विरोधी छल। आचार्य रमानाथ झा ओकरहि अनुसन्धान-कार्य मानल अछि जाहिसँ ज्ञानक परिधिक विस्तार होइत हो। जकर अध्ययन-अनुशीलनसँ जिज्ञासु व्यक्तिक ज्ञान-पिपासाक तृप्ति आ विस्तार होइत हो। डा. जयधारी सिंहक समालोचना आ अनुसन्धान-वृत्तिक अध्ययन-अनुशीलनसँ निश्चित रूपेँ अध्येताक ज्ञान-परिधिक विस्तार होइत अछि।



योगानन्द झा

रामदेवझाक आलोचना दृष्टि

आधुनिक मैथिली साहित्यकार जगत मे सव्यसाची अभिधान सँ विश्रुत डॉ. रामदेव झा मैथिली-मनीषी लोकनिमे अग्रगण्य छथि। हिनकामे कारयित्री ओ भावयित्री प्रतिभाक अद्भुत समन्वय देखल जाइत अछि। बहुआयामी लेखनक धनी डा. झा आलोचक-गवेषकक संगहि प्रतिष्ठित कथाकार, नाटककार, निबन्धकार, कवि ओ अनुवादकक रूपमे मैथिली रचनाकार लोकनिक पथ-प्रदर्शक रहल छथि। अनवरत लेखनमे संलग्न हिनका द्वारा लगभग तीन दर्जन पोथीक प्रणयन भ' चुकल अछि। 'एक खीरा तीन फाँक', 'मनुक सन्तान', 'धरती माता', 'आजी माँ' (कथा-संग्रह), 'अँगरेजी फूलक चिट्ठी', 'बहिनाक विरोग', 'रामजोड़ी कागतक पाँखि पर' (पत्रात्मक उपन्यास), 'पसिझैत पाथर' (नाट्य संग्रह), 'मैथिली शैव साहित्य', 'मैथिली शैव साहित्यक भूमिका' 'मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य", 'उमापति', 'जगत्प्रकाशमल्ल, जगज्ज्योतिर्मल्ल', 'जनार्दन झा 'जनसीदन', 'सुभद्र झा' (निबन्ध, आलोचना-अनुसन्धान) आदि प्रमुख कृतिक अतिरिक्त हिनका द्वारा अनेकानेक पोथीक संकलन-सम्पादन कएल जा चुकल अछि, संगहि हिनक शताधिक निबन्ध पत्र-पत्रिका ओ संकलन सभमे छिड़िआएल अछि। मौलिक रचनामे प्रवीणताक संगहि समालोचनात्मक सूक्ष्म दृष्टिहिक कारणेँ हिनक सव्यसाची अभिधान सर्वथा अन्वर्थ अछि। मौलिक नाट्यकृति 'पसिझैत पाथर' पर हिनका साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कृत कयल गेल छनि, राजिन्दर सिंह बेदी लिखित उर्दू कृति 'इक चादर मैली सी'क मैथिली अनुवाद 'सगाइ' पर हिनका साहित्य अकादेमीक अनुवाद पुरस्कार सँ समलंकृत कयल गेल छनि तथा बाल उपन्यास 'हँसनी पान बजन्ता सुपारी' पर हिनका साहित्य अकादेमीक बाल

पुरस्कार सेहो भेटल छनि। स्वभावतः हिनक समस्त साहित्यिक उपलब्धि ईर्ष्य रहलनि अछि। आधुनिक मैथिली भाषा-साहित्य हिनक अवदान सभ सँ समृद्ध ओ गौरवान्वित अछि।

हिनक समालोचना विधा पर विमर्श करैत डा. वीणा कर्ण लिखैत छथि जे 'अपन कथ्य केँ सशक्त रूपमे पाठकक सम्मुख राखयवला प्रो. रामदेव झा अपन समालोचनात्मक निबन्ध सभमे मात्र अपन तार्किक प्रवृत्तिक परिचय नहि दैत छथि, अपितु हिनक गम्भीर बौद्धिकता ओ कोमल स्निग्ध सम्वेदनशीलता सँ हिनक समालोचना ओत-प्रोत रहैत अछि। हिनक समालोचना अहू युग मे हमरा सभ केँ पुरातनक प्रति आकर्षण जगबैत अछि, संगहि समाज-कल्याणक उद्देश्यक प्रतिपादन हिनक समालोचना मे अनायासे भए जाइत अछि, जाहि सँ नवीन विचारधाराक प्रवाहमे भसिआइतो लोककेँ आलोकमय दिशा-निर्देश भेटि जाइत छन्हि। (1. साहित्यिक समालोचना : दशा-दिशा, स0 डा. बासुकीनाथ झा, चेतना समिति, पटना, 1987, पृ0 116)

एही तथ्य केँ डा. भीमनाथ झा दोसर ढ़ंग सँ एहि शब्देँ अनुमोदित कयलनि अछि। ओ हिनक आलोचनाक भाषा पर विचार करैत कहलनि अछि जे 'व्याख्यात्मक भाषाक सर्वोत्कृष्ट उदाहरण छथि डा. रामदेव झा। सर्जनात्मक रचनाक उपयुक्त भाषामे जतबा ओ सफल छथि, ताहि सँ कने अधिके सफल भेल छथि आलोचनोपयुक्त भाषामे। जतेक विस्तारसँ ओ कोनो विषयक पेनी छनैत छथि, ततबे फैल सँ ओकरा बुनितो छथि, ताहिमे हुनक भाषा सेहो कनेको कतहु अगुतायल-हड़बड़ायल नहि लगैत छनि। हुनक आलोचना जँ पाठककेँ उबि जयबाक स्थितिमे पहुँचबा सँ बचबैत अछि तँ तकर श्रेय हुनक भाषाक लयात्मकता केँ देबय पड़त। लयात्मक रहितो हुनक भाषा ओतेक कोमल आ तन्नुक नहि रहैछ आ से आलोचनाक व्याख्यात्मक स्वरूपकेँ लरगुज बनयबाक स्थितिमे पहुँचबा सँ रोकैत अछि। अनुसन्धान विवेचन मे हुनक भाषा समीक्षाक अपेक्षा, बेसी, बहुत बेसी संग दैछ। (2. साहित्यालाप– डा. भीमनाथ झा, मिथिला पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, 1991, पृ0-88)

उपर्युक्त दुनू उद्धरण डा. झाक आलोचना दृष्टिकेँ फड़िच्छ करबामे सक्षम अछि तथापि एकर निरीक्षण-परीक्षणक हेतु हिनक आलोचनाक आयाम पर विचार करब अपेक्षित बुझना जाइत अछि।

डा. झाक आलोचनाक आयाम अति विस्तृत रहलनि अछि। ई नहि केवल स्वतंत्र आलोचना विषयक अनेक पोथीक प्रणयन कयलनि अछि, अपितु अनेक अनभिज्ञात ओ अल्पज्ञात ऐतिहासिक ग्रन्थक उद्धारपूर्वक भूमिकामे ओकर सविशेष विवेचन प्रस्तुत कयलनि अछि, अवसर भेटैत देरी ई कोनो कवि-लेखकक सामग्रीक उपयोग करबासँ पूर्व प्रमाण-पुरस्सर ओकर जीवनी, परिवेशादिक विवरण दैत सामग्रीक आलोचना प्रस्तुत करैत देखल जाइत छथि, साहित्यिक विधा-विषयक समालोचना प्रस्तुत करैत काल ई ओहि विधाकेँ परिभाषित करैत ओकर सम्पूर्ण इतिवृत्तिक प्रस्तुतिमे तल्लीन देखि पड़ैत छथि, कोनो साहित्यकारक संस्मरण लिखैत काल ई नहि केवल ओकर साधनाक साक्षीटा बनि केँ अबैत छथि अपितु एकर माध्यमेँ ओहि साहित्यकारक जीवन, कृति, प्रवृत्ति ओ उपलब्धि सभकेँ वस्तुनिष्ठताक संग प्रस्तुत करैत देखल जाइत छथि, अनेक ठाम हिनक समालोचना मे ललित गद्यक आनन्दक प्रवाह सेहो देखि पड़ैत अछि। हिनक आलोचना पद्धति एकर कोनो प्रकार विशेष शास्त्रीय, व्याख्यात्मक, तुलनात्मक, ऐतिहासिक, निर्णयात्मक, मनोवैज्ञानिक, सैद्धान्तिक किंवा प्रगतिवादी आदि मे खुटेसल नहि देखि पड़ैत अछि अपितु ई एहन पद्धतिक अनुसरण करैत देखल जाइत छथि जाहिमे आवश्यकतानुसार आलोचनाक कोनो अथवा समग्र प्रकारक उपयोग होइत अछि। मैथिली आलोचनाकेँ ई हिनक अन्यतम देन थिक आ इएह कारण थिक जे हिनका द्वारा विकसित आलोचना-पद्धति सामान्यतः निष्पक्ष ओ निष्कलुष देखल जाइत अछि, कोनो वाद विशेषमे ओझरायल नहि भेटैत अछि। डॉ. झा मैथिलीक प्राचीन, मध्यकालीन ओ आधुनिक साहित्य विषयक आलोचना तँ प्रस्तुत करिते रहल छथि, लोकसाहित्यहुक विवेचन विश्लेषणकेँ अपन आलोचनाक विषयक रूपमे ग्रहण कयलनि अछि।

मैथिली आलोचनाक शिखरपुरुष प्रो. रमानाथ झा अपन समीक्षा-वृत्ति निबन्ध मे विचार करैत कहने छथि जे 'सबसँ निम्न कोटिक समीक्षक काकवृत्तिक कहबैत छथि जे कौआ जकाँ केवल कटु कथा कहैत छथि, जनिक दृष्टि केवल मल वा दोषे पर जाइत अछि। एहि सँ उत्कृष्टतर थिकाह ओ, जे सर्वदा अपने दलक रीति-नीति केँ श्रेष्ठतम मानैत छथि ओ दोसर केँ अधलाह बूझि हुनका हानि पहुँचा केवल अपन वा अपन दलक मतक स्वार्थपूर्ण पोषण करैत छथि। एहि प्रकारक समीक्षक कोकिलावृत्ति थिकाह कारण कोकिल अपन गेल्हक पोषण

करयबाक निमित्त कौआक अण्डाकेँ खसा दैत छैक। वर्गवादी अर्थात् वर्गविशेषक समर्थन मात्र जे समीक्षाक मुख्य लक्ष्य मानैत छथि, से एहीं श्रेणीक थिकाह। तेसर श्रेणी थिक 'मधुकरवृत्ति' बलाक जे सब विकसित फूल पर बैसि-बैसि ओकर रस ग्रहण करैत छथि तथा दोसर केँ पारण करयबाक निमित्त ओहि रस सँ मधु बनबैत छथि। एहन समीक्षक गुणाग्राहक, गुणदर्शी अभिप्रशंसक होइत छथि जे सब रचनासँ केवल गुणे गुण ल' केँ ओकरा सभक समक्ष एहि रूपेँ उपस्थित करैत छथि जे लोक ओहि सँ लाभान्वित हो तथा स्थापित वस्तु स्वयं अपना मे नवीन, सुन्दर, हितकर भ' जाय। ....परन्तु सब सँ उत्कृष्ट थिकाह हंसवृत्ति जे निष्पक्ष निर्णायक भ' सब प्रकारक पक्षपात सँ पृथक् रहि दूध केँ दूध आ पानि केँ पानि बहार क' कहि दैत छथि, प्रत्येक रचनाक गुण-दोष केँ अत्यन्त विशद् ओ स्पष्ट रूप सँ लोकक सम्मुख उपस्थित क' दैत छथि जाहि सँ लोक गुणकेँ ग्रहण क' लेअय तथा अवगुण सँ सावधान भ' ओकरा त्यागि देअय। समीक्षाक एही उच्चादर्श केँ ध्यान मे राखि तँ हमरा लोकनि हंसकेँ वैदुष्यक प्रतीक मानैत आयल छी ओ हंस केँ सरस्वतीक वाहन कहैत छियनि। चारू प्रकारक समीक्षक क्रमशः छिद्रान्वेषी वा निन्दक, पक्ष प्रभावित, अभिप्रशंसक ओ निर्णायक कहबैत छथि (3. मैथिली निबन्ध संकलन— स0 नरेश कुमार विकल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2014, पृ. 87-88)। डा. रामदेव झाक समालोचना दृष्टि केँ एहि कसौटी पर कसला उत्तर ओ सामान्यतः सरस्वतीक वाहनक वृत्ति सँ ओत-प्रोत भेटताह, कतहु कदाचित् अभिप्रशंसको देखि पड़ताह।

पूर्व शताब्दीक आठम दशक धरि मैथिलीमे आलोचनाक दुर्भिक्ष विषयक निबन्धमे वरेण्य साहित्यकार ओ सम्पादक सुधांशु 'शेखर' चौधरी मैथिली आलोचनाक स्थिति पर चिन्ता करैत लिखने छनि जे 'मैथिली आलोचना साहित्यकेँ एकदम पंगु बनयबाक सभ सँ पैघ कारण गम्भीर पाठकक अभाव रहल अछि। आवश्यक कर्त्तव्य जकाँ मैथिली साहित्यक सर्जनात्मक गतिविधिक प्रति पूर्ण ज्ञान रखनिहार व्यक्ति जेँ कि मैथिली भाषी समाजमे नहि रहल अछि तेँ साहित्यक नाम पर मैथिलीमे जे किछु लिखल जा रहल अछि तकर मर्यादाक ज्ञान सामान्यो पाठककेँ नहि होइत रहलैक अछि। एहन पाठक जे साहित्यक विविध विधामे लिखित रचनाक मर्म नहि बुझैत अछि, ओ केवल इएह बुझैत अछि जे अमुक वस्तु हमरा नीक लागल अथवा अमुक वस्तु हमरा अधलाह लागल-कोना साहित्यक मर्म धरि

पहुँचत जँ ओकरा आगाँ विश्लेषणात्मक साहित्य राखल नहि जयतैक। किन्तु गम्भीर पाठकक जावत धरि अभ्युदय नहि होयत, विश्लेषणक उद्भव असम्भावित रहत। कारण, गम्भीर पाठकेक मध्य सँ, जकरा मे अपन मन्तव्य प्रकट करबाक क्षमता रहैत छैक, जकरा मे अपन चिन्तन आ निष्कर्ष केँ अभिव्यक्ति देबाक निपुणता रहैत छैक, विश्लेषक किंवा आलोचक आसन करैत अछि (सन्दर्भ-सुधांशु 'शेखर' चौधरी, मैथिली अकादमी, पटना, 1981, पृ0 136-137)। शेखरजीक ई चिन्ता डा. रामदेव झा सदृश अधीत विद्वान ओ विश्लेषण-विवेचन दक्ष शोधप्रज्ञक आलोचना विषयक वस्तु सभकेँ पढ़ला उत्तर सर्वथा निरस्त भ' जाइत अछि। डा. झाक वृत्तिपक्षीय कीर्त्ति ओ कृति पक्षीय रिक्थ तकर निस्सन सबूत अछि। अवश्ये हिनक आलोचनाक विषय नेपालीय मैथिली साहित्यक उत्खनन दिस बेस उन्मुख रहल अछि, मध्यकालीन साहित्यक पर्यवेक्षण दिस हिनक ध्यान बेसीकाल रहलनि अछि तथापि '1954 ओ मैथिली', 'प्रगतिवादी कवि भुवन', 'कहानीक चौबट्टी पर', 'पं0 श्री वल्लभ झा, साहित्यिक मूल्यांकन', 'मैथिली एकांकीक प्रवृत्ति', 'नलिनीक पत्र', 'भारतीय भाषातीर्थ वागीश जार्ज ग्रियर्सन', 'ललितेश बाबू', 'मैथिलीमे गजल', 'मैथिलीमे लघुकथा', 'दत्तवतीक वस्तु-कौशल', 'प्रकृति साहित्यमे सुमनजीक काव्ययात्रा', 'मैथिली साहित्यमे मधुप', 'मैथिली पत्र-पत्रिकाक सय वर्ष', 'मैथिली गौरवस्तम्भ डॉ. सुभद्र झा', 'अनुवाद ओ मैथिली', 'मैथिली साहित्यक इतिहास लेखन', 'शैलेन्द्राय नमो नमः', 'मैथिली महाकाव्य ओ इतिहासक विडम्बना' आदि निबन्ध, कतिपय विनिबन्ध ओ सम्पादकीय आलेख तथा नूतन पीढ़ीक साहित्यकार लोकनिक पोथीक भूमिका हिनक अध्ययन-क्षेत्रक व्यापकता ओ गम्भीर्य तथा अभिव्यक्ति-क्षमताक निदर्शन ओ उत्तर पीढ़ीक हेतु मार्गदर्शक अछि। खेद अछि जे अद्यपर्यन्त हिनक विकीर्ण निबन्धावलीक पुस्तकाकार संस्करण नहि भ' सकल अछि जाहि दिस सामर्थ्यवान संस्थाक ध्यान आकृष्ट करबाक आवश्यकता छैक। से भ' गेने ई स्पष्ट प्रतीत होयत जे डा. झाक आलोचना-दृष्टि नहि केवल प्रौढ़ एवं सौम्य छनि अपितु एहिमे निष्पक्ष न्यायाधीशक उक्ति विशिष्टता, विषय-वस्तुक प्रत्यक्षीकरणक क्षमता, सप्रमाण निर्णयक अवधारणाक संग पौर्वात्य ओ पाश्चात्य आलोचना पद्धतिक सम्मिश्रणसँ मैथिली समालोचनाक मार्ग प्रशस्त करबाक व्यावहारिक ओ एकनिष्ठ प्रयास भेलैक अछि। डा. झाक बहुज्ञता, सहृदयता, विवेचना शक्ति ओ भाषा पर पूर्ण अधिकार हिनक आलोचना मे सर्वत्र उद्भासित छनि। अपन आलोचना सभमे ई नहि केवल

एक गोट भाषाशास्त्री, काव्यरसिक ओ सौन्दर्यशास्त्रक अभिज्ञताक संग प्रकट छथि अपितु इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान आदिक सेहो अध्येता ओ विद्वानक रूपमे अपन विचारक प्रस्फुटन करैत देखल जाइत छथि। 'शायर सिंह, सपूत' जकाँ ई लीक छोड़ि कें चलनिहार आलोचक छथि जे सर्वत्र मौलिक चिन्तन पर विश्वास रखैत छथि आ प्राप्त सामग्रीक विश्लेषण मे पूर्वकृत कार्यक चर्च करितो निष्कर्ष मे कखनो अन्धानुकरणक पक्षपाती नहि रहल छथि। तें सर्वत्र हिनक आलोचनामे किछु ने किछु नव तथ्य, नूतन समंजन, नूतन निष्कर्ष अवश्ये भेटैत अछि जे नूतन विमर्शक-वादे वादे जायते तत्वबोधः' के मार्ग प्रशस्त करैत अछि।

डा. रामदेव झाक समालोचनात्मक दृष्टिक अवगाहनक हेतु हिनक रचनावलीक खण्डविभाजन निम्न रूपें कयल जा सकैछ-

(क) समालोचनात्मक ग्रन्थ
(ख) सम्पादित ग्रन्थावलीक भूमिका
(ग) स्वरचित सृजनात्मक ग्रन्थक भूमिका
(घ) अन्य साहित्यकारक ग्रन्थक भूमिका
(ङ) स्फुट समालोचनात्मक निबन्धादि

समालोचनात्मक ग्रन्थ :

डा. रामदेव झाक स्वतंत्र ओ मौलिक समालोचनात्मक ग्रन्थ मध्य मैथिली 'शैव साहित्यक भूमिका', 'मैथिली शैव साहित्य' ओ 'मैथिली लोकसाहित्य स्वरूप ओ सौन्दर्य' परिगणनीय अछि। तदतिरिक्त ई जाहि पाँच गोट साहित्यकार पर विनिबन्धक प्रणयन कयने छथि से सभ थिकाह क्रमशः उमापति, जगत्प्रकाशमल्ल, जगज्ज्योतिर्मल्ल, जनार्दन झा, 'जनसीदन' ओ सुभद्र झा।

मैथिली शैव साहित्यक भूमिका ओ मैथिली शैव साहित्यमे ऐतिहासिक, निर्णयात्मक, तुलनात्मक, संजीवनी, व्यक्तिवादी ओ व्याख्यात्मक आलोचना प्रणालीक समन्वयपूर्वक एहि ऐतिहासिक तथ्यकें सबलताक संग स्थापित कयल गेल अछि जे मैथिलीमे नहि केवल कृष्णकाव्य धारा ओ परवर्ती रामकाव्य धारा टा प्रवाहित रहल अछि, अपितु एकरा दुनूक समानान्तर शैव काव्य धारा प्रवहमान रहल अछि। हिनक ई सत्यापित अवधारणा मैथिली इतिहास लेखनकें नव दिशा प्रदान करबामे समर्थ भेल अछि।

उमापति विनिबन्ध मे निर्णयात्मक आलोचना प्रणालीक अवलम्बन ल' मैथिलीक एहि ऐतिहासिक त्रुटिक परिमार्जन कयल गेल अछि जे पारिजात हरण नाटक मे कथित हिन्दूपति डा. जयकान्त मिश्रक गवेषणाक अनुरूप बुंदेलखण्डक राजा नहि छलाह अपितु ओ छलाह मिथिलाक उत्तरांचलमे अवस्थित सेनवंशी राजा हरिहरदेव। एहि तरहें हिनक ई विनिबन्ध उमापतिक परिचय, काल, कृति ओ आश्रयदाताक सम्बन्धमे प्रामाणिक वस्तु प्रदान करबा मे समर्थ भेल अछि।

जगत्प्रकाशमल्ल ओ जगज्ज्योतिर्मल्ल विनिबन्ध मे डा. झा ऐतिहासिक ओ व्याख्यात्मक आलोचना पद्धतिक माध्यमें एहि दुनू नेपाली शासक कवि ओ नाटककारक कृतिक संजीवनी समालोचना उपस्थित कयलनि अछि। हिनक ई दुनू ग्रन्थ नेपालीय मैथिली साहित्यक इतिहास ओ एहि दुनू कृतीक परम्परा ओ परिवेशक संगहि कृति सभक संजीवनी मूल्यांकनक दृष्टिऍ महत्वपूर्ण अछि।

जनार्दन झा 'जनसीदन' ओ सुभद्र झा विनिबन्ध क्रमशः आधुनिक मैथिलीक दुइ गोट स्तम्भक कृतिक संजीवनी समालोचना थिक जाहिमे हिनका लोकनिक कृतिक विश्लेषणात्मक अध्ययन कयल गेलनि अछि। जनसीदनजीक समस्त कृतिक विश्लेषणसँ मैथिलीक आधुनिक साहित्यक श्रीगणेशक कालमे सुधारवादी मानसिकताक परिचय भेटैत अछि। सुभद्र झा विनिबन्धमे आलोच्य साहित्यकारक कृति सभक सम्यक् मूल्यांकन क' ओकर महत्त्वक प्रतिपादन कयल गेल अछि जे मैथिली गद्य-निर्माणक दशा-दिशा ओ मैथिलीक भाषिक क्षमताक दिग्दर्शन हेतु प्रचुर सामग्री उपलब्ध करबैत अछि।

'मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य डा. झाक एकल ग्रन्थ थिक जे साहित्येतिहास मे उपेक्षित एहि विधा कें गरिमा प्रदान करयबामे समर्थ सिद्ध भेल अछि। मैथिली लोकसाहित्यक वर्गीकरण ओ समग्रता मे ओकर विशिष्ट विधा सभक विश्लेषण एहि ग्रन्थमे मैथिली लोकसाहित्यक परिवेशक अनुरूप कयल गेल अछि जाहि सँ ई ग्रन्थ वस्तुतः मैथिली लोकसाहित्यक समग्रता मे परिचयक दृष्टिऍ शास्त्रीय ग्रन्थक गौरव प्राप्त क' चुकल अछि।

सम्पादित ग्रन्थावलीक भूमिका

डा. रामदेव झा अनेक ग्रन्थक सम्पादन कयने छथि जाहि मे प्रमुख अछि 'नन्दीपति गीतिमाला', 'रामविजय नाट ओ वरगीत', 'नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत', 'कुञ्जविहार नाटक', 'हरगौरी विवाह नाटक', 'दशावतार नृत्यम्

ओ षोडसगीतम्', 'मैथिली प्राचीन गीत मञ्जरी', 'दुर्गाचरित नाटक', 'रमेश्वरचरित मिथिला रामायण', 'मिथिला भाषा रामायण', 'मैथिली प्राचीन गीतावली, 'कविवर जीवन झा रचनावली', 'मुदित कुवलयाश्व नाटक', 'विद्यापति गीत संचय' आदि। एहि ग्रन्थ सभक भूमिका मे ओ ग्रन्थकारक समग्रता मे परिचय ओ ग्रन्थक मूल्यांकन प्रस्तुत कयलनि अछि जे मैथिलीक इतिहास लेखनक विशिष्ट सामग्री थिक। हिनक किछु भूमिका यथा हरगौरी विवाह, मैथिली प्राचीन गीतावली, कविवर जीवन झा रचनावली हरगौरी विवाह नाटक, सीमान्तिनी आख्यायिका, मैथिली शब्द सञ्चय, आदिक भूमिका तँ ततेक विस्तृत, प्रामाणिक ओ प्रज्ञापूर्ण अछि जे हिनक स्थापनाकेँ स्थायित्व प्रदान करबामे सफल भेल अछि। अनेक भूमिका तँ अपन वृहत्तरताक कारणें सहजहिँ मैथिली आलोचनाक शलाका पुरुष लोकनि मध्य प्रो. रमानाथ झा, सुभद्र झा, डा. उमेश मिश्र आदिक स्मरण करा दैत अछि। एहि कोटिक भूमिका मध्य मैथिली प्राचीन गीतावलीक भूमिका, कविवर जीवन झा, रचनावलीक भूमिका, शब्द सञ्चयक भूमिका आदिकेँ राखल जा सकैछ)।

स्वरचित सृजनात्मक ग्रंथक भूमिका :

डा. झा स्वरचित सृजनात्मक ग्रंथ सभमे जे भूमिका सभ लिखने छथि सेहो मैथिली आलोचना साहित्यक अमूल्य निधि बनि गेल अछि। एहि कोटि मे हिनक दुइ गोट भूमिका बेस उल्लेखनीय अछि। ई दुनू थिक क्रमशः 'अँगरेजी फूलक चिट्ठी'क भूमिका ओ 'रामजोड़ी कागतक पाँखि पर'क भूमिका। एहि दुनू भूमिकाक माध्यमेँ ऐतिहासिक आलोचना पद्धतिक निदर्शन भेटैत अछि आ अनेक भ्रान्त धारणा पर प्रमाण पुरस्सर कशाघात करैत महिलोपयोगी पत्रात्मक उपन्यासक इतिवृत्त केँ उद्घाटित क' देल गेल अछि जे इतिहास लेखनक विशिष्ट सामग्री थिक। अवश्ये एहि मे कतहु-कतहु अतिरंजना रोचकताकेँ मलिन क' देलक अछि।

अन्य साहित्यकारक ग्रन्थक भूमिका :

डा. रामदेव झा मैथिली अनन्य साधक रहल छथि। मिथिला, मैथिल-मैथिलीक उत्थानक हेतु निरन्तर सचेष्ट रहि ई अपन स्वभाषा ओ स्वराष्ट्रक प्रति प्रतिबद्धता अभिव्यक्त करैत रहल छथि खाहे ताहि हेतु हिनका मैथिलीक प्रथम दैनिक

स्वदेशक हॉकर पर्यन्तक काज किए ने करय पड़ल होइनि। अध्ययन ओ अध्यापनक प्रति जीवन भरि प्रतिबद्ध डा. झा निरन्तर मैथिलीक क्षेत्र मे अयनिहार नव लोकक स्वागत मे तत्पर रहैत अयलाह अछि। एहन लोकक लेल हिनका लग सुभाशंसा, आशीष, प्रोत्साहन, संवर्द्धन ओ मार्गदर्शनक कहियो कमी नहि रहल। हिनक कृपा-वर्णन ओ स्नेह सँ हिनक समवयस्क ओ अल्पवय साहित्यकार लोकनि आप्लावित होइत रहलाह अछि। तकरे परिणाम वा परिणति हिनका द्वारा सैंकड़ों एहन भूमिकाक लेखन थिक जे ई अन्य साहित्यकारक पोथी मे लिखैत रहल छथि। एहन साहित्यकार लोकनिक मध्य श्री रमाकान्त राय 'रमा', प्रो. कमला चौधरी, डा. ललिता झा, डा. योगानन्द झा, डा. वीणा ठाकुर, प्रो. डा. मुरलीधर झा, प्रो. अमरनाथ चौधरी आदिक नाम लेल जा सकैछ। एहि कोटिक भूमिकामे डा. झा आलोचनाक मधुकर वृत्तिक बहुधा अनुपालन करैत देखि पड़ैत छथि मुदा क्वचित्-कदाचित् तर्जनी-निर्देशहुँ सँ नहि चूकैत छथि। दस्तुतः हिनक एहि कोटिक आलोचना नवका पीढ़ीकेँ संस्कारित करबाक काज करैत रहल अछि। एहू कोटिक आलोचनामे ई सैद्धान्तिक विवेचनक प्रति प्रतिबद्ध देखि पड़ैत छथि।

स्फुट समालोचनात्मक निबन्धादि

डा. रामदेव झा शताधिक संख्या मे स्फुट समालोचनात्मक निबन्धादिक प्रणयन कयने छथि से सभ विभिन्न संग्रह ओ पत्र-पत्रिकाक संचिका मे अछि। एहि कोटिक निबन्ध मे अधिकांश अनुसन्धानपरक अछि जे मैथिली भाषा-साहित्यक ज्ञानक अभिवृद्धि मे सहायक भेल अछि। उदाहरण हेतु किछु निबन्धक नाम एतय उद्धृत कयल जाइछ यथा— धीरेश्वराचार्यक बुद्धि प्रदीपम्. ग्रन्थ मे मैथिली पद, वर्णरत्नाकरक अर्थानुसन्धान, 13-14म शताब्दीमे मिथिलाक नगर-बाजारक रूप, चण्डीदास पदावलीक अनभिज्ञात स्रोत, मैथिली गीतक पूर्वांचलीय यात्रा-पथमे नेपालक स्थान, कविशेखर ज्योतिरीश्वर, विद्यापतिक समकालीन कवयित्री धीरमती, मैथिली नाटकक विकास यात्रा, मध्ययुगीन रंगमंचक स्वरूप निर्धारण, मैथिली काव्यमे कृष्ण जन्मक परम्परा, मिथिलाक एकटा अज्ञात राजवंश, मकमानी राजसभा मे मैथिली साहित्य, जगज्ज्योतिर्मल्लक कुञ्जविहार नाटक, मिथिला मे रंगमंचक विकास, मैथिली साहित्यमे महादेवी दुर्गा, साहेब रामदासक गीतावली ओ

हुनक कतिपय अनभिज्ञात-असंकलित गीत, मैथिली भक्ति काव्य। एकरा सभक अतिरिक्त ई दर्जनो विद्यापति विषयक ओ लोकसाहित्य विषयक निबन्धक रचना कयने छथि। कहल जा सकैछ जे ई जखन जे अवसर भेटलनि तखने तद्विषक निबन्धक लेखन-प्रकाशनमे लागल रहलाह अछि। स्वभावतः हिनक आलोचनात्मक निबन्ध सभ नहि केवल मैथिली गद्यक शिल्प ओ शैलीक निर्माण कयलक अछि आ अनुसन्धान, आलोचनाक नव-नव द्वारि खोललक अछि।

प्रो. त्रिलोकनाथ झा 'समालोचक केहन हो? ताहि पर विचार करैत लिखलनि अछि जे 'समालोचक केँ ने सूप बनबाक थिक ने चालनि। सूप केवल सारयुक्त अन्न केँ ग्रहण करबाक पाछाँ रहैछ, ओसएबा सँ लए केँ फटकबा-धनकबा धरि ओकर इएह काज। धान केँ राखत, खखरी केँ फेकत, चाउर केँ राखत, गूड़ा, खद्दी, मेरुखी केँ कात करत आ चालनि एकर ठीक उनटा। नीक अंश केँ नीचाँ खसा देत आ अधलाह केँ ग्रहण करत। नीक घाठि ओ चिक्कस केँ खसा देत ओ जल्ला-मकड़ा लागल दालिक मेरुखी ओ चोकड़ केँ ग्रहण करत। समालोचक हेतु दुनू एके रंग अधलाह, भाट बनि प्रशंसा मात्र करब वा कुचेष्ट बनि निन्दा मात्र करब, एकांगी रहब, कथमपि नीक नहि (अ0भा0 मैथिली साहित्य परिषद् पत्रिका— स. श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', 1369 साल, पृ0 71)।

एहू कसौटी पर कसला उत्तर डा. रामदेव झाक आलोचना दृष्टि संतुलित छनि। ई ने दोषे पर भर दैत छथि आ ने गुणे केँ अतिरंजित करैत छथि। व्याख्या ई दुनूक क' दैत छथि आ से प्रमाण ओ तर्कक आधार पर। ततबे नहि ई विवेच्य विषयक सम्बन्ध मे सुनिश्चित मतक स्थापना करबाक हेतु दत्तचित्त छथि। अवश्ये ई प्रमाणक आधार पर मत-स्थापन करैत छथि मुदा जँ परवर्ती प्रमाण पूर्व मतक प्रतिकूल भेटि जाइत छनि तँ लगले पूर्व मतक निरस्तीकरणमे कनेको संकोचक अनुभव नहि करैत छथि। उदाहरणक हेतु हिनका द्वारा मैथिलीक आद्य कथाक रूपमे 'ताराक वैधव्य'क स्थापना केँ लेल जा सकैछ जकरा ई जलधर झाक 'विलक्षण दाम्पत्य'क प्राप्तिक बाद निरस्त क' देलनि। हिनक आलोचना पद्धति मे समालोचनाक समस्त प्रचलित प्रकारक सम्मिलित उपयोग होइत रहल अछि, ओना ई व्याख्यात्मक आलोचनाक विशेषज्ञक रूपमे जानल जाइत छथि। आलोचनाक

विषयक चयन मे ई कतहु कोनो तरहें आबद्ध नहि छथि तेँ हिनक आलोचनाक विषयो बहुआयामी छनि।

एतावता डॉ. रामदेव झा अपन आलोचना दृष्टिक व्यापकताक संगहि सार्थक ओ सामर्थ्यवान गद्य निर्माणक निपुणताक कारणेँ डा. सर गंगानाथ झा, डा. अमरनाथ झा, डा. उमेश मिश्र, डा. श्री श्रीकृष्ण मिश्र, नरेन्द्र नाथ दास 'विद्यालंकार', प्रो. रमानाथ झा, यदुनाथ झा 'यदुवर', पुलकित लाल दास 'मधुर', भोलालाल दास, कुमार गंगानन्द सिंह, गंगापति सिंह, डा. सुधाकर झा 'शास्त्री', शिवनन्दन ठाकुर, भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', प्रो. जयदेव मिश्र, जयधारी सिंह 'प्रभाकर', बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर', प्रो. दामोदर झा, सुधांशु शेखर 'चौधरी, बासुकीनाथ झा आदिक सदृश पाङ्कतेय ओ वरेण्य आलोचकक रूपमे परिगणित छथि।



अरुणा चौधरी

प्रेमशंकर सिंहक आलोचना-साहित्य

साहित्यक संस्कृति निरन्तर विकसित होइत रहैत अछि। तहिना भाषा समयक अनुसार अपन अभिव्यंजना शैलीमे नव अर्थ ओ प्रवृत्तिक अवतारणा करैत अछि। हम साहित्यक इतिहासमे एहि प्रकारक प्रवृत्तिक अवतारणा देखैत-सुनैत आ चिन्हैत रहलहुँ अछि। मुदा वर्त्तमान मे लिखल गेल साहित्यकेँ देखब-सुनब आ अध्ययन करब त' ओ एकटा फराक दृष्टि ओ स्वाद देत। बीसम शताब्दीक मैथिली साहित्यक गतिविधिक आकलन करैत छी त' हम पबैत छी जे आधुनिक साहित्यक प्रवृत्तिगत मूल्यांकन मे अनेक नव पुरान समसामयिक साहित्यकार लोकनि अपन योगदान देने छथि। एहने साहित्यकार मे हमरा एक उच्च कोटिक साहित्यकार डॉ. प्रेमशंकर सिंह दृष्टि पथ पर स्पष्ट रूप सँ आधुनिक प्रवृत्तिक मूल्यांकन करैत देखबामे अबैत छथि। डॉ. प्रेमशंकर सिंह केँ सबसँ अधिक प्रतिवादक सामना नाटकक आलोचनाक नव्यतम सृजन विवेचनमे करए पड़लन्हि। जहाँ धरि मैथिली साहित्यक विकासक प्रश्न अछि एहि मे नव सर्जनात्मक संग समसामयिक वैचारिक ओ आलोचनात्मक साहित्य सब पर लेखक लोकनि अपन लेखनीक गति देबाक सामर्थ्य रखैत छथि। साहित्य सृजन मे जाहि प्रकारक सतर्कता देखबा मे अबैत अछि ताहिमे डॉ. सिंह द्वारा रचित साहित्य, दर्शन वा अन्य गंभीर विषय पर विस्तार सँ लिखैत ई नहि बिसरैत छथि जे एहि रचना सभक एक समाजाश्रृत आ संदर्भगत मूल्य अछि। डॉ. सिंह सदैव अपन रचना सामग्री मे समालोचनात्मक विचार, मौलिक आकलन, अनूदित आ सम्पादित कृति केँ तमाम तथ्य आ संदर्भ सँ पुष्ट करैत अद्यतन ओहि विषय वस्तु केँ

समायोजित कए प्रभावी ढंग सँ प्रस्तुत करैत देखल गेल छथि। मध्यकालीन मैथिली साहित्यक सशक्त विधा नाटक मे विद्यमान अनेक प्रकारक परिभाषा तथा विमर्श सन कठिन विषयक आकलन प्रस्तुत कए मैथिली साहित्यक नाट्य भंडार केँ अग्रसारित कएलनि।

एहन मनीषीक जन्म मिथिलांचलक हृदयस्थल दरभंगा जिलाक जोगियाड़ा गाममे भेल छलनि। हिनक प्रारंभिक शिक्षा गामक प्राथमिक विद्यालय सँ प्रारंभ भए माध्यमिक शिक्षा एम.एल. एकेडमी लहेरियासराय धरि पहुँचल। सी.एम. कॉलेज दरभंगा सँ 1960 ई0 मे आई.ए. तथा 1962 मे बिहार विश्वविद्यालय सँ मैथिली (प्रतिष्ठा) मे प्रथम श्रेणी प्राप्त कएलनि। 1964 ई0 मे मैथिली विषयक संग पटना विवि सँ स्नातकोत्तर मे प्रथम श्रेणी प्राप्त कएलनि। ई पुरान बिहार विश्वविद्यालय मे किछु दिन धरि अस्थायी सेवा मे छलाह। 1965 ई0 सँ भागलपुर वि0वि0 मे अपन योगदान देलनि आ 31 जनवरी 2002 केँ एहि ठाम सँ अवकाश ग्रहण कएलन्हि।

डॉ. सिंह 1968 ई.मे ''सामाजिक वातावरणक विशिष्ट संदर्भ मे हरिमोहन झाक मैथिली कृतित्वक अनुशीलन'' विषय पर पी-एच.डी.क उपाधि ग्रहण कएलन्हि। हिनक निधन 17 फरवरी 2018 ई.क भए गेलनि। ई स्वभाव सँ अत्यन्त सरल आ सतत प्रसन्नचित्त रहए वाला व्यक्तित्व छलाह, विद्यानुरागी छलाह। मैथिली साहित्यक मिथिला संस्कृतिक विषय पर ई अनेक समालोचनात्मक ग्रंथ लिखलन्हि आ लगभग तीस गोट छात्र केँ विभिन्न विषय पर शोध-कार्य करौलनि। ई मुख्य रूप सँ मैथिली नाटक ओ लोकसाहित्येतिहासक मर्मज्ञ छलाह। हिनक विलक्षण लेखनी सँ अनेक समालोचनात्मक बहुमूल्य मौलिक, अनूदित आ सम्पादित पोथी सब सतत चर्चित-अर्चित रहल। हिनक गवेषणापूर्ण ग्रंथ आदि व्यापक चिन्तन-मनन सँ भरल प्राप्त होइत अछि।

हिनक मौलिक कृतिमे मैथिली नाटक ओ रंगमंच (1978), मैथिली नाटक परिचय (1981), पुरूषार्थ ओ विद्यापति (1986), नाट्यान्वाचय (2002), आधुनिक मैथिली साहित्य मे हास्य व्यंग्य (2005), प्रपाणिका (2005), मैथिली भाषा साहित्य 20म शताब्दी (2009), ई छण (2010), चेतना समिति ओ नाट्य मंच (2008),

2. हिन्दी कृतिमे विद्यापति अनुशीलन ओ मूल्यांकन प्रथम खंड एवं द्वितीय खंड (1971-72), हिन्दी नाटक कोश (1976),

3. अनूदिन कृति मे श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (1988), अरण्य फसिल (उड़िया नाटक, 2001), पागल दुनिया (2001), गोविन्द दास (2007), रक्तानल (2010), 4. सम्पादित कृति मे गद्यवल्लरी, नवएकांकी, पत्र पुष्प, पद्यलतिका, अनमिल आखर, मणिकण, हुनका से भेंट भेल छल, मैथिली लोकगाथाक इतिहास, चित्रा-विचित्रा, भारतीक बिलाड़ि, व्याड़ि भक्तितरंगिणी, मैथिली लोकोक्ति कोश, रूप-सोना-हीरा, पोथी अछि।

आधुनिक मैथिली साहित्यक विकासमे हिनक अवदान स्मरणीय अछि। मिथिलाक विभिन्न भाषा क्षेत्रक सक्रिय लेखक ओ हुनक रचनात्मक अवदानक ई विशेष जानकारी रखैत छलाह।

मैथिली साहित्य चिन्तनमे जाहि प्रकारक परम्परा ओ प्रवृत्ति रहल अछि ताहिमे प्रवेश कएला पर हम देखैत छी जे डॉ. सिंह अपन जीवन कालमे अबौद्धिक, अतार्किक, अप्रासंगिक प्रहार सँ पीड़ित रहला। जहाँ धरि हिनक रचना क्रम आ साहित्य सर्जनशीलताक प्रश्न अछि त' हम कहब जे हिनक साहित्यमे आधुनिक चिन्तनक प्रधानता रहल अछि। हिनक रचनामे बौद्धिकताक सृजन-चिन्तन मे शब्द मूर्त्त रहल अछि। क्रमक संग शब्दक स्पर्धा केँ नाट्यानुभव मे तकबाक एक सर्जनात्मक नाम प्रो. प्रेमशंकर सिंह अछि। हम हिनक किछु मौलिक कृतिक एहि ठाम चर्चा करब।

मैथिली नाटक ओ रंगमंच – ई पोथी मैथिली नाट्य साहित्य पर समालोचनात्मक रूपेँ लिखल हमरा जनैत पहिल प्रकाशित ग्रंथ अछि। एहि ठाम ई कहब आवश्यक अछि जे पूज्य गुरूदेव डॉ. लेखनाथ मिश्रक मैथिली नाटकक उद्भव ओ विकास सेहो एही वर्ष प्रकाशित भेल अछि। मैथिलीक प्रख्यात नाट्यालोचकक क्रममे दुनू विद्वानक नाम अबैत अछि। मुदा डॉ. सिंहक नाट्यालोचन पोथी मैथिली रंगमंचक, रंगकर्म आ ओकर व्यवहारिक निष्पत्ति मे देखल आ मीमांसा प्राप्त होइत अछि। मैथिली रंगकर्मक व्यवहारिक निष्पत्तिक जतेक सांगोपांग विवेचन कएलनि अछि ओ विषयकेँ रेखांकित करैत अछि। हुनक जीवनक अधिकांश रंग समीक्षाकेँ समर्पित रहल अछि। नाट्यालोचन पर तीन मौलिक ग्रंथ क्रमशः मैथिली नाटक ओ रंगमंच, मैथिली नाटक परिचय एवं

नाट्यान्वाचय प्रकाशित अछिं संगहि 10 गोट शोध-छात्र-छात्रा केँ मैथिली नाटकक विभिन्न प्रकार पर शोध करौने छथि। एहि 10 शोध-प्रबंधमे शोधार्थीक द्वारा नाट्य क्रम केँ अनेक स्तर पर बुझब आ बुझाएबाक कार्य ई कएलनि अछि। एहि संदर्भ मे डॉ. सिंहक लिखल जे समीक्षात्मक पोथी सामने अबैत अछि ताहिमे मात्र नाट्य प्रस्तुतिक समीक्षा धरि सीमित नहि अछि। वरण मैथिली नाट्यक बुनियादी चिन्ता ओ समस्या धरि व्यापक रूपेँ प्रस्तुत भेल अछि।

हिनका द्वारा तैयार मैथिली नाटक परिचय एवं नाट्यान्वाचय दुनू पोथी मैथिली नाटकक आवश्यक संदर्भ जकाँ अछि। मैथिली नाटक ओ रंगमंचकेँ छओ अध्यायमे विभक्त कए अध्ययन प्रस्तुत कएने छथि। एहिमे मैथिली-नाट्य-साहित्यक स्वरूप आ विकास, लोकधर्मी आ नाट्यधर्मी रंगमंचक परिप्रेक्ष्य मे लोक मंच, मैथिलीक रंगमंचक स्वरूप ओ विकास, नाट्योपकरणक मैथिली रंगमंच पर विविध प्रयोग, उपसंहार, मैथिली नाटकक भविष्य, अंकिया नाटकक प्रस्तोता युगपुरुष शंकर देवक प्रेरणा स्रोत, उद्बोधन युगक बहुचर्चित नाट्यकार उमापति, विभिन्न पत्रिकादिमे प्रकाशित मैथिली एकांकी, डॉ. सिंह दीर्घ अवधि धरि देखल नाट्य प्रस्तुतिक माध्यम सँ मैथिली नाटक केँ भारतीय रंगकर्मक राष्ट्रीय परिदृश्य पर पहुँचएबाक सफल प्रयास कएलनि। एकर कारण छल ई कलकत्ता प्रवासमे रंगकर्मी लोकनि सँ साक्षात जुड़ल रहलाह। एहिमे बाबू साहेब चौधरी, रामलोचन ठाकुर, श्रीकान्त मंडल, उदय नारायण सिंह नचिकेता आदि रंगकर्मी लोकनिक सम्पर्क मे रहलाह।

जेना कि विदित अछि जे मिथिला नाटकक संदर्भ प्रो. रमानाथ झा ओ डॉ. जयकान्त मिश्रक कथन कीर्तनियाँ नाच आ कीर्तनियाँ नाटकक प्रसंग विवादित भेल तकरा ई अपन पोथीमे 'लीला नाटक' कहि सम्बोधन कएलनि अछि। अर्थात् मिथिला नाटककेँ मैथिलीमे कीर्तनियाँ नाच, कीर्तनियाँ नाट्य एवं लीला नाटकक रूपमे जानल जाइत अछि। एहि संदर्भमे डॉ. देवकान्त झा लिखैत छथि–"जे मैथिली नाटक ओ रंगमंच अपन नाट्येतिहासक विस्तृत अध्याय थिक। ऐतिहासिक पक्षक अतिरिक्त रंगमंचीय कलाक प्रति सेहो ई एक उल्लेखनीय उपलब्धि थिक। नाटकक क्षेत्रमे विशिष्टता अर्जित करैत लेखक अपन लेखन द्वारा मैथिलीकेँ बहुत अंश धरि समृद्ध बनौलनि अछि। जे एहि क्षेत्रमे नित्य प्रति क्रांतिकारी

परिवर्तन परिलक्षित भए रहल अछि, तेँ संशोधन-परिवर्धन द्वारा एकरा अद्यतन करब अपेक्षणीय थिक।''[1]

मैथिली नाटक परिचय— एहि परिचयात्मक पोथीमे एक सय सैतालीस नाटकक परिचयमे कथा वस्तु, पात्रक चरित्र, पात्रक परिचय, स्त्री पात्र-पुरुष पात्रक संख्या आदिक विस्तृत परिचय दैत नाटकक महत्व केँ नाटकक पोथी जे धीरे-धीरे काल कवलित भए रहल अछि— तकर संरक्षणक दृष्टिएँ एहि पोथीक रचना कएल गेल अछि। कोनो पाठक केँ यदि कोनो नाटकक पोथी प्राप्त नहि भए रहल अछि त' एहि स्थिति मे ई पोथी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध भेल अछि। एहि संदर्भमे डॉ. देवकान्त झाक कथन अछि, 'मैथिली नाटक परिचय (1981), प्रेमशंकर सिंहक एक आर भेंट थिक। नाट्य प्रेमी समाजमे एकर भव्य स्वागत भेल। एक सय अड़तालीस पृष्ठक विस्तारमे ई एक सय छत्तीस नाटककेँ संजोगने अछि। ई मूलतः मैथिली नाटकक एक परिचयात्मक अध्ययन थिक। विशेष विस्तारक अभाव रहितो ई सामान्य पाठकक प्रयोजन केँ सिद्ध अवश्य करैत अछि।''[2]

एहि क्रममे अनेक प्रतिष्ठित आ प्रसिद्ध नाटक सभक परिचय सँ नाटकक ऐतिहासिकता त' परिलक्षित होइतहि अछि संगहि नाटकक मंचनक सूचना सेहो प्राप्त होइत अछि, 'कथा-वस्तुक संक्षिप्त विवरण एहि पुस्तकक निजी वैशिष्ट्य अछि। प्राचीन एवं अनुपलब्ध नाटकक कथानक केँ बृहत रूपेँ विश्लेषण कयल गेल अछि जाहि सँ पाठकक समक्ष नाटकक सम्पूर्ण चित्र आबि सकय। प्राचीन नाटक आधुनिक दृष्टिएँ भनहि महत्वपूर्ण नहि हो किन्तु ओकर ऐतिहासिक महत्व छैक से निर्विवाद अछि। एहन नाटकक कथानक यथासाध्य अंकक अनुसारे देल गेल अछि। जे नाटक कथानक एवं शिल्पक दृष्टिएँ मैथिली-नाट्य-साहित्य मध्य नव आयामक संकेत करैछ तकर विवेचन विस्तारपूर्वक भेल अछि।''[3]

नाट्यान्वाचय : ई पोथी 2002 मे प्रकाशित भेल अछि। एहि पोथी मे व्यवस्थित रूप सँ मैथिली साहित्यमे नाटकक नौ टा स्वरूपक आलोचनात्मक स्थिति देखाओल गेल अछि। एहिमे लोकनाट्य, अंकिया नाट्य, पारम्पारिक नाटक, सप्ताष्ट दशावदत्त नाटक ओ रंगमंच, आधुनिकतम नाटक रंगमंच, नाट्य-भाषा, नुक्कड़-नाटक पर आलोचनात्मक दशा-दिशा एवं नाटक' पर अनुसंधानात्मक प्रतिमान प्रस्तुत कएलनि अछि। एहि पोथी मे लोक नाट्य सँ लय आधुनिक

मैथिली नाटक ओ रंगकर्म केँ चिन्हि नाटक आ ओकर प्रस्तुतीकरण संग समीक्षा कएल गेल अछि। जकर व्याप्ति सँ मैथिली रंगकर्मक आधुनिकता पुष्ट भेल अछि एवं नाटकक नवयुगक सूत्रपात भए सकल अछि।

मैथिली साहित्यमे हास्य-व्यंग्य — एहि पोथीमे रचनात्मक प्रतिभाक धनी डॉ. सिंह मैथिली मे हास्य-व्यंग्य पर विभिन्न आयाम दए आलोचनात्मक दृष्टि प्रस्तुत कएल अछि। हास्य-व्यंग्य परम्पराक चरणमे मैथिलीमे हास्य-व्यंग्य पर परिश्रमपूर्वक समालोचनात्मक दृष्टि प्रस्तुत करब कठिन कर्त्तव्य लगैत अछि। तेँ लेखकक दृढ़ दृष्टि, प्रतिभाक प्रभुत्व, समृद्धि, संशक्ति एहन कृतिक रचना करबैत अछि। एहि संदर्भमे हिनक कथन अछि जे जखन व्यंग्य वृत्ति रचनाकारक प्रकृति मे पूर्णरूपेण रचल-बसल रहैत अछि तखने व्यंग्य लेखन परिश्रम पूर्वक अर्जित कएल रचना वृत्ति भए सकैत अछि।'' एहि संदर्भ आधुनिक मैथिली साहित्यमे हास्य-व्यंग्यक पृष्ठभूमि प्रस्तुत करैत-हास्य-व्यंग्यक सामान्य परिचय, कवितामे हास्य-व्यंग्य, कथामे हास्य-व्यंग्य, उपन्यासमे हास्य-व्यंग्य, निबन्धमे हास्य-व्यंग्य, नाटकमे हास्य-व्यंग्य, प्रहसन एवं एकांकीमे हास्य-व्यंग्य, पत्रिकामे हास्य-व्यंग्य। एकर सीमा ओ सम्भावनाक विस्तृत व्याख्या संभव भए सकल अछि।

प्रपाणिका— एहि पोथीमे मैथिली साहित्यक चारि महापुरुष पुरोधा लोकनिक रचना व्यवहारिक समालोचना प्रस्तुत कएल गेल अछि। एहि चारि प्रस्थान पुरुषक रचना केँ ई नव रीतिएँ समीक्षा करैत प्रस्तुत कएलनि अछि। एहि कृति मे विश्व प्रसिद्ध महाकवि अभिनव जयदेव विद्यापतिक (1360-1440) पदावलीक शृंगार-शास्त्रीय विवेचन कएल अछि। दोसर महापुरुष मे अनुपम शब्द विन्यासी महाकवि गोविन्द दास (1643-1670) तेसर महापुरुष मे नवयुग प्रवर्त्तक कवीश्वर चन्दा झा (1831-1907) एवं हुनक समसामयिक कवि लाल दासक (1856-1921) उल्लेखनीय पद्य साहित्यक अक्षय अवदानक परिप्रेक्ष्य मे अपन विचार बल्लरी केँ संयोजित कएलनि अछि।

एहि पोथीक संदर्भ पंडित गोविन्द झा लिखैत छथि, 'डॉ. प्रेमशंकर सिंहक प्रपाणिका पढ़ए बैसलहुँ तँ पहिने नामहि पर ठमकि गेलहुँ। संस्कृत मे प्रपाणिका वा प्रपाणक सरबत केँ कहैत छैक। ठीके, जे एकरा कोका-कोला जकाँ सानन्द सोआदि-सोआदि पीबि लेताह तनिका प्राचीन मैथिली साहित्यक स्पष्ट छवि झलकि जएतनि। हम पीलहुँ तँ हमरा एकटा आनो बात झलकल की डॉ. सिंह

विद्यापति, गोविन्द दास, चन्दा झा सँ सहमत होथु वा नहि, परंतु डॉ. सिंह जाहि रूपमे हुनका एतए प्रस्तुत कएलनि अछि ताहिसँ सिद्ध होइत अछि जे चन्दा झाक समकालीन होइतहुँ लालदास मिथिलाक संस्कृति आ लौकिक विधि व्यवहार हुनका सँ बेसी प्रतिफलित कएलनि अछि। ततबे नहि, आधुनिक मैथिली गद्यक तँ मानू ओएह प्रतिष्ठाता थिकाह।

प्रस्तुत प्रमाणिकाक रचना पूर्णतः पारम्परिक वा देसी मर-मसाला सँ भेल अछि। तेँ एहिमे ने उत्कट उत्तेजकता भेटत, ने बुद्धिक उड़ान। सोझराएल कथ्य सोझ डॉड़िए पाठकक समक्ष राखि देब जे डॉ. सिंहक प्रियशैली छनि से एहूमे स्पष्ट अछि।''[4]

पुरूषार्थ ओ विद्यापति– एहि पोथीमे महाकवि विद्यापति केँ भारतीय वाङमयक प्रतिनिधि रचनाकार सिद्ध कएल अछि। महाकवि विद्यापति एकटा सम्पूर्णकाल मे अभिव्याप्त ध्रूवतारा थिकाह। हुनक साहित्य सम्पूर्ण संसारमे सदैव कालजयी बनल रहत। एहि महापुरुषक लिखल ग्रंथ केँ देखैत अद्यावधि साहित्य मनीषी लोकनि जतेक अनुसंधान आ आलोचना प्रस्तुत कएलनि अछि, तकरा एकांगी कहैत हुनक समग्र ग्रंथक अध्ययन अनुशीलनक आधार पर विद्यापतिकेँ निःसंकोच पुरूषार्थ कवि कहलनि अछि। डॉ. सिंह मानैत छथि जे विद्यापतिक प्रत्येक रचना मे कोनो-ने-कोनो रूप मे पुरूषार्थ-चतुष्टयक प्रतिपादन भेल अछि। हिनक काव्यक मुख्य प्रदेय पौरूष अछि। एहि विषय-वस्तु केँ लय डॉ. सिंह एहि पोथी मे प्रवेश करैत छथि पुरुष, पुरूषार्थ, पुरूषार्थ-चतुष्टय, त्रिवर्ग मे तीन दोष, पुरूषार्थ और विद्यापति, विद्यापतिक प्रसंगमे विभिन्न मान्यता, पुरूषार्थक कवि विद्यापति, सुपुरूष-कुपुरूष, संस्कृत रचनामे वर्णित पुरूषार्थ, संस्कृत-प्राकृत मैथिली मिश्रित रचनामे वर्णित पुरूषार्थ, अवहट्ठ रचनामे वर्णित पुरूषार्थ, पदावलीमे वर्णित पुरूषार्थ।

एहि पोथीक वैशिष्ट्य मे विद्यापतिक साहित्यक सूची प्रस्तुत कएल गेल अछि। विद्यापतिक समग्र साहित्य पर अंग्रेजी, बंगला, मैथिली एवं हिन्दी साहित्य मे अद्यावधि प्रकाशित मूल एवं समालोचनात्मक ग्रंथ सभक समावेशक सूचना एहिमे देल गेल अछि। विद्यापतिक संदर्भ मे ई पोथी लगभग पूर्ण रूपमे लिखल गेल अछि।

चेतना समिति ओ नाट्यमंच – प्राप्त पोथी मे मिथिलाक भाषिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आ औद्योगिक विकास हेतु क्रियाशील मैथिलक सर्वोच्च संस्था चेतना गोष्ठी-चेतना समिति, सन 1955 ई. सँ लगातार क्रियाशील अछि। एहि संस्थाक सम्पूर्ण क्रियाकलापक इतिहास, भूगोल एहि पोथीमे संगृहीत कएल गेल अछि। संस्था द्वारा विभिन्न कार्यक्रम विद्यापति भवन, मिथिला भवन, साहित्यक क्षेत्र मे प्रगति, सांस्कृतिक आयोजन, कवि सम्मेलन, साहित्यक सम्बर्द्धन, विभिन्न सम्मान, भाषण माला, आनन्द मेला, बाल मेला, चित्रकला, प्रदर्शनी, पत्रिकाक प्रकाशन, नाटक एकांकीक मंचन-प्रकाशन, अभिनेता-अभिनेत्रीक पुरस्कार, कार्यकारिणी समिति, अध्यक्ष, सचिव, मुख्य सचिव आदि समग्र क्रिया-कलापक विस्तृत जानकारी एहि पोथीमे उपलब्ध कराओल गेल अछि। एहि प्रकारक रचना समग्र मैथिली प्रेमीक हेतु एकटा उपहारक स्वरूपमे देखल जा सकैत अछि।

हिन्दी कृति, अनूदित कृति ओ सम्पादित कृतिक सार-संक्षेपमे हम कहब जे हिनक रचना पर्याप्त सारस्वत साधनाक प्रतिफल थिक। हिनका अनेक सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त भेल छनि। 2007 मे मैथिली अकादमी सँ, 2005मे चेतना समिति सँ, 2007-08मे मिथिला दर्पण मुम्बई सँ, 2009मे चेतना समिति, पटना सँ यात्री चेतना पुरस्कार एवं 2010मे महाकवि लाल दासक जयन्तीक अवसर पर ताम्र-पत्र सँ अलंकृत कएल गेल छलनि। डॉ. सिंह अनेक भाषण माला, कार्यशाला, सांस्कृतिक यात्रा कए गौरव प्राप्त कएने छलाह। मैथिली गद्य, निबन्ध, नाटक, समालोचना, लोक संस्कृतिक रचनात्मक कार्यक क्षेत्रमे लगभग पाँच दशक धरि शीर्ष पर रहलाह। ई रस्ता चलैत अन्वेषी बनि लीख पर चलैत प्रत्येक जोखिम केँ सहैत, नमस्कार करैत नव प्रयोग मे लागल रहलाह। हिनक उत्कृष्ट कृति सब मैथिलीक अनेक विधा पर लिखल प्राप्त होइत अछि आ ई प्रतिमान स्वरूप अछि।

डॉ. सिंह अदम्य उत्साह, धैर्य, लगन आ संघर्ष कए अत्यन्त साहसक संग मैथिलीक बहुमूल्य धरोहर आदिक अन्वेषण कए पुस्तकाकार रूपमे प्रस्तुत कएलनि। हिनक गवेषणापूर्ण ग्रंथादि, समालोचना आदि मैथिलीक व्यापक चिन्तन मनन, सांस्कृतिक परम्पराक धरोहर अछि। ई चारि दशक धरि वर्त्तमान तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालयक मैथिली विभाग मे साधनारत रहलाह आ अवकाश

ग्रहण कएलाक पश्चात् अपन स्वनिर्मित घर 'ऋचायन' भागलपुर मे दिनांक 17 फरवरी 2018 शनि दिन एहि धराधाम छोड़ि चलि गेलाह। हम हिनक विद्यार्थी छी त' नहि मुदा सहकर्मी अवश्य रहलहुँ। तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालयक कार्यकालमे हुनका संग साहित्यिक वार्ता आ हुनक सानिध्य' जीवन पर्यन्त स्मरण रहत।

संदर्भ :

1. आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ. 276
2. तथैव
3. मैथिली नाटक परिचय, डॉ. प्रेमशंकर सिंह, मैथिली अकादमी, पृ. ग.
4. प्रपाणिका, महुअर बुझई कुसुम, पृ0-ई



अशोक कुमार मेहता

भीमनाथ झाक आलोचना-साहित्य

कविता-कथा, उपन्यासक तुलनामे मैथिली साहित्यमे आलोचना विधा अदौ सँ झुझुआन रहल अछि। जँ निबन्ध, समीक्षा, टिप्पणी, सम्पादकीय आ भूमिका लेखन आदि केँ सेहो आलोचनाक परिधिमे समेटि ली, तैयो उक्त तीनू विधासँ ई आगू नहि जा सकल अछि। तेँ ई कहबामे भांगट नहि जे मैथिलीमे आलोचकक संख्या अल्प अछि। विशुद्ध आलोचक तँ आंगुर पर गनबा योग्य। अधिकांश आलोचक द्विविधावादी वा बहुविधावादी छथि। भीमनाथ झा विशुद्ध तँ नहि मुदा विशिष्ट आलोचक छथि। प्रकृतिएँ ई कवि छथि। वृत्तिक कारणेँ निबन्ध, समीक्षा, भूमिका, सम्पादकीय लेखन दिस प्रवृत्त भेलाह आ ई वृत्ति प्रकृति पर क्रमशः भारी पड़ैत चलि गेल।

कविता आ आलोचना भीमनाथ झाक व्यक्तित्वक दू पक्षकेँ सेहो उद्घाटित करैत अछि। एक 'भीमभाइ' आ दोसर 'भीमबाबू'। व्यक्तित्वक ई दुनू रूप 'भीमभाइ' आ 'भीमबाबू' जेहिना फड़िच्छ अछि तहिना हिनक 'कविता' आ 'आलोचना' सेहो जगजियार। कालक्रमेण 'भीमभाइ' कहनिहारक संख्या घटैत गेलनि आ 'भीमबाबू' बजनिहार-देखनिहारक संख्या बढ़ैत गेल। प्रसंगवश एकबेर स्वयं बाजल रहथि— 'आब कविता कहाँ फुराइए।' से ठीके, काव्यकर्म क्रमशः गौण होइत गेलनि अछि। निबन्ध आलोचना लेखन दिस बेसी मुखर होइत गेलाह।

उपलब्ध साक्ष्यक अनुसार भीमनाथ झाक पहिल कविता 'कलियुगक धर्म' शीर्षकसँ अप्रैल 1960 ई0 मे 'वैदेही' मे आ पहिल निबन्ध 'मैथिली आन्दोलन : किछु विचार' शीर्षक सँ मार्च 1969 ई0 मे 'मिथिला मिहिर' मे छपलनि। अद्यावधि हिनक आठ गोट काव्य-पुस्तक आ बारह गोट विविध प्रकारक समवेत

मे आलोचनाक पोथी प्रकाशित छनि। एहिठाम किछु चर्चित पोथीक बहन्ने भीमनाथ झाक आलोचना साहित्य पर विमर्श करए चाहब।

'परिचायिका' भीमनाथ झाक पहिल आलोचना विधाक पोथी थीक। से तखन स्पष्ट होइत अछि, जखन एकर दोसर संस्करणमे रचनाकारक रूपमे भीमनाथ झाक नाम छपल। पहिल संस्करणमे 'मध्यम पाण्डव'क नामोल्लेख अछि। शिक्षक होथि वा शिक्षार्थी; शोध निदेशक होथि वा शोधार्थी, सामान्य पाठक होथि वा साहित्यकार सभक लेल 'परिचायिका' उपादेय पोथी थीक। एहिमे एकसठि गोट साहित्यकारक जीवन ओ साहित्यकेँ अभिव्यंजित कएल गेल अछि। आलोचक डा. रमानन्द झा 'रमण' एकरा आलोचनाक प्रवेशद्वार कहलनि अछि।

मुदा एहि बहुपयोगी पोथीकेँ लेखक छद्मनाम सँ प्रकाशित करबौलनि ई एकटा विचारणीय बिन्दु थिक। 'परिचायिका' सँ पूर्व भीमनाथ झा मैथिली कविक रूपमे चर्चित एवं स्थापित भ' चुकल रहथि। चारिटा काव्य-पुस्तक प्रकाशित भ' चुकल रहनि। तत्कालीन नामी गिरामी कवि संग काव्य मंच पर हिनक अनिवार्य उपस्थिति रहैत छलनि। संभव थीक जे हिनका संशय रहल हेतनि जे कवि-व्यक्तित्वकेँ ई कृति प्रभावित ने क' दिअए। से केलकनि। नीक जकाँ केलकनि। 1978 ई0क बाद मात्र तीनटा काव्य पुस्तक अएलनि, जखन कि निबन्ध-आलोचनाक पोथीक संख्या दस टपि गेलनि।

साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली 'भारतीय साहित्यक निर्माता' श्रृंखलामे चर्चित साहित्यकार पर विनिबन्ध प्रकाशित करैत अछि। भीमनाथ झा द्वारा लिखल सीताराम झा आ 'उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' एहि कोटिक रचना थीक। मैथिली मे एहिसँ पूर्व आ पछातिओ विनिबन्ध लिखले गेल अछि। एहिमे सँ बहुत थोड़ कृति आलोचनात्मक दृष्टिएँ सटीक उतरैत अछि। उक्त दुनू पोथी एहि थोड़ कोटिमे अबैत अछि।

भीमनाथ झा बड़ महीनी सँ उक्त दुनू कवि-व्यक्तित्वक जीवनी ओ रचनाधर्मिता केँ पाठकक सोझा रखलनि अछि। आलोचकीय दृष्टिकोण सदिखन बनौने रहलाह अछि। हँ, दुनू कृतिक रचनाकालमे एक युग अर्थात् बारह बरिसक जे अन्तराल अछि से रचनाकारक शिल्पमे सेहो नजरि अबैत अछि। सीताराम झाक तुलनामे 'उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क भाषा, शिल्प व विश्लेषणमे बेसी प्रौढ़ता झलकैत अछि।

अकादमीक शोध-कार्य सेहो आलोचनाक श्रीवृद्धिक एकटा महत्त्वपूर्ण कड़ी थिक। भीमनाथ झा प्राध्यापकीय जीवनमे अपन अत्यन्त प्रिय कवि

मधुपजीक साहित्य पर शोध-कार्य कएलनि। पछाति ओहि शोध-प्रबन्धकेँ संशोधित संपादित क' 'कवि चुड़ामणिक काव्य-साधना' नाम सँ प्रकाशित करबौलनि। अद्यावधि मधुपजी पर केन्द्रित ई एकटा सूचनात्मक आ विशिष्ट पोथी थीक। हँ एतबा धरि सत्य जे अतिरिक्त कृतज्ञ भाव आलोचना धर्म पर थोड़ेक भारी पड़ि गेल सन लगैए।

'विविधा' डॉ. भीमनाथ झाक आलोचकीय व्यक्तित्वकेँ राष्ट्रीय परिचिति प्रदान कएलक। वर्ष 1992 ई0 मे ई पोथी साहित्य अकादेमी सँ पुरस्कृत भेल। नामानुरूप विविध विषयक रचनासँ समन्वित एहिमे तीनटा खण्ड अछि— 'उत्प्रेरण' : 'स्फुरण' आ 'स्मरण'। प्रत्येक खण्ड मे छओ-छओटा निबन्ध अछि। अठारहोटा रचना पठनीय ओ प्रेरणास्पद अछि। मैथिली भाषा-साहित्य आ साहित्यकार पोथीक मूल स्वर अछि। 'गार्जन' आ 'विद्यापति पर्वक प्रासंगिकता 'सदृश शीर्षक निबन्धमे डॉ. झाक व्यंग्यात्मक दृष्टिकोण आ शिल्प बेस निखरल अछि। एहिना 'जीवन यात्राक नायक पथिक' शीर्षक रचना प्रो. हरिमोहन झाक व्यक्तित्व एवं साहित्यक शब्दचित्र कहल जा सकैछ।

मैथिली साहित्यक विविध विधा आ साहित्यिक परिस्थिति केँ विश्लेषित करैत डॉ. भीमनाथ झा निबन्ध समीक्षा आ आलोचना लिखैत रहलाह एवं विभिन्न पत्र-पत्रिका ओ पोथी मे छपैत रहल। ताहिमे सँ सतरह गोट रचनाक संग्रह थीक 'साहित्यालाप'। एहि पोथीक 'आलोचनाक भाषा' तथा 'मैथिली साहित्यमे शिल्पक प्रयोग' शीर्षक निबन्धमे निबन्धकार-आलोचक डॉ. झाक मौलिक अभिमत प्रकट भेल अछि।

भीमनाथ झा फरवरी 1973 ई0 सँ अक्टूबर 1982 ई0 धरि मिथिला मिहिरक उप सम्पादक रहल छथि। एहि अवधि मे ओ समय-समय पर सम्पादकीय सेहो लिखने रहथि। 'लघूत्तरीय' ओहि सम्पादकीय संकलन थीक। पत्र-पत्रिकाक सम्पादकीय एकदम टटका विषयकेँ ल'क' लिखल जाइत अछि। एहिमे ओहिबातकेँ पाठकक सोझा आनल जाइत अछि, जे व्यक्ति समाज ओ देशक लेल हितकारी हो। एहिमे भाषा आ सांस्कृतिक मुद्दा केँ उठाओल जाइत अछि। समस्या आ समाधानक बात कहल जाइत अछि। भीमनाथ झा एहि दायित्वक सम्यक निर्वहण कएलनि अछि।

'विमर्श' पोथी प्रो. भीमनाथ झाक आलोचकीय विराटताकेँ प्रतिपादित करैत अछि। एहिमे मैथिली साहित्यक प्रायः समस्त प्रमुख विधा यथा-कविता, कथा, निबन्ध, नाटक, उपन्यास, पत्र-पत्रिका संस्मरण आदि पर समीक्षात्मक आलेख संग्रहीत अछि। आठटा चर्चित पोथीक समीक्षा आ सातटा लब्धप्रतिष्ठ व्यक्ति पर केन्द्रित आलेख प्रस्तुत कएलनि अछि।

'विमर्श'क प्रत्येक रचना तथ्यपरक तटस्थ आ तर्कपूर्ण अछि। भाषाक सहजता आ अविरलता पोथीक एकटा विशिष्ट आकर्षण थीक। आलोचना लेखन कोना कएल जाए, ताहि लेल ई पोथी पाथेय भ' सकैत अछि।

'काल पात्र' प्रो. भीमनाथ झाक निबन्ध-आलोचनाक एखन धरिक अंतिम प्रकाशित कृति थीक। नामानुरूप एहिमे दू कोटिक रचना अछि— आरम्भसँ एकैस गोट काल अर्थात् समयसँ सम्बन्धित आ शेष एकैस गोट पात्र अर्थात् व्यक्तिसँ सम्बन्धित। बियालिसोटा रचनामे किछु सामान्य किछु विशिष्ट आ किछु अतिविशिष्ट श्रेणीक अछि।

'मैथिली कथाक वर्तमान समस्या' शीर्षक निबन्ध एकटा विचार-प्रधान रचना थीक। एहिमे अभिव्यक्त प्रो. झाक चिन्ता एकदम वाजिब छनि जे आइ मैथिलीमे कथा त' लिखल जा रहल अछि। मुदा 'मैथिली'क कथा नहि लिखल जा रहल अछि।

पात्र प्रभागमे उद्धृत आलेख लेखक द्वारा विवेच्य व्यक्तिक विषयमे पढ़ल-गुनल, देखल आ सुनल तथ्य पर आधारित अछि। सुमनजी, हरिमोहन बाबू, मदनेश्वर मिश्र, कुलानन्द मिश्र तथा प्रवासी जीक संग सम्पर्क-सानिध्यक घनिष्ठता प्रभाव स्पष्ट झलकैत अछि। एहि सभ रचना केँ संस्मरणात्मक आलोचना कहल जा सकैछ। एहि कोटिक परिस्कृत कृति थीक 'मन आंगन मे ठाढ़।'

प्रो. भीमनाथ झाक समस्त आलोचनात्मक साहित्यक अनुशीलन सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे हिनक अधिकांश गद्य काव्यात्मक अछि। एहिसँ एकर पठनीयता मे प्रवाह बनल रहैत अछि। विचार प्रधान एवं अनुसन्धनात्मक आलेख मे प्रो. झा ओहि विषयक जड़ि धरि पहुँचबाक सफल प्रयत्न करैत छथि। कहि सकैत छी जे प्रो. झा अपन लेखनी सँ मैथिली आलोचनाकेँ पुष्ट कएलनि अछि। परिणाम ई अछि जे वर्तमान पीढ़ी कवि भीमनाथ झा केँ कम आ आलोचक भीमनाथ झाकेँ बेसी चिन्हैत अछि।



श्रीधरम

कुलानंद मिश्रक आलोचना-दृष्टि

कवि, कथाकार, आलोचक, निबंधकार, अनुवादक कुलानंद मिश्रक साहित्यिक कैनवास बहुत विस्तृत छनि। हुनक आलोचनाक प्रकाशित पोथी मात्रा मे बहुत कम, मुदा आलोचना प्रक्रिया पूर्णतः व्यवस्थित अछि। मुक्तिबोधक शब्दावली उधार ल' कही तँ हुनक आलोचना सभ्यता समीक्षाक उदाहरण थिक। जेना कि हुनक पोथी 'बदलैत सौंदर्यबोध आ कविता'क भूमिका मे कथाकार अशोक सूचना देलनि अछि जे कुलाबाबूक एखन धरि चरिगोट कविता संग्रह आ एकटा सौंदर्यशास्त्रक पोथी प्रकाशित भेल अछि। आ लगभग आधा दर्जन पोथी प्रकाशनक बाट ताकि रहल छनि। 'अंतिका' मे अनलकांत लिखने छथि जे तीन गोट पोथी जोगर आलोचनात्मक लेखन कयने छथि। निःसंदेह जाधरि हुनक सबटा आलोचनात्मक लेखन एक संग प्रकाशित नइँ भ' जाय ता धरि हुनकर आलोचना दृष्टिक समग्र मूल्यांकन संभव नइँ। एत' सामग्रीक आधार पर हुनक आलोचना-दृष्टिक विशेषता केँ रेखांकित करबाक लघु प्रयास कयल जा रहल अछि।

जातीय आलोचनाक नव प्रतिमान

कुलानंद मिश्र मैथिलीक जातीय आलोचनाक प्रस्तावक, पक्षधर आ ओकरा प्रतिफलित कर' वला आलोचक छथि। ओ एहि अभाव केँ पूरा करबाक प्रयास सेहो करैत छथि। कुला बाबू प्रतिबद्ध रचनाकार छथि, वामपंथ सँ प्रभावित छथि, आप्लावित नइँ। हँ, बीसम शताब्दीक अंतिम समय धरि लिखैतो हुनका सामने डॉ. अंबेडकरक चेहरा एको बेर नइँ झलकै छनि। ओ मार्क्सवादी छथि, पार्टीबाज वामपंथी बुद्धिजीवी नइँ। हुनक मार्क्सवादी दृष्टि जड़ नइँ, गतिशील छनि। एहन बुद्धिजीवी कोनो पार्टीक मेम्बरशिप मे बन्हा नइँ सकैत अछि, चाहे ओ वामपंथी किएक ने हो। आ वामपंथक मूल अवधारणो तँ सैह थिक। तेँ एहन लेखक

बुद्धिजीवी केँ जीवन मे सत्ता आ विपक्ष सँ कोनो सहयोग नइँ भेटैत छै, अपितु फिरीशानी मुफ्त मे उपलब्ध करौल जाइ छै। जकर शिकार यात्री सँ ल'क' कुलानंद जी धरि भेलथि। कुलनंद जीक मानब रहनि जे "प्रतिबद्ध सँ प्रतिबद्ध रचनाकारक कोनो (खाँटी) विचारधारा नइँ होइत छै। अहाँ समाजक उपेक्षित वर्ग संग हितारय रखैत छी तँ अहाँक नामक आगाँ ठप्प विशेष लगा देल जाइछ। . ...ई हम स्वीकार करैत छी जे मार्क्सवादी विचारधारा हमरा सोच केँ सर्वाधिक प्रभावित करैत आयल अछि, परंतु हम मार्क्सवादी रहितो कोनो बगय-बानिक कम्युनिष्ट नइँ छी। कोनो राजनीतिक विचारधारा आ तकरा जनम देनिहार विचारदर्शन मे अंतर होइत रहल अछि।" किछु बुद्धिजीवी तर्क गढ़ैत छथि जे सोवियत संघ विघटित भ' गेल तेँ वामपंथ सेहो अप्रसांगिक। एहि तर्क सँ तँ संस्कृत साहित्य पर चर्चे नइँ हेबाक चाही। किएक तँ कहियो देवताक बजाइया भाषा केँ आइ जनता त्यागि चुकल अछि? कुलानंद जीक मादे प्रसिद्ध लेखक आलोचक अरुण प्रकाश ठीके लिखने छथि जे "ओ राहुल सांकृत्यायन सन गहींर अन्वेषी छलाह, ओहने तेज तेवरक मार्क्सवादी छलाह। राहुल जी भारतीय मनीषाक संधान केँ मार्क्सवादक नाम पर हेय नइँ बुझैत छलाह। तहिना कुलानंद जी करैत छलाह। प्राचीन ज्ञान-मीमांसाक गंभीर अध्ययन आ मार्क्सवादी मीमांसा केँ ओ विरोधी नइँ, पूरक मानैत छलाह। ....ओ पांडित्यक पिछड़ल नइँ, अद्यतन संस्करण छलाह।"

कुलाबाबूक साहित्यिक व्यक्तित्वक तुलना हिन्दीक तीन टा रचनाकार सँ कएल जा सकैत अछि। पांडित्य मे ओ राहुल सांकृत्यायन रहथि, मैथिलीक जातीय आलोचनाक मादे रामविलास शर्माक चिंता सँ एकमेक रहथि, आ अपन कवितामे मुक्तिबोध सन दार्शनिक चेतना आ घनीभूत संवेदना सँ संपृक्त। जेंकि ओ हिन्दीक सेहो नीक जानकार रहथि तेँ ओ हिन्दीक समानान्तर मैथिली आलोचना केँ विकसित होइत देख' चाहैत छलाह।

मैथिलीक जातीय सौंदर्यबोधक स्थापना

कुलानंदजीक आलोचना-शास्त्र अथवा सौंदर्यशास्त्र पर प्रकाशित एक मात्र पोथी अछि 'बदलैत सौंदर्यबोध आ कविता'। ई पोथी अपन काया मे लघु होइतो विस्तृत अध्ययन-मननक प्रमाण थिक। प्राचीन भारतक इतिहास, दर्शन, संस्कृति, साहित्य, समाज ओ नृशास्त्रक गंभीर अध्ययन आ मनन केँ अपन लघु कलेवर मे ई पोथी समेटने अछि जे कुलानंद जी सनक बौद्धिके सँ लिखब संभव

छल। एहि पोथीक पूर्व भाग तँ साहित्यिक समझ विकसित करबाक लेल प्रत्येक भारतीय भाषाक पाठक लेल समान रूप सँ उपयोगी अछि। एहि पोथी मे कुलानंद मिश्र 200 बरखक भारतीय काव्यशास्त्रीय परंपराक मूल्यांकन भौतिकवादी दृष्टि सँ तटस्थता पूर्वक करैत छथि आ 'मैथिलीक अपन व्यवस्थित सौंदर्यशास्त्र' विकसित करबाक प्रयास करैत छथि। ओ एहि चिंता सँ चिंतित छथि जे "हमसभ पाश्चात्य मान्यताक आधार गहि अपन रसास्वादक काज कहुना निबाहैत रहलहुँ अछि। हम सभ विद्यापति सँ ल'क' काशीकान्त मिश्र 'मधुप' धरि रचित काव्य-साहित्य पर संस्कृत काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ सुविधापूर्वक विचार करैत आयल छी। आ एखनो निःसंकोच क' रहल छी।" एहि चिंताक समाधान ओ एहि पोथी मे समग्रता मे कयलनि अछि। मुदा, हुनक आलोचनाक दृष्टि 'दाखिल-खारिज' बला नइँ अपितु समय ओ समाज सापेक्ष विश्लेषणपरक छनि। रहरहाँ मार्क्सवादी आलोचक संस्कृतक काव्यशास्त्रीय परंपरा केँ नकारि दैत छथि, मुदा कुलानंद जी ओकर मूल्यांकन आ व्याख्या समाजशास्त्रीय दृष्टि सँ करैत छथि। हिन्दीक भारतेंदु युगीन रचनाकार बालकृष्ण भट्ट अपन निबंध 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' मे संस्कृत साहित्यिक विश्लेषण गंभीरता पूर्वक केने छथि मुदा, कुलानंद जी एहि पुस्तक मे प्राचीन साहित्यक मूल्यांकन भट्ट जी सँ अधिक गंभीरता आ द्वन्द्वात्मक-दृष्टिएँ करैत छथि।

हिन्दी आलोचनाक जाहि जातीयताक निर्माणक प्रक्रिया भारतेन्दु युग मे शुरू भेल छल ओ काज कुलानंद जी मैथिली मे करैत छथि। ओ संस्कृत साहित्य केँ समाज सापेक्ष ऐतिहासिक सन्दर्भ मे तीन भाग मे बाँटैत छथि। पहिल, वैदिक युग जखन समाज गण-आधारित छल। दोसर, उत्तर-वैदिक महाकाव्य युग जखन गणपति सँ राजाक अस्तित्व सामने आयल। हुनका अनुसारें नाट्यचार्य भरत मुनि अही काल मे भेलाह। तेसर, वर्ग-जाति युग जत' राजा नायक बनि गेल। वैदिक देवताक स्थान पर ब्रह्मा, विष्णु, महेश अस्तित्व मे आयल। एकरा बाद धीरे-धीरे राजा लोकनिक आपसी संघर्षक कारणें कवि लोकनि नायकक चुनाव मे मुश्किल मे पड़ि जाइत रहथि। आ तखन ओ सभ देवता, अवतारी महापुरुष केँ अपन चरित नायक बना साहित्य मे उच्च आ कुलीन वर्ग केँ स्थापित कयलनि। अवतारवादक ई विवेचन-विश्लेषण हिन्दी सहित आनो भाषाक साहत्य मे कम भेटत। एहि अर्थ मे हुनक ई स्थापना मैथिली साहित्यक लेल सेहो धरोहर थिक। कुलानंद जी लिखैत छथि जे संस्कृतक काव्यशास्त्रीय परंपरा केँ पहिल टक्कर

भक्ति आंदोलनक जनवादी चेतना सँ भेटल। हुनक चिंता ईहो छनि जे मध्यकालक भारतीय साहित्य मे पंडितक विरुद्ध जे द्वंद्व देखबा मे अबैत अछि से मैथिली साहित्यमे नइँ देखा पड़ैछ। तकर मुख्य कारण ई जे मैथिलीक तत्कालीन कोनो कवि प्रायः निम्न जातिक नइँ रहथि।

कुलानंद जीक अनुसारें अलंकारशास्त्र संस्कृत साहित्य शास्त्रक मूल मे रहल। रस, ध्वनि, रीति आदि प्रकारांतर सँ अलंकार शास्त्रेक पृष्टपेषण करैत अछि। ओ संस्कृतक काव्यशास्त्र केँ सामंतवाद-कालक उत्थान आ पतन सँ जोड़ि क' देखैत छथि। ओ लिखैत छथि, ''सामंतवादक उदय काल मे भरत मुनिक संग आरंभ भेल भारतीय काव्यशास्त्रविषयक चर्चा भामह सँ ल'क' विश्वनाथक सामंतवादी विकासक-कालमे अनवरत आ अव्याहत चलैत रहल आ पंडितराज जगन्नाथक काल धरि अबैत-अबैत मे सामंतवादी पतनोन्मुखता संग विराम ल' लेलक।'' हुनक स्पष्ट मान्यता छनि जे भरत अपन नाट्यशास्त्रक प्रतिमान लोक नाट्य परंपराक आधार पर विकसित केने हेताह। मुदा बाद मे एहि लोक परंपराक उपज केँ लोकोत्तरता सँ जोड़ि देल गेल। भरत मुनि द्वारा कएल गेल रस सिद्धांतक प्रतिपादनक पाछाँ कुलानंदजी 'ओहि कालक सामाजिक संरचनाक महत्वपूर्ण भूमिका' मानैत छथि। भरत मुनिक कथनक उदाहरण दैत ओ सिद्ध करैत छथि जे भरत मुनिक समय धरि ''राजाक बात नव छल, लोकसभक समानताक अनुभवक स्मृति लोक चेतना मे विद्यमान छल।''

निःसंदेह ओ इतिहासक एहि कालखंडक मूल्यांकन तत्कालीन साहित्य केँ आधार मानि द्वन्द्वात्मक दृष्टि सँ करैत छथि आ एहि क्रम मे सभ्यता समीक्षा करबाक प्रयास करैत छथि। किछु लोकक आरोप भ' सकैत छनि जे साहित्य केँ गुनबाक लेल कोनो दर्शन विशेषक आग्रह साहित्यक मूल्यांकनक एकांगी दृष्टि थिक। तँ हुनका सँ प्रश्न कएल जा सकैत अछि जे ब्रह्मानंद सहोदरक नारा दै वला संस्कृतक शास्त्रीय परंपरा दर्शन आ अध्यात्म सँ अलग कोना भेल? धर्म, अर्थ, काम आ मोक्ष प्रदायी साहित्य केँ सिद्ध कएल गेल अछि। कुलानंद जी एहन आलोचक केँ जवाब दैत छथि, ''साहित्य शास्त्र केँ दर्शन सँ नइँ अपितु अध्यात्म धरि सँ एकमेव करबाक प्रयास मार्क्सवादी दर्शनक अभ्युदय सँ हजारसय वर्ष पूर्वे भारतीय आचार्य लोकनि द्वारा चतुरता पूर्वक कएल गेल छल। भट्टलोल्लट रस सिद्धांतक व्याख्या, मीमांसा दर्शनक आधार पर, शंकुक न्याय दर्शनक आधार पर प्रतिपादित कयलनि। ....नवम शताब्दी धरि अबैत-अबैत सांख्यो 'वेद-प्रामाण्य'

आ वेदांतक प्रभुत्व केँ स्वीकार क' लेलक।'' एहि लोकोत्तरता आ अलौकिकताक संदर्भ मे निष्कर्षरूपेण कुलानंद जीक कहब छनि जे ''एहि तरहें पूर्वतः लौकिक आधार पर प्रतिष्ठित (भरत मुनिक) रस सिद्धान्त लोकोत्तर संग जोड़ि देल गेल आ क्रमशः जतबा अधिक ओहि संग ओ जोड़ल गेल, ओतबे ओ जीवन आ समाजक प्राणवन्त धारा सँ अधिक फराक भ' गेल।'' कुलानंद जीक ई स्थापना भारतीय साहित्यक लेल अमूल्य अछि।

कुलानंद जीक कहब उचिते छनि जे हिन्दी मे 1924 ई. सँ सौंदर्यशास्त्र पर चर्चा शुरू भ' गेल छल मुदा मैथिलीमे 'ने तँ भाववादी सौंदर्यशास्त्रक विवेचन भ' सकल आ ने मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्रक' यैह कारण थिक जे 'बहुतो बोधगरो लोक केँ यात्री आ सुमन एके रंग प्रगतिशील कि राजकमल आ मायानंद मिश्र एके रंग प्रयोगशील लगैत छथिन।' हुनका पूर्ण विश्वास छनि जे 'मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्रीय दृष्टि साहित्यक मर्म धरि पहुँचा मे अधिक सहायक होयत।' कुलानंद जी संस्कृतक काव्यशास्त्रीय परंपराक बारीक अध्ययन करैत ओकरा भीतरक द्वंद्व केँ स्पष्ट रूपें रेखांकित करैत छथि। हुनकर स्थापना छनि जे 'भारतीय काव्य-शास्त्र मे आनंदवर्धन आ अभिनव गुप्त सन आचार्य रूपवादक (अलंकारवाद, रीतिवाद आ वक्रोक्ति संप्रदाय) विरुद्ध संघर्ष कयलनि।' कुलानंद जीक चिंता उचिते छनि जे भारतीय काव्यशास्त्रक बदलैत सौन्दर्य दृष्टिक संदर्भ मे हम सभ 'मैथिलीक प्राचीन कि मध्यकालीन रचनात्मक साहित्यक विवेचनाक काज छोड़ि देल अछि।' संस्कृत काव्यशास्त्रक सौंदर्य दृष्टिक आधार पर मैथिली साहित्यक विवेचनक ओ विरोधी छथि। मैथिली साहित्यक अपन कोनो सौंदर्य दृष्टि किएक नइँ विकसित भ' सकल? एकरा पाछाँ रचनाकारक लोक-विमुखता कि सवर्ण वर्गक प्रभुत्व तँ नइँ रहै। कुलाबाबू सामंतवादी मध्ययुग मे एहि सवर्ण प्रभुत्व केँ स्पष्ट रूपें रेखांकित करैत छथि।

कुलानंद जी विद्यापति केँ 'लोक रागक' कवि मानैत छथि 'लोक दशाक' कवि नइँ। कहबाक तात्पर्य जे विद्यापतिक काव्य मे जाहि मात्रा में लोकक रंजन भेल अछि ताहि मात्रा मे लोक दशाक चित्रण नइँ। विद्यापतिक काव्य पर ई हुनक मौलिक स्थापना थिक। हुनके शब्द मे 'अही सामंतवादी प्रभुत्वक अवधि मे विद्यापति अपन पद लिखलनि जे विशिष्ट आ सामान्य वर्गक हृदय केँ एकसंग (मुदा एक रंग नइँ) स्पर्श करैत गेल।' हुनक मानब छनि जे 'विद्यापति लोक-दशा सँ अधिक लोक राग पर ध्यान देलनि आ अपन कविता केँ एक सीमा मे बान्हि

लेलनि।' हुनका अनुसारें विद्यापति आ हुनक परवर्ती मध्यकालीन रचनाकार लोकनि (ज्योतिरीश्वर के अलावा) श्रृंगार मे कि भजन मे दीनहीन समुदाय कें उद्‌बोधन नइँ क' सकलाह। हिन्दी आ अन्य भारतीय भाषाक भक्ति साहित्य सँ तत्कालीन मैथिलीक मध्यकालीन साहित्यक तुलना करैत कुलानंदजी अहि निष्कर्ष धरि पहुँचैत छथि जे लोकोन्मुख होइतो मैथिल साहित्य मे कर्मकांड कि पंडित-मौलवी वर्गक प्रतिद्वन्द्व नइँ देखा पड़ैत अछि तें किछु अपवाद कें छोड़ि ओहि अवधिक कोनो रचनाकार कें भक्त नइँ कहल जा सकैत अछि। एकरा पाछाँ ओ मैथिलीक लोकोन्मुखी साहित्य पर सर्वण जातीय वर्चस्व कें देखैत छथि। ओ लिखैत छथि, ''मैथिलीक कोनो तत्कालीन कवि निम्नजातिक (प्रायः) नइँ रहथि। मैथिलीक ओहि अवधि मे रचित साहित्य (जे विद्यापति, अमृतकर, विष्णुपुरी, गोविंददास, उमापति, नरसिंह आ चतुर्भुजक कवि-साहित्य थीक) हिन्दीक भक्ति-कालीन कविता सँ तत्वतः भिन्न थिक।'' निःसंदेह जाति, भारतीय समाजक एकटा एहन यथार्थ थिक जाहि पर बात केने बिना आ ओकर प्रतिनिधित्वक बिना साहित्यक लोकतन्त्र आ लोकोन्मुखताक बात बेईमानी अथवा छल कहल जायत।

एहि पुस्तक मे हुनक केन्द्रीय चिंता ईहो थिक जे भने 'बीसम शताब्दीक मध्य धरि समस्त भारतीय काव्यशास्त्रक पर्याय संस्कृत काव्यशास्त्रे रहल' मुदा, हरेक भाषा अपन जातीय आलोचना आ सौंदर्यशास्त्र विकसित करबाक प्रयास केलक से मैथिली मे संभव नइँ भ' सकल। ओ पहिल लेख 'आरंभिक आ मध्यकालीन चेतना' मे संस्कृत काव्यशास्त्रीय परंपराक मूल्यांकन भौतिकवादी दृष्टि सँ करैत छथि आ दोसर लेख 'आधुनिक चेतना' मे आधुनिक मैथिली कविताक मूल्यांकनक हेतु आलोचनाक नव प्रतिमान विकसित करैत छथि। एहि क्रममे ओ अपन व्यावहारिक आलोचना मे सैद्धान्तिकी कें अनुस्यूत करैत छथि। 'आधुनिक चेतना' शीर्षक लेखमे विस्तार सँ पहिने मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्रक व्याख्या आ आवश्यकता पर बात करैत छथि, किएक तँ 'समाजवादी जीवन पद्धति पूंजीवादी जीवन-पद्धति सँ अधिक न्यायसंगत होयबाक कारण अधिक सौंदर्यपरक सेहो होइत अछि।' एहि पुस्तकक दोसर खंड मे ओ आधुनिक साहित्यक व्याख्या हेगल, मार्क्स, एंगेल्स, फ्रायड आ लुकाचक संदर्भ मे करैत छथि। एहि संदर्भ मे ओ मैथिलीक आधुनिक साहित्य पर विचार करैत छथि। भारतेन्दु युगीन नव भावबोध हुनका कवीश्वर चन्दा झा मे भेटैत छनि आ न्यूनाधिक मात्रा मे मुंशी रघुनंदन दास, सीताराम झा, जयनारायण झा 'विनीत' आदिक कविता मे।

अतीतक दुर्बल पक्षक निंदाक संग सबल पक्षक गुणगान भारतीय नवजागरणक केन्द्र मे रहल अछि। जाहि प्रक्रिया कें ओ अपन आलोचना-प्रक्रिया मे अपनाबैत छथि। कुलानंद मिश्र अपन आलोचनाक प्रक्रिया मे मैथिली साहित्यक सबल पक्षक संग संग दुर्बल पक्षक रेखांकन सेहो करैत छथि आ हिन्दीक सामने मैथिली कें राखि साहित्यक तुलना करैत छथि। ई तुलनाक दृष्टि दू टा बराबर भाषाक बीच थिक। एत' कोनो हीनताबोध नइँ। ओ हिन्दीक राष्ट्रीयतावादी काव्यधाराक संग संग छायावाद आ छायावादोत्तर कविता सँ मैथिलीक कविताधाराक तुलना करैत लिखैत छथि जे ''डॉ. कांचीनाथ झा 'किरण', भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', ईशनाथ झा, काशीकान्त मिश्र 'मधुप', तंत्रनाथ झा, सुरेन्द्र झा 'सुमन' आ आरसी प्रसाद सिंहक कविता पर दृष्टिपात करब तँ ओहि प्रवृत्ति सभक न्यूनाधिक दर्शन हैत।'' हुनक कहब छनि जे ''मैथिली कविता मे राष्ट्रीय चेतनाक अभिव्यक्ति नीक जकाँ भेल।'' एहि संदर्भ मे तत्कालीन रचनाकार हरिमोहन झाक राष्ट्रीय चेतनाक प्रति निरपेक्षता हुनका छगुंता मे पड़ि जाइ लेल विवश करैत छनि। ओ लिखैत छथि, ''मुदा एहि पीढ़ीक मैथिली रचनाकार प्रो. हरिमोहन झा सन प्रतिभाशाली साहित्यकारक सामाजिक आ राजनीतिक चेतना (जे तखन राष्ट्रीय चेतना सँ मूर्त होइत छल) पर ध्यान देब तँ छगुन्ता लागत।'' निःसंदेह ई कुलाबाबूक आलोचकीय दृष्टिक विशेषता थिक जत' ओ धाराक विरुद्ध जा'क' मैथिलीक सब सँ लोकप्रिय रचनाकार विद्यापति आ प्रो. हरिमोहन झाक सीमा कें रेखांकित करबाक प्रयास करैत छथि।

असल मे एकटा पैघ अवधि धरि मैथिली कें अपन भाषाक अस्तित्व सँ संघर्ष कर' पड़लै, ताहि कारणें रचनाक नीक अधलाह पर तँ बात भेल मुदा व्यवस्थित आलोचनाक शुरूआत नइँ भ' सकल।' मातृभाषाक सेवा'वला भाव आलोचनो पर हावी रहल। मुदा, कुलानन्दजी एहि खालीपन कें भरैत छथि। एहि पोथी मे ओ समकालीन कविता धारामे यात्री सँ ल'क' अग्निपुष्प आ कुणाल धरिक कविता पर सामासिक शैली मे विश्लेषण करैत छथि आ सूत्रात्मक निष्कर्ष। यात्री आ राजकमलक कविताक तुलनात्मक विश्लेषण करैत ओ दुनूक काव्यक विशेषता कें चिन्हित करैत लिखैत छथि, ''यात्रीक कविता जत' मनुष्यक प्रगतिशील मूल्यबोध आ सामान्यजनक संघर्षक आशानुकूल परिणतिक अडिग आस्थाक प्राणवन्त कविता थीक, राजकमल चौधरीक कविता निराश आ परास्त जनमानसक आस्थाहीन कविताक रूपमे मूल्यांकित भेल अछि।'' अपन लेख 'जुग

जुग धावति जात्री' मे यात्री-साहित्य पर चर्चा करैत ओ एहि बात केँ रेखांकित करैत छथि जे "विद्यापतिक बाद सैकड़ों बरख धरि मैथिली कविता रागबंधनक फाँस मे पड़लि रहलि। विद्यापतिक जादू माथ पर सँ उतरबाक नामे नइँ लैत छल। बहुत बाद जाक' अठारहम-उनैसम शताब्दीमे मनबोध सँ प्रबंध रचनाक क्रम आरंभ भेल। ....विद्यापतिक बाद कोनो अर्थमे मनबोध आ कोनो अर्थ मे कविवर चन्दा झा केँ किछु नवोन्मेषक श्रेय देल जयतनि, मुदा अपन शुद्ध अर्थमे यात्रीजी मात्र एहन दोसर कवि छथि जिनका सँ मैथिली केँ एकदम्मे नव दृष्टि आ नव समझदारी प्राप्त होइत छैक आ ओ अपन भूत सँ अभिभूत भेनाइ छोड़ि अपन वर्तमान आ भविष्यक आमने-सामने होइत तकरा सँ स्नेह आ संघर्ष करब सिखैत अछि।"

राजकमलक कविता पर ओ यथास्थान गंभीरता सँ विचार कयलनि अछि। हुनक कहब छनि जे "हमरा राजकमल चौधरीक कवितामे प्रवाहित मानवीय करूणा आ उष्ण रागात्मकता मे हुनक आस्थाक दर्शन भेल अछि। राजकमल चौधरी वास्तव मे मानवीय संबंधक विघटनक प्रति समस्त आंतरिक पीड़ाक अछैतो अपन निम्न मध्यवर्गीय मानसिकता सँ मुक्ति नइँ पाबि सकलाह। तेँ शोषणहीन समाजक स्थापना लेल जरूरी जनसंघर्षक हुनका चित्त मे कोनो अनुरागपरक आस्था उत्पन्न नइँ भेलनि। आर्थिक विषमता सँ संत्रस्त एहि दुनियामे हुनक कविता मानवीय पीड़ाक कथा तँ कहैत अछि, मुदा मानवीय संघर्षक प्रति अविचलित आस्थाक स्वर ओकरा लग नइँ छैक।"

कुलानंद जीक मानब छनि जे यात्री राजकमलक जकाँ आस्थाहीनताक शिकार नइँ भेलाह आकि अपन चिंतन मे अराजक नइँ भेलाह तकर पाछाँ भौतिकवादी दार्शनिक चिंतनक प्रति हुनक आस्था रहनि। ओ मानैत छथि जे शोषणक विरोध मे लिख लेब कविता नइँ थीक।" साहित्यिक कलात्मक स्तर केँ बिनु न्यून कयने, तकर आंतरिक रागात्मकता केँ बिनु कोनो क्षति पहुँचौने तकरा लोकप्रिय आ स्वीकार्य बनायब यात्रीक कविक सब सँ पैघ विशेषता थीक। विषयक संहार संग स्तरीयताक निर्वाहमे मैथिलीक आन कोनो आधुनिक कवि यात्री जकाँ सफल नइँ भ' सकलाह अछि।" कुलानंद जी मणिपद्म, अणु, सुधांशु शेखर चौधरी, रामकृष्ण झा 'किसुन', सोमदेव, हंसराज आ रेणु आदिक रचना केँ यात्रीक परंपरा मे रखितो एहि रचनाकारक सीमा केँ रेखांकित करैत छथि। ओ सातम आठम दशक केर रचनाकार धूमकेतु, कीर्तिनारायण मिश्र, जीवकान्त,

गंगेश गुंजन, उदयचन्द्र झा विनोद, सुकान्त सोम, रामलोचन ठाकुर आ नवम दशकक कवि अग्निपुष्प, कुणाल, विभूति आनंद, हरेकृष्ण झा आदिक कविताक आधार पर मैथिली कविताक लोकोन्मुख चेतना धारा केँ रेखांकित करै छथि। कुला मिला क' ई पोथी गतिशील सौंदर्यशास्त्रक दृष्टिक संग मैथिलीक जातीय आलोचनाक विकासक प्रक्रियामे मील के पाथर जकाँ ठाढ़ रहत।

असहमतिक साहस

कोनो आलोचक जखन साहित्यक मूल्यांकन हेतु नव प्रतिमान स्थापित करैत अछि तँ पूर्वक स्थापित प्रतिमान सँ टकरायब स्वाभाविक। मुदा, कुलानंद जीक सामने जे प्रतिमान रहनि तकर जड़ि संस्कृतक काव्यशास्त्र रहैक। यैह कारण थिक जे ओ बेर बेर रमानाथ झाक आलोचना दृष्टि सँ टकराइत छथि। रामनाथ झा जीक विद्वत्ता आ आलोचकीय योगदानक ओ प्रशंसा करितो हुनका संग अपन असहमति केँ निधोख व्यस्त करैत छथि। हुनकहि शब्द मे, "एतेक बहु-प्रशंसित क्षमता सँ मंडित होइतो प्रो. रमानाथ झा कोनो स्वतंत्र मैथिली संस्कारक सौंदर्यशास्त्रक निर्माण नइँ क' सकलाह। ओ मैथिली आलोचना केँ ठाढ़ हेबाक अवगति तँ देलनि, मुदा ओकरा चलब सिखायब हुनका लेल संभव नइँ भेलनि।" प्रो. झाक आलोचकीय सीमा केँ रेखांकित करैत कुलानंदजी कहैत छथि, "प्रो. झा वास्तव मे अपन बौद्धिक चेतनाक हिसाब सँ अँग्रेजी किंवा संस्कृत साहित्यक अधिकारी लोक रहथि, मुदा सुविधा पर ध्यान रखैत मैथिली आलोचक हैब गछि लेने छलाह।" कुलानंदजीक मतें रमानाथ झा सहित अन्य आलोचक वस्तुतः इतिहासकारक भूमिकाक निर्वाह करैत रहलाह। ओना एहि भूमिका मे ओ लोकनि कतेक सफल भेलाह तकर मूल्यांकन बाकी अछि।

कुलानंद मिश्र, प्रो. रमानाथ झा आ हुनक समकालीन आलोचना केँ ओ इतिहास लेखनक प्रयास मानैत छथि। प्रो. झाक आलोचकीय सीमा आ उपलब्धि केँ रेखांकित करैत लिखैत छथि, "प्रो. झा परंपरा और आधुनिकताक बीच सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्वक आकांक्षी बनल रहलाह। ओ विद्यापतिक साहित्यक वस्तुपरक अध्ययन लेल जत' किछु नव दृष्टिक सृजन मे सफल भेलाह, ओत' आधुनिक साहित्यक मूल्यांकन मे संस्कारगत संकोचक हाथें मारल गेलाह। अंग्रेजीक विद्यार्थी आ अध्यापक रहितो पारंपरिक संस्कृत संस्कारक मोह सँ कहियो नइँ उबरि सकलाह। ओ संस्कृत कि मैथिलीक पारंपरिक भावबोधक काव्य-साहित्यक प्रति अगाध स्नेह आ सम्मानक भाव रखैत रहथि, मुदा मैथिलीक आधुनिक

भाव-बोधक रचना हुनका ग्राह्य नइँ भेलनि। ....वास्तवमे प्रो. झा प्रांचीनता सँ उत्साहित आलोचक रहथि आ तकरा सँ इतर बोधक रचनात्मक साहित्यक प्रति ने कहियो हुनका कोनो आस्था भेलनि आ ने कोनो अनुराग।''

कुलानंदजी मानैत छथि जे 'आलोचनाक आँखिए ओकर स्वर आ स्वरूप होइत छै।' ओ आलोचनाक वर्तमान 'अहो रूपं अहो ध्वनि' वादी प्रवृत्ति सँ खिन्न रहथि। एहि क्रम मे ओ बेर बेर प्रो. रमानाथ झा सँ टकराइत छथि। किएक तँ हुनका सँ मैथिली आलोचना केँ बहुत आशा रहैक। आ यैह अपेक्षा रमानाथ बाबूक प्रति हुनका शिकाइती बनबैत छनि। कथाकार अशोक जी सँ बातचीत मे ओ कहैत छथि, ''हम एखनो मानैत छी जे प्रो. रमानाथ झाक बाद मैथिली आलोचनाक काज बहुत काल धरि गंभीरता ओ आग्रहहीनताक संग संपादित नइँ भेल। प्रो. झा आग्रहहीन रहथि, ई हम नइँ कहब मुदा ओ अपन काजक प्रति गंभीर रहथि, ई हुनक शत्रुओ स्वीकार करताह।'' वर्तमान मैथिली आलोचना मे सब सँ भयावह बात कुलानंदजी केँ ई देखाइत छनि जे, ''आलोचना रचनाक नाम पर नइँ, रचनाकारक नाम पर आग्रही भ' रहल अछि।''

किरणजी पर लिखल विनिबंध हुनक सतर्क आ दृष्टिसंपन्न आलोचकीय दृष्टिक प्रमाण थिक। मोनोग्राफक एकटा सीमा होइत छै। तथापि लगभग सौ पृष्ठक भीतर किरणजीक जीवन, लेखन आ उपलब्धि केँ ओ समग्रता मे प्रस्तुत क' गागर मे सागर भरि दैत छथि। हुनका नजरि सँ किरणजीक कोनो पक्ष ओझल नइँ रहि पबैत अछि। कथा लेखनमे किरणजीक तुलना ओ हिन्दीक प्रसिद्ध लेखक गुलेरी सँ करैत 'मधुरमनि' कथाक केँ 'उसने कहा था'क समक्ष रखैत छथि। किरणजीक प्रति तत्कालीन मैथिली आलोचनाक उपेक्षा आ उदासीनता पर कुलानंद मिश्र अपन बेवाक टिप्पणी करैत छथि, ''मैथिली साहित्यक नाप-जोख वला आलोचक वर्गक एहि वा ओहि खेमा द्वारा स्वीकृत कविक बृहतत्रयी मे ओ सम्मिलित नइँ कयल गेल छथि, मुदा अपना पीढ़ीक कवि समुदाय मे 'किरण' अतिशय आदर तथा स्नेहक संग लेल जाइत एकटा कविक नाम थिक, जिनक दृष्टि प्रगतिकामी रहलनि अछि आ जे परम्पराक विकसित ओ उदार चेतना संग आत्मीयता राखब तथा कट्टरपंथी मान्यताक डटि क' विरोध करब एकटा मनुष्य ओ साहित्यकारक दृष्टिएँ अपन धर्म बुझैत रहलाह।''

कांचीनाथ झा 'किरण' जीक बहुआयामी व्यक्तित्वक संक्षेप मे जे रेखाचित्र ओ खिचै छथि से हुनक आलोचनाक भाषिक क्षमताक प्रमाण थीक। ''कांचीनाथ

झा 'किरण' एक संग कवि-कथाकार-नाटककार-निबंधकार, आलोचक, अध्यापक, समाजसुधारक, वैद्य तथा भाषा-आंदोलनक दुर्घर्ष सेनानीक भूमिका, भक्तक निष्ठा, प्रेमीक राग-वृत्ति ओ संग्रामीक अकूत ऊर्जा संग आधा शतक सँ अधिक समय धरि निवाहैत रहलाह।'' सुरेन्द्र झा 'सुमन'क उद्धरण केँ रखैत ओ किरण जीक कुशंसी लोक केँ सेहो आईना देखबैत छथि।

कथा आलोचनाक नींवक निर्माण

अमूमन आलोचक अपन सुविधानुसार साहित्यक कोनो एक विधा केँ खास क' कविता विधा केँ अपनाबैत छथि। बहुत कम आलोचक कविताक संग कहानी विधा मे सेहो समान रूपेँ हस्तक्षेप क' पबैत छथि। कुलानंद जी अहू ठाम अपवाद छलाह। ओ एक प्रकारेँ मैथिली कथा आलोचनाक प्रस्तावना निर्मित करै छथि। अपन लेख 'रचनामे सोद्देश्यताक बात' मे स्पष्ट करैत छथि जे बिना उद्देश्य के कथा लेखन नइँ भ' सकैत अछि। कथाकार अशोक संग बातचीत मे ओ अनेक पूर्वक स्थापना पर प्रश्नचिन्ह लगबैत नव स्थापना स्थापित करै छथि। एहि प्रक्रिया मे ओ विधागत विशेषताकेँ ध्यान मे रखैत द्वंद्वात्मक दृष्टिएँ विचार करैत छथि। ओ मैथिलीक पहिल उपन्यास प्रो. हरिमोहन झाक 'कन्यादान' (1933 ई.) केँ मानैत छथि। एहि सँ पूर्व उल्लिखित सभ उपन्यास केँ ओ कथा मानैत छथि। हरिमोहन बाबूक बहुचर्चित कथा 'पाँच पत्र'क समीक्षा ओ जतेक गंभीरतापूवक करैत छथि से हुनक विस्तृत आलोचकीय कैनवासक प्रमाण थिक। हुनक स्थापना सँ केओ असहमत तँ भ' सकैत अछि, मुदा एहि पर प्रश्नचिह्न नइँ लगा सकैत अछि। ओ ठीके लिखने छथि जे 'मैथिल समाज अखनो धरि मुख्यतः सामंती संस्कारक जकड़न मे अछि। मैथिली कथा-क्षेत्र मे प्रो. झाक पदार्पणक समय ई समाज आर भीषण रूप सँ एकर प्रभाव मे रहय।' अपन शिल्प, भाषाक गतिमयता, अभिव्यक्तिक आर्द्रता आ स्पंदन, सूक्ष्मता आ संक्षिप्तता एवं कोमल मानवीय विषयवस्तु ल'क' 'पाँच पत्र' कथा केँ ओ मैथिलीक सर्वोत्तम कथा साबित करैत छथि। हुनका अनुसारें पाँच पत्र कथा निम्न-मध्यमवर्गीय पति-पत्नीक संबंधक एकटा शोकगीत थीक जे यथार्थक स्वरक संग अपन प्रभाव मे अतिशय द्रावक अछि। ओ हरिमोहन झा केँ अपन अनुशासन सँ अनुबद्ध मैथिली कथाक भीष्मपितामह मानैत छथि जे प्राचीनता सँ अनुशासित नवताक प्रतिनिधि कथाकार रहथि। मुदा, प्रेमचंद सँ तुलना करैत ओ हरिमोहन झाक साहित्यक दुनिया केँ संकुचित मानैत छथि।

कुलानंद जी जखन आलोचना प्रक्रिया मे रमैत छथि तँ हुनक भाषा ललित ओ रम्य रचना बनि जाइत छनि। लिली रेक उपन्यास 'मरीचिका'क मूल्यांकनक क्रममे ओ मैथिली उपन्यास परंपराक सेहो विश्लेषण करैत छथि। हुनक कहब छनि जे 'किछु अपवाद केँ छोड़ि अधिकांश उपन्यासकार अपना विषय पर जमि क' काज नइँ क' सकलाह अछि, तकर रेशा-रेखा केँ बेकछा साफ-साफ राखि देबाक धैर्यक प्रदर्शन नइँ कयलनि अछि। लिली रे 'मरीचिका' मे एहि प्रसंग मे असीम धैर्यक प्रदर्शन कयलनि अछि। अपना विषयक संग ओ जमि क' रमल नजरि अबैत छथि।' लिली रे 'मरीचिका'क माध्यम सँ एकटा प्रतिमान स्थापित करैत छथि तकर पाछाँ ओ यैह कारण देखैत छथि। ओ 'मरीचिका' उपन्यासक विषय-वस्तुक संग ओकर शिल्पक नयापन केँ सेहो रेखांकित करैत छथि। ओ लिखैत छथि जे ''मरीचिका सँ पूर्व प्रायः कोनो मैथिली उपन्यास मे चरित्रक गढ़नि पर एतेक यत्नपूर्वक काज नइँ कयल गेल छल। लेखक लोकनि चरित्र विशेषक रूपरेखे टा प्रस्तुत कय काज चला लैत छलाह, ताहि मे रंग-टिपकारी भरबाक काज धैर्यपूर्वक करब संभव नइँ होइत रहलनि अछि।'' मरीचिका मे अभिव्यक्त परिवेशक तुलना ओ प्रभास कुमार चौधरीक कथा-संसारक संग करैत 'मरीचिका'क पात्र ओ परिवेशक विशेषता केँ चिन्हित करैत छथि।

कुलानंदजी मैथिली कथा-यात्राक विकास सँ एहि मादे तँ संतुष्ट छथि जे अहि विधा मे वैचारिक आवेग आ आधुनिक भावबोध समाहित भेल अछि। मुदा, ओ एहि बात सँ असंतुष्ट छथि जे ''मैथिली कथा मे सार्वदेशिकताक समानांतर निजताक कोनो विकास नइँ भेलैक।'' हुनका मतें मैथिली कथा आन बहुतो भाषाक आधुनिक कथा जकाँ बाहरी प्रभाव गहण करबा मे पर्याप्त सामर्थ्य दिखाइयो क' अपन नैसर्गिक विकास हेतु चेष्टा कि चिंताक प्रति उदासीन सन रहल।'' अर्थात् हुनकर चिंता मैथिल जातीयता सँ अछि।

कथा मे छठम दशकक बाद आयल परिवर्तन केँ ओ मिथिलाक पलायन आ सामाजिक आर्थिक विसंगतिक रूपेँ देखैत छथि। मिथिलाक सामंतवाद अपन अवसान पर छल। कुलानंदजीक शब्दमे ''छठम दशकक समाप्तिकाल धरि मिथिला मे सामाजिक स्तर पर परंपरागत सामंती व्यवस्थाक तौनी मे भूर भेनाइ आरंभ भ' गेल छल। मैथिली बाजब आ माछ-भात खा भाँगक तरंग मे नचारी गयबाक प्रति आसक्ति बनल रहितो अन्न आ माछक स्रोत सुरक्षित नइँ रहल, किनबा लेल द्रव्यक अभाव भ' गेल। ...क्रमे क्रमे एतुका लोक प्रवासी बनय लागल। ....

आधुनिक पाश्चात्य सोच कि भारतीय साहित्यक दाबल-दबल मनोदशा संग एकमेव होइत मैथिलीक रचनाकार केँ बोधक विस्तार हेतु कतोक नव आयाम प्राप्त भेलैक। समयक एहने कुचक्र आ स्थितिक एहने विभीषिका बीच मैथिली कथा क्षेत्र मे ललित, राजकमल, मायानंद मिश्र, सोमदेव, बलराम आदि किछु पहिने तथा प्रभास कुमार चौधरी, राज मोहन झा, जीवकांत आ गुंजन आदि कने बाद मे अपन कथा चेतना संग उपस्थित भेलाह।''

कुलानंदजीक अनुसारेँ ई सभ कथाकार समान क्षेत्र आ समान सामाजिक स्थितिक भोक्ता होयबाक कारण अपन आशा-निराशा, संतोष-विक्षोभ, क्रांति चेतना कि क्रांतिक प्रति अरुचि मे एक जातीयता केँ रेखांकित कयलनि। हुनक कहबाक तात्पर्य ईहो छनि जे ई कथाकार लोकनि अपन समस्त वैचारिक तापक वादो सामाजिक रूपेँ एकटा लक्ष्मणरेखा सँ जुड़ल रहलाह जे मैथिली कथा मे सुभाषचंद्र यादवक आगमन सँ टूटल। हुनका अनुसारेँ ''सुभाषचंद्र यादव मैथिली कथाक बहुतों रूढ़िकेँ तोड़बाक संग मैथिली कथा केँ पुनः ओहि सुगंधि सँ सुवासित कयलनि जे हम सभ मैथिलत्वक सुगंधिक रूप मे जनैत आयल छी।'' एकर संगे ओ हरिमोहन झा, उपेन्द्रनाथ झा 'ब्यास' आ सुभाषचंद्र यादवक कथाक मैथिल चेतनाक बीच ठाढ़ अभिजात-अनभिजातक देवार केँ रेखांकित करैत छथि 'जकरा तोड़ब अनिवार्य होइतो आइ धरि तोड़ल नइँ गेल अछि।' कुलानंदजी कोनो जीवंत कथाकारक लेल सामाजिक प्रतिबद्धता केँ आवश्यक पात्रता मानैत छथि। राजनीति के नाकरब आकि ओहि सँ दूर रहबाक गप्प केँ ओ अभिजात पाखंड मानैत छथि। तटस्थता केँ ओ मात्र गप्प मानैत छथि। ओ मैथिलीक कथाक जातीय परंपरा मे प्रो. हरिमोहन झा, किरण, पंडित गोविंद झा, मणिपद्म, ललित, सोमदेव, राजकमल आदि रचनाकार केँ रखैत छथि, प्रो. उमानाथ झा, मनमोहन झा, उग्रानंद, नगेंद्र कुमार सन रचनाकार केँ नइँ।

कुलानंदजी द्वन्द्वात्मक ओ ऐतिहासिक ''यथार्थवादक आग्रह, अनुभववाद आकि भोगल यथार्थवाद केँ पूँजीवादी व्यक्तिवादक असंयत संतति'' मानैत छथि। ई विचार हुनकर प्रगतिवादी सीमाक उदाहरण थीक। लोकोन्मुख हेबा सँ केओ दलित वर्गक जातीय दंशक एखन धरि चित्रण किएक नइँ क' सकलाह जेना कि दलित साहित्यमे भेटैत अछि? कुलानंद जी केँ एहि बातक चिंता तँ छनि जे ''हमारा सभक चिंताक केन्द्र सँ एखनो ओ वर्ग तत्वतः बाहर थीक जे वृहत्तर होयबाक संग संग सांस्कृतिक विकासक असली कारक कि माटि-पानि सँ अधिक

संपृक्त रहल अछि आ तेँ हमारा सभक चिंतो खंडित रहबा लेल अभिशप्त बनल रहैछ।'' मुदा ओ भोगल यथार्थक अभिव्यक्तिक कटु आलोचक छथि जे हुनक आलोचकीय सीमाक परिचायक थिक। जखन कि ओ मानैत छथिं जे ''निम्न वर्गक दशा-दुर्दशाक लेल जिम्मेदार हाथे सँ साहित्यिक कठपुतरीक डोरि घिचाइत रहल अछि आ तेँ सत्यक निरूपणक मार्ग मे कतोक तरहक कुंठाक अवरोध बनल रहल अछि।'' कुलानंदजी वर्ग आ वर्णक दूरी केँ नइँ देखि पबैत छथि, ''ई बात बिना कोनो ननुचक केँ स्वीकार कर' पड़त जे वर्ग कही वा वर्ण ओकर संख्या मात्र दूटा छैक।'' मुदा कि कोनो गरीब ब्राह्मण गरीब दलितक संग बेटी-रोटीक संबंध सहजता सँ बना लैत अछि? स्पष्ट अछि जे कुलानंद जी एत' वामपंथक वर्गवादी सीमाक अतिक्रमण वर्णक संदर्भ मे नइँ क' पबैत छथि।

ओना ओ मानैत छथि जे ''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया सँ बातक उद्धोष करैत काल समस्त मानव समुदायक बात निश्चिते नइँ ध्यान मे रखैत छल, ओकर 'सर्वे'क परिधि मे मात्र 'आर्यजनाह' कि 'संस्कृतजनाह' समाहित छलाह।'' मुदा दलित प्रश्न आकि सांस्कृतिक चेतना केँ ओ फासीवादीक फुसफुसाहटिक रूपमे देखैत छथि। जे हुनक सीमा थिक।

आलोचनाक भाषा मे सांध्यभाषा आकि अखबारी भाषाक ओ विरोधी छथि। निबंध आकि अंकेक्षण वाला भाषा केँ ओ आलोचनाक लेल अहितकर मानैत छथि। हुनका अनुसारें आलोचना ''रचनाकार आ पाठकक बीच ओहि संवाद केँ आरंभ करबाक आधार तैयार करैत अछि, जकर परिणति रचनाकार आ पाठकक बीच आत्मीय संबंधक स्थापना मे होइछ।'' मैथिली कथा-आलोचनाक प्रति ओ कतेक गंभीर रहथि, एकर प्रमाण थीक हुनक मैथिली गद्य आ कहानी पर लिखल निबंध जे 'समकालीन परिभाषाक' अक्तूबर-दिसंबर 1990क अंक मे प्रकाशित भेल छल।

....एकला चलो रे!

कुलानंदजी अपन आलोचना कर्म मे एकला चलैत रहलाह तेँ खूब खूब ईर्ष्या-द्वेषक शिकारो भेलाह। ई देखि क' आश्चर्य होइत अछि जे जीवनक अदम्य जिजीविषाक रचनाकार रहितो अंतिम घड़ी मे कुलानंद जी अभाव, एसगरपन, आ अपन हीत-मीतक उपेक्षा आ तिरस्कार सँ बहुत क्लांत रहथि।

गौरीनाथ सँ 1996-98क बीच भेल पत्राचार मे ओ कैक बेर अपन एकाकीपन आ खालीपनक जिक्र करै छथि। ''हमर किछु मित्र मुदित-मन संग

हमर मृत्युक घोषणा करैत छथि– हुनका सभ केँ दुखी करबाक अछि।.... ''लोक संग छोड़ि रहल अछि आ हम निरीह जकाँ अपन एकाकीपनक वृत्ती केँ पसरैत देखि अवाक छी। ...''हम जीवन संग निरंतर संघर्षरत रहबा लेल विवश रहलहुँ अछि मुदा हमर संघर्ष आब समाप्त भ' गेल अछि। हम हारि गेल छी, ऊर्जा चूकि गेल अछि।... ''कर्ज सधयबा लेल खेतक बिक्री हेतु गाम गेल रही। जीवनक उत्तरार्ध मे कर्जक अदायगी हेतु खेत बेचब अखरल, मुदा आन उपाय नइँ छल।. ... ''मानवीय 'साहित्य-सिंधु' मे हिलकोर लैत साहित्यकारक बुलबुला सभ हमरा समाप्त मानि ओकर विधिवत घोषणा क' देलनि अछि।... ''हमर जीवन असफलताक एकटा कड़ी थिक.... बेटा, पति, बाप, सामाजिक लोक-सभ रूपे असफल। एतेक धरि जे साहित्यिक 'बजारो' मे 'कंपीट नइँ क' सकलहुँ।.... ''हम अखन एकटा सर्वथा निःसंग जीवन जीवि रहल छी– अभावक कारण सभ संग छोड़ि देलक अछि। ....हमर तथाकथित मित्र सभ आब हमरा बिसरि गेल छथि... हम अपन लाश अपने कान्ह पर ऊघि रहल छी।''

देवशंकर नवीनक कहब उचिते अछि जे ''कुलानन्द मिश्र कोनो स्कूल नइँ बना सकलाह, चटिया नइँ मूरि सकलाह, ने कविते लेल, ने आलोचने लेल। मुदा ई तय अछि जे मैथिलीक श्रेष्ठ आलोचनाक अगिला ईंट जे राखल जायत से कुलानंद जीक बनायल फाउंडेशन पर।'' निःसंदेह कुलानन्द मिश्र मैथिलीक जातीय आलोचनाक प्रस्थान बिंदु तैयार करैत छथि। जँ हुनक सबटा रचना प्रकाशित भ' जाइ तँ मैथिली आलोचनाक विकास केँ गति भेटतै, ओकर दशा आ दिशा तय हेतै।



कमलानन्द झा

मोहन भारद्वाजक आलोचना-दृष्टि

एक

कार्ल मार्क्स सन 1843 ई. मे अपन एकटा मित्र अर्नोल्ड रूज कें चिट्ठी लिखलनि– "हमर उद्देश्य भविष्यक रूपरेखा बनयबाक नहि अछि, आ ओहि सभ सवालक अन्तिम उतरो देबाक नहि अछि। हमरा जे पूरा करबाक अछि, जे किछु छैक ओकर निर्मम आलोचना करब। निर्मम दू अर्थमे, एक तँ ओहि आलोचनाक निष्कर्षसँ भयभीत नहि होएब आ दोसर सत्तासँ टकरयबासँ सेहो नहि डरायब।"

मोहन भारद्वाजक आलोचना निर्भीक आ निःशंक आलोचना अछि। सत्ताक कैकटा रूप होइछ, राजसत्ता, धर्मसत्ता, जातिसत्ता, पितृसत्ता, भाषासत्ता, वर्गसत्ता तथा अतीतक सत्ता आदि। मोहन भारद्वाजक आलोचना राजसत्ता छोड़ि आओर सभ तरहक सत्तासँ दू-दू हाथ करैत रहल अछि। जाहि समयमे अधिकांश मैथिलीक रचनाकार एहि सत्ता-प्रतिष्ठानक संग सहमति, समर्थन, समर्पण आ सामंजस्य बैसाबयमे लागल छलाह, ओहि समयमे मोहन भारद्वाज लगातार मैथिली साहित्यमे उपस्थित असंगति, असुविधा आ ठकुरसुहाँतिक विरूद्ध शांतिपूर्ण युद्ध करैत रहलाह। ओ ललित, काञ्चीनाथ झा 'किरण', राजकमल, लिली रे आदिक रचनाक आलोचनाक क्रममे धर्मसत्ता, वर्णसत्ता, पितृसत्ता आ अतीतसत्ताक मजगूत देवालकें हिलयबाक प्रयत्न कयलनि। ओतहि विद्यापतिक विस्तृत समीक्षा लिखि भारद्वाजजी विद्यापतिक 'देसिल बयनाक' अवधारणाकें संस्कृतक भाषिक सत्ता पर लोकभाषाक जीत मानल।

आलेखक आरम्भ कार्ल मार्क्सक महत्त्वपूर्ण उक्तिसँ करबाक कारण ई जे मोहन भारद्वाज मैथिलीक पहिल व्यवस्थित मार्क्सवादी, प्रगतिशील आ पदार्थवादी आलोचक छथि। ओ मैथिली आलोचनाकें 'आह-आह-वाह-वाह' आ आशीर्वादी आलोचनासँ बाहर निकालि ओकरा ठोस आ सक्कत जमीन प्रदान कएल। एतबे नहि, मोहन भारद्वाज मैथिली आलोचनाकें भावनाक कूहेलिकासँ बाहर निकालि वस्तुवादी यथार्थसँ साक्षात्कार करौलनि। कहबाक आशय ई जे जेना हिन्दीमे रामचंद्र शुक्ल हिन्दी आलोचनाकें सशक्त विधाक रूपमे स्थापित कएल, ओकरा समाज, संस्कृति, इतिहास-बोध आ काल-चेतनासँ जोड़ल, तहिना मोहन भारद्वाज मैथिली आलोचनाकें सशक्त आधार प्रदान कएल। एकर आशय ई कथमपि नहि जे हिनकासँ पहिने मैथिली आलोचनाक स्वर नहि छल, अवश्य छल। भारद्वाज ओकरा व्यवस्थित कएल आ मैथिली आलोचनाकें पाठ केन्द्रिकतासँ बाहर निकलि, सामाजिक, समकालीन आ सरोकार सम्पन्न बनाओल।

आजुक सुप्रसिद्ध बुद्धिजीवी चिन्तक एडवर्ड सइदक कहब छनि जे "आलोचनाकें जीवनदायी होयबाक चाही। ओकरा स्वभावसँ अन्याय, आधिपत्य आ अत्याचारक विरोधी होएबाक चाही। ओकर सामाजिक लक्ष्य होइछ, मनुष्य स्वतन्त्रताक पोषक ज्ञानक सहज उत्पादन। जे आलोचना मनुष्यक स्वतन्त्रताक पक्षधर होएत, ओएह सही अर्थमे सामाजिक होएत आओर साहित्यिको। कारण, विशुद्ध साहित्यिक लक्ष्य सेहो मनुष्यक स्वतन्त्रताक साधने होइछ। जे आलोचना मात्र साहित्यिक रचनाक आग्रही आ पुरना भाषामे रसास्वादन धरि सीमित रहत, ओ परोपजीवी होएबाक लेल बाध्य होएत।" (वर्चस्व और प्रतिरोध – एडवर्ड सइद, नयी किताब-2015, पृष्ठ 31) मोहन भारद्वाजक आलोचना-कर्म मनुष्यक स्वतन्त्रताक पक्षधर आ साहित्यिक रसास्वादन साहित्यकर्म माननिहारसँ लोहा लैत रहल। मोहन भारद्वाज अपन पहिले पोथी 'अनवरत'मे अपन आलोचना दृष्टिकें फड़िछबैत लिखल, "आजुक लोक साहित्यकें देवी वरदानक अथवा एकान्त साधनाक तान्त्रिक उपलब्धि नहि मानैत अछि। तैं आई साहित्यिक अनुशीलन केवल शब्दार्थक सहभाव आ ओकर आभ्यन्तरिक रसपक्षकें लएकें नहि भए सकैत अछि। साहित्य तथा समाजक अन्तरावलम्बनकें जानब जरूरी अछि।

साहित्य युग सापेक्षताकेँ सामाजिक विकासक प्रक्रियाक संग देखब आवश्यक अछि।'' (अनवरत-मोहन भारद्वाज, शेखर प्रकाशन, 1995, भूमिका)

हिन्दीक वरिष्ठ आलोचक मैनेजर पाण्डेय कहैत छथि जे आजुक संदर्भमे आलोचना दू तरहक भए रहल अछि; एकटा सार्थक आलोचना आ दोसर निरर्थक आलोचना। जाहि आलोचनामे विचारक नवीनता हो, व्याख्या विश्वसनीय हो, आओर भाषाक रचनात्मकता एहन हो, जे ओ पाठकक समझदारी आ हुनक सामाजिक संवेदनशीलताक विकास करैत हो, ओकरा नीकसँ नीक मनुष्य बनयबाक प्रयास करैत हो, तँ ओ भेल सार्थक आलोचना, अन्यथा निरर्थक। ओकरा आलोचनो कहब उचित नहि। एहि दृष्टिसँ मोहन भारद्वाजक आलोचना सर्वथा सार्थक आलोचना अछि। ओ जाहि रचनाकार सभपर आ जाहि दृष्टिसँ विचार कएलनि, ओ हुनक नवीन दृष्टिक परिचायक थिक। व्याख्यामे विश्वसनीयता अबैत अछि — विशद आ विविध अध्ययनसँ, सन्दर्भ आ प्रसंग सहित विषयक उपस्थापनासँ। भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य आ मार्क्सवादक गम्भीर अध्ययनसँ हिनक आलोचना-दृष्टि निर्मित होइत अछि। 'मैथिली आलोचना : वृत्ति आ प्रवृत्ति' मे संकलित हिनक 'मैथिली आलोचना' शीर्षक आलेखमे भारतीय काव्यशास्त्रक प्रगतिशील परम्पराकेँ विलक्षण रूपेँ रेखांकित करैत अछि। ओतहि समकालीन रचनाशीलता पर भारद्वाजजी पाश्चात्य साहित्यक चिन्तनक प्रतिमानकेँ आगू रखैत छथि। किछु आलोचक पुरने सिद्धांतसँ सभ तरहक रचनाक आलोचना करय चाहैत छथि, मुदा से सम्भव नहि। आ जखन ओहि पुरना सिद्धांतसँ नबका साहित्यक मूल्यांकन सम्भव नहि होइत अछि तँ ओ नबका साहित्यकेँ झूस बुझय लगैत छथि। एहन लोक ई नहि बुझि पबैत छथि जे रचनाशीलताक विकास आ परिवर्तनशीलताक संग आलोचनाक प्रतिमान सेहो बदलैत अछि। ओही अनुरूप आलोचनाकेँ सेहो बदलय पड़ैत छैक। आलोचक मोहन भारद्वाज साहित्य आओर आलोचनाक एहि परस्पर सम्बन्धकेँ खूब गहींर धरि बुझयबला आलोचक छथि आ तेँ ओ सार्थक आलोचक।

गंभीर आलोचक आलोचनाक दायित्वसँ परिचिते नहि होइत अछि, अपितु ओहि दायित्वक वहन सेहो करैत अछि। आलोचनाक दायित्व उखाड़-पछाड़ नहि होइत अछि। कोनो रचनाकारकेँ स्थापित करब आ ध्वस्त करब ओकर दायित्व

नहि। आशीर्वादी आलोचना तँ आलोचनाक शत्रु थिक। आशीर्वादी आलोचना रचनाकारकेँ अपन सीमासँ परिचित नहि होअए दैत छैक। ओ रचनाकारक आशीर्वादकेँ रचनात्मक सामर्थ्य बुझि फूलिकेँ कुप्पा भए जाइछ। फलस्वरूप, ओकर रचनाशीलताक आवेग कुन्द भए जाइत छनि। मोहन भारद्वाजक आलोचना एहि सीमाक अतिक्रमण करैत साहित्यक वृहत्तर परिदृश्य आ सरोकारसँ जोड़ैत अछि। इएह सरोकार भारद्वाजकेँ समष्टि चेतनासँ जोड़बाक दायित्व-बोध प्रदान करैत छैक। मोहन भारद्वाज आलोचनाक भाव-भूमि पर विचार करैत लिखैत छथि, ''समीक्षकक सामाजिक दायित्व थिक जे ओ अग्रगामी साहित्यक संवाहक स्वरकेँ अकानय। ओकरा रेखांकित करय। ओकर पोषक तथा प्रतिरोधी तत्त्वकेँ बेकछाबय। तखने समीक्षा साहित्य सीर धरि पहुँचि सकैत अछि। साहित्यक व्याख्या तखने वर्तमान लेल प्रासंगिक आ भविष्यक हेतु सार्थक भए सकैत अछि।'' (अनवरत-मोहन भारद्वाज, शेखर प्रकाशन, 1995, भूमिका)

मोहन भारद्वाज मार्क्सवादी आलोचक छथि। आलोचनामे विचारक संग विचारधाराक सवाल सेहो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होइत अछि। एहि सन्दर्भमे वरिष्ठ आलोचक नामवर सिंहक कहब छनि, 'आलोचना अपन समयक बौद्धिकताक उपस्थिति होइछ।' एहिमे दू मत नहि जे भारद्वाजजी मैथिलीक बौद्धिक आलोचक छथि। हुनकामे अपन समाजक वर्चस्ववादी विमर्शक छद्मकेँ चिन्हयबला बौद्धिकता छनि। विद्यापतिक मूल्यांकन, समकालीन रचनाशीलता तथा डाक-वचनक आलोचनामे हमरा लोकनि एहि बौद्धिकताकेँ ताकि-हेरि सकैत छी। एही बौद्धिकता आ विचारधाराक बलें ओ आचार्य रमानाथ झा आ चन्दा झा सदृश्य पैघ रचनाकारक प्रशंसक रहितहुँ हुनक रचनागत 'फाँक' केँ देखि लैत छथि।

दू

मोहन भारद्वाजक आलोचनाक व्यापक फलक यात्रीजीक 'बलचनमा' उपन्यासक मूल्यांकनमे देखबामे अबैछ। मैथिलीमे विस्तारसँ कोनो एकटा रचना विशेष पर आलोचनाक प्रवृत्ति नहि रहल अछि। कोनो रचना पर चलताऊ ढंगसँ टीका-टिप्पणी मैथिली आलोचनाक मुख्य धारा रहल अछि। 'बलचनमा' उपन्यास पर स्वतंत्र पोथी 'बलचनमा : पृष्ठभूमि आ प्रस्थान' लिखि भारद्वाजजी आलोचनाक

एहि संकुचित दृष्टिकेँ तोड़बाक प्रयास कएल। पोथीक आरम्भहिमे ओ लिखैत छथि 'बलचनमा मिथिलाक इतिहास थिक, ऐतिहासिक उपन्यास नहि, औपन्यासिक इतिहास। मोहन भारद्वाजक ई स्थापना महत्त्वपूर्ण अछि जे कोनो समाजकेँ हम तखनहि ठीकसँ बुझि सकैत छी, जखन ओहि समाजक मातबर लोकक संगे मातहतक इतिहास, समस्या, ओकर संघर्ष ओकर दमनकेँ बुझि सकी। 'बलचनमा' मैथिलिऐ नहि, हिन्दी आ मैथिली – दुनू भाषाकेँ मिलाए शोषित वर्गक जीवनकेँ विशद रूपसँ उद्घाटित करयबला पहिल उपन्यास थिक। एहि रचनासँ पहिने सेहो उपन्यासमे शोषित वर्ग आएल छल, मुदा ओ विश्वसनीय ढंगसँ नहि आबि सकल छल। 'बलचनमा' उपन्यास दलित जीवनक केमरासँ खींचल दृश्य कोलाज़ अछि। मोहनजीक आलोचना-दृष्टि एहि विषयकेँ गहिया कँ पकड़लक। ओ लिखैत छथि, ''बलचनमा उपन्यासमे मिथिलाक किसानक आँखिसँ देखल गेल अछि। बलचनमा संग एकाकार भए जायब आ तखन घटनाक्रमेँ देखब एहि कृतिक अद्वितीय विशेषता थिक।'' (बलचनमा : पृष्ठभूमि आ प्रस्थान-मोहन भारद्वाज, लोकवेद प्रकाशन, पटना 2006, पृष्ठ 10)

मिथिलाक मुख्यधाराक संस्कृति अभिजात्य रहल अछि। मिथिलाक ब्राह्मण पूर्वमे हर जोतब आ कृषि-कर्मकेँ हीन बुझैत छलाह। मोहन भारद्वाजक अनुसारें 'बलचनमा उपन्यास मिथिलाक कृषि संस्कृतिक भाष्य थिक।' तात्पर्य ई जे बलचनमा मिथिलाक समानान्तर संस्कृति कृषि संस्कृतिक आख्यान अछि। मातहत लोकक संस्कृति अपन सम्पूर्ण विन्यासक संग एहि उपन्यासमे जगजियार भेल अछि। मातहतक जाहि संस्कृतिकेँ मिथिलामे कोनो मोजर नहि छल, एहि संस्कृति पर लिखब तँ दूर, सोचब धरि उचित नहि बुझल जाइत छल, यात्रीजी ओहि संस्कृतिकेँ विमर्शक केन्द्रमे राखि देलनि। आलोचना-कर्म रचना आ रचनाकारक मूल उद्देश्यकेँ फड़िछबैत अछि। मोहन भारद्वाज आलोचनाक एहि दायित्वकेँ बुझैत 'बलचनमा'क वैशिष्ट्यकेँ रेखांकित करैत छथि। ओ लिखैत छथि जे, ''मिथिलाक संस्कृति कृषिधर्मी अछि। कार्यकेँ कर्त्तव्य आ श्रमकेँ शक्ति बूझब एहि संस्कृतिक मूलाधार अछि, तेँ एहि संस्कृतिमे सौन्दर्यबोधक संगहि मूल्यबोध सेहो जनमैत आ पनपैत अछि।'' (बलचनमा : पृष्ठभूमि आ प्रस्थान-मोहन भारद्वाज, लोकवेद प्रकाशन, पटना 2006, पृष्ठ 35)

मैथिल समाजमे तँ राजनीति खूब लोकप्रिय अछि। मुदा मैथिली साहित्यकेँ सायास राजनीतिसँ दूर रखबाक प्रयास भेल अछि। ई अकारण नहि जे मैथिलीमे राजनीतिक उपन्यासक अकाल अछि। जीवनक कोनो कोन एहन नहि जतय राजनीति नहि हो। जाहि समाजमे राजनीतिक चेतनाक अभाव रहत तँ चारू दिस पसरल शोषणकारी राजनीति ओहि समाजकेँ चाभि लेत। यात्रीजी ई बात बहुत पहिनहिं बुझि गेल छलाह। 'बलचनमा' सटीक अर्थमे हिन्दी-मैथिलीक पहिल राजनीतिक उपन्यास थिक। मोहन भारद्वाजक विशेषता ई जे 'बलचनमा'क एहि विशेषताकेँ रेखांकित कएल आ लिखल ''बलचनमा उपन्यासमे प्रतिरोधी राजनीति पहिल बेर प्रकट भेल अछि।'' कहबाक आशय ई जे भारद्वाजजीक आलोचना-दृष्टि 'बलचनमा'केँ समग्रता आ एखन धरि जाहि दृष्टिसँ देखल गेल छल, ताहिसँ फराक आ सार्थक दृष्टिसँ देखलक अछि।

मिथिलाक कदाचित कोनो विद्वान नहि होएताह जे विद्यापति पर अपन लेखनी नहि चलौने होथि। भारद्वाजजी सेहो विद्यापति पर विस्तारसँ विचार कएल। विद्यापति सम्बन्धी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण चारि गोट आलेख हिनक पोथी 'काव्य-पाठ'मे संकलित अछि। मोहन भारद्वाजक आलोचना-दृष्टि विद्यापतिक विगत सार्थकता आओर वर्तमान अर्थवत्ताक पड़ताल करैत अछि। विद्यापति जहिआ महत्त्वपूर्ण छलाह से उचित, मुदा आई विद्यापति किएक प्रासंगिक? हिनक आलोचना एहि दुआरे महत्त्वपूर्ण जे ओ आजुक सन्दर्भमे विद्यापतिक महत्त्व बतबैत छथि। 'विद्यापति-प्रसंग' निबन्धमे ओ लिखैत छथि जे, ''विद्यापति महान एहि लेल छथि जे ओ अपन समयक मूल्य-बोध पर विचार-विमर्श कएलनि आ ताहि क्रममे एकटा जीवन-दृष्टि देलनि।'' (काव्य-पाठ, मोहन भारद्वाज, मैथिली लोकरंग, 2015, पृष्ठ-24) हिनक आलोचनाक महत्ता एहि जीवन-दृष्टिकेँ तकबाकमे अछि। मोहन भारद्वाज लिखैत छथि, ''विद्यापति दार्शनिक बनि कँ पारलौकिक सत्ता पर विमर्श करबासँ बेसी श्रेयस्कर लौकिक जीवनक आचारादर्श पर कलम चलायबकेँ बुझलनि। तहिना ओ संस्कृतक अपेक्षा मैथिलीमे लिखबाक अनिवार्यताक अनुभव सेहो कएलनि।'' (काव्य-पाठ, पृष्ठ सं. 33) ओहि समयमे भारतक एकटा प्रमुख समस्या आर्थिक छल, ताहि कारणें भारतक कतेको विद्वान लोकनि एहि समस्या पर विचार कए रहल छलाह। मोहन भारद्वाज लिखैत छथि, ''कश्मीरमे

क्षेमेन्द्र 'लोकप्रकाश' एगारहम शताब्दीमे लिखल। एहि पोथीमे समाज केन्द्रित विभिन्न आर्थिक समस्या पर विचार अछि। तकरा बाद गुजरातक किछु विद्वान पत्र-शैलीमे ओहिठामक सामाजिक आ आर्थिक जीवन पर 'लेख पद्धति' लिखलनि। एहि पोथीमे गुजरातक समाज, प्रशासनिक व्यवस्था आ आर्थिक जीवनक सम्बन्धमे व्यापक सूचना भेटैत अछि। एहने पोथी अछि विद्यापति कृत 'लिखनावली'।" (काव्य-पाठ) एहि अर्थमे विद्यापति भारतीय लेखक छथि।

भारद्वाजजी विद्यापतिकेँ भारतीय ज्ञान परम्परामे रेखांकित करैत छथि। हिनक आलोचना-दृष्टि भजन-कीर्तन करयबला विद्यापतिकेँ कम, देश-दशाक हेतु चिन्तित विद्यापतिक खोज बेसी करैत अछि। 'लिखनावली'क मादे ओ लिखैत छथि, "एहिमे उपस्थित अट्ठासी टा पत्र विद्यापतिकालीन समाजक आर्थिक स्थितिक अन्तर्साक्ष्य प्रस्तुत करैत अछि। कृषि-व्यवस्था, दास प्रथा एवम् व्यापार-जगतक जतेक फरिछाएल रूप एहिमे अछि ततेक अन्य पोथीमे नहि।" (काव्य-पाठ, पृ. सं.-34)

मोहन भारद्वाज अत्यन्त विस्तारसँ विद्यापतिक विलक्षण आ क्रान्तिकारी भाषिक चेतनाकेँ उद्घाटित करैत छथि। भक्तिकाल भारतीय साहित्यक स्वर्णकाल एहि दुआरे कहबैत अछि जे सभ कवि संस्कृत आ क्लासिक भाषा तजि लोकभाषामे कविता रचलनि। गर्वक बात ई जे सभसँ पहिने विद्यापति एहि मार्गकेँ प्रशस्त कएलनि। विद्यापतिक एहि बाटपर चलि जायसी, कबीर, तुलसी आ सूरदास आ महान भक्त कविक ओहदा प्राप्त कएलनि। एहि सन्दर्भमे मोहनजी लिखैत छथि, "जाहि मिथिलामे विद्वानक लेखनक भाषा संस्कृत छल, ताहिठाम विद्यापति जनभाषाकेँ साहित्यिक भाषाक रूपमे प्रतिष्ठित कएलनि। पण्डित सभ हुनक खिधांस करैत रहलनि, मुदा ओ लिखैत रहलाह-निःसंकोच, निर्द्वद्व भावसँ।" (काव्य-पाठ, पृष्ठ सं.-24) मोहनजी पाठककेँ ध्यान दिअबैत छथि जे विद्यापति मैथिलीसँ स्नेह करैत छलाह, मुदा मैथिलिएटाकेँ मिट्ठ भाषा नहि कहलनि, अपितु विद्यापति अद्भुत भाषिक चेतनाक परिचय दैत देसी भाषा मात्रकेँ मधुर कहलनि– 'देसि बयना सभजन मिट्ठा।' विद्यापतिक एहि भाषिक चेतनाकेँ उद्घाटित करैत मोहन भारद्वाज लिखैत छथि, "एहिठाम देसिल बयनाक अर्थ मैथिली नहि अछि। ओकर अर्थ अछि देसी भाषा। मैथिली देसी भाषा थिक,

तेँ ई सूत्र ओकरो पर लागू अछि। किन्तु ध्यान देबाक बात ई अछि जे विद्यापति देसी भाषामे साहित्य लेखनक भारतीय अभियानक समर्थन करैत छथि, जे ओ 'सभजन मिट्ठा' अछि। विद्यापतिक कथन अछि जे संस्कृत मुट्ठी भरि पढ़ल-लिखल ब्राह्मणक भाषा थिक, देसी भाषा सार्वजनिक अछि। तेँ साहित्यकेँ सामान्य लोकक वस्तु बनयबाक हेतु 'देसिल बयना' अर्थात् मैथिलीमे लिखब अनिवार्य अछि। एहि तथ्यकेँ सिद्धान्ततः स्वीकार कए ओकर उद्घोषणा कएनिहार विद्यापति पहिल मैथिल छलाह।" (काव्य-पाठ, पृष्ठ सं. 24) विद्यापतिक भाषामे अन्य भाषासँ शब्द-ग्रहण करयबाक विलक्षण प्रवृत्ति छलनि। एहि कारणें हिनक भाषा दूषित नहि अछि। तात्पर्य ई जे ओ भाषाक शुद्धतावादी सोचक विरूद्ध छलाह। वाचस्पति अपन प्रसिद्ध पुस्तक 'कृत्यचिन्तामणि'मे स्पष्टतः लिखने छथि, 'मलेच्छ भाषां न शिक्षेतान वदेत यावानीं भाषाम्'। मोहन भारद्वाज एहि सन्दर्भमे विद्यापतिक भाषिक-बोधकेँ उभारैत लिखैत छथि, "विद्यापति संकीर्णताक एहि लक्ष्मण रेखाकेँ नहि मानल। 'लिखनावली' तथा 'पुरुष-परीक्षा' ओ संस्कृतमे लिखलनि अवश्य, किन्तु दुनू पोथीक भाषा एतेक सरल अछि जे साधारणो पढ़ल-लिखलकेँ ओ हृदयंगम भए सकैत छैक। एतबे नहि, ओहिमे विद्यापति कतोक अरबी-फारसी शब्दक व्यवहार कयने छथि।" आलोचक मुनीश्वर झाक कथनकेँ उद्धृत करैत ओ लिखैत छथि, "विजातीय शब्दक संस्कृतिकरणक ई प्रवृत्ति क्रान्तिदर्शी भाषाविद विद्यापतिक व्यक्तित्वक अनुपम वैशिष्ट्य थिक।" (तापस कवि विद्यापति, मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, कोलकाता, पृ.सं. 72)

विद्यापतिक पदावली मूलतः गीत अछि आ मुक्तक विधामे लिखल गेल अछि। एहि विधाक चयने हुनक प्रगतिशील चेतनाक परिचय दैत अछि। प्रतिरोधक स्वर सामान्यतया प्रबन्धात्मकतामे संभव नहि। ई अकारण नहि जे अधिकांश महाकाव्य सत्ता प्रतिष्ठानक प्रशंसामे लिखल गेल अछि। महाकाव्यमे चरित नायकक गुनगाने अभीष्ट होइछ। मुक्तक स्वतंत्र चित्त आ स्वतंत्र वैचारिकताक परिचायक मानल जाइछ। तेँ हेतु सिद्ध, नाथसँ लए केँ कबीर धरि मुक्तकमे रचना कएलनि। विद्यापति चाहितथि तँ शिवसिंह पर महाकाव्य लिखि सकैत छलाह, मुदा हुनक अभीष्ट से नहि छलनि। विद्यापतिक एहि क्रान्तिधर्मी चेतनाकेँ उद्घाटित करैत मोहन भारद्वाज लिखैत छथि, "महाकाव्य दरबारी साहित्यकारक

हेतु उपयोगी विधा छल। विद्यापति दरबारमे नौकरी करैत रहथि, हुनक निष्ठा दरबारक प्रति नहि आमलोकक प्रति रहनि।'' एतदर्थ ''विद्यापति प्रतिरोध तथा संघर्षक भाषाक जन्मदाता छलाह। ...विद्यापति अपन काव्य-रचनाक प्रारम्भ करैत छथि प्रतिरोधसँ। हुनक प्रतिरोध भाषिके स्तर धरि सीमित नहि अछि। गीतक रूप आ विषय-वस्तुमे सेहो ओ देखार होइत अछि।'' (काव्यपाठ पृ.सं.-55)

मार्क्सवादी रचनाकार वा आलोचककेँ प्रश्नांकित कएल जाइत रहल अछि जे ओ परम्पराक मादे गम्भीर नहि रहैत छथि आ ओकरा हीन बुझैत छथि। ई नितान्त मिथ्या अवधारणा अछि। मोहन भारद्वाजक आलोचनाक आधा भाग मिथिलाक परम्परासँ नाभि-नाल जकाँ जुड़ल अछि। मार्क्सवाद परम्परा-बोध सिखबैत अछि, मुदा परम्पराकेँ अतीत रागसँ मुक्त रखैत अछि। परम्परासँ प्रगतिशील तत्वकेँ ताकब-हेरब आवश्यक बुझैत अछि। परम्पराक प्रति आलोचनात्मक विवेक मार्क्सवादी चिन्तन पद्धतिक विशेषता रहल अछि। 'डाक-दृष्टि' पर स्वतंत्र पोथी लिखब भारद्वाजजीक परम्परा आ 'देसज' आधुनिकताक प्रतिएं सकारात्मक सोचक अन्यतम उदाहरण थिक। डाक-वचन वा घाघ-वचन पारम्परिक लोक-ज्ञानक विशिष्ट उदाहरण मानल जाइछ। डाक-वचनकेँ परिभाषित करैत ओ लिखैत छथि, ''लोक प्रतिभाक योगसँ कण्ठानुकण्ठ विकसित होअएबला काव्य-वाणी अछि डाक-वचन।'' भारद्वाजजी एहि लोक विधाकेँ ब्राह्मणीय कर्मकाण्डक विकल्प रूपमे देखबाक प्रयास करैत लिखैत छथि, ''डाक-वचन एकटा वैचारिकताक अभिव्यक्ति अछि। एकटा जीवन शैलीक साक्षी अछि। वैदिक परिपाटी आ ब्राह्मण-कर्मकाण्डक विरोधी होएबाक अर्थ ई नहि अछि जे लोक क्रियाहीन छल। विचार शून्य छल। ओकर सक्रियता तथा जीवन शैली जाहि विचारधाराक जन्म देलक, तकरे सन्तान अछि डाक-वचन। किसान आ गृहस्थक जीवनमे अर्थ आ काम तँ अछिए, धर्म सेहो अछि। वेदविहित धर्माचरणसँ भिन्न जीवनादर्शकेँ मानब धर्महीनता व अधार्मिकता नहि थिक। ई अछि गृहस्थ धर्म। तेँ समस्या धर्म नहि, धर्मान्धता अछि। मोक्ष आ परलोक अछि। किसान आ गृहस्थक जीवनानुभव धर्मान्धताक प्रति विरक्ति आ लौकिक आस्था विश्वासक लेल आसक्ति उत्पन्न करैत छैक। यैह ओकर जीवन शैली आ जीवन-दृष्टिक निर्धारक होइत अछि। एकरे डाक-वचन कहल जाइत अछि।''(डाक-दृष्टि, मोहन भारद्वाज, पृ.सं.-52)

डाक नवम सदीक गोप जातिक छलाह, अर्थात निम्नजातिक, आजुक शब्दावली मे ओबीसी। मुदा हुनको ब्राह्मण पितासँ उत्पन्न सिद्ध कएल गेल, जेना कबीरकेँ। सवर्ण बौद्धिकता ई मानबा लेल तैयार नहि भए सकैछ जे कोनो अद्भुत प्रतिभा निम्न जातिमे जन्म लए सकैत अछि। तँ सिद्ध कएल गेल जे ज्योतिषाचार्य वराहमिहिर आ गोपकन्या संसर्गसँ डाकक जन्म भेल। मोहन भारद्वाजक ई पोथी डाक पर गम्भीर शोध-दृष्टिसँ लिखल गेल अछि। मिथिला, बंगाल आ आसाममे डाक-वचनक उद्भव, विकास आ महत्त्व पर एहि पोथीमे गंभीरतापूर्वक विचार भेल अछि।

तीन

मोहन भारद्वाजक मैथिली कथा-आलोचनाक पोथी अछि— 'कथा-गोष्ठी'। एहि पोथीमे मैथिली कथाक मूल्यांकन अछि। हिनक मान्यता अछि जे मैथिली कथामे सुधारवादी मानसिकता आ भाववादी कथा-दृष्टिकेँ सभसँ पहिने हरिमोहन झाक कथा तोड़ैत अछि। आत्मालोचन कथाक महत्त्वपूर्ण कारक होइछ। सुधारवादी होइतो हरिमोहन बाबूक कथा आत्मालोचन करैत आगू बढ़ैत अछि। मोहन भारद्वाज आधुनिक मैथिली कथाक आरम्भ ललितक कथा 'रमजानी'सँ मानैत छथि। मात्र मानिते नहि छथि अपितु ओकर ठोस कारण सेहो बतबैत छथि। नेहरू-युगमे कृषिसँ बेसी महत्त्व उद्योगकेँ देल गेलैक। नव-नव कारखाना खुजल, लोकक मनमे नव-नव आशा-आकांक्षा जगलैक। भारद्वाजजीक अनुसारें, ''रमजानी तकरे कथात्मक अभिव्यक्ति छल। एहिमे नब औद्योगिक चेतनासँ बहराइत मशीनी युगक प्रति आस्था आ ललक देखबामे अबैत अछि। कृषि-निर्भर आर्थिक व्यवस्थाक मारल रमजानी आ ओकर आश्रित लेल नब सपनो देखब छोट बात नहि छल। भारद्वाजजीक आलोचना-कर्म कथाकेँ तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक-आर्थिक पृष्ठभूमिमे देखबाक प्रयास करैत अछि। कथाक विषय-वस्तु, भाषा आ शिल्पपर टिप्पणी लिखि समीक्षाक इतिश्री बुझयबला आलोचक भारद्वाजजी नहिं छथि। ओ ओहि कथाकारकेँ पैघ रचनाकार मानैत छथि जिनक कथा कालसँ संघर्ष करैत अछि, पैघ विजनक संग नब कथन-शैलीमे लिखल गेल हो।

मोहन भारद्वाज सामाजिक यथार्थक वर्णन करयबला कथाकारकेँ पैघ कथाकार नहि मानैत छथि। जे कथाकार सामाजिक यथार्थकेँ सामाजिक चेतना धरि पहुँचा दैत अछि, ओएह कथाकार पैघ कथाकार भए सकैत अछि। ललितक कथा 'रमजानी'क उदाहरण दैत कहैत छथि जे रामजानीक परिवारक यथार्थ तँ ई अछि जे ओकरा दुनू साँझ नून रोटियो नसीब नहि छैक, मुदा राजनीतिक आकांक्षा ई छैक जे ओकर बेटा पढ़ि-लिखि बापसँ आगाँ बढ़ि जाय, आ ताहि खातिर ओ एक्का बेचि कें रिक्शा किनय चाहैत अछि। रमजानीक ई आकांक्षा कथाकेँ सामाजिक चेतनासँ जोड़ैत अछि। हिनक मानब छनि जे मैथिलीमे सामाजिक चेतनाक कथाक अभाव नहि अछि। ललितक अतिरिक्त मणिपद्म, राधकृष्ण, गोविन्द झा, सोमदेव, धीरेन्द्र, मायानंद मिश्र, राजकमल चौधरी, रामदेव झा, हंसराज, राजमोहन झा, गंगेश गुंजन, रामानन्द रेणु, साकेतानन्द, उपेन्द्र दोषी, प्रो. मनमोहन झा, उषाकिरण खान, विभारानी, नीता झा, विनोद बिहारी लाल, विभूति आनंद, सुभाषचंद्र यादव, महाप्रकाश, सुकांत सोम, प्रदीप बिहारी, अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास, रमेश एवम तारानंद वियोगी आदिक किछु कथामे सामाजिक चेतना अपन विलक्षणताक संग उपस्थित भेल अछि। प्रभास कुमार चौधरी आ जीवकान्तक कथामे भारद्वाज जीकेँ सामाजिक चेतनाक अभाव देखबामे अबैत छनि।

पारंपरिक कथा तत्त्वसँ आगाँ बढ़ि मोहन भारद्वाज गुणवत्तापूर्ण कथा प्रतिमान तकबाक प्रयास करैत छथि। ओहि प्रयासमे ओ कहैत छथि ''मूल प्रश्न कथाक विषय-वस्तु वा कथामे विविधता लायब मुख्य बात नहि होइछ। मुख्य बात थिक आजुक जीवनक विद्रूप आ विसंगतिकेँ कथाक माध्यमसँ देखार करब। उपेन्द्र दोषी, महाप्रकाश, प्रो. मनमोहन झा, पूर्णेन्दु चौधरी, बिनोद बिहारी लाल, धीरेन्द्र कुमार, रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', विभूति आनन्द, अशोक, विनोद भारती, केदार कानन, उषाकिरण खान, विभा रानी तथा रमेश आदि अर्थ चक्रक घिरनी जकाँ नचैत लोकक टूटैत सम्बन्ध सेतु, पुरना टटका ढील भेल बम्हनबला करची जकाँ खसैत राग-भाव आ रौदीमे राखल फाँक भेल आम जकाँ सुखाइत संवेदनाक मार्मिक कथा लिखलनि अछि। दाम्पत्य-जीवनक माधुर्य तथा स्त्री-पुरुषक नैसर्गिक आकर्षणक कथा लिखैत काल जीवनक नितान्त तन्नुक आ एकान्त रमणीय

स्थितियोसँ गुजरैत काल जबदाह वातावरणक आतंकसँ आजुक लोक कोना ग्रस्त अछि तकर सफल अभिव्यक्ति हिनक सभहक कथामे भेल अछि।'' (कथा गोष्ठी, पृ. सं. 18)

लीकसँ हटि कें लिखयबला किछु कथाकार पर मोहन भारद्वाज 'कथा-गोष्ठी' पुस्तकमे स्वतंत्र रूपसँ विचार कएलनि अछि। ओहिमे हरिमोहन झा, ललित, राजकमल चौधरी, लिली रे, धूमकेतु, नीता झा आ अशोक आदिक नाम महत्त्वपूर्ण अछि। अपन समयक अधिकांश नैतिकतावादी, वर्णवादी आओर यथास्थितिवादी आलोचक, विद्वान लोकनि राजकमल चौधरीक कथाक सामाजिक बहिष्कार कएलनि। कहल गेल जे ई कथासभ समाजकेँ भ्रष्ट कए देत। आलोचकगण कथाक बहुत उपरी आ हल्लुक अर्थ ग्रहण कएलनि। दिन-राति मन्त्रक उच्चारण करयबला आचार्य आलोचककेँ राजकमल चौधरीक शब्दावलियहु उच्चारित करबामे असोकर्य होनि। मोहन भारद्वाजक आलोचना-कर्म एहि तरहक कथा सभहक सामाजिक सार्थकता और ऐतिहासिक महत्त्वकेँ स्थापित कएलक। राजकमल चौधरीक कथा मिथिलाक वर्ण-तन्त्र, अर्थ-तन्त्र और यौन-तन्त्रक दुरभिसन्धिसँ उपजल अछि। मैथिलीमे एकटा कहावत प्रचलित अछि जे 'झरकल मुह झँपले नीक।' एहि तर्ज पर झरकल सामाजिक व्यवस्था झाँपले नीक लगैत अछि। राजकमल अपन कथामे झाँपल व्यवस्था पर सँ झाँपन हटा देलनि। झाँपन हटितहिं जे देखार भेल से अत्यंत विद्रूप आ वीभत्स छल, मैथिली साहित्यमे हड़कम्प मचि गेल। मोहन भारद्वाज राजकमलक कथाक जड़ि पकड़ैत ओकरा 'भग्न होइत सामन्ती जीवन परम्पराक' कथा कहलनि। राजकमलक मृत्युपरांत 'वैदेही' सम्पादक घोषित कएलनि, 'राजकमलजीक नवलेखन शैलीसँ साहित्यमे भ्रष्टता जोर पकड़ने जा रहल अछि।'' (वैदेही, जुलाई 67)। आचार्य रमानाथ झा लिखलनि 'राजकमल यौन सम्बन्धसँ आगाँ नहि बढ़ि सकलाह।' ई मात्र उदाहरण थिक। मुदा मोहन भारद्वाज आलोचनाक एहि एकांगी दृष्टिकेँ तोड़लनि ओ साफ-साफ बिनु हकलेने, बिनु अटकने लिखल, ''राजकमल जनैत छलाह जे मध्यवर्गीय मैथिल ब्राह्मण समाजमे घुन लागि चुकल छैक, ओ भीतरसँ हहरि गेल अछि, मुदा टेढ़ी एखनो छैक। आत्म-प्रवंचनाक एहि स्थितिकेँ सामन्तवादी चरित्रक अस्मिता बनौने रखबाक एहि मोहकेँ राजकमल अपन कथामे तोड़बाक प्रयास कयलनि।''

(कथा-गोष्ठी, पृष्ठ 88) ओ अपनासँ पूर्व राजकमलक कथाक उचित मूल्यांकन सेहो ध्यानमे रखलनि आ कुलानंद मिश्रकेँ उद्धृत करैत लिखल, ''वर्त्तमान अर्थचक्रक दानवी गतिक भोग राजकमलकेँ ललित आ मायानन्द मिश्र, की आन कोनो समकालीन कथाकारसँ अधिक भेलनि। अर्थचक्रक गतिसँ अन्यथा प्रभावित होइत मध्यवर्ग अपन समस्त सुरुचि आ कुरुचि संग राजकमलक कथामे स्थापित भेल अछि।'' (कथा-गोष्ठी, पृष्ठ 88) आलोचनाक दायित्व 'काल' आ 'स्थान' संग साहित्यक लेखा-जोखा इतिहास-चेतना संग करबाक होइछ। एहि दायित्वक निर्वाह तत्कालीन मैथिली आलोचना नहि कए सकल। समयक गतिकेँ छोड़ि परम्पराक रासि पकड़ने रहल आ राजकमलक कथाकेँ पारम्परिक आलोचना प्रतिमानसँ, आलोचनाक पवित्रतावादी अवधारणासँ करैत रहल। साहित्यमे कोनो विषय उपेक्षित आ अश्लील नहि होइत अछि। समाजक अश्लीलताकेँ शुद्धतावादी दृष्टिसँ प्रकाशमे नहि आनल जा सकैछ। भारद्वाजजी ठीके लिखल, ''राजकमल जखन स्त्रीकेँ नाङट करैत छथि, एकटा नाङट स्त्रीक लीला-वर्णन करैत छथि तँ हुनक दृष्टि आतुर एवम् कामान्ध पुरुषक नहि, एक एहन शल्य चिकित्सकक रहैत छनि जे रोगक निदान चाहैत अछि।'' (कथा-गोष्ठी, पृ.सं. 88)

एहिमे दू मत नहि जे स्त्री-चरित्रक जतेक विविधता राजकमलक कथामे भेल अछि, ओ कोनो भारतीय भाषाक कथामे ताकब कठिन। पितृसत्ताक दमन-दंश सहैत, आर्थिक मारि झेलैत, यौन उत्पीड़नक अथाह पीड़ा भोगैत, पुरुषसत्ताकेँ मुह दुसैत, उत्धतताक हद पार करैत, संकीर्णताक कठोर परिवेशमे जीबैत, विविध वर्गी, विविध रंगी, विविध परिस्थितिसँ उत्पन्न, विविध छवि-छटासँ राजकमलक स्त्री चरित्र जगजियार अछि। कहबाक आशय ई जे देश, काल परिस्थितिक अनुसारें राजकमल स्त्रीक सभ सीमा आ हुनक अपार संभावनाकेँ उद्घाटित करैत छथि। ओ स्त्रीक आदर्शीकरण नहि कएल। राजकमल अपन समस्त संवेदनशीलता ओहि स्त्रीक पक्षमे राखल। आ अही अर्थमे राजकमल स्त्री विशेषज्ञ कथाकार शरतचन्द्रसँ आगू बढ़ि जाइत छथि। शरतबाबूक अधिकांश उपन्यासमे स्त्रीक अत्यन्त आदर्शीकृत छवि अभरल अछि, मुदा राजकमलक स्त्री चरित्र यथार्थ आ ओहूसँ बेसी स्त्री-चेतनासँ सम्पृक्त अछि। ओहि समयमे जखन स्त्री-विमर्शक कोनो चर्च-बर्च नहि छल, स्त्री-विमर्शकेँ केन्द्रमे राखब असाधरण

बात। दोसर बात जे एहिसँ मैथिली कथाक पाट सेहो चौरगर भेल। कथा-शिल्पमे नूतनता आयल। राजकमल विषय-वस्तुक अनुसारें कथा-शिल्पक चुनाव हुनक कथात्मक अभिव्यक्तिक अन्यतम विशेषता छल। आ तेँ मोहन भारद्वाज राजकमलकेँ असाधारण कथाकार मानल अछि।

आलोचनाक दायित्व ओकर स्पष्टतामे होइछ। कयक बेर आलोचना जटिलताक शिकार भए जाइछ। आलोचकक मन्तव्य ओहि जटिलताक कारणें स्पष्ट नहि भए पबैछ। अथवा आलोचकक द्विविधाग्रस्तता आ दु-चित्तापन सेहो ओकरा स्पष्टवादी नहि होअए दैत अछि। मोहन भारद्वाज एहि दायित्वकेँ खूब नीक जकाँ बुझैत छथि, आ तेँ हुनक आलोचनामे जटिलता आ दुर्बोधताक कोनो स्थान नहि। कतेको बेर त' ओ स्पष्ट रूपें बिन्दुबार अपन आलोचना दृष्टिक परिचय दैत छथि। उदाहरण लेल 'कथा-गोष्ठी' पोथीमे ओ कथाकार अशोकजीक कथाक नओटा अन्यतम विशेषताकेँ रेखांकित करैत छथि। नवम् विशेषताक रूपमे ओ लिखैत छथि, ''समकालीन कथाकारमे अशोकक विशिष्टताक एकटा आरो कारण अछि। हिनक कथाक कथ्य सार्वभौम होइत अछि, मुदा ओकर बनावटि, मैथिल रहैत छैक। कथाक तानी-बानी अर्थात संरचनामे मैथिल सुवास रहैत अछि। ई काज अशोक दू तरहें करैत छथि– खिसक्कड़ बनि आ यथार्थ वर्णनक विस्तारमे जा कें। हिनक कथाक कथा-शक्ति (नैरेटिव इनर्जी) अद्‌भुत अछि। गाम-घरमे खिस्सा कहयबला जेना श्रोताकेँ बान्हि कें रखैत छल। तहिना अशोक कथा पाठककेँ अपनामे लपटा लैत अछि। कथा कहबाक ढंग आ भाषा खाँटी मैथिल खिस्सकड़ होइत अछि आ से ओकर आकर्षणकेँ दोबर क' दैत अछि।'' (कथा-गोष्ठी, पृ.सं. 88) एहि तरहें 'मैथिली कथाक वर्तमान प्रसंग' भारद्वाजजी चौदह-पन्द्रहटा बिन्दु पर विचार करैत ओहि कथा सभहक सीमा आ सम्भावनाक उद्घाटन कएलनि अछि।

मोहन भारद्वाज कथा आ कविताक शिल्प पर सचेत ध्यान रखैत आलोचनाक शिल्प पर सेहो प्रयोग करैत रहलाह। आलोचनामे ई काज अत्यन्त दुरुह होइछ। आ ताही लेल आलोचना नीरस भए जाइछ। आलोचनामे सेहो रचनात्मकताक गुंजाइश ताकल जा सकैछ। एकर सर्वोत्तम उदाहरण थिक पत्र-शैलीमे आलोचना।

भारद्वाजजी पत्र-शैलीमे गोविन्द झा रचित 'विद्यापतिक आत्मकथा'क समीक्षा कएलनि अछि। एहि पत्रात्मक आलोचनामे जीवनीकारक (विद्यापतिक आत्मकथा जीवनी नहि, उपन्यास थिक-सम्पा.) कमीकेँ दू टूक राखल गेल अछि। रोचकता एतेक जे एक साँसमे पढ़बाक लेल बाध्य करैत अछि। ओहिना मोहन भारद्वाजक कैकटा साक्षात्कार उत्तम आलोचनाक उदाहरण अछि। 'सर्वस्वान्त' उपन्यास पर हुनक सुदीर्घ साक्षात्कार 'सर्वस्वान्त'क समग्र समीक्षा प्रस्तुत करैत अछि। भारद्वाजजी सायास आलोचनाक मादे साक्षात्कार दैत छलाह। साक्षात्कार-आलोचना आलोचनाक नीरसताकेँ भंग करैत अछि। तात्पर्य ई जे मोहन भारद्वाज आलोचनाकेँ सर्जनात्मकता आ संरचनात्मकता दुनू पर ध्यान देलनि अछि।

चारि

मोहन भारद्वाजक आलोचना त्रुटिहीन नहि अछि। 'पृथ्वीपुत्र' पर कएल गेल हिनक आलोचना 'ललितक लेखन विमुखता' पूर्वाग्रही आलोचनाक उदाहरण अछि। एहि आलोचनाक उद्देश्य शीर्षक विषय पर विचार नहि कए 'पृथ्वीपुत्रकेँ दू कौड़ीक रचना सिद्ध करब थिक। 'पृथ्वीपुत्र' पर 'रिक्त स्थानक पूर्ति', 'मूरत जकाँ ठाढ़ चरित्र', 'तर्कहीन प्रणय प्रसंग', 'संयोगमयता आ यथार्थहीनता', 'हल्लुक मोन आ हल्लुक ढंगसँ लिखल कथा', 'अत्यन्त छुछुन', 'खंडित-चित्र, खण्डित-चरित्र, खंडित-परिवेश, 'खंडित-प्रभाव, 'संस्कारधर्मी उपन्यास' आदि आरोपक झड़ी भारद्वाजजी लगा देनि। जखन कि ई उपन्यास मैथिलीक अन्यतम उपन्यास अछि। बिजली एहन चरित्र हिन्दी उपन्यासहुमे ताकब कठिन। प्रेमचंदक 'गोदान'क धनियासँ बेसी गतिशील, ठोस इरादाक मजबूत चरित्र अछि बिजली। भारद्वाज जीक 'पृथ्वीपुत्र'क आलोचना पर हम विस्तारसँ घर-बाहरक दू अंकमे (अप्रैल-जून तथा जुलाइ-सितम्बर 2015) लिखि चुकल छी, आ एहि सन्दर्भमे भारद्वाजजीक आलोचनाक सीमा आ फाटकेँ देखबैत ओहि आलेखकेँ निराधार, चलताऊ आ फतबेबाजी आलोचनाक पर्याय प्रमाणित कए चुकल छी। अतएव, एकरा विस्तार देब पुनरावृत्ति होयत। 'ललितक लेखन विमुखता' भारद्वाजजीक सभसँ कमजोर आलोचना छनि। अन्यत्र ओ एहि तरहक आलोचना नहि लिखलनि।

कोनो क्षण विशेष छल होएत, जतय ओ प्रतिक्रियामे एहि तरहक तर्कहीन विध्वंसक आलोचना लिखने होएताह।

आलोचनाक दायित्व निरंतर अपनाकेँ अपडेट करब सेहो होइछ। अपनहि विचार, सूचना, बोध, पद्धति आदि केँ बदलब, संशोधित करब, ओहिमे नव आयाम जोड़ब उन्नत आलोचना-दृष्टिक परिचायक होइछ। नब शोध, नब बात, नब समीक्षात्मक दृष्टि अबैत रहलासँ अपनाकेँ परिवर्तनशील राखब आलोचनाक महत्वपूर्ण दायित्व होइत छैक। ई नहि जे एक बेर जे कहि देल से 'रघुकुल रीति' भए गेल आ ओहिपर बज्रासन लगौने रहब। ओहिसँ टस्स-सँ-मस्स नहि होएब। दृष्टिक नूतनता आ परिवर्तनशीलता श्रेष्ठ आलोचनाक प्रतिमान छैक। उदाहरण लेल हिन्दीक वरिष्ठ आलोचक नामवर सिंह लगातार अपनाकेँ अद्यतन करैत रहलाह। दलित साहित्य आ स्त्री-विमर्श आदि पर ओ कहलनि जे पूर्वमे हम एहि विमर्शक साहित्यक महत्त्व नहि बुझि पौने रही। भारद्वाजजी 1995 वा ओहिसँ पहिने (अनवरत) जाहि विषय पर जाहि तरहें विचार कएलनि ठीक ओएह विचार हुनक नब पोथी 'कथा-गोष्ठी' मे अछि। सम्भव नहि जे 15 सालमे विचारमे परिवर्तन नहि भेल हो। 'अनवरत'क कैकटा लेख 'कथा-गोष्ठी' आ 'काव्य-पाठ'मे संकलित अछि, जाहिमे रत्ती भरि परिवर्तन नहि कएने छथि। ई दायित्वपूर्ण आलोचना नहि भेल।

दायित्वपूर्ण आलोचना टिप्पणीनुमा आलेखसँ न्याय नहि कए पबैत अछि। मोहन भारद्वाजक बहुत रास आलोचना जेना यथार्थवाद, इतिहास-बोध आदि एहन गंभीर विषय पर अछि जाहि पर ओ अत्यन्त चलताऊ ढंगसँ विचार कएने छथि, जाहि कारणें ओहि विषयक संग न्याय नहि भए सकल अछि। निश्चित रूपें एहन तरहक आलोचना फरमाइशी होइत अछि आ समाचार-पत्र आदि लेल होइत अछि। मुदा पुस्तक संकलनमे दायित्वपूर्ण आलोचनेटा संकलित होएबाक चाही। रचनावली आदिमे सम्पादक सभ तरहक आलोचना सम्पादित करैत अछि ई दोसर बात। मुदा लेखककेँ स्वयं एहि मादे सचेत रहबाक चाही।

श्रेष्ठ आलोचक मात्र साहित्येटा पर नहि लिखैत अछि। ओकर चिन्ता साहित्यक संग समाज, संस्कृति और राजनीति आदि सेहो होइछ। अंग्रेजी आलोचनाक अतिरिक्त हिन्दी आलोचनामे रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी

वा रामविलास शर्मा सदृश्य पैघ आलोचक साहित्यसँ इतर समाज आओर संस्कृतिक मुद्दा पर अनवरत लिखैत रहलाह। मोहन भारद्वाज साहित्यसँ बाहर नहि निकलि सकलाह। हुनक आलोचना साहित्यक परिधि धरि सीमित अछि। एहि तरहक थोड़-बहुत कमीक अतिरिक्त मोहन भारद्वाजक आलोचना गुणवत्तापूर्ण अछि। ई कहबामे संकोच नहि जे मोहन भारद्वाज मैथिलीक समर्थ, दृष्टि-संपन्न आ प्रगतिशील आलोचक छथि। हिनका पढ़ि नब पीढ़ी अपन आलोचना दृष्टिकेँ शार्प, मजबूत आ गम्भीर बनाय सकैत अछि। आलोचनाक अर्थ बुझि सकैत अछि आ दायित्वपूर्ण आलोचनाक असीमित क्षेत्रमे अपन कौशल देखा सकैत छथि।



सुरेश पासवान

रमानन्द झा 'रमण' आ मैथिली आलोचना

आलोचना शब्दक अर्थ होइत अछि— चारूकात सँ देखब। एकरे दोसर शब्द मे समीक्षा वा समालोचना सेहो कहल जाइत अछि, जकर अर्थ होइत अछि— सम्यक रूपेँ बाहर भीतर देखब। मैथिली मे आलोचना साहित्यक विकास मे गति आयल पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनसँ। मैथिल हित साधन, मिथिला मोद, मिथिला मिहिर, साहित्य पत्र आदि पत्रिकाक माध्यम सँ कतेको आलोचनात्मक निबन्ध प्रकाशित होअय लागल। प्रारम्भिक आलोचक वर्ग मे प्रमुख छथि— म.म. परमेश्वर झा, मम.0म. सर गंगानाथ झा, म.म. उमेश मिश्र, मुकुन्द झा 'बख्शी' ओ म.म. मुरलीधर झा आदि। मुदा पाश्चात्य समीक्षा शास्त्रक आधार पर मैथिली आलोचना केँ नव दिशा देनिहार भेलाह आचार्य रमानाथ झा। संस्कृत आ अंगरेजी भाषाक मर्मज्ञ विद्वान होयबाक कारणे ओ दुहू भाषाक आधार पर मैथिलीमे निष्पक्ष आलोचना पद्धतिक सूत्रपात कयलनि जे हिनक बादक साहित्यकार लेल प्रेरणा तथा मार्गदर्शकक काज कयलक।

हिन्दी साहित्यक महान साहित्यकार एवं उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द आलोचनाक महत्व पर प्रकाश दैत कहलनि अछि, जे साहित्य थिक जीवनक आलोचना। तेँ कोनो साहित्य मे आलोचनाक जे महत्व छैक ओ कहबाक विषय नहि थिक। जीवनक जाहि सत्यताक दर्शन साहित्य मे भेटैत अछि चाहे ओ निबन्ध रूप मे हो, कथा हो कविता हो वा उपन्यास प्रभृति। आलोचना एकटा सशक्त माध्यम थिक जे साहित्य केँ चिरकाल धरि दीर्घायु बनौने रहैत अछि। एकटा सफल आलोचकक ई कर्त्तव्य होइत छनि जे ओ कोनो रचनाक तह मे

डुबिक' ओकर तत्वक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करथि। आलोचनाक लेल संसारक साहित्य सँ परिचित होयब आवश्यक अछि।

मनुष्यक एक दिस जँ परम्पराक आग्रही अछि तँ दोसर दिस नवीनताक आग्रही सेहो। सदैव परम्परा संग बान्हल रहब ओकरा स्वीकार नहि होइत छैक। जँ नवीनताक आग्रह नहि हो तँ भाषा केँ के कहय जे कोनो वस्तु मे वास्तविक परिवर्तन नहि भ' सकत। वर्तमान मैथिली साहित्यक आलोचनाक क्षेत्रमे नवीनताक संग अपन कीर्तिमान स्थापित कयने छथि डॉ. रमानन्द झा 'रमण'।

हिनक जन्म 02 जनवरी 1949 ई0 केँ मधुबनी जिलाक लालगंज गाममे एकटा आदर्श तथा कर्त्तव्यनिष्ठ श्रोत्रिय कुल मे भेल। ई भारतीय रिजर्व बैंक मे पदाधिकारीक रूपमे अपन उत्तरदायित्वक निर्वहन करैत शेष समस्त उर्जा केँ मैथिली साहित्यक अनुसंधान ओ आलोचनाक क्षेत्र मे झोँकि देलनि। दस गोट मौलिक रचना संग डेढ़ दर्जन सँ बेसी पोथीक अनुसंधान आ संपादन पाठक लोकनि केँ हिनक विलक्षण प्रतिभा सँ परिचय करबैत अछि। गम्भीर चिन्तन, विस्तृत अध्ययन आ स्पष्ट लेखनक कारणेँ आलोचकक कोटि मे हुनक नाम आदरपूर्वक लेल जाइत अछि। ई अपन रचनाकृतिक माध्यमे साहित्यक विभिन्न विधा पर सारगर्भित विचार रखलनि अछि जे मैथिली आलोचना साहित्यक अद्यतन स्थितिक रूपरेखा प्रस्तुत क' रहल अछि।

विविध पत्र-पत्रिका मे हिनक आलोचनात्मक निबन्ध पसरल अछि, यद्यपि कतेको सामग्री आब पुस्तकाकार रूपमे छपि चुकल अछि। हिनक पहिल आलोचनात्मक पोथी अछि मैथिलीक नवकविता जाहि मे विभिन्न शीर्षक यथा — नव कविताक पृष्ठभूमि, नव कविताक शिल्प, नव कविताक संकटक संग किछु एहन कविक काव्य समीक्षा प्रस्तुत कयलनि अछि जे मैथिली साहित्यक स्थापित एवं मान्य कवि छथि।

ठीक एहिना अखियासल पोथीक माध्यमे मैथिलीक किछु आरम्भिक उपन्यासकार एवं उपन्यासक विश्लेषणात्मक वर्णन प्रस्तुत कयलनि अछि यथा— रामेश्वर, सुमति, निर्दयी सासु एकर अतिरिक्त किछु पुरान एवं नव कथाकारक समीक्षा प्रस्तुत कयलनि जेना पं. श्री कृष्ण ठाकुर ललित, धीरेन्द्र, प्रभास इत्यादिक

कथा। ई अपन अनुसंधान द्वारा कतेको दुर्लभ पोथी केँ जे अन्हारक गर्त मे नुकायल छल ताकि हेरि पाठकक समक्ष अनलनि।

हिनक तेसर महत्वपूर्ण आलोचनात्मक पोथी अछि मैथिली साहित्य ओ राजनीति। एहि पोथी मे संकलित हिनक सभटा निबन्ध एकटा सशक्त आलोचनाक रूपमे परिगणित अछि। संगहि बेसाहल, भजारल, हिआओल, लक्ष्मीपति सिंह रचना संचयन, चितिर-बितिर अनुसन्धान प्रतिमान इत्यादि पोथी मैथिली आलोचना साहित्यक भंडार के भरैत अछि।

आलोचना लिखब बड्ड दुरूह काज थिक तथापि साहित्यकारक सृष्टि मे पाठक केँ नवीन दृष्टि भेटैत छनि। आलोचनाक लेल आवश्यक अछि-सम्यक ज्ञान। डॉ. रमानन्द झा 'रमण' अपन पोथी बेरायल मे आलोचनाक सम्बन्ध मे कहलनि अछि जे - आलोचनाक लेल आधारक जनतब आवश्यक छैक। जेना लिखबाक लेल अक्षरक ज्ञान चाही। ककहरा नहि आओत तँ पढ़ब की, लिखब की? साहित्यिक आलोचनाक अनेक प्रकार अछि, जेना—ऐतिहासिक आलोचना, काव्य शास्त्रीय आलोचना, समाजवादी आलोचना, मार्क्सवादी आलोचना, मनोवैज्ञानिक आलोचना आदि। सभ आलोचनाक अपन-अपन रीति छैक, अपन-अपन दृष्टि ओ उद्देश्य छैक। ओहि अनुरूप साहित्यक व्याख्या, विवेचन आ निष्पति होइत अछि।

डॉ. 'रमण' जीक लेखन मे जे व्याप्ति निहित अछि हिनक मनोभाव ओ उदगार सँ पाठक सहजहिँ अनुमान लगा सकैत छथि। जेना कि रचनाकार स्वयं अपन आलोचनात्मक पोथी मैथिली साहित्य ओ राजनीति मे कहलनि अछि— साहित्यमे जखने जीवन केँ तकैत छी, परिवेशक प्रतिध्वनि केँ अकानबाक हेतु साकांक्ष होइत छी, हेरायल भोतिआयल केँ उपयुक्त दिशा संकेतक क्षमता सँ अभिभूत साहित्यक प्रयोजन होइत अछि।

रचनाकारक ई मनोवृति प्रमाणिकताक संग पाठक के सत्य सँ परिचय करबैत अछि। पाठकक मोन मे जिज्ञासा उत्पन्न करैत अछि। पढ़बाक, लिखबाक आ बुझबाक चेतना जगबैत अछि। स्वयं रचनाकारक शब्दमे — आजुक विश्वक मानचित्र छोट भए गेल अछि। विश्वक एक कोणक समाचार क्षणे मे दोसर कोण

केँ आक्रान्त कए दैत अछि। वियतनाम मे बमवर्षाक धमाका सँ एहि ठामक लोकक कान फाटय लगैत छैक। चेकोस्लाविया मे रूसी सेनाक प्रवेश सँ भारतक धरती दलमलित भ' उठैत अछि। मुदा की एहि ठामक संवेदनशील व्यक्तिक प्रतिक्रिया ओहिना साक्षात् अनुभूत होयत, जेना अपन आँखिक समक्ष आत्मीयजन के झरकैत देखि तत् देशीय लोकक हृदय मे उठैत होयतैक।

आलोचनाक संग आलोचकक सब सँ महत्वपूर्ण गुण मे सँ एक अछि — रचनाकारक व्यापक दृष्टि। से गुण डॉ. 'रमण'जी मे कूटि-कूटि केँ भरल छनि। हिनक आलोचनाक ई विशिष्टता अछि जे ओ नव आ पुरान दुनू आयुवर्गक लोक मे नव उर्जाक संचार करैत साहित्य सर्जना दिस प्रेरित करैत अछि। हिनक रचना साहित्य पढ़ला सँ प्रतीत होइत अछि जे पाठक वर्ग संग लेखक वर्ग तैयार करब सेहो हिनक अभीष्ट रहलनि अछि। जेना रचनाकार स्वयं कहैत छथि— आलोचना लिखबा लेल पढ़ब आवश्यक छैक। कृति विशेष वा कृतिकार विशेषक रचने नहि ओहि भाषा साहित्यक विकासक इतिहास, आन-आन भाषाक साहित्यक प्रवृत्ति, साहित्यशास्त्रक संग अन्य अनुसंगी शास्त्रक परिचय सेहो चाही जे सब परिश्रमसाध्य अछि। कविता लिखबा लेल वा कथा आ उपन्यास लिखबा लेल पोथी पढ़ब कोनो आवश्यक नहि छैक। एहि लेल मैथिलीक प्रकृतिक ज्ञान, मैथिली लिखबाक परम्पराक ज्ञान, मैथिलीक शब्द सम्पदाक ज्ञान, मैथिलीक वाक्य विन्यास आ मैथिलीक वाक् धाराक ज्ञान अर्जित करब सेहो आवश्यक नहि छैक। एतबे नहि, साहित्यिक भाषा सीखल आ अजित कयल जाइत छैक, सेहो बूझब आवश्यक नहि छैक। मात्र क्रियापद बदलबाक लूरि अयबाक चाही शेष सबटा तँ जन्मना अधिकारक क्षेत्र मे छन्हिहेँ तखन श्रीमान् जे लिखि देताह सेहे भ' जेतैक मैथिली साहित्यक अमूल्य धरोहरि! के बाजत? के रोकत, के टोकत? ओहि पर सँ जँ पदक भूत सवार होनि तँ केँ सहटि केँ जायत।

आलोचकक दोसर प्रमुख गुण थिक— निर्भीक लेखन। रचनाकारक दृष्टि एकर प्रमाण थिक। सदी सँ जमल पाठकक आँखिक झोल बीझ के हँटबैत वर्तमान दिस प्रेरित करैत अछि हिनक ई दृष्टि।

आलोचकक तेसर प्रमुख गुण अछि स्पष्ट लेखन अर्थात् कोनो बात के फरिछा के कहब। जाहि सँ रचनाकार कहबाक भाव केँ पाठकगण सोझ रूपेँ ग्रहण क' सकथि। शब्दक चमत्कारपूर्ण प्रयोगक संग बात के कहबाक ढ़ंग हिनक वैयक्तिक तथा तात्विक ज्ञान सँ परिचय करबैत अछि। आलोचनाक सम्बन्ध मे डॉ. 'रमण' जी कहैत छथि जे— आलोचना थिक, दृष्टिकोण सँ कोना वस्तु केँ देखि ओहि प्रसंग विचार बनाएब। ई की कोनो नव वस्तु थिक? नहि। सृष्टि मे जखनहि मानव आयल, ओ अपन चारूकातक वस्तु सभ केँ देखलक ओकरा हृदय मे ओहि वस्तु सभक प्रति जे भाव जगलैक तकरा ओ व्यक्त कयलक। ककरहुँ ओ वस्तु सभ आनन्द देलकैक तँ ककरो ओहि सँ घृणा ओ दुःख भेलैक। तेँ क्रमशः प्रशंसात्मक ओ निन्दात्मक आलोचना प्रारम्भ भेल।

वर्तमान मैथिली साहित्यक आलोचनाक क्षेत्रमे व्याप्त संकट लेल समाधानक मार्ग प्रशस्त करैत अछि हिनक ई तथ्य। कारण आलोचक केँ ई भय सदिखन सतबैत रहैत छनि जे अमूक व्यक्तिक प्रशंसा वा निन्दा सोझ रूपेँ कोना करी। आ जौँ वर्तमानो एहिना रहल तँ एकर भविष्य की होयत?

आलोचकक प्रासंगिकता पर विचार करैत 'रमण' जी आगू कहैत छथि जे लोक अपन हृदयक भाव केँ व्यक्त करबाक हेतु सतत व्याकुल रहैत अछि। ओ विचार कखनहुँ गीतक रूपमे, कखनहुँ कथा वा नाटकक रूपमे तँ कखनहुँ निबन्धादिक रूपमे व्यक्त होइछ। दोसर व्यक्ति ओहि विचार सँ अवगत होइत छथि। ओकरा ओहि विचार सँ सहमति सेहो होइत छथि, ठाम-ठाम असहमति सेहो। अपन विचारानुकूल ओ चाहैत अछि उक्त विषयक उपस्थापन यदि ओकर मनोनुकूल होयतैक तँ उत्तम। अतः ओहो उक्त विषय पर अपन विचारक अभिव्यक्ति करैत अछि। एवं क्रमे एक विचारक स्थान पर भिन्न-भिन्न विचार लोकक समक्ष उपस्थित भेल करैत छैक। अपन अनुकूल विचार केँ लोक मानि लैत अछि तथा प्रतिकूल विचार पर टीका टिप्पणी करब प्रारम्भ क' दैछ। एकरहि तँ पारिभाषिक शब्दावली मे आलोचना प्रत्यालोचना कहैत छैक।

आलोचना लिखबाक हिनक उद्देश्य तथा एकरा पाछाँ जे कारण छल एहि सम्बन्ध मे डॉ. 'रमण' जी स्वयं कहैत छथि जे — पुरना पत्र-पत्रिका केँ उनटेबाक

क्रम मे कतेको रचनाकार एहन भेटलाह अछि जे अपना समय मे पूर्ण जीवन्त छलाह किन्तु आजुक पाठक लेल भ' गेलाह अज्ञात-अल्पज्ञात। आजुक पीढ़ी हुनका लोकनिक संगहि मैथिलीक मध्यवर्ती पीढ़ी तथा स्वाधीनताकालीन अपन साहित्यकारक प्रसंग बूझय, जानय आ अनुसंधानक लेल उत्सुक होअय।

अंततः यैह कहब जे रमानन्द झा 'रमण'क सम्पूर्ण साहित्य एकटा तर्कशील आ संवेदनशील पाठक वर्ग संग लेखनक क्षेत्र मे जिज्ञासु लोकनिक लेल विकासात्मक प्रक्रिया अछि। ई दीर्घायु होथि आ मैथिली आलोचना साहित्यक श्री वृद्धि करबामे अपन अतुलनीय योगदान दैत रहथि सैह कामना।



चेतना समितिक आलोचना साहित्य

	पुस्तक	वर्ष	लेखक / संपादक	मूल्य
1.	मैथिली समस्या	1964	सं. पं. गोविन्द झा	
2.	वि. विद्यालयमे मैथिलीक प्रवेश	1970	ले. पं. ब्रज मोहन ठाकुर ले. डा. सुधाकर झा 'शास्त्री'	5.00
3.	पूर्वांचलीय भाषा साहित्य एवं संस्कृतिक पारस्परिक प्रभाव	1972	सं. प्रो. उमानाथ झा एवं अन्य	20.00
4.	पूर्वांचलीय लोकसाहित्य	1974	सं. पं. जयदेव मिश्र एवं अन्य	20.00
5.	परम्परा एवं आधुनिक कविता	1976	सं. प्रो. आनन्द मिश्र / गोपालजी झा 'गोपेश'	30.00
6.	समकालीन कथा साहित्यक सामाजिक परिप्रेक्ष्य	1976	सं. प्रो. जयदेव मिश्र	15.00
7.	पूर्वांचलीय नाटक ओ रंगमंच भाग–1	1977	सं. श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार'	20.00
8.	पूर्वांचलीय नाटक ओ रंगमंच भाग–2	1978	सं. श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार'	22.00
9.	उपन्यास ओ सामाजिक चेतना	1978	सं. डा. वासुकीनाथ झा	12.00
10.	मैथिली वृत्त ओ परिधि	1978	सं. डा. सुभद्र झा / प्रो. विशेश्वर मिश्र	12.00
11.	साहित्य एवं प्रतिबद्धता	1980	सं. डा. अमरेश पाठक	15.00
12.	आधुनिक कविता : एकर सम्प्रेषणीयताक समस्या	1980	सं. डा. लेखनाथ मिश्र	20.00
13.	कविता : आधुनिक सन्दर्भमे एकर सार्थकता	1982	सं. डा. भीमनाथ झा	15.00
14.	रंगमंच ओ एकांकी	1983	सं. डा. वासुकीनाथ झा	20.00
15.	आधुनिक साहित्यमे परिवर्तनक स्वर	1984	सं. डा. वासुकीनाथ झा	20.00
16.	यथार्थवाद ओ आधुनिक साहित्य	1985	सं. डा. गोपालजी झा 'गोपेश'	20.00
17.	डा. अमरनाथ झा	1985	डा. जगदीशचन्द्र झा	5.00
18.	आंचलिक संस्कृतिक विकास	1986	सं. डा. वासुकीनाथ झा	12.00
19.	साहित्यिक समालोचना : दशा दिशा	1987	सं. डा. वासुकीनाथ झा	20.00
20.	मैथिली नवीन साहित्य	1988	सं. डा. वासुकीनाथ झा	25.00
21.	महाकाव्यक यात्रामे युगीन सन्दर्भ	1988	सं. डा. वासुकीनाथ झा	20.00
22.	पूर्वांचलीय गीति–साहित्य	1989	सं. पं. गोविन्द झा	10.00
23.	मैथिली साहित्यक इतिहास लेखन	1989	सं. मोहन भारद्वाज	20.00
24.	शिखरणी	1992	सं. पं. गोविन्द झा / अन्य	60.00
25.	आधुनिक मैथिली साहित्यमे व्यंग्य	1996	सं. डा. गोपेश / डा. रमण	20.00
26.	स्वातंत्र्योत्तर मिथिला आ भाषा साहित्य	1999	सं. डा. उषाकिरण खान	20.00
27.	यात्री	2000	सं. डा. हरिनारायण मिश्र	70.00
28.	भाषा ओ समाज	2003	सं. पं. गोविन्द झा	50.00
29.	वर्तमान समाज आ साहित्य	2003	सं. डा. वासुकीनाथ झा	25.00
30.	चण्डी चरित	2003	ले. महाकवि लालदास	35.00
31.	मैथिली उपन्यासमे चित्रित समाज	2003	सं. डा. रमानन्द झा 'रमण'	60.00
32.	पं. जयनाथ मिश्र स्मृति ग्रंथ	2005	सं. डा. वासुकीनाथ झा	500.00
33.	मैथिली भाषा साहित्य परजनजागरणक प्रभाव	2005	सं. डा. वासुकीनाथ झा	130.00
34.	आधुनिक मैथिली नाटक (पहिल शताब्दी)	2006	सं. मधुकान्त झा	115.00
35.	शताब्दीक संधिबेलामे साहित्यक उत्कर्ष	2007	सं. मधुकान्त झा	130.00
36.	चेतना समिति ओ नाट्य मंच	2008	ले. प्रो. प्रेमशंकर सिंह	225.00
37.	कवीश्वर चेतना	2008	सं डा. रमानन्द झा 'रमण'	180.00
38.	समकालीन मैथिली कथा–साहित्य	2010	सं. डॉ. कलानाथ मिश्र	150.00
39.	यात्री साहित्यावलोकन	2011	सं. डॉ. वासुकीनाथ झा	180.00
40.	मैथिली बाल साहित्य	2011	सं. डा. सत्यनारायण मेहता	180.00
41.	मैथिली व्याकरण	2012	मू. ग्रियर्सन अनु. पं. गोविन्द झा	225.00
42	मणिपद्म चेतना	2013	सं. डा. रमानन्द झा 'रमण'	120.00
43	मैथिली : लोकसाहित्य एवं लोकसंस्कृति	2014	सं. डा. रमानन्द झा 'रमण'	150.00



मुद्रक : सरस्वती प्रेस, पटना, मो. 8002347276